

बिज्जी : गोहि सभक बीच

बिज्जी : गोहि सभक बीच

न्याय-दर्शन आ आधुनिक अपराध-गाथा

गजेन्द्र ठाकुर

विदेह • Videha

बिज्जी : गोहि सभक बीच

© गजेन्द्र ठाकुर, 2021, 2026

सर्वाधिकार सुरक्षित। लेखकक लिखित अनुमति बिना एहि पोथीक कोनो अंशक पुनरुत्पादन नहि।

प्रथम संस्करण

ISBN : _____

प्रकाशक : विदेह (videha.co.in) • ISSN 2229-547X

लेखकीय टिप्पणी

ई एकटा मौलिक औपन्यासिक कृति थिक। एहिमे अपराध, न्याय, सामाजिक भय, आर्थिक जाल, डिजिटल ठगी आ मानवीय त्रासदीक विषय साहित्यिक रूपमे कल्पित कएल गेल अछि। सभ निजी पात्र, निजी संस्था, आपराधिक समूह, व्यवसाय, घटना-क्रम आ संवाद काल्पनिक छथि। कोनो वास्तविक व्यक्ति वा निजी संस्थासँ सादृश्य संयोगमात्र बुझल जाए। वास्तविक सार्वजनिक संस्थाक उल्लेख केवल सामान्य वैधानिक-सामाजिक सन्दर्भमे होयत। कृति अपराधक तरीका सिखेबाक लेल नहि, अपराधक मानवीय परिणाम आ न्याय-विवेकक प्रश्न बुझेबाक लेल लिखल गेल अछि।

गढ़ नारिकेलमे ओहि राति बरखा नहि भेल छल, तैयो माटि भीजल छल। दिनमे कमला-बलानक एकटा पातर धार खेतक कात धरि चढ़ि आयल रहय, साँझ होइत-होइत पाछाँ घुरि गेल छल; आँगनमे खाली चिक्कन गन्ध छोड़ि गेल—काँच माटि, मचोरल घास आ पुरान पानिक गन्ध।

घरक भीतर सभ सुतल छल। बाहर तुलसीक चौरा लग एकटा माटिक दीप अदहा मिझायल, अदहा जरैत छल। दीपक लौ जखन बसातसँ थरथराइत, तखन कच्चा देबालपर पातक छाह हिलैत—जेना कोनो छोट जीव चुपचाप सरकि रहल हो।

धनेश्वरी देवीक नींद बहुत हल्लुक छल। उमेर हुनकर कान कमजोर कऽ देने छल, मुदा रातिक असामान्य चुप्पी ओ आइयो सुनि सकैत छलीह। ओ करौट बदललनि। कोठरीक दोसर कात बहू मृणालिनी अपन सात बरखक बेटा ईशानकेँ बाँहि मे लेने सुतल छलीह। बच्चाक मुँह खुजल, साँस नियमित।

तखने कोठरीक द्वारक नीचाँ किछु कारी चमकल।

धनेश्वरी पहिने बुझलीह—गिरगिट। फेर ओ चमक जमीनसँ उठल, गोल भेल, आ एक क्षण लेल फन जकाँ चाकर भेल।

गहुमन।

हुनकर गला सँ आवाज नहि निकलल। शरीर जागि गेल, आवाज नहि। ओ हाथ बढ़ा कऽ ठेंगा पकड़लनि, मुदा ठेंगा आ साँपक बीच बहुत दूरी छल। गहुमन देबालक कात-कात बढ़ैत बच्चाक सिरहाना दिस सरकि रहल छल।

मृणालिनी सुतले छलीह। ईशानक एकटा पएर चद्दिसँ बाहर।

धनेश्वरीक मोनमे कोनो मन्त्र नहि आयल, कोनो देवताक नाम नहि। केवल एकटा बात—जँ ओ चिचिओतीह तँ बहू हड़बड़ा कऽ उठतीह, बच्चा हिलत, साँप झपटत। जँ चुप रहतथि तँ साँप पहुँचत।

ओहि दू क्षणक बीच कतेक जीवन समायल रहैत अछि, ई धनेश्वरी बादमे कहियो नहि बूझि सकलीह।

तखने दरबज्जाक बाहर खरखराहट भेल।

एकटा पातर, धूसर-भूर देह बिजली सन भीतर आयल।

बिज्जी।

गहुमनक फन एक्के बेर पूरा उठल। जे साँप किछु क्षण पहिने सुतल घरक स्वामी जकाँ सरकि रहल छल, ओ अचानक पाछाँ झुकल। बिज्जी रुकल नहि। ओकर देह माटिसँ एक बित्ता ऊपर उठल, फेर खसल। फुँफकार, खटाक, खुसफुस। मृणालिनी जागि उठलीह। ईशान कानय लागल। धनेश्वरी चिचिआ सकलीह—“हिलू नहि!”

लड़ाइ बहुत देर नहि चलल। मनुष्यक भय लेल ओ अनन्त छल, घड़ी लेल किछुए क्षण। गहुमन देबाल दिस सहटल, फेर खुलल आँगन दिस भागल। बिज्जी ओकर पाछाँ। तुलसीक चौरा लग फेर फुँफकार सुनायल, तकर बाद चुप्पी।

भोरमे पुरुषसभ टॉच लऽ खोजलनि। साँप मृत भेटल—घरक पछिला बाँस-बारी लग। बिज्जी कतहु नहि छल।७

धनेश्वरी ओहि दिन ईशानक माथ पर हाथ फेरैत एकटा पुरान कहबी दोहरौलनि—“गहुमन बिज्जीक गन्ध बुझिते बाट बदलैछ; आ गोहि सेहो किनारपर ओकर दौड़ देखिकऽ पानि बदलैछ—ई हमर बूढ़-पुर्खाक बात थिक, विज्ञानक नहि। मुदा अर्थ बुझू। जे बचबैत अछि, ओकरा सदिखन जागल रहऽ पड़ैत अछि।”

ईशान साँप देखबाक जिद करैत रहल। मृणालिनी मना करैत रहलीह। अन्तमे धनेश्वरी ओकरा आँगन धरि लऽ गेलीह, मुदा मृत साँप लग नहि। ओ केवल माटिमे बिज्जीक चारि छोट पदचिह्न देखौलनि।

“ई मोन राख,” ओ कहलनि। “साँप देखाइत अछि तँ लोक डेराइत अछि। गोहि पानिमे रहैत अछि तँ लोक देरी सँ डेराइत अछि। बिज्जी छोट होइत अछि, मुदा पहरा ओकर काज।”

ईशान ओ पदचिह्न बहुत देर धरि देखैत रहल। ओकरा तखन ई नहि बुझायल जे किछु बरख बाद ओकर परिवारक कथा मे साँप नहि होयत, गोहि होयत—आ बिज्जी फेर बहुत देर धरि केवल निशान बनि रहि जाएत।



आठ बरख बाद गढ़ नारिकेल बदलि गेल छल।

कमला-बलान वैह छल—बरखा मे उग्र, जाड़मे संकुचित, गर्मीमे बालू पर चमकैत पातर धार—मुदा ओकर कातक दुनिया बदलि गेल। पक्की सड़क आबि गेल। मोबाइल टावर दूरसँ देखाइत। पुरान हाट लग ए.टी.एम. खुजल। पंचायत भवनक देवालपर सरकारी योजनाक रंगीन सूची साटल। लोक कहैत—“आब विकास देखू।”

विकास देखाइतो छल। नदीक पश्चिम तटपर नब बाँध बनबाक योजना पास भेल। दू जिला जोड़ऽवला सड़क चाकर होयत। तीन पुलिया, एक छोट पुल, सात किलोमीटर तटबन्ध-मरम्मत, स्कूलक नव भवन, आ पाथर-आपूर्तिक अलग ठेका। कागजपर सभ काज अलग-अलग छल; व्यवहारमे पाइ एक्के नदीक शाखा जकाँ छल—अलग देखाइत, अन्तमे एक-दोसरासँ मिलैत।

सत्यप्रकाश कर्ण एहि नव अवसरकेँ अपन जीवनक मोड़ बुझने छलाह।

ओ पैघ ठेकेदार नहि छलाह। हुनकर कम्पनीक नाम सेहो साधारण—“कमला निर्माण सेवा।” दू पुरान ट्रक, एकटा किरायाक मिक्सर, बीस-पच्चीस स्थायी मजदूर, बाकी आवश्यकता पर। बखौ ओ आन पैघ ठेकेदारक अधीन उपठेका कऽ परिवार चलौने छलाह। एक बेर पैसा समयपर भेटैत, दोसर बेर छह महीना बाद। अनेक बेर काम पूरा, भुगतान आधा।

मृणालिनी कहैत छलीह—“अपन नाम पर काज लिअ। दोसरक दुआर पर किएक?”

सत्यप्रकाश हँसैत—“अपन नाम पर काज लेल नामसँ बेसी चाही।”

“की?”

“ओही वस्तु, जे हमर लग कम अछि।”

“पाइ?”

“पाइ तँ कम अछि। मुदा पाइ सँ पहिने पहुँच।”

एहि बेर व्यवस्था ऑनलाइन निविदा दिस बढ़ल छल। कागज जमा करबाक भीड़ कम, कार्यालयक फाटकपर दलालक पकड़ कने कमजोर। सत्यप्रकाश तीन महीना तैयारी केलनि। बैंक

गारण्टी। अनुभव प्रमाणपत्र। मशीनक विवरण। करक कागज। दर गनना। राति-राति ईशान अपन बाबूक लैपटॉप लग बैसि संख्यासभ देखैत।

“ई सभ बुझैत छह?” सत्यप्रकाश पूछैत।

“नहि।”

“तखन किएक देखैत छह?”

“अहाँ देखैत छी तैं।”

सत्यप्रकाश हँसैत। “सभसँ खराब कारण।”

ईशान आब पन्द्रह बरखक छल। लम्बा होमऽ लागल, आँखिमे ओही बचपनक जिज्ञासा। साँप-बिज्जीक राति ओकरा अस्पष्ट मोन छल—दृश्य नहि, परिवारक कथाक रूपमे। जखन कियो घरमे बिज्जी देखैत, धनेश्वरी तुरन्त कहैत—“हमर पहरुआ आयल।”

निविदाक परिणाम आयल तऽ सत्यप्रकाशक कम्पनी तटबन्धक दू खण्डमे सभसँ कम वैध दरवला ठहरल। कुल काज ओतबा नहि छल जे अखबारमे नाम छपय; मुदा हुनकर लेल ई जीवनक सभसँ पैघ अनुबन्ध छल।

ओहि साँझ घरमे रसगुल्ला आयल। धनेश्वरी भगवानक आगाँ एकटा राखलनि। मृणालिनी खर्चक सूची बनाबऽ बैसलीह। ईशान पूछलक—“आब हमर घर पर नब छत बनत?”

सत्यप्रकाश उत्तर देलनि—“पहिने बाँध बनत। घर बादमे।”

तीन दिन बाद पहिल फोन आयल।

नम्बर अनजान। आवाज विनम्र।

“कर्णजी, बधाई।”

“धन्यवाद। अहाँ?”

“नाम जरूरी नहि। काज जरूरी अछि। अहाँ नब छी। नियम बुझबय पड़त।”

सत्यप्रकाश चुप।

“कुल भुगतानक छह प्रतिशत ऊपरक हिस्सा अछि। दू प्रतिशत अग्रिम। बाकी बिल अनुसार।”

सत्यप्रकाश बुझलनि जे कियो मजाक कऽ रहल अछि। “ककर हिस्सा?”

दोसर कात हलुक हँसी। “ई प्रश्न नहि पूछल जाइत।”

“हम कोनो हिस्सा नहि देब।”

हँसी रुकल। आवाज एखनहुँ विनम्र। “अहाँ बुझलहुँ नहि। ई रिश्त नहि। ई व्यवस्था अछि।”

“हमर व्यवस्था निविदा-पत्रमे लिखल अछि।”

फोन कटि गेल।

मृणालिनी पूछलीह—“के छल?”

सत्यप्रकाश कहलनि—“गलत नम्बर।”

ओहि राति ओ बहुत देर धरि सुतल नहि।



अगिला सप्ताह काम शुरू भेल।

तटबन्धक माटि काटल गेल। मजदूरक टोली आयल। ट्रक बालू, गिट्टी, मिट्टी अनैत। विभागक कनिष्ठ अभियन्ता नापी करैत। दिन भरि धूलि, राति थकान। सत्यप्रकाश खुश रहबाक अभिनय करैत रहलाह।

दोसर फोन अलग नम्बर सँ आयल। एहि बेर आवाज अलग।

“दू प्रतिशत जमा नहि भेल।”

“हम पहिले कहि चुकल छी।”

“तखन सामग्री रुकि सकैत अछि।”

“किएक?”

“रास्ता बहुत अछि।”

तीन दिन बाद हुनकर पहिल गिट्टीक खेप थाना-सीमाक कात रोकल गेल। कागज जाँच। वजन जाँच। खनन चालान जाँच। सभ वैध। दू घण्टा बाद छोड़ल गेल। अगिला दिन दोसर ट्रक परिवहन-विभाग रोकलक। तेसर दिन मजदूरक स्थानीय टोली अचानक दू गुना मजदूरी माँगि काम छोड़ि देलक।

सत्यप्रकाश प्रत्येक घटना अलग-अलग देखऽ चाहैत छलाह। मृणालिनी एक्के धागा देखैत छलीह।

“फोनक बाद सभ शुरू भेल।”

“संयोग हो सकैत अछि।”

“तीन बेर?”

“तीन संयोग सेहो होइत अछि।”

मृणालिनी थमकि गेलीह। “आ चारिम बेर?”

सत्यप्रकाश उत्तर नहि देलनि।

चारिम बेर कार्यालय सँ पत्र आयल—माटिक घनत्व जाँचमे त्रुटि, काज अस्थायी रूपेँ रोकू। सत्यप्रकाश निजी प्रयोगशालासँ पुनः जाँच करौलनि। परिणाम ठीक। विभागक कागज गलत कि नमूना बदलल—कियो स्पष्ट नहि।

एहि बेर ओ फोन आनेवला नम्बरसभ लिखऽ लागलाह। तारीख, समय, आवाज, फोनक बाद घटल घटना। एकटा छोट कारी डायरी।

ईशान एक दिन देखलक।

“बाबू, ई की?”

सत्यप्रकाश डायरी बन्द कऽ लेलनि। “काजक हिसाब।”

“खर्चा?”

“नहि। जे खर्चा नहि देखाइत, तकर हिसाब।”

ईशान हँसल। “अदृश्य खर्चा?”

सत्यप्रकाश ओकरा देखैत रहलाह। “हँ। कखनो-कखनो सभसँ पैघ खर्चा अदृश्य होइत अछि।”



राजधानी नगरक लोक निर्माण विभागमे सहायक लेखाधिकारी मयंक झा सत्यप्रकाशकेँ पहिने सँ चिन्हैत नहि छलाह। हुनका लग प्रतिदिन दर्जनों फाइल अबैत। ठेकेदारक बिल, सुरक्षा जमा, मूल्य-वृद्धि, समय-विस्तार, दण्ड, संशोधित अनुमान। फाइलमे मनुष्य नहि, संख्या चलैत।

मयंकक आदत छल—असामान्य दोहराव देखब। एक दिन हुनका एक विचित्र बात भेटल। अलग-अलग जिला, अलग-अलग ठेकेदार, अलग-अलग विभागीय खण्ड; तैयो सुरक्षा-जमा वापस होयबासँ पहिने सभ फाइलमे एके निजी परामर्श कम्पनीक “गुणवत्ता सत्यापन” संलग्न छल। कम्पनीक नाम—“प्रवाही परामर्श प्राइवेट लिमिटेड।”

मयंक नाम नोट कएलनि।

दू दिन बाद सत्यप्रकाशक रोकल बिल आयल। ओहि फाइलमे सेहो एक टिप्पणी—“स्थानीय समन्वय प्रलम्बित।” सरकारी प्रारूपमे “स्थानीय समन्वय” नामक कोनो तकनीकी शर्त नहि छल। मयंक लाल पेंसिलसँ गोल घेरलनि।

हुनकर सहकर्मी अरुण हँसल—“बहुत पढ़ू नहि। जे शब्द समझमे नहि आबय, ओकरा छोड़ि दिअ।”

मयंक पूछलनि—“स्थानीय समन्वयक अर्थ?”

“जे सभ बुझैत अछि, से फाइलमे नहि लिखल जाइत।”

“आ जे फाइलमे लिखल अछि?”

“ओ सभ बुझबाक जरूरत नहि।”

मयंक मुस्करायल नहि। हुनकर पिता न्याय-दर्शन पढ़बैत छलाह। बचपनसँ एक वाक्य सुनने—“संशय दोष नहि; संशयक बाद जाँच न करब दोष अछि।” मयंक दार्शनिक नहि छलाह, मुदा वाक्य रहि गेल छल।

ओ सत्यप्रकाशक फाइलक प्रतिलिपि नहि, केवल क्रमांक नोट कएलनि। फेर “प्रवाही परामर्श” नामक कम्पनीक पुरान भुगतान खोजऽ लागलाह।

तीन वर्षमे कम्पनीक सरकारी ठेका बहुत कम। मुदा दर्जनों ठेकेदारक फाइलमे ओकर प्रमाणपत्र।
कम्पनी स्वयं सरकार सँ पैसा नहि कमबैत छल; सम्भवतः ठेकेदारसँ कमबैत।

“किएक?” मयंक मनमे पूछलनि।

प्रश्न एखन प्रमाण नहि छल। केवल धुँआ। धुँआ आगिक अनुमान दऽ सकैत अछि; मुदा प्रत्येक
धुँआ आगि सँ नहि—धूलि सेहो हो सकैत।

ओ फाइल बन्द कएलनि।



सत्यप्रकाशक पाँचम फोन साँझमे आयल, जखन ओ बाँधक साइट सँ घर घुरि रहल छलाह।

“आबो समय अछि।”

“अहाँ लोक के छी?”

“जे काज चलबैत अछि।”

“सरकार काज चलबैत अछि।”

“कागजपर।”

सत्यप्रकाश गाड़ी रोकि देलनि। सामने कमला-बलानक पातर शाखा पर छोट पुल। सूर्य डूबि
रहल। पानी मे टूकक छाया लम्बा।

“हम पुलिसमे जाएब।”

दोसर कात पहिल बेर हँसी नहि आयल। “जाउ।”

एक शब्द। पूर्ण निश्चिन्तता।

सत्यप्रकाशक हाथ ठंढा पड़ि गेल। धमकी सँ बेसी ओ निश्चिन्त “जाउ” डरावन छल। जे अपराधी
पुलिसक नाम सुनि नहि डेराइ, ओकरा पुलिसक भीतर कियो अछि कि ओकरा अपन पहुँच पर असीम
भरोसा—दुनू सम्भावना खराब।

ओ घर पहुँचि डायरी मृणालिनीकेँ देखौलनि। सभ नहि, किछु पन्ना।

“जँ हमरा किछु होय...”

मृणालिनी क्रुद्ध भेलीह। “ई वाक्य फेर नहि।”

“सुनू।”

“नहि।”

“मृणाल।”

हुनकर स्वर बदलल। मृणालिनी चुप भेलीह।

“ई डायरी ईशानकेँ नहि देब। कोनो पुलिसवला आए तऽ पहिने नाम पूछब। थाना नहि—जिला पुलिस अधीक्षकक कार्यालयमे सीधा देब। आ एक प्रति मयंक झा नामक अधिकारीकेँ—राजधानी नगर, लोक निर्माण लेखा शाखा।”

“ई मयंक के?”

“हम नहि चिन्हैत छी। फाइलपर हुनकर टिप्पणी देखलहुँ। कम-सँ-कम कियो प्रश्न पूछलक।”

मृणालिनी आँखि मे आँसू रोकैत कहलनि—“अहाँ ठेका छोड़ि दिअ।”

सत्यप्रकाश बहुत देर चुप रहलाह। “जँ हम छोड़ि दी, तऽ अगिला आदमी छह प्रतिशत देत। फेर अगिला। फेर ई नियम भऽ जाएत।”

“नियम पहिनहिसेँ भऽ गेल अछि।”

“तखन कोनो एक आदमीकेँ कहऽ पड़त जे ई नियम नहि।”

“आ ओ आदमी अहाँए किएक?”

एहि प्रश्नक उत्तर सत्यप्रकाशक लग नहि छल। मनुष्य बहुधा अपन नैतिक निर्णयक तर्क बादमे बनबैत अछि; पहिने भीतर किछु केवल मानि लैत अछि।

ओ मृणालिनीक हाथ पकड़लनि। “हम सावधान रहब।”

दुअर बाहर घासमे खसखसाहट भेल। दुनू एक क्षण चुप।

आँगन पार एक बिज्जी दौड़ि गेल—पातर देह, उठल पुच्छ, एक झलक।

मृणालिनी अनायास धनेश्वरीक पुरान बात स्मरण कएलनि—पहरा हर राति नव होइत अछि।

ओहि राति हुनका नींद नहि आयल।



दू सप्ताह बाद सत्यप्रकाश मरि गेलाह।

समाचार पहिने “सड़क दुर्घटना” कहल गेल।

भोरक करीब चार बजे, जिलाक सीमा सँ आठ किलोमीटर पहिने हुनकर एस.यू.वी. एक पत्थर लादल भारी ट्रकसँ टकरायल भेटल। सड़क सीधी छल। मौसम साफ। ड्राइवर रघुनाथ सेहो घटनास्थलपर मरल। ट्रकक चालक गायब। वाहन सड़कक बाम कात खड्डमे आधा झुकल।

पुलिसक पहिल धारणा—ओवरटेक करत दुर्घटना।

मृणालिनी अस्पताल नहि, शवगृह पहुँचलाक बाद केवल एक वाक्य कहलनि—“ई दुर्घटना नहि।”

कियो हुनका सांत्वना देबाक प्रयास केलक। ओ फेर कहलनि—“ई दुर्घटना नहि।”

धनेश्वरी ईशानकेँ घरमे रोकि रखने छलीह। मुदा पन्द्रह बरखक लड़का अब बच्चा नहि छल। ओ मोटरसाइकिल पर पड़ोसी संग शहर पहुँचि गेल। सफेद कपड़ा ओढ़ल बाबूक चेहरा देखिते ओकर भीतर जकरा लोक “रोदन” कहैत अछि, से बाहर नहि आयल। आवाज नहि। शरीर केवल काँपल।

मृणालिनी ओकरा आलिंगन केलनि।

“बाबू सावधान रहत,” ईशान फुसफुसायल।

ई वाक्य सुनि मृणालिनी पहिल बेर टूटि गेलीह।

सावधानी भविष्यकालक वचन छल। मृत देहक सामने भविष्यकाल सभसँ क्रूर व्याकरण होइत अछि।



जिला पुलिस अधीक्षक अनिरुद्ध चौधरी दुर्घटनास्थलपर सामान्यतः नहि जाइत छलाह। मामला थाना स्तरक। मुदा सत्यप्रकाशक मृत्यु दिनमे व्यापार-मण्डल, ठेकेदार संघ आ लोक निर्माण विभाग तीनू दिससँ फोन आयल। कियो कहैत—“बहुत ईमानदार आदमी छल।” कियो—“विवादित ठेका छल।” कियो—“परिवार हत्या कहि रहल अछि।”

अनिरुद्ध साँझमे घटनास्थल गेलाह।

सड़कक एक कात पुलिस चूनासँ चिन्ह लगा देने छल। ट्रक थाना लऽ जाएल। एस.यू.वी. क्रेन सँ निकालल। जगह लगभग खाली।

थानाध्यक्ष घटनाक विवरण देलनि—“सर, सामनेसँ ट्रक आयल। सम्भवतः ओवरटेक। राति, गति...”

अनिरुद्ध बीचमे पूछलनि—“राति कि भोर?”

“भोर, सर।”

“सड़क पर रोशनी?”

“नहि।”

“कोहरा?”

“नहि।”

“ब्रेकक निशान?”

थानाध्यक्ष कने रुकल। “बहुत स्पष्ट नहि।”

अनिरुद्ध झुकि सड़क देखलनि। डामर पर खरोँच। एक कात माटिमे भारी वाहनक चक्का। ओ विशेषज्ञ नहि छलाह; तत्काल निष्कर्ष निकालब हुनकर आदत नहि।

“गाड़ी ककर लेनमे छल?”

“टक्कर बाद सभ बिगड़ि गेल, सर।”

“ट्रकक चालक?”

“फरार।”

“मालिक?”

“स्थानीय ट्रांसपोर्ट कम्पनी। कागज मँगौने छी।”

अनिरुद्ध दूर खेत दिस देखलनि। सूर्य अस्त भऽ रहल छल।

“दुर्घटना सम्भव अछि?” ओ पूछलनि।

“जी।”

“हत्या सम्भव अछि?”

थानाध्यक्ष चुप। “परिवारक आरोप अछि।”

“हम आरोप नहि पूछलहुँ। सम्भावना पूछलहुँ।”

“जी... सम्भव।”

अनिरुद्ध सीधा भेलाह। “तखन एखन हम की जानैत छी?”

थानाध्यक्ष किछु कहऽ चाहलक। अनिरुद्ध स्वयं उत्तर देलनि—“हम जानैत छी दू आदमी मरल। दू वाहन टकरायल। एक चालक गायब। बाकी सभ अनुमान अछि।”

ओ किछु क्षण बाद जोड़लनि—“प्रत्यक्षक सीमा बुझब आवश्यक अछि। जँ पहिले निष्कर्ष बनाओल, तऽ बादक प्रत्येक तथ्यकेँ ओही निष्कर्षक सेवा मे लगा देब।”

थानाध्यक्ष शायद दार्शनिक वाक्यक अपेक्षा नहि केने छल।

अनिरुद्ध कहलनि—“दुर्घटना मानि कऽ जाँच नहि। हत्या मानि कऽ सेहो नहि। दुनू सम्भावना खुलल राखू।”

एहने समय एक सिपाही दौड़ैत आयल। “सर, नजदीकक टोल-प्लाजा सँ रातिक फुटेज भेटि सकैत अछि।”

अनिरुद्ध केवल एतबा कहलनि—“मँगाउ।”



ओहि राति मृणालिनी सत्यप्रकाशक अलमारी खोललीह।

कारी डायरी गायब।

ओ एक-एक दराज देखलीह। फाइल। बैंक कागज। बीमा। पुरान रसीद। डायरी नहि।

हुनकर हाथ काँपऽ लागल। ईशान द्वारपर ठाढ़ छल।

“की खोजैत छी?”

“किछु नहि।”

“बाबूक हिसाबवला डायरी?”

मृणालिनी मुड़लीह। “तोरा कोना बुझल?”

“हम देखने रही।”

“कतऽ?”

“ओ कहने छल जे अदृश्य खर्चाक हिसाब अछि।”

मृणालिनी खाटपर बैसि गेलीह।

“मृत्यु बाद कियो घरमे आयल?”

“बहुत लोक।”

“ककरो एहि कोठरीमे?”

ईशान सोचलक। “ठेकेदार संघक दू लोक। बाबूक कार्यालयवला मुंशी। विभागक एक आदमी।

पुलिसक दू जवान। चाचा...”

सूची बढ़ैत गेल। प्रत्येक परिचित अचानक सम्भावित हाथ।

मृणालिनी तुरन्त अनिरुद्धकें फोन करबाक सोचलीह, फेर सत्यप्रकाशक शब्द मोन पड़ल—

“पहिने नाम पूछब।”

ओ जिला पुलिस कार्यालयक सार्वजनिक नम्बर खोजलनि। राति बहुत भेल छल। ड्यूटी अधिकारी फोन उठौलक।

“हम पुलिस अधीक्षक अनिरुद्ध चौधरीसँ बात चाहैत छी। सत्यप्रकाश कर्णक पत्नी।”

दस मिनट बाद अनिरुद्ध स्वयं फोन पर छलाह।

“कहू।”

“एकटा डायरी गायब अछि।”

“कखनि सँ?”

“आज बुझल।”

“ओहिमे की छल?”

“धमकीवला फोनक हिसाब।”

फोनक दोसर कात कुछ क्षण चुप्पी।

“ककरा-ककरा ई डायरीक विषय ज्ञात छल?”

मृणालिनी ईशान दिस देखलीह। “हमरा। हमर पति। शायद बेटा। आ...”

ओ मयंक झाक नाम स्मरण केलनि।

“एक लेखा-अधिकारी। राजधानी नगर। मयंक झा।”

अनिरुद्ध लिखि लेलनि। “अहाँ घरक कोनो कागज आब नहि छूबू। काल्हि भोर टीम पठबैत छी।

आ एक बात—डायरी गायब होयब हत्या सिद्ध नहि करैत। मुदा ई दुर्घटना-वला अनुमानकेँ कमजोर अवश्य करैत अछि।”

मृणालिनी कहलनि—“हमरा अनुमान नहि चाही। हमरा सत्य चाही।”

अनिरुद्धक स्वर बहुत शान्त छल। “सत्य धरि पहुँचैबाक लेल अनुमानकेँ प्रमाणक परीक्षा पास करऽ पड़ैत अछि। हम प्रयत्न करब।”

फोन कटि गेल।

ईशान पूछलक—“ओ हमरा विश्वास केलक?”

“नहि जानि।”

“तखन?”

मृणालिनी खाली अलमारी दिस तकलीह। “शायद एखन विश्वाससँ बेसी आवश्यक अछि जे ओ प्रश्न केलक।”



राजधानी नगरमे मयंक झा ओहि राति कार्यालयमे अकेला छलाह।

“प्रवाही परामर्श” विषय खोज अपेक्षा सँ अधिक विचित्र निकलल। कम्पनीक पंजीकृत कार्यालय एक छोट व्यावसायिक परिसरमे। निदेशक दू युवा—एकटा बीमा एजेन्ट, दोसर कागजपर सलाहकार।

कम्पनीक बैंक विवरण सरकारी फाइलमे नहि, मुदा ठेकेदारसभक संलग्न रसीदमे एक बात समान—
भुगतानक रकम कुल ठेकाक किछु निश्चित प्रतिशतक आसपास।

मयंक अपन कॉपीमे केवल अनुपात लिखलनि। १.९८। २.०२। १.९६। २.०१।

दू प्रतिशत।

ओ कुर्सी पर पाछाँ झुकलाह।

ई संयोग हो सकैत अछि। शुल्क हो सकैत अछि। उद्योगक सामान्य दर हो सकैत अछि। अथवा—
किछु आर।

तखने हुनकर मोबाइल बजल। अनजान नम्बर।

“मयंक झा?”

“जी।”

“सत्यप्रकाश कर्णिकें चिन्हैत छलहुँ?”

“नहि। फाइल सँ नाम।”

“ओ मरि गेल।”

मयंक सीधा बैसि गेलाह। “के?”

“सड़क दुर्घटना। अखबार देखू।”

“अहाँ के?”

फोन कटि गेल।

मयंक तुरन्त समाचार खोजलनि। फोटो खुलल—कुचल वाहन, पुलिस, भीड़, शीर्षक:
“ठेकेदारक सड़क दुर्घटनामे मृत्यु।”

ओ स्क्रीन दिस देखैत रहलाह। फिर अपन कागज पर लिखल १.९८, २.०२, १.९६।

पहिने ई संख्या छल। आब एक मृत आदमीक नाम तकर कात जुड़ि गेल।

न्याय-दर्शन पढ़बैत पिता कहैत छलाह—“अनुमानक जन्म व्याप्तिक भरोसासँ होइत अछि; मुदा
असावधान मन एक घटना देखिते व्याप्ति गढ़ि लैत अछि।”

मयंक अपनेकेँ रोकलनि। सत्यप्रकाशक मृत्यु आ दू प्रतिशतक सम्बन्ध एखन सिद्ध नहि। फोन करनिहारक परिचय नहि।

तैयो ओ पहिल बेर डेरायल।

ओ “प्रवाही परामर्श”वला कागज कार्यालयमे नहि छोड़बाक निर्णय लेलक। प्रतिलिपि नहि बनौलक; केवल अपन नोटबुक बैगमे रखलक।

कार्यालय सँ निकलैत समय गलियारा खाली छल। लिफ्टक काँचमे अपन चेहरा देखलक। साधारण सरकारी कर्मचारी। न पुलिस। न पत्रकार। न ठेकेदार।

“हम किएक?” ओकर मन पूछलक।

दोसर मन उत्तर देलक—“क्योंकि तौ देखलें।”

देखल जेबाक भय अपराधीक होइत अछि। कतेको बेर देखनिहारक भय ओहि सँ पैघ होइत अछि।



भोरमे बिज्जी फेर सत्यप्रकाशक आँगनमे आयल।

धनेश्वरी ओकरा सभसँ पहिने देखलीह। ओ तुलसीक चौरा लग ठाढ़, नाक ऊपर कऽ हवा सूँघैत छल। घरमे शोकक कारण तीन दिन सँ चूल्हि ढंगसँ नहि जरल। लोक अबैत, रोइत, चुप बैसैत, चलि जाइत।

बिज्जी न ककरो डरलक, न भीतर आयल। बस देहरीक कात घूमि, ओहि कोठरीक खिड़की लग रुकल जतऽ सत्यप्रकाशक अलमारी छल।

ईशान ओकरा देखिते बाहर आयल।

“दादी, वैह अछि?”

धनेश्वरी कहलनि—“बिज्जी सभ एक सन देखाइत अछि। वैह कि ओकर सन्तान—के जानय?”

ईशान घुटना पर बैसि गेल। बिज्जी ओकरा देखलक, फेर अचानक घरक पाछाँक झाड़ी दिस दौड़ि गेल। ओतऽ किछु कौआ उड़ल।

“साँप अछि?” ईशान पूछलक।

धनेश्वरी बहुत देर बाद उत्तर देलनि—“एहि बेर साँप देखाइत नहि अछि।”

ईशानक चेहरा कठोर भेल। “तखन बिज्जी की करैत?”

“पहरा।”

“ककर?”

धनेश्वरीक आँखि जलि उठल, मुदा आवाज स्थिर रहल। “जे बचल अछि, तकर।”

ईशान बुझि नहि सकल जे दादी ओकरा कहि रहल छथि, माए के, घरकें, कि सत्यकें।

दूर कमला-बलानक पानि चुप छल। किनारपर बिज्जीक छोट-छोट पएरक निशान बनल छल।

आ पानिक भीतर, जतऽ आँखि नहि पहुँचैत, कोनो भारी देह शायद अपन ठाम बदलि रहल छल।



अनिरुद्ध चौधरीक मेजपर तीन वस्तु एक संग पहुँचल।

पहिल—टोल-प्लाजाक धुँधला चलचित्र। सत्यप्रकाशक गाड़ी ३ बजि ४१ मिनट पर पार भेल।

ओकर पाछाँ सात मिनट बाद वैह पत्थरवला ट्रक। ट्रकक नम्बर प्लेट माटिसँ आधा ढाकल।

दोसर—मृणालिनीक बयान: धमकी, प्रतिशत, गायब डायरी।

तेसर—राजधानी नगरसँ मयंक झाक ई-पत्र, जाहिमे केवल लिखल छल: “सत्यप्रकाश कर्णक फाइलमे ‘स्थानीय समन्वय’ शब्द तथा एक निजी परामर्श कम्पनीक भुगतान-पद्धति पर ध्यान देब आवश्यक बुझैत छी। विस्तृत कागज प्रत्यक्ष रूपेँ देब चाहैत छी।”

अनिरुद्ध तीनू कागज अलग-अलग रखलनि।

सहायक निरीक्षक रोहित पूछलक—“सर, आब हत्या मानि ली?”

“नहि।”

“एतेक किछु बादो?”

अनिरुद्ध खिड़की दिस देखलनि। “तीन संकेत एक दिशा देखबैत अछि। मुदा दिशा आ गन्तव्य एक नहि।”

“तखन?”

“तथ्य जोड़ू। ट्रकक मालिक। चालक। कॉल रिकार्ड। ठेका विवाद। परामर्श कम्पनी। सत्यप्रकाशक कार्यालय। जे डायरी गायब केलक, ओकरा शायद ई नहि बुझल जे एक आदमीक स्मृति केवल एक डायरीमे नहि रहैत।”

रोहित कहल—“परिवार कहैत अछि ओ पुलिस जाएब चाहैत छल।”

“शब्द प्रमाण बनि सकैत अछि, मुदा कथनक विश्वसनीयता जाँचि। परिवार शोकमे अछि। हम ओकर सम्मान करब, पर जाँच ओकर दुःखक अनुसार नहि चलत।”

“सर, अहाँ हरेक बातमे न्याय-दर्शन घुसा दैत छी।”

अनिरुद्ध हलुक मुस्करायल। “नहि। अपराध स्वयं घुसा दैत अछि। पुलिसक सभसँ पैघ रोग अछि—जे पहिने बुझि लेत जे अपराधी के, फेर प्रमाण खोजत। न्याय कहैत अछि—पहिने प्रमाणक स्वभाव बुझू, फेर निर्णय करू।”

ओ टोल फुटेज फेर चलौलनि। ट्रक अन्हारमे स्क्रीन पार केलक।

“ई ट्रककें खोजू।”

“मालिकक विवरण आबि गेल—‘सरिता लॉजिस्टिक्स’।”

“निदेशक?”

रोहित कागज देखलक। “कौशल महतो।”

अनिरुद्ध नाम लिखलनि।

“प्रवाही परामर्शक निदेशक?”

“एखन मँगौने छी।”

फोन बजल। नियंत्रण कक्ष। शहरक बाहरी भागमे एक परित्यक्त गोदाम लग जारल वाहन भेटल छल। नम्बर प्लेट निकालल। प्रारम्भिक अनुमान—सत्यप्रकाशक दुर्घटनावाला ट्रकक चालकक मोबाइल ओहि क्षेत्रमे अन्तिम बेर सक्रिय।

अनिरुद्ध उठि ठाढ़ भेलाह।

“चलू।”

रोहित फाइल समेटलक।

दरबज्जा धरि पहुँचि अनिरुद्ध फेर मुड़लनि। मेजपर सत्यप्रकाशक फोटो पड़ल छल—सरकारी पहचानपत्र सँ काटल साधारण चेहरा।

अपराधक जाँच बहुधा मृतकक विषयमे शुरू होइत अछि; धीरे-धीरे बुझाइ पड़ैत जे मृतक केन्द्र नहि, केवल पहिल देखाइ पड़ल घेरा छल।

अनिरुद्धकेँ एखन ई नहि ज्ञात छल जे सत्यप्रकाशक मृत्यु केवल छह प्रतिशतक विवाद नहि। न ई जे मयंकक दू प्रतिशतक संख्या एक पैघ जालक बाहरी धागा अछि। न ई जे ओहि जालक किछु पाइ बरख बाद बंदूक, ट्रक आ निविदा छोड़ि स्क्रीन, खेल, डिजिटल खाता आ जुआक अदृश्य संसारमे प्रवेश करत।

एखन केवल एक ट्रक खोजबाक छल।

आ गढ़ नारिकेलमे एक बिज्जी देहरी लग सूँघैत फिरि रहल छल।

त्रासदीक सभसँ कठोर गुण ई अछि जे जखन मनुष्य पहिल संकेत बुझैत अछि, ताबत कथा बहुत आगाँ बढ़ि चुकल रहैत अछि।



परित्यक्त गोदाम शहरक बाहरी भागमे छल, मुदा “परित्यक्त” केवल कागच पर।

भोरक उजास उठि रहल छल जखन अनिरुद्ध चौधरीक गाड़ी टूटल फाटकक भीतर घुसल। आँगनमे घास कम, चक्का चलबाक निशान बेसी। एक कात जारल वाहनक कारी ढाँचा। दोसर कात खाली ड्रम, फाटल तिरपाल, ईटाक ढेर।

रोहित कहलक—“जे लोक एतय किछु नहि करैत, ओकरा एतेक बाट किएक चाही?”

अनिरुद्ध तुरन्त उत्तर नहि देलनि।

जारल वाहनक कात अग्निशमन-दलक आदमी सभ राख फेरै रहल छल। नम्बर-पट्टी निकालि लेल गेल छल। इंजनक किछु अंश पहिचान योग्य छल, मुदा रंग पूर्ण मेटि गेल।

“सत्यप्रकाशक गाड़ीकेँ जे ट्रक ठोकर देने छल, से इएह?” रोहित पूछलक।

वाहन-परीक्षक मूड़ी हिलौलक। “कहब जल्दी हएत। आकार मेल खाइत अछि। किछु पुर्जा सेहो। मुदा पहिने पहचान-संख्या, मालिकाना कागच, मरम्मत-अभिलेख—सभ जोड़ब पड़त।”

अनिरुद्ध मुस्करायल नहि, मुदा रोहित दिस एक बेर तकलनि।

रोहित बुझि गेल—फेर वैह बात।

प्रत्यक्ष अलग।

अनुमान अलग।

निर्णय बहुत बाद।

गोदामक भीतर फर्शपर जारल रबरक गन्ध छल। एक कोनमे चाय बनाबयवला छोट चूल्हि, दू गिलास, आधा भरल चीनीक डिब्बा। यदि कियो रातिमे वाहन जरा कऽ भागल, तँ ओकरा चाय पिबबाक अवकाश छल कि ई पुरान निशान?

एक दीवालपर नीला रंगसँ “सरिता” शब्दक आधा अक्षर देखाइत छल।

रोहित उत्साहित भेल—“सरिता लॉजिस्टिक्स।”

“दीवाल पर नाम होयब मालिकाना प्रमाण नहि,” अनिरुद्ध कहलनि। “कखनो पुरान किरायेदारक रंग वर्षसभ टिकैत अछि।”

गोदामक पछिला भागमे एक फाटल रजिस्टर भेटल। पन्ना बरखा खा चुकल। किछु तारीख, किछु वाहन-संख्या, किछु केवल आरम्भिक अक्षर।

एक पन्नामे “कौ. म.” लिखल छल।

रोहित फेर कहलक—“कौशल महतो।”

अनिरुद्ध एहि बेर कठोर नजरि देलनि।

“अहाँ अपराधी खोजि रहल छी कि अपन अनुमानक पुष्टि?”

रोहित चुप।

अनिरुद्ध रजिस्टर थैलामे रखबौलनि।

जाँचक पहिल शत्रु अपराधी नहि होइत अछि।

कतेको बेर जाँचक पहिल शत्रु ओ खुशी होइत अछि, जे पहिल मेल भेटिते मनमे उठैत अछि—
“पकड़ि लेलहुँ।”



कौशल महतो दुपहर धरि थाना पहुँचि गेल।

ओकर उमेर पचासक आसपास। धूपमे जरल चेहरा, आँखिक नीचाँ गहिर थकान। भीतर अबिते ओ अपना केँ निर्दोष कहब शुरू नहि केलक। पहिने पानि माँगलक।

फेर कहल—“सरिता लॉजिस्टिक्स हमर अछि। मुदा ओ ट्रक हमर नहि।”

रोहित कागच टेबुलपर राखलक। “पंजीकरण अहाँक कम्पनीक।”

“छह महीना पहिने बेचि देने रही।”

“हस्तान्तरण?”

कौशल आँखि नीचाँ कऽ लेलक। “पूरा नहि भेल।”

“ककरा बेचने रही?”

“दुर्गा मालवाहकक एक दलाल मार्फत। नाम—कन्हैया रजक। ओ कहने छल सब कागच बादमे।”

रोहित हँसल—“कागच बादमे। वाहन पहिने। खूब।”

कौशल चिढ़ल, मुदा अनिरुद्ध हाथ उठा रोकलनि।

“ट्रक बेचबाक कारण?”

“ऋण।”

“प्रवाही परामर्श किँ चिन्हैत छी?”

कौशलक चेहरा बदलल नहि।

“नाम सुनने छी।”

“कतऽ?”

“ठेकेदार सभक बीच। जेकरा सरकारी काज चाही, ओकरा सभ तरहक परामर्श देत—एहन कहैत।”

“अहाँ भुगतान केने छी?”

कौशल एक क्षण चुप रहल।

एहि बेर अनिरुद्ध ओकर चुप्पी नोट केलनि।

“हम प्रश्न फेर पूछब। अहाँ भुगतान केने छी?”

कौशल धीरे कहल—“दू बेर।”

“काज की भेल?”

“कागच देखलक। निविदा भरबाक सलाह।”

“लिखित प्रतिवेदन?”

“नहि मोन।”

“दू बेर कतेक?”

कौशलक नजरि रोहित पर गेल, फेर दरबज्जा पर।

“रकम किएक जरूरी?”

“कारण जँ शुल्क उचित छल तँ एक बात। जँ शुल्क दबाव छल तँ दोसर।”

कौशलक ओठ सूखि गेल।

“हमरा दबाव नहि देल गेल।”

अनिरुद्ध प्रश्न बदललनि—“सत्यप्रकाश कर्णिक चिन्हैत छलहुँ?”

“चिन्हैत।”

“मित्र?”

“प्रतिद्वन्द्वी।”

“शत्रु?”

“नहि।”

“ओकर मृत्यु पर की सोचलहुँ?”

कौशल एहि प्रश्न लेल तैयार नहि छल। ओ कुर्सी पर हिलल।

“दुर्घटना।”

“एहि उत्तरक कारण?”

“अखबारमे पढ़ल।”

अनिरुद्ध नोटबुक बन्द केलनि।

“ठीक।”

रोहित चकित भेल। “बस?”

“एखन बस।”

बाहर निकलैत कौशल दरबज्जा लग रुकल। पाछाँ नहि घुरल। केवल कहल—

“साहेब, ठेकेदारीमे शत्रु बनाबऽ लेल ककरो मारब जरूरी नहि। ककरो भुगतान रोकि दिअ, ओकर घर अपने टूटि जाएत।”

अनिरुद्ध ओकरा जाए देलनि।

ओ वाक्य धमकी नहि छल।

मुदा ओहि वाक्यमे एहन अनुभव छल जे कागच पर नहि भेटैत।



मयंक झा राजधानी नगरसँ साँझक बस पकड़ि आयलाह।

सरकारी अधिकारीक लेल विभाग गाड़ी देब चाहैत छल, मुदा ओ मना कऽ देने छलाह। हुनका लगैत छल—जतबा कम लोक जानय जे ओ की लऽ जा रहल छथि, ततेक नीक।

बैगमे मोट फाइल नहि छल।

केवल एक पातर नोटबुक।

दू प्रतिशतक संख्या।

किछु कम्पनीक नाम।

किछु तारीख।

आ एक प्रश्न।

अनिरुद्ध हुनका सर्किट-हाउसक भोजन-कक्षमे भेटलनि। आधा बत्ती बन्द। एक कोनमे पुरान पंखा। बाहर कुत्ता भुकैत।

मयंक नोटबुक खोललनि।

“हम तीन वर्षक उपलब्ध निविदा-कागच देखलहुँ। सभ ठेकेदार भुगतान नहि केने छथि। मुदा जे-जे काज एक विशेष भौगोलिक पट्टीमे अछि, ताहिमे ‘परामर्श’ खर्च असामान्य रूपेँ समान अछि।”

अनिरुद्ध पूछलनि—“समान मतलब?”

“कुल मूल्यक करीब दू प्रतिशत।”

“ई सामान्य पेशेवर शुल्क हो सकैत अछि?”

“हँ।”

मयंकक उत्तर तुरन्त छल।

रोहित चकित भेल।

मयंक आगाँ कहलनि—“तैं हम एखन अपराध नहि कहि रहल छी। समस्या दोसर अछि। अलग-अलग ठेकेदार, अलग काज, अलग परामर्श—मुदा प्रतिवेदन लगभग एक सन।”

ओ तीन कागच निकाललनि।

एकमे पुलक भू-तकनीकी सलाह।

दोसरमे विद्यालय भवनक खरीद-प्रबन्ध।

तेसरमे सड़क-मरम्मतिक कार्य-समन्वय।

तीनूक भाषा अलग होयबाक चाही छल।

मुदा निष्कर्षक चारि पाँति लगभग वैह।

अनिरुद्ध पढ़लनि।

“एहि सँ सिद्ध की?”

“एखन एतबे जे परामर्श शायद वास्तविक काजक अनुपातमे नहि।”

“फेर?”

“दू प्रतिशतक बाद एक दोसर भुगतान बेर-बेर देखाइत अछि—‘स्थानीय सहयोग’, ‘क्षेत्रीय सुविधा’, ‘जन-संपर्क’। नाम अलग। रकम प्रायः कुल मिलाकऽ छह प्रतिशतक आसपास।”

रोहित कुर्सी पर आगाँ झुकल।

छह प्रतिशत।

सत्यप्रकाशक पत्नी सेहो छह प्रतिशतक बात कहने छलीह।

अनिरुद्ध आँखि एक क्षण स्थिर भेल, मुदा स्वर नहि बदलल।

“ई पहिल वास्तविक संगति अछि।”

मयंक कहलनि—“मुदा संगति अपराधक प्रमाण नहि।”

अनिरुद्ध हलुक मुस्करायल। “अहाँ सेहो रोगी छी।”

“कोन रोग?”

“न्याय-दर्शन।”

मयंक पहिल बेर हँसलाह।

“बाबूजी पढ़बैत छलाह। घरमे धुआँ उठैत तऽ पहिने कहैत छलाह—‘आगि अछि’ नहि, ‘आगिक अनुमान अछि’। माए कहैत छलीह—‘भानसघर जा कऽ देखि आउ, दर्शन बादमे करब।’”

तीनू हँसलाह।

किछु क्षण लेल कोठरीक तनाव कम भेल।

फेर अनिरुद्ध गंभीर भेलाह।

“हमरा एकटा काम चाही। एहि छह प्रतिशतक भीतर जे भुगतान अछि, ओकर लाभार्थी संस्था सभक सूची। मुदा व्यक्ति पर पहिने निष्कर्ष नहि।”

मयंक कहलनि—“एक नाम बार-बार आबि रहल अछि—‘लोकसेतु जनसंपर्क सेवा’। निजी संस्था। चुनावी प्रचार सेहो करैत अछि, सांस्कृतिक आयोजन सेहो।”

“मालिक?”

“कागच पर एक महिला—मालती घोष।”

“राजनीति?”

“प्रत्यक्ष किछु नहि।”

अनिरुद्ध नोट केलनि।

मयंक दोसर पन्ना खोललनि।

“आ एकटा छोट कम्पनी अछि—‘अम्बर क्रीड़ा मीडिया’। एखन रकम बहुत कम। खेल आयोजन, स्थानीय प्रतियोगिता, विज्ञापन।”

रोहितक रुचि नहि जागल।

अनिरुद्ध सेहो केवल नाम लिखलनि।

कागच पर कतेको नाम पहिने अर्थहीन होइत अछि।

बरख बाद वैह नाम पूरा युगक दरबज्जा बनैत अछि।



सत्यप्रकाशक घरमे शोकक भीड़ कम होमय लागल।

पहिल सप्ताह घर लोकसँ भरल छल। दोसर सप्ताह केवल निकट सम्बन्धी। तेसर सप्ताहमे देहरी फेर खाली।

मृणालिनीकेँ खाली घरसँ भय लगैत।

सत्यप्रकाशक कुर्सी ज्योंक-त्यों।

चश्मा टेबुलपर।

एक पुरान कमीज खूँटी पर।

ईशान रातिमे पढ़बाक अभिनय करैत, मुदा पन्ना नहि पलटैत।

एक साँझ ओ माएक लग बैसि पूछलक—“बाबूकेँ के मारलक?”

मृणालिनी दीर्घ साँस लेलनि।

“पुलिस एखन कहने नहि अछि जे मारल गेल।”

“अहाँ मानैत छी दुर्घटना छल?”

मृणालिनी उत्तर नहि देलनि।

ईशानक आवाज कठोर भेल—“जँ सभ कियो प्रमाणक प्रतीक्षा करत, ताबत जे मारलक ओ भागि जाएत।”

धनेश्वरी बरामदासँ सुनि रहल छलीह।

ओ भीतर आबि कहलनि—“जल्दी न्याय नहि होइत, बेटा। जल्दी केवल बदला होइत अछि।”

ईशान उठि गेल।

“बदला खराब अछि?”

“हँ।”

“जँ न्याय नहि भेटय?”

धनेश्वरीक चेहरा बदलल।

एहि प्रश्नक उत्तर किताबमे सरल छल।

जीवनमे नहि।

“तखन न्याय माँगैत रहब। मुदा अपने साँप नहि बनब।”

ईशान किछु नहि बजलक।

ओ बाहर निकलि गेल।

आँगनक पछिला भागमे ओहि दिन बिज्जी नहि छल।

केवल ओकर पुरान बिलक कात सूखल घास।

कतेको बेर रक्षक देखाइत नहि।

तँ मनुष्यकेँ अपन भीतर पहरा जगाबऽ पड़ैत अछि।



जारल वाहनक जाँच तीन दिन बाद पहिल झटका देलक।

ओ सत्यप्रकाशकेँ ठोकर देनिहार ट्रक नहि छल।

आकार मिलैत।

रंग पहिने मिलैत।

मुदा इंजन आ ढाँचाक पहिचान अलग।

रोहित निराश भेल।

“तँ गोदाम बेकार?”

अनिरुद्ध कहलनि—“नहि। जँ कियो हमरा वैह ट्रक बुझाबऽ चाहलक, तखन प्रश्न बदलल।”

“मतलब?”

“पहिने प्रश्न छल—ट्रक कतऽ? आब प्रश्न अछि—कियो नकली उत्तर किएक बनौलक?”

रोहित चुप।

ई जाँचक दोसर पाठ छल।

गलत प्रमाण सेहो प्रमाण होइत अछि—ओहि आदमीक मनक, जे गलत दिशा बनाबऽ चाहैत अछि।

गोदामक रजिस्टर सेहो पुरान निकलल। “कौ. म.” कौशल महतो नहि, कौशिक मिस्त्री नामक एक कर्मचारीक संक्षिप्ताक्षर हो सकैत छल।

सरिता लॉजिस्टिक्सक दीवाल रंग दू वर्ष पुरान।

कौशल महतो पर तुरन्त गिरफ्तारीक आधार नहि।

थाना बाहर किछु पत्रकार प्रतीक्षा करैत छलाह। प्रश्न—“ट्रक मालिक गिरफ्तार?”

अनिरुद्ध उत्तर देलनि—“नहि।”

“मुख्य आरोपी?”

“एखन कोनो मुख्य आरोपी नहि।”

एक पत्रकार हँसल—“सर, जनता नाम चाहैत अछि।”

अनिरुद्ध कहलनि—“अदालत नामसँ नहि, प्रमाणसँ चलत।”

अगिला दिन अखबार शीर्षक देलक—“पुलिसक हाथ खाली।”

रोहित अखबार टेबुलपर पटकलक।

“ई देखू।”

अनिरुद्ध चाय पिबैत रहलाह।

“हाथ खाली रहब अपराध नहि।”

“मुदा ऊपर सँ फोन आएत।”

“आओत।”

“राजनीतिक दबाव?”

“आओत।”

“तखन?”

अनिरुद्ध कप रखलनि।

“जँ दबावक कारण हम गलत आदमी पकड़ि ली, असली अपराधीकेँ सरकार स्वयं बचा देत।”



दबाव सचमुच आयल।

पहिने जिला कार्यालय।

फेर राजधानी नगर।

एक वरिष्ठ अधिकारी फोन पर कहलनि—“मामला संवेदनशील बनि रहल अछि। मृतक ठेकेदारक

समुदाय प्रदर्शनक तैयारीमे अछि।”

अनिरुद्ध उत्तर देलनि—“जाँच चलि रहल अछि।”

“किछु प्रगति?”

“किछु संकेत।”

“नाम?”

“एखन नहि।”

फोनक दोसर कात मौन।

“चौधरीजी, जनता प्रक्रिया नहि बुझैत।”

“तँ प्रक्रिया बदलि नहि सकैत।”

फोन कटि गेल।

रोहित पूछलक—“डॉटलनि?”

“नहि।”

“तखन?”

“समय देलनि—बिना समय कहने।”



ओही राति शहरक नब औद्योगिक पट्टीमे आगि लगल।

सड़क निर्माणमे लगयवला मशीन, डीजल-टंकी, तिरपाल, रबर-पाइप—किछु मिनटमे आगि तेज भऽ गेल।

यार्ड “शिवधारा निर्माण” नामक छोट ठेकेदारक छल।

मालिक परिवारसहित शहर बाहर।

रात्रि-पहरा देनिहार मजदूर दू गोटे।

एक भागि निकलल।

दोसर नहि।

भोरमे जारल टीनक कोठरीक भीतर ओकर देह भेटल।

नाम—मोहन पासवान।

उम्र बयालीस।

गाममे पत्नी।

तीन बच्चा।

आगि बुझलाक बाद पुलिसकेँ मशीनक क्षतिसँ बेसी एकटा पुरान मोबाइल महत्त्वपूर्ण लागल, जे बाहर भागल पहरुआ रामजीवनक जेबमे छल।

ओ कहलक राति आगि लगबाक किछु पहिने मालिककेँ फोन आयल छल।

मालिक स्पीकर पर नहि छल।

मुदा रामजीवन मालिकक उत्तर सुनने छल—

“हम निविदा वापस नहि लेब।”

एतबे।

अनिरुद्ध घटनास्थल पहुँचलाह।

मोहनक देह उठाओल जा चुकल छल। जमीनपर जारल खाटीक लोहेक चौखट बचल।

मालिक, शिवकुमार मंडल, काँपैत स्वरमे कहल—“हमरा मशीनक दुख नहि, साहेब। मशीन फेर किनब। ओ आदमी हमरा लेल दस वर्षसँ काज करैत छल।”

ओ अचानक बैठि गेल।

“हम ओकर घर की कहब?”

अनिरुद्ध लग कोनो उत्तर नहि।

अपराधक अर्थ कागच पर बदलैत अछि।

“आगजनी।”

“दबाव।”

“आपराधिक षड्यंत्र।”

मुदा मोहनक पत्नी लेल अपराधक नाम छल—

“घरक कमेनिहार गेल।”

न्याय-दर्शनक कोनो सूत्र एहि वाक्यक भार हलुक नहि करैत।



मोहनक मृत्यु पहिल बेर जाँचक दिशा सार्वजनिक रूपेँ बदलि देलक।

सत्यप्रकाशक सड़क-दुर्घटना एखनहुँ विवादित छल।

मुदा यार्डक आगि स्पष्ट अपराध।

शिवकुमार मंडल तीन दिन पहिने वैह क्षेत्रीय सड़क-निविदामे बोली देने छल, जाहिमे पाँच पैघ कम्पनी सेहो छल।

ओकरा निविदा वापस लेबाक दबाव छल।

“के?”

अनिरुद्ध पूछलनि।

शिवकुमार चुप।

“जे फोन केलक।”

“नाम नहि।”

“आवाज?”

“बदलल।”

“रकम माँगल?”

“नहि।”

“की माँगल?”

“हम पीछे हटि जाउ।”

“किएक?”

शिवकुमारक आँखि भरि आयल।

“कहलक—‘छोट नाव पैघ धारमे नहि चलैत।’”

रोहित लिखलक।

अनिरुद्ध पूछलनि—“अहाँ पहिने पुलिसकेँ किएक नहि बतौलहुँ?”

शिवकुमार अचानक क्रुद्ध भेल।

“सत्यप्रकाश बताबऽ चाहैत छल। ओ कतऽ अछि?”

कोठरी चुप।

“हम अपन बच्चा अनाथ कराबी?”

अनिरुद्ध ओहि क्रोधकें सहलनि।

कानूनक पुस्तक गवाहकें “सहयोगी नागरिक” कहि सकैत अछि।

भयग्रस्त समाजमे गवाह पहिने पिता, पति, बेटा होइत अछि।

नागरिक बादमे।



यार्ड आगजनीक बाद एक बात स्पष्ट भेल—निविदा-जाल केवल पैसा नहि लैत, प्रतिस्पर्धा नियंत्रित करैत।

मयंक झा दस्तावेज फेर खोललनि।

जतऽ “प्रवाही परामर्श”क भुगतान बेसी छल, ओतऽ प्रतिस्पर्धी बोली कम।

जतऽ प्रतिस्पर्धी बोली बेसी, अन्तिम समय दू-तीन कम्पनी कागच वापस लेने।

कतेको बेर तकनीकी त्रुटि।

कतेको बेर बैंक गारंटी समयपर नहि।

कतेको बेर मालिक अचानक बीमार।

प्रत्येक घटना अकेले सामान्य।

एक संग देखला पर असामान्य।

मयंक कहलनि—“ई उपमान जकाँ अछि।”

रोहित पूछलक—“उपमान?”

“जंगलमे पहिने कहियो नीलगाय नहि देखने छी। कियो कहय—गायक सन, मुदा नील-धूसर आ पैघ। जंगलमे वैह लक्षण देखू तँ पहचान बनैत अछि। एतय पुरान उगाही जालक लक्षण छल—भय, प्रतिशत, प्रतिस्पर्धा हटेनाइ। एखन कागच पर ओकर नब रूप देखाइत अछि।”

अनिरुद्ध जोड़लनि—“मुदा उपमान पहचान दैत अछि, दोषसिद्धि नहि।”

रोहित हँसल—“अहाँ दुनूकें एके कोठरीमे राखल गलती भेल।”

मयंक सेहो हँसल।

मगर हँसी शीघ्र समाप्त भेल।

कारण अगिला पन्नामे एक नाम फेर उभरल—

लोकसेतु जनसंपर्क सेवा।

शिवधारा निर्माण सेहो एक वर्ष पहिने ओकरा भुगतान केने छल।

सत्यप्रकाशक कम्पनी नहि।

किएक?



लोकसेतुक पंजीकृत कार्यालय एक सांस्कृतिक केन्द्रक ऊपर दू कोठरीमे छल।

दीवालपर लोकनृत्यक फोटो, रक्तदान शिविरक प्रमाणपत्र, खेलक ट्रॉफी।

मालती घोष सामने बैसल छलीह।

चालीस पार, व्यवस्थित भाषा, आँखिमे आत्मविश्वास।

“हम जनसंपर्क करैत छी। सरकारी योजना विषय स्थानीय बैठक, मजदूर शिविर, उद्घाटन, प्रेस-संपर्क।”

मयंक पूछलनि—“एक पुलक ठेकेदार आ विद्यालय भवनक ठेकेदारक लेल एक्के प्रतिशत?”

“हमरा शुल्क-पद्धति अछि।”

“लिखित?”

“अछि।”

फाइल आयल।

कागज साफ।

कर-भुगतान नियमित।

कर्मचारी सूची।

कार्यक्रमक फोटो।

रोहितक चेहरा कहैत छल—किछु नहि भेटत।

अनिरुद्ध एक फोटो उठौलनि।

तटबन्ध-जागरूकता शिविर।

पाछाँ बैनर।

आगाँ दस-पन्द्रह मजदूर।

“ई कार्यक्रम कतऽ?”

“कुशवाहा टोला।”

“तारीख?”

“बारह जून।”

अनिरुद्ध फोटो पाछाँ रखलनि।

“ओहि दिन ओहि क्षेत्रमे बाढ़ छल। बाट बन्द।”

मालतीक आँखि पहिल बेर डोलल।

“तारीख गलत छपल होयत।”

“सम्भव।”

“फोटो असली अछि।”

“ई सेहो सम्भव।”

“तखन अहाँ की कहऽ चाहैत छी?”

अनिरुद्ध शान्त स्वरमे कहलनि—“हम किछु कहि नहि रहल छी। हम पूछैत छी।”

मालतीक चेहरा फेर स्थिर भेल।

कानूनी कागच कतेको बेर अपराधक ढाल नहि होइत।

कतेको बेर कागच सचमुच निर्दोष होइत।

जाँचकर्ता लेल कठिनाई इएह—साफ कागच देखि अपराध मानब पूर्वाग्रह, आ साफ कागच देखि निर्दोष मानब मूर्खता।



कार्यालय छोड़ैत समय मयंक धीमे कहलनि—“तारीखक गलती संयोग हो सकैत अछि।”

“हँ।”

“मगर तीन फोटोमे?”

अनिरुद्ध रुकलनि।

“तीन?”

मयंक बैगसँ प्रतिलिपि निकाललनि।

दू कार्यक्रम एहन तारीख पर, जखन सरकारी अभिलेख अनुसार क्षेत्रमे निषेधाज्ञा वा मौसमक कारण आवागमन बाधित।

“तँ प्रतिवेदन बादमे बनल?”

“सम्भव।”

“नकली?”

“एखन नहि कहब।”

रोहित बड़बड़ायल—“अहाँ सभ ‘सम्भव’ शब्दकेँ गिरफ्तार किएक नहि कऽ लैत छी?”

अनिरुद्ध पहिल बेर खुलि कऽ हँसलाह।

“कारण जाँचक आधा समय वैह हमरा जेल सँ बचबैत अछि।”



मृणालिनीक घरक बाहर एक साँझ मोटरसाइकिल रुकल।

दू युवक नहि उतरला।

केवल एक लिफाफा देहरीक भीतर फेंकल गेल।

ईशान उठौलक।

भीतर सत्यप्रकाशक फोटो।

फोटो पर कारी स्याहीसँ एक पाँति—

“जे गेल, ओकरा जाने दिअ।”

मृणालिनी लिफाफा हाथमे लैत काँपि उठलीह।

धनेश्वरी फोटो छीनि आगि नहि लगेलनि।

ओ ओकरा प्लास्टिक थैलामे रखलीह।

“पुलिस।”

मृणालिनी डरलीह—“माँजी—”

“एहि बेर नहि नुकायब।”

ईशान दादी दिस तकलक।

धनेश्वरीक स्वर कठोर छल—

“गहुमन घरक भीतर घुसि गेल हो, तँ दरबज्जा बन्न कऽ सुतल नहि जाइत।”

राति अनिरुद्ध स्वयं आयलनि।

लिफाफा, फोटो, कागच सुरक्षित कएल गेल।

“कियो देखलक मोटरसाइकिल?”

पड़ोसी कहलक—“कारी।”

“नम्बर?”

ककरो नहि।

ईशान कहलक—“एकर मतलब बाबूकेँ मारल गेल।”

अनिरुद्ध ओकरा सीधा उत्तर नहि देलनि।

“एकर मतलब कियो चाहैत अछि जे अहाँ सभ चुप रहू।”

“अलग की?”

“बहुत।”

ईशान क्रुद्ध भेल।

“अहाँ सभ शब्द खेलैत छी।”

अनिरुद्ध ओकर सामने बैसि गेलाह।

“तू ठीक कहैत छह। तोरा लेल अन्तर छोट अछि। हमर लेल एहि अन्तर पर ककरो पूरा जीवन निर्भर करैत अछि।”

“हमरा बाबूक जीवन?”

अनिरुद्धक चेहरा कड़ा भेल।

“ओ वापस नहि आएत।”

ईशानक आँखि भरि आयल।

“तखन न्याय की बदलत?”

कोठरीमे धनेश्वरी, मृणालिनी, अनिरुद्ध—तीनू चुप।

बाहर आँगनमे हलुक खड़खड़ाहट भेल।

सब नजरि उधर।

बिज्जी देहरीक बाहर क्षण भरि ठाढ़ छल।

फेर अन्हारमे चलि गेल।

अनिरुद्ध ओकरा देखलक।

धनेश्वरी धीरे कहलनि—“पहरा एखन खत्म नहि भेल।”



अगिला सप्ताह सरकार एक संयुक्त जाँच-व्यवस्था स्वीकृत केलक।

नाम बहुत साधारण—“समेकित आर्थिक-अपराध अन्वेषण कक्ष।”

न विशेष वर्दी।

न अलग निशान।

न सार्वजनिक उद्घाटन।

राजधानी नगरक लेखा-प्रशिक्षण भवनक तेसर तल पर पाँच कोठरी।

अनिरुद्ध चौधरी समन्वयक।

मयंक झा वित्तीय विश्लेषण।

रोहित क्षेत्रीय जाँच।

एक बैंक-अधिकारी प्रतिनियुक्ति पर।

एक डिजिटल अभिलेख विशेषज्ञ—नैना वर्मा।

उद्देश्य केवल सत्यप्रकाशक मृत्यु नहि।

निविदा, दबाव, परामर्श-भुगतान, आगजनी, फर्जी जनसंपर्क प्रतिवेदन—सभ एक संग देखब।

पहिल बैठकमे अनिरुद्ध बोर्डपर कोनो आरोपीक नाम नहि लिखलनि।

ओ पाँच शब्द लिखलनि—

घटना।

सम्बन्ध।

हेतु।

प्रमाण।

निर्णय।

नैना पूछलनि—“ई पुलिस प्रशिक्षण अछि कि दर्शन?”

मयंक मुस्करायल।

अनिरुद्ध कहलनि—“दुनू।”

फेर बोर्डक नीचाँ एक पाँति—

“जकरा सिद्ध करबाक अछि, ओकरा पहिने सत्य मानि नहि चलू।”



नैना वर्माक काज शुरू भेल भुगतान-अभिलेखसँ।

ओ हैकर नहि छलीह।

न अपराधी मंचक विशेषज्ञ।

ओ बैंकिंग प्रणालीक आँकड़ा पढ़ैत छलीह—कतेक खाता एके दिन असामान्य रूपेँ सक्रिय, कतेक संस्था एक्के समूहक ठेकेदारसँ भुगतान पबैत, कतेक भुगतान पछि तुरन्त आन व्यावसायिक खर्चमे मिलि जाइत।

ओ पहिल दिन कहलनि—

“जाल कागच पर बहुत साफ अछि।”

रोहित निराश—“तखन?”

“साफ होयब स्वयं सूचना अछि।”

मयंक पूछलनि—“कोना?”

“छोट कम्पनी सभमे सामान्य जीवनक गड़बड़ी रहैत अछि—कखनो देर, कखनो गलत विवरण, कखनो छोट बकाया। एतय किछु संस्था अस्वाभाविक रूपेँ नियमित अछि। मानू कियो प्रत्येक कदम मापि कऽ चलैत अछि।”

अनिरुद्ध पूछलनि—“ई अपराधक प्रमाण?”

नैना हँसलीह—“नहि। केवल ई जे कागच बनौनिहार अनुशासित अछि।”

“ठीक।”

रोहित माथ पकड़लक।

कक्षमे आब तीन गोटे एहन छल जे प्रत्येक उत्तरक बाद “प्रमाण नहि” जोड़ैत।



दू सप्ताहक भीतर पहिल ठोस सम्बन्ध भेटल।

प्रवाही परामर्श आ लोकसेतु जनसंपर्कक कार्यालय अलग।

निदेशक अलग।

बैंक अलग।

मगर दुनूक वार्षिक लेखा एके बाहरी लेखा-फर्म तैयार करैत छल—

“सम्यक लेखा सहयोग।”

मालिक—हरिनाथ मिश्र।

साठि वर्षक।

छोट कार्यालय।

कर्मचारी चारि।

अनिरुद्धक दल पहुँचल तऽ हरिनाथ भागल नहि।

ओ चश्मा साफ करैत कहलनि—“हम लेखापाल छी, अपराधी नहि।”

“हम सेहो एखन अहाँकेँ अपराधी नहि कहि रहल छी।”

हरिनाथ तिवक्त मुस्करायल—“आजकाल ई वाक्य सुनिते लोक बेसी डरैत अछि।”

फाइल निकालल गेल।

हरिनाथ खुला रूपेँ सहयोग करैत रहल।

“प्रवाहीक कागज के अनैत?”

“कर्मचारी।”

“नाम?”

“कखनो दीपक, कखनो शशांक।”

“लोकसेतु?”

“मालतीजीक कार्यालय।”

“कियो समान व्यक्ति?”

हरिनाथ सोचलक।

“एक युवक।”

“नाम?”

“पूरा नहि जनैत। सभ ओकरा ‘प्रणव बाबू’ कहैत।”

“काज?”

“दुनू संस्थाक वार्षिक मिलान समय अबैत। कहैत—‘कागचमे कोनो प्रश्न नहि रहय।’”

रोहित तुरन्त पूछलक—“धमकी?”

“नहि।”

“पाइ?”

“फीस समयपर।”

“प्रणवक उपनाम?”

“शायद सेन।”

हरिनाथ रुकल।

“नहि। शायद ‘सिंह’। हम निश्चित नहि।”

अनिरुद्ध कहलनि—“जे निश्चित नहि, से मत कहू।”

हरिनाथ राहतक साँस लेल।

बाहर निकलैत मयंक कहलनि—“शब्द-प्रमाणक पहिल शर्त—वक्ता जे जानैत अछि ताहि धरि रहय।”

अनिरुद्ध मूडी डोलौलनि।

“आ जाँचकर्ताक पहिल प्रलोभन—वक्तासँ ओहो कहबा लेब जे ओ नहि जानैत।”



“प्रणव बाबू”क खोजमे पाँच प्रणव निकलल।

एक बीमा अभिकर्ता।

एक विद्यालय शिक्षक।

एक वाहन-विक्रेता।

एक बेरोजगार युवक।

एक परियोजना-समन्वयक—प्रणवेश पाठक।

अन्तिम व्यक्ति पर रोहितक नजरि टिकली।

प्रणवेश “दिगन्त परियोजना समूह” नामक कम्पनीमे काम करैत छल।

दिगन्त स्वयं सरकारी निविदा नहि लैत।

ओ पैघ ठेकेदारसभ लेल जमीन, मजदूर, स्थानीय अनुमति, जनसंपर्क, सुरक्षा, वाहन—सभ
तरहक “समन्वय” करैत।

कागच पर वैध।

मयंक सूची देखलनि।

प्रवाहीक एक निदेशक पहिने दिगन्तमे कर्मचारी।

लोकसेतुक एक कार्यक्रम-समन्वयक दिगन्तसँ अनुबंधित।

सरिता लॉजिस्टिक्स दिगन्तक तीन परियोजनामे वाहन दे चुकल।

अम्बर क्रीड़ा मीडिया दिगन्तक वार्षिक खेल-महोत्सवक प्रचार करैत।

पहिल बेर कई अलग नामक बीच एक केन्द्र देखायल।

रोहित उत्साहित—“एहि बेर तऽ नाम अछि।”

अनिरुद्ध कहलनि—“नाम अछि। अपराध एखन नहि।”

“सर!”

“दिगन्त वैध कम्पनी हो सकैत अछि, जकर ग्राहक अपराध करैत।”

मयंक जोड़लनि—“अथवा अपराधक केन्द्र हो सकैत अछि।”

नैना कहलनि—“अथवा दुनूक बीच।”

बोर्डपर दिगन्तक नाम लिखल गेल।

गोल घेरा नहि।

लाल रंग नहि।

केवल नाम।



दिगन्तक प्रमुख छल—देवांशु रक्षित।

उम्र पैतालीस।

अंग्रेजी-माध्यम शिक्षा।

पहिने निर्माण-कम्पनीमे परियोजना प्रबन्धक।

बादमे अपन “समन्वय” व्यवसाय।

ओ सार्वजनिक मंचपर विकास, निवेश आ स्थानीय रोजगार विषय बोलैत।

तस्वीरसभमे हेलमेट पहिरने पुलपर।

विद्यालयमे कम्प्यूटर दान।

बाढ़ समय भोजन-वितरण।

व्यापार-मण्डलक सम्मान।

ककरो फोटो अपराध सिद्ध नहि करैत।

ककरो दान निर्दोष सेहो नहि बनबैत।

अनिरुद्ध ओकरा तुरन्त नहि बजौलनि।

पहिने कागच।

दिगन्तक ग्राहक सूची।

कर्मचारी।

प्रणवेश पाठकक यात्रा।

परामर्श संस्थासँ सम्बन्ध।

शिवधारा निर्माणकेँ निविदा वापस लेबाक फोन कोन क्षेत्रसँ आयल—तकनीकी दल केवल
व्यापक स्थान बता सकल, निश्चित व्यक्ति नहि।

सत्यप्रकाशक दुर्घटनाक ट्रक एखनहुँ गायब।

जाल देखाइत छल।

मगर जालक केन्द्र केवल अनुमान।



एक राति मयंक झा घर लौटैत समय अपन पाछाँ मोटरसाइकिल देखलनि।

पहिल मोड़।

दोसर मोड़।

तेसर।

ओ गति बढ़ौलनि।

मोटरसाइकिल सेहो।

मयंकक हाथ पसीजि गेल।

घरक सड़कक बदला ओ सीधा भीड़वला चौक पहुँचलाह। मोटरसाइकिल आगाँ निकलि गेल।

शायद संयोग।

शायद पीछा।

ओ नम्बर नहि देख सकलाह।

राति पत्नी पूछलीह—“की भेल?”

“किछु नहि।”

ई झूठ बहुत छोट छल।

मगर एहि झूठसँ घरक भीतर पहिल बेर जाँच प्रवेश केलक।

अगिला दिन मयंक अनिरुद्धकें बात कहलनि।

“पुलिस सुरक्षा चाही?”

“नहि।”

“किएक?”

“जँ संयोग छल?”

“आ जँ नहि?”

मयंक चुप।

अनिरुद्ध कहलनि—“बहादुरी प्रमाणक श्रेणी नहि।”
मयंक हलुक हँसलाह, मुदा हँसी आँखि धरि नहि गेल।
ओहि दिनसँ हुनकर घरक आसपास गुप्त निगरानी लगाओल गेल।
मयंक पत्नीकेँ पूरा सत्य कहलनि।
पत्नी केवल एक प्रश्न पुछलीह—
“ई काज छोड़ि सकैत छी?”
मयंक उत्तर देबाक पहिने बहुत देर चुप रहलाह।
“सकैत छी।”
“छोड़ब?”
“नहि।”
पत्नी मुँह फेरि लेलनि।
त्रासदी केवल ओहि लोकपर नहि अबैत जे अपराध करैत।
कतेको बेर कर्तव्य सेहो घरक शान्ति तोड़ैत अछि।



मोहन पासवानक पत्नी सरोजिनी राजधानी नगर नहि आयलीह।

ओ अपन गाममे तीन बच्चासँ घेरल बैसल छलीह जखन अनिरुद्धक दल मुआवजा आ बयान लेल पहुँचल।

घर माटिक।
छत टीन।
दीवालपर मोहनक एक विवाहकालीन फोटो।
सरोजिनीकेँ कानूनक शब्द नहि चाही छल।
ओ पुछलीह—“ओ आगि किएक लगौलक?”
अनिरुद्ध कहलक—“जाँच चलि रहल अछि।”

“हमर आदमी किछु केने छल?”

“नहि।”

“तखन?”

अनिरुद्ध चुप।

सरोजिनी रोअल नहि।

“ओ राति काज पर नहि जाइत तँ बचित।”

कोनो उत्तर नहि।

“ओ मालिकक मशीन बचाबऽ गेल कि अपने बाहर नहि निकलि सकल?”

“हुनकर संगक आदमी कहैत अछि, आगि बहुत तेज छल।”

सरोजिनी दीवाल दिस तकलीह।

“हमरा न्याय नहि बुझाइत। हमर बेटी अगिला मास फीस केना देत, ई बुझाइत अछि।”

अनिरुद्ध बाहर निकललाक बाद बहुत देर गाड़ीमे नहि बैसलाह।

मयंक, जे संग छलाह, कहलनि—“दर्शन एतय छोट पड़ि जाइत अछि।”

अनिरुद्ध उत्तर देलनि—“न्याय जँ एहि प्रश्न धरि नहि पहुँचय, तखन दर्शन सचमुच छोट अछि।”



कक्षमे फेर बैठक भेल।

बोर्डपर आब पाँच गोल घेरा।

प्रवाही।

लोकसेतु।

दिगन्त।

सरिता।

अम्बर क्रीड़ा।

मध्येमे प्रश्नचिह्न।

नैना कहलनि—“अम्बर एखन बाकी सभसँ अलग अछि।”

“किएक?” रोहित।

“ओकर आय कम, काज खेल-विज्ञापन। मुदा भुगतानक दू स्रोत दिगन्तसँ जुड़ल।”

मयंक पूछलनि—“कियो आपराधिक संकेत?”

“नहि।”

अनिरुद्ध ओकर नामक चारू कात घेरा मेटा देलनि।

“तखन एखन सूचीमे केवल सम्बन्धक रूपमे रहत। अपराधीकरण नहि।”

रोहित बड़बड़ायल—“ई बोर्ड सेहो अदालत बनि गेल।”

अनिरुद्ध कहलनि—“नीक अछि।”

फेर ओ दिगन्तक नामक नीचे लिखलनि—

“प्रणवेश पाठक।”

“पहिले एहि आदमीकेँ बुझू।”



प्रणवेश स्वयं पुलिस लग आयल।

ई घटना सभकेँ चकित केलक।

सवेरे दस बजे स्वागत-कक्षमे कहल—“हमरा अनिरुद्ध चौधरीसँ भेटबाक अछि।”

अन्दर पहुँचि ओ मोबाइल टेबुलपर रखलक।

“हमरा लग बेसी समय नहि।”

रोहित दरबज्जा बन्द केलक।

अनिरुद्ध पूछलनि—“अहाँ किएक आयल छी?”

“कारण हमरा बुझाइत अछि जे आब सभ हमरा पर आएत।”

“सभ मतलब?”

“कम्पनी। पुलिस। जे लोक कम्पनीक पीछे अछि।”

“कम्पनीक पीछे के?”

प्रणवेश हँसल।

“जँ हम नाम जनैत, तँ शायद एतय नहि होइतहुँ।”

“प्रवाही?”

“दिगन्तक बाहरक जेब।”

“लोकसेतु?”

“दोसर जेब।”

“ई रूपक अछि कि तथ्य?”

प्रणवेश अनिरुद्ध दिस तकलक।

“अहाँ कठिन आदमी छी।”

“हमरा स्पष्टता चाही।”

प्रणवेश आगाँ झुकल।

“दिगन्त ठेकेदारसभक बीच ‘समन्वय’ करैत अछि। कियो बोली नहि देत। कियो वापस लेत। कियो स्थानीय विरोध सँ बचेबाक पैसा देत। कियो कार्यक्रमक नाम पर। कियो परामर्शक नाम पर। हम कागच मिलबैत रही।”

“छह प्रतिशत?”

प्रणवेशक चेहरा कठोर भेल।

“अहाँकै ई संख्या कतऽ सँ?”

अनिरुद्ध उत्तर नहि देलनि।

प्रणवेश बुझि गेल—जालक भीतर कियो आर बोलि चुकल अछि, वा कागच बोलि रहल अछि।

“छह स्थिर नहि। काज अनुसार बदलैत।”

“सत्यप्रकाश कर्ण?”

प्रणवेश एकदम चुप।

“चिन्हैत छलहुँ?”

“नाम।”

“ओकर दुर्घटना?”

“हम किछु नहि जनैत।”

अनिरुद्ध ओकर आँखि देखैत रहलाह।

“शिवधारा यार्ड?”

“नहि।”

“मोहन पासवान?”

“नहि।”

“देवांशु रक्षित?”

“मालिक।”

“आदेश ओ दैत?”

प्रणवेश थाकल स्वरमे हँसल।

“साहेब, पैघ जालमे आदेश शब्द बहुत कम उपयोग होइत अछि। लोक बुझैत अछि कि की अपेक्षित अछि।”

“अर्थात्?”

“कियो कहैत नहि—आगि लगाउ। केवल कहैत—‘एहि आदमीकेँ बुझाउ।’ फेर जे बुझाबय जाए, ओ अपन तरीका चुनैत।”

अनिरुद्धक मनमे मोहनक जारल खाटी चमकल।

“ई बचावक भाषा अछि।”

“ई वास्तविकता।”

“दुनू हो सकैत।”

प्रणवेश मूडी झुका लेलक।

किछु देर बाद ओ कहल—

“हम गवाह बनब चाहैत छी।”

रोहित तुरन्त नोटबुक खोललक।

अनिरुद्ध नहि।

“किएक?”

“हम डेरायल छी।”

“अपराध-बोध?”

प्रणवेश चुप।

“अथवा केवल अपन जान?”

प्रणवेश पहिल बेर टूटल।

“दुनू।”



प्रणवेशक बयान तुरन्त लिखल नहि गेल।

पहिने ओकर दावाक स्वतन्त्र जाँच।

ओ जे तीन बैठकक तारीख कहलक, हुनकर यात्रा-अभिलेख मेल खाइत।

जे दू होटल कहलक, भुगतानक कागज उपलब्ध।

जे “छह प्रतिशत”क विभाजनक सामान्य ढाँचा बतौलक, मयंकक गणना संग आंशिक मेल।

मगर हत्या विषय ओकरा किछु प्रत्यक्ष ज्ञान नहि।

अनिरुद्ध स्पष्ट कऽ देलनि—

“अहाँ आर्थिक जाल विषय गवाह हो सकैत छी। सत्यप्रकाशक हत्या विषय नहि, जाबत अपने देखल वा विश्वसनीय प्रत्यक्ष सूचना नहि।”

प्रणवेश बेचैन—“मगर सभ एके जाल।”

“एके जाल होयबासँ प्रत्येक गाँठक ज्ञान नहि होइत।”

मयंक धीमे कहलनि—“एहि ठाम शब्द-प्रमाणक सीमा।”

प्रणवेश झुँझलायल—“हम दर्शन पढ़य नहि आयल छी।”

अनिरुद्धक स्वर कठोर भेल।

“आ हम कथा लिखय नहि बैसल छी। अदालतमे अहाँक एक गलत वाक्य पूरा सही बयानकेँ दूषित कऽ सकैत अछि।”

प्रणवेश चुप।

ओहि दिन ओकर सुरक्षा बढ़ाओल गेल।

मगर अनिरुद्ध बुझैत छलाह—

जाल आब पहिल बेर भीतर सँ काँपल अछि।



दिगन्त कार्यालयमे देवांशु रक्षित साँझ धरि बैसल छल।

ओकरा पुलिसक आधिकारिक नोटिस एखन नहि भेटल।

तैयो ओकरा खबर छल।

कियो प्रणवेशकेँ कार्यालयमे नहि देखने।

फोन बन्द।

घर नहि।

देवांशु सामने बैसल दू आदमीमे सँ एक पूछलक—

“भागल?”

देवांशु मूड़ी हिलौलक।

“भागल आदमी फोन बन्द करैत अछि। गवाही देनिहारो।”

दोसर आदमी कहलक—“तँ?”

देवांशु खिड़की बाहर देखलक।

“किछु नहि।”

“किछु नहि?”

“एहि समय जकरा सभसँ बेसी हड़बड़ी होयत, पुलिस ओकरा देखत।”

“प्रणवेश बहुत जानैत अछि।”

“जतेक जानैत अछि, ततेक हमरो बारे नहि।”

“मुदा जाल?”

देवांशु धीरे कहल—

“जाल व्यक्ति सँ पैघ होयबाक चाही। नहि तँ व्यवसाय नहि, मूर्खता।”

ओहि कोठरीमे कियो हत्या शब्द नहि बजलक।

कियो आगि नहि।

कियो धमकी नहि।

यही जालक सभसँ भयावह गुण छल।

अपराध अपन भाषा सभ्य बना लेने छल।



गढ़ नारिकेलमे ईशान ओहि राति पहिल बेर बाबूक पुरान कागच अपन हाथसँ क्रमबद्ध करैत छल।

मृणालिनी अनुमति देने छलीह—“फाड़ब नहि।”

ओ बिल, बैंक-पर्ची, मशीनक रसीद, मजदूरक हिसाब अलग करैत।

एक पुरान लिफाफामे सत्यप्रकाशक हाथक छोट पर्ची भेटल।

केवल तीन शब्द—

“अम्बर—दू बेर फोन।”

ईशान पर्ची माएक लग लऽ गेल।

मृणालिनी नाम नहि चिन्हलीह।

“अम्बर के?”

“शायद कम्पनी।”

अगिला दिन पर्ची अनिरुद्ध धरि पहुँचल।
अम्बर क्रीड़ा मीडिया।
ओही छोट नाम जकरा बोर्ड सँ लगभग हटा देल गेल छल।
नैना फाइल फेर खोललीह।
कम्पनी खेल आयोजन करैत।
स्थानीय कबड्डी लीग।
क्रिकेट प्रतियोगिता।
मोबाइल पर खेल-सूचना देनिहार एक छोट अनुप्रयोग बनाबऽक योजना।
एखन किछु अवैध नहि।
मुदा सत्यप्रकाश ओकरा दू बेर फोन किएक केने छल?
अनिरुद्ध बोर्डपर नाम फेर लिखलनि।
एहि बेर गोल घेरा नहि।
केवल एक छोट बिज्जी-जकाँ तीरक निशान—कातमे।
नैना हँसल—“ई की?”
अनिरुद्ध कहलनि—“किछु नहि। केवल मोन राखबाक निशान।”
कतेको वर्ष बाद एहि छोट निशानक अर्थ बदलत।
एखन कथा एखनहुँ निविदा, भय, प्रतिशत आ मृतकसभक बीच छल।
मुदा पानिक तर एक दोसर धार बहुत दूर सँ आबि रहल छल।



राति गढ़ नारिकेलमे कमला-बलानक कछार पर कुहेस उतरल।
ईशान अकेले नहि छल। धनेश्वरी ओकर संग छलीह।
“एतय किएक अनलहुँ?” ईशान पूछलक।
धनेश्वरी पानि दिस देखलीह।

“तोहर बाबू छोट छल तखन एतय माछ पकड़ैत।”

ईशान पहिल बेर सुनलक।

“ओ कहियो कहने नहि।”

“लोक अपन बालपनक सभ बात बच्चाकेँ नहि कहैत।”

किछु देर दुनू चुप।

घासमे सरसराहट।

ईशान ठिठकल।

एक बिज्जी पातर बाट काटि गेल।

किछु दूर झाड़ीमे फुँफकार सन आवाज उठल, फेर थमि गेल।

धनेश्वरी कहलीह—

“देखलें? बिज्जी साँपकेँ मारय, ई जरूरी नहि। कतेको बेर केवल ओकर उपस्थितिये पर्याप्त होइत अछि जे साँप बाट बदलय।”

ईशान पानि दिस तकलक।

“गोहि?”

“गोहि बाट नहि छोड़ैत। ओ पानि बदलैत।”

“तखन बिज्जी की करय?”

धनेश्वरी बहुत देर चुप रहलीह।

“किनार छोड़य नहि।”

ईशान एहि उत्तरकेँ मनमे रखलक।

ओ नहि जनैत छल जे ओकर जीवनक बहुत बाद, जखन अपराध बंदूक आ निविदाक कागज छोड़ि मोबाइलक पर्दा, जुआक अंक, अनजान बैंक-खाता आ अदृश्य धनक धारमे उतरि जाएत, तखन एहि रातिक चारि शब्द ओकरा फेर मोन पड़त—

किनार छोड़य नहि।

कमला-बलानक पानि धूसर कुहेसमे लुप्त छल।

मगर किनार पर दू मनुष्य आ एक बिज्जीक छोट पदचिह्न बचल छल।

त्रासदी आगाँ बढ़ि रहल छल।

पहरा सेहो।

अम्बर क्रीड़ा मीडियाक कार्यालय शहरक ओहि भागमे छल जतय संध्याक बाद दुकानक उजास सड़कपर रंग-बिरंग पट्टी खींचैत छल। नीचे खेल-सामानक दोकान, ऊपर दू कोठरी, छतपर टीनक छोट सभागार।

नैना वर्मा पहिने अकेले ग्राहक बनि गेलीह। पुलिसक गाड़ी नहि, पहचान-पत्र नहि। केवल सामान्य सलवार-कुर्ता, हाथमे पुरान मोबाइल।

दीवालपर स्थानीय कबड्डी प्रतियोगिताक चित्र। एक फोटोमे किशोर सभक हाथमे ट्रॉफी। दोसरमे बाढ़-सहायता क्रिकेट। तेसरमे “अम्बर युवा खेल-महोत्सव” लिखल बैनर।

कार्यालयक युवक उत्साहसँ बतौलक—“हम सभ आब मोबाइल पर खेलक परिणाम, खिलाड़ी आँकड़ा आ प्रतियोगिता-पंजीकरण एक ठाम देबाक काज करैत छी।”

“पाइ कोना कमाएब?” नैना सहज स्वरमे पूछलीह।

“विज्ञापन। प्रायोजक। बादमे प्रीमियम सेवा।”

“इनाम?”

“अखन नहि। आगाँ प्रतियोगिता रहत।”

“पाइ लगा कऽ?”

युवक हँसल—“ओ जुआ भऽ जाएत, दीदी। हम वैध काज करैत छी।”

नैना सेहो हँसलीह।

ओहि उत्तरमे तत्काल किछु गलत नहि छल।

मुदा कागच पढ़ैत लोकक आदत रहैत अछि—ओ केवल उत्तर नहि सुनैत, उत्तर देबाक ढंग सेहो मोन रखैत अछि।

युवकक चेहरा “जुआ” शब्द पर एक क्षण लेल बदलल छल। भय नहि। परिचय।

नैना बाहर निकलि टेम्पो पकड़लीह।

ओहि राति अपन टिप्पणीमे केवल एतबे लिखलीह—

“अम्बरक घोषित काज वैध। तथापि ‘दाँव/इनाम’ विषय अवधारणा संस्था लेल अपरिचित नहि बुझाइत। स्वतन्त्र सत्यापन आवश्यक।”

ककरो दोषी कहबाक लेल ई पाँति बहुत कम छल।

मुदा जाँचक यात्रा प्रायः एहन छोट पाँतिसँ बनैत अछि, जाहिमे निर्णय नहि, केवल स्मृति होइत अछि।



प्रणवेश पाठकक सुरक्षा लेल ओकरा शहरसँ बाहर एक सरकारी अतिथि-गृहमे राखल गेल।

ओकर पत्नी रंजना दू दिन बाद पहुँचल।

द्वार खुलिते ओ प्रणवेशकेँ थप्पड़ मारलीह।

कक्षमे अनिरुद्ध आ रोहित दुनू उपस्थित छलाह।

कोनो अधिकारी हस्तक्षेप नहि केलक।

रंजना काँपैत स्वरमे कहलीह—“छह वर्ष सँ पूछैत रही—एतेक पैसा कतऽ सँ? अहाँ कहैत रहलहुँ बोनस। परियोजना। यात्रा। आब हमर बेटा विद्यालयमे की कहत?”

प्रणवेश आँखि नीचाँ कऽ लेने छल।

“हम तोरा सुरक्षित रखबाक—”

“झूठ।”

एक्के शब्द।

रंजना फेर कहलीह—“अहाँ हमरा सुरक्षित नहि रखने छलहुँ। अहाँ हमरा अनजान रखने छलहुँ।”

अनिरुद्ध एहि वाक्य पर ध्यान देलनि।

अपराध-जालमे गोपनीयता केवल पुलिससँ बचबाक उपाय नहि।

ओ घरक भीतर सेहो दीवाल बनबैत अछि।

बाहर अपराधी कहैत अछि—“परिवारकेँ किछु नहि मालूम।”

भीतर परिवार कहैत अछि—“हमरा किछु नहि कहल गेल।”

दुनू वाक्य सुनयमे समान, मुदा नैतिक भार अलग।

रंजना अपन बेटाकेँ प्रणवेशक नजिक राखय लेल तैयार नहि भेलीह। ओ केवल किछु कपड़ा देलनि आ चलि गेलीह।

प्रणवेश दरबज्जा बन्द भेला बाद बिछौनापर बैसि रहल।

“सर,” ओ धीमे कहल, “जेल जाएब शायद एतेक कठिन नहि होयत।”

अनिरुद्ध पूछलनि—“किएक?”

“जेलमे कम-सँ-कम लोक पहिले सँ जानैत अछि जे अहाँ अपराधी छी कि आरोपी। घरमे लोक छह बरख बाद जानलक।”

अनिरुद्ध ओकर पीड़ा प्रति सहानुभूति रखैत छलाह, मुदा ओहि सहानुभूतिकेँ तथ्यसँ अलग राखल आवश्यक छल।

“अहाँ गवाह छी,” ओ कहलनि, “मुक्त नहि। जे काज केने छी, तकर हिसाब सेहो होयत।”

प्रणवेश मूड़ी डोललक।

“जानैत छी।”

फेर कने देर बाद—

“पहिले नहि जानैत छलहुँ।”



दिगन्त परियोजना समूहक कागच मैगाबय लेल विधिवत आदेश जारी भेल।

देवांशु रक्षित अपन वकील संग उपस्थित भेल।

ओकर चालमे हड़बड़ी नहि छल। सफेद कमीज, राखी रंगक कोट, आँखिपर पतला चश्मा।

“हम पूर्ण सहयोग करब,” ओ कहल।

अनिरुद्ध उत्तर देलनि—“हमर अपेक्षा सेहो वैह।”

वकील कागच पढ़ैत रहल।

देवांशु अनिरुद्धकें देखैत रहल।

“चौधरीजी, सरकारी परियोजनामे स्थानीय समन्वय आसान काज नहि। मजदूर चाही, जमीनक विवाद, पंचायत, विरोध, परिवहन, मौसम। बाहर बैसल लोक कागच देखैत अछि; जमीनपर हम सभ जोखिम उठबैत छी।”

“ई बात सम्भव अछि।”

देवांशु हलुक मुस्करायल।

“अहाँ प्रत्येक बातकें सम्भव कहैत छी?”

“जाबत तकर विपरीत प्रमाण नहि।”

“तखन हमरा अपराधी मानैत नहि?”

“एखन हम अहाँक कम्पनीक भूमिका जाँचि रहल छी।”

देवांशु कुर्सी पर पाछाँ झुकल।

“लोक सोचैत अछि पुलिस पहिने आदमी चुनैत अछि, फेर अपराध खोजैत अछि।”

अनिरुद्ध कहलनि—“कतेको बेर एहन होइत अछि। तँ हम प्रयास करैत छी जे अपराधक रेखा पहिने पढ़ी।”

“आ जँ रेखा हमरा दिस आयल?”

“तखन अहाँक नाम लिखल जाएत।”

“आ जँ नहि?”

“तखन मेटा देल जाएत।”

देवांशु एहि उत्तर पर किछु क्षण मौन रहल।

जाइत समय ओ केवल एतबा कहल—“नाम मेटाबयमे दुनिया बहुत कमजोर अछि, चौधरीजी।”

अनिरुद्ध बुझलनि—ई शिकायत सेहो हो सकैत अछि, चेतावनी सेहो।

प्रमाण बिना दुनूमे सँ कोनो एक चुनब उचित नहि।



दिगन्तक अभिलेख तीन कोठरी भरि गेल।

कागच, ई-पत्रक मुद्रित प्रति, करार, यात्रा-बिल, उपठेका, परामर्श शुल्क, सांस्कृतिक कार्यक्रम, वाहन भुगतान।

नैना आ मयंक दिन-राति सूची बनबैत रहलाह।

रोहितकेँ ई काज सभसँ खराब लगैत छल।

“अपराधी पकड़बाक लेल हम लेखा-परीक्षक बनि गेलहुँ।”

मयंक उत्तर देलनि—“आपराधिक पैसा बन्दूकसँ बेसी कागच पसिन करैत अछि।”

तीन दिन बाद नैना एक विचित्र बात देखलीह।

दिगन्तक अनेक ग्राहक अलग-अलग तिथि पर “क्षेत्रीय खेल प्रोत्साहन” शीर्षकसँ छोट-छोट रकम अम्बर क्रीड़ा मीडियाकेँ देने छलाह। रकम एतेक छोट जे एक-एक भुगतान पर कियो ध्यान नहि दैत।

पाँच लाखक परियोजनामे बीस हजार।

दू करोड़क परियोजनामे एक लाख।

कहीं पचास हजार।

कहीं सत्तर-पचहत्तर।

“ई छह प्रतिशतक भाग नहि,” मयंक कहलक।

“नहि,” नैना उत्तर देलनि। “ई ओकर बाद अछि।”

अनिरुद्ध पूछलनि—“अर्थ?”

“जतऽ प्रवाही आ लोकसेतुक भुगतान अछि, ओतऽ अम्बरक छोट भुगतान सेहो बेर-बेर अछि।

मानू मुख्य बाटसँ एक छोट धार अलग भऽ रहल हो।”

रोहित उत्साहित—“धनशोधन?”

“एखन नहि,” नैना तुरन्त रोकलीह। “कम्पनी सचमुच खेल करैत अछि। फोटो अछि, कार्यक्रम अछि। प्रश्न ई जे एक ठेकेदार एक जिला मे सड़क बना रहल अछि तऽ दोसर जिला मे निजी कबड्डी प्रतियोगिता प्रायोजित किएक करत?”

मयंक कहलक—“जनसंपर्क।”

“सम्भव।”

अनिरुद्ध बोर्ड पर अम्बरक नामक नीचे लिखलनि—

“वैध काज + असामान्य प्रायोजन।”

फेर रेखा खींचि देलनि—दिगन्तसँ अम्बर।

रेखा पातर छल।

मगर उपस्थित।



कन्हैया रजकक जीवन एहि बीच टूटि रहल छल।

ओही वाहन-दलाल जकर नाम कौशल महतो देने छल।

पुलिस ओकरा केवल पूछताछ लेल खोजने छल, मुदा ककरो माध्यमसँ समाचार बाहर चलि गेल—“सत्यप्रकाश दुर्घटनाक ट्रक खरीद-बिक्रीमे कन्हैया संदिग्ध।”

दू स्थानीय समाचार-पन्ना नाम छापि देलक।

कन्हैयाक मोबाइल बन्द।

घरपर लोक पहुँचि गाली देलक।

ओकर छोट परिवहन-दलालीक काज एक सप्ताहमे आधा भऽ गेल।

सभसँ पैघ चोट—ओकर बेटी नेहाक विवाह-वार्ता रोकि देल गेल।

लड़का-पक्ष कहल—“जाँच साफ भेला बाद देखब।”

कन्हैया पुलिसक सामने उपस्थित भेल तऽ क्रोधसँ काँपि रहल छल।

“अहाँ सभ कहलहुँ हम आरोपी?”

अनिरुद्ध—“नहि।”

“तखन अखबारमे नाम केना?”

“हम जाँच करब।”

“हमर बेटीकेँ के जवाब देत?”

अनिरुद्ध चुप।

“ट्रक हम केवल दलाली कऽ बेचने रही। कागच पूरा नहि भेल, ई गलती। मुदा दुर्घटना? आगि? हत्या? हमरा की मालूम!”

ओ टेबुलपर पर्ची फेंकलक।

“ई देखू। ट्रक जे आदमी किनलक, ओकरा हम केवल ‘लाला’ नामसँ चिन्हैत रही। भुगतान तीन हिस्सा मे आयल। एक हिस्सा नगद, दोसर बैंक, तेसर एक सहकारी ऋण-संस्थाक ड्राफ्ट।”

मयंक पर्ची उठौलक।

सहकारी संस्था—“जनविश्वास बहुउद्देशीय सहकारी समिति।”

नाम पहिने फाइलमे नहि छल।

कन्हैया उठि गेल।

दरबज्जा पर रुकि कहलक—“सर, गलत आदमी पकड़ब नहि, ई नीक बात अछि। मुदा गलत आदमीक नाम बाहर जाए देब सेहो आधा सजा थिक।”

अनिरुद्ध एहि वाक्यकेँ अपन नोटबुकमे लिखलनि।

साँझक बैठकमे ओ टीमक सामने स्पष्ट कहलनि—“कन्हैया विषय सूचना लीक के केलक, पता करू। जाँचक गोपनीयता अपराधी बचाबय लेल नहि, निर्दोष बचाबय लेल सेहो होइत अछि।”

रोहित माथ झुका लेलक।

लीक पुलिससँ भेल कि बाहरी कार्यालयसँ—एखन स्पष्ट नहि छल।

मगर नुकसान भऽ चुकल छल।

न्याय केवल अन्तिम निर्णय नहि।

मार्गमे ककरा कुचलल गेल, तकर हिसाब सेहो न्यायमे पड़ैत अछि।



जनविश्वास सहकारी समिति कागच पर लगभग निष्क्रिय संस्था छल।

ग्राम्य बचत, लघु ऋण, स्वयं-सहायता समूह।

मगर ड्राफ्ट जारी करबाक तिथि पर ओकर खातामे एक दिन लेल पैघ रकम आयल, दोसर दिन निकलि गेल।

रकमक स्रोत—दिगन्तक एक उपठेकेदार।

लाभार्थी—वाहन विक्रेता।

मयंक कहलनि—“ई सामान्य ऋण व्यवहार नहि।”

नैना जोड़लीह—“सहकारी खाताक उपयोग मध्यवर्ती पड़ाव जकाँ भेल।”

अनिरुद्ध पूछलनि—“कानूनी कारण?”

“हो सकैत। कर विवाद, उधार समायोजन, पुरान देनदारी।”

“तखन पहिने दस्तावेज।”

समितिक अध्यक्ष—बासुदेव मंडल—सत्तर वर्षक किसान।

ओ कार्यालयमे बैसल कागच पढ़ैत नहि छल; प्रबन्धक सभ सँभालैत।

“ई ड्राफ्ट?” अनिरुद्ध पूछलनि।

बासुदेव चश्मा चढ़ा कऽ देखलनि।

“हमर हस्ताक्षर अछि।”

“रकमक कारण?”

“प्रबन्धक कहने छल संस्थाक पुरान वाहन-ऋण समायोजन।”

“प्रबन्धक कतऽ?”

“तीन मास पहिने काज छोड़ि देलक।”

“नाम?”

“जितेन्द्र पाल।”

“ठिकाना?”

“पत्नी मायके गेल। ओ स्वयं कतऽ, नहि मालूम।”

रोहितक चेहरा बदलल।

अपराध-कथामे गायब आदमी तुरन्त आकर्षक लगैत अछि।

अनिरुद्ध ई आकर्षण बुझैत छलाह।

“गायब होयब दोष नहि,” ओ कहलनि। “पहिने ई जाँचू जे सचमुच गायब अछि कि केवल नौकरी छोड़ने अछि।”

तीन दिनमे ज्ञात भेल—जितेन्द्र पाल भागल नहि छल।

ओ वृक्क-रोगसँ पीड़ित, राजधानी नगरक अस्पतालमे उपचाराधीन।

रोहित निराश नहि, लज्जित भेल।

“हम फेर जल्दी निष्कर्ष पर पहुँचि गेलहुँ।”

अनिरुद्ध कहलक—“मोनक गति पुलिस गाड़ीसँ बेसी तेज होइत अछि। लगाम तँ जरूरी।”



जितेन्द्र पाल अस्पतालक बिछौनापर बहुत कमजोर छल।

ओ अपराधी जकाँ नहि, बीमार मनुष्य जकाँ साँस लैत छल।

अनिरुद्ध प्रश्न सीमित रखलनि।

“जनविश्वास समिति मे दिगन्त-संबद्ध भुगतान किएक?”

जितेन्द्र आँखि मूनि कऽ किछु क्षण सोचलक।

“हमरा कहल गेल छल संस्थाक पुरान ऋण पोर्टफोलियो खरीदल जा रहल अछि।”

“के कहल?”

“एक चार्टर्ड लेखा सलाहकारक आदमी। नाम शायद सुरजीत।”

“दस्तावेज?”

“रहय।”

“रकम वाहन खरीददार धरि किएक गेल?”

जितेन्द्रक भौह सिकुड़ल।

“ई बात हमरा बादमे बुझायल। हम हस्ताक्षरक पन्ना तैयार केने रही, अंतिम लाभार्थी बदलल गेल।”

“के बदललक?”

“हम नहि जनैत।”

रोहित प्रश्न करऽ चाहैत छल, अनिरुद्ध रोकलनि।

बीमार शरीर पर सत्य निकालबाक नाम पर अत्याचार करब आसान छल।

ओ केवल कहलनि—“ठीक भेलापर फेर बात करब।”

जितेन्द्र हलुक हँसल।

“ठीक?”

ओ अपन सुकायल हाथ देखलक।

“डॉक्टर ई शब्द कम बोलैत छथि।”

कक्ष बाहर जितेन्द्रक पत्नी दू बच्चासँ बैसल छलीह।

अनिरुद्ध बाहर निकलैत बुझलनि—अपराध-जालमे जे नाम कागच पर एक बिन्दु होइत अछि, ओकर पाछाँ पूरा घर होइत अछि।

किछु सप्ताह बाद जितेन्द्र पाल मरि गेल।

ओकर मृत्यु बीमारीसँ भेल।

कियो ओकरा मारल नहि।

तैयो जाँचक फाइलमे ओकर नामक आगाँ छोट कोष्ठक बनल—“मृत।”

अनिरुद्धकेँ ई कोष्ठक असह्य लागल।

मनुष्य जीवन भरि वाक्य होइत अछि।

फाइल ओकरा एक शब्द बना दैत अछि।



प्रणवेश द्वारा बताओल एक बात अन्ततः स्वतन्त्र प्रमाणसँ पुष्ट भेल।

दिगन्तक भीतर “समायोजन सूची” बनैत छल—कौन ठेकेदार कतेक सहयोगी, के हठी, के भुगतान करैत, के निविदा वापस लैत, के राजनीतिक पहुँच रखैत।

कम्पनीक आधिकारिक सर्वर पर नहि।

एक कर्मचारी अपन निजी मेघ-संग्रहमे पुरान प्रति छोड़ि देने छल, जकर बैकअप नैना विधिवत सहमति आ आदेशक बाद सुरक्षित कएलनि।

सूचीमे अपराधक स्पष्ट आदेश नहि छल।

मगर संक्षिप्त टिप्पणी भयावह छल—

“मृदु।”

“दबाव आवश्यक।”

“परिवार-संवेदनशील।”

“मीडिया-भय।”

“राजनीतिक।”

“कठोर।”

सत्यप्रकाश कर्णक नामक आगाँ लिखल छल—

“कठोर। परिवार-संवेदनशील नहि। अलग उपाय।”

कोठरीमे मौन छा गेल।

रोहित पहिल बेर किछु नहि बजलक।

मृणालिनीक चेहरा सबकें मोन पड़ल।

ईशान।

धनेश्वरी।

“अलग उपाय”क अर्थ की?

अनिरुद्ध बोर्डपर प्रश्न लिखलनि।

मयंक कहलक—“ई हत्या हो सकैत।”

“हो सकैत।”

नैना—“व्यावसायिक रोक, भुगतान रोकब, करार तोड़ब सेहो।”

“ठीक।”

रोहित असहज—“एतबा सावधानी कतेक दिन?”

अनिरुद्ध ओकरा देखलनि।

“जाबत ‘अलग उपाय’क अर्थ हम नहि, प्रमाण बताए।”



सत्यप्रकाशक फोन अभिलेख फेर खोलल गेल।

अम्बर क्रीड़ा मीडिया पर दू कॉल।

पहिल—सात मिनट।

दोसर—एकोनइस मिनट।

दू कॉलक बीच पाँच दिन।

कॉलक बाद सत्यप्रकाश अपन बैंकमे एक चेक रोकने छल। लाभार्थी—अम्बर क्रीड़ा मीडिया।

रकम—एक लाख पच्चीस हजार।

मृणालिनी पुछल गेलीह।

“एहि भुगतान विषय किछु मोन?”

ओ बहुत देर सोचलीह।

“एक दिन ओ कहने छलाह—‘खेलक नामपर सेहो हिस्सा माँगैत अछि।’ हम बुझने रही विद्यालयक दान।”

“शब्द ठीक मोन अछि?”

“ठीक-ठीक नहि कहि सकैत छी। अर्थ एहन छल।”

अनिरुद्ध एहि बयानकेँ वैह रूपमे लिखबौलनि—“साक्षी शब्दशः निश्चित नहि; आशय स्मृत।”

मृणालिनी पूछलीह—“ई एतेक जरूरी?”

“हँ। अदालतमे जे मोन नहि, ओकरा मोन अछि कहब गलत।”

“जँ एहि कारण अपराधी छूटि जाए?”

अनिरुद्ध शांत—“झूठ साक्ष्यसँ दण्ड भेटल न्याय नहि।”

मृणालिनी चेहरा फेरि लेलनि।

“हमरा एखन न्याय बहुत कठोर वस्तु लगैत अछि।”

अनिरुद्ध उत्तर नहि देलनि।

कतेको बेर न्याय पीड़ितसँ सेहो धैर्य माँगैत अछि।

ई धैर्य माँगब स्वयं अन्याय सन लगैत अछि।



अम्बरक संस्थापकक नाम छल—विहान सारंग।

एक समय जिला-स्तरीय क्रिकेट खेलैत छल। चोटक बाद खेल छोड़ि विज्ञापनक काज शुरू केलक।

विहान अनिरुद्धक सामने सहज रहबाक प्रयास करैत छल।

“सत्यप्रकाशजी हमरा प्रायोजन देबाक छलाह। बादमे रोकि देलनि।”

“किएक?”

“कहलनि बजट नहि।”

“दू बेर लम्बा बात?”

“प्रायोजनक शर्त।”

“दिगन्त?”

“हमर ग्राहक।”

“देवांशु रक्षित?”

“चिन्हैत छी।”

“कतेक निकट?”

“व्यावसायिक।”

“प्रणवेश पाठक?”

विहान एक क्षण रुकल।

“चिन्हैत।”

अनिरुद्ध नोट करैत रहल।

“अम्बर भविष्य मे की करय चाहैत अछि?”

विहानक आँखि पहिल बेर चमकल।

“खेलक डिजिटल मंच। ग्रामीण प्रतियोगिता, खिलाड़ी प्रोफाइल, प्रत्यक्ष परिणाम। लोक अपन पसिनक टोली बनायत, अंक पायत—मनोरंजन।”

“पाइ?”

“एखन नहि।”

“आगाँ?”

“कानून जतेक अनुमति देत।”

“दाँव?”

विहान तुरन्त उत्तर देलक—“नहि।”

नैना कक्षक कोनमे बैसल छलीह।

ओ नोट केलनि—पहिल कर्मचारी जकाँ विहान सेहो प्रश्नक शब्द पहिनेसँ जनैत छल।

मगर ई व्यवसायिक ज्ञान हो सकैत अछि।

अनिरुद्ध अन्तिम प्रश्न पूछलनि—“सत्यप्रकाश भुगतान किएक रोकलनि?”

“बजट।”

“निश्चय?”

“हँ।”

अनिरुद्ध कोई प्रतिवाद नहि केलनि।

कक्ष छोड़लाक बाद नैना कहलीह—“ओ झूठ बाजल?”

अनिरुद्ध—“हमरा नहि मालूम।”

“मुदा?”

“मुदा ओकर ‘हँ’ मृणालिनीक ‘शायद’ सँ कमजोर हो सकैत अछि, यदि कागच दोसर बात कहय।”

मयंक मुस्कुरायल—“शब्द-प्रमाण फेर।”

रोहित बाहर सँ कहल—“एक दिन अहाँ सभ अपराधीकेँ दर्शन पढ़ा कऽ आत्मसमर्पण करा देब।”



दिगन्त विरुद्ध पहिल कानूनी कार्रवाई हत्या लेल नहि, वित्तीय अनियमितता लेल भेल।

तीन संदिग्ध परामर्श भुगतान, फर्जी कार्यक्रम, सहकारी खाताक दुरुपयोग, निविदा-पश्चात समायोजन—एहि आधारपर किछु खाताक लेनदेन अस्थायी रूपेँ रोकल गेल।

समाचार बाहर आयल।

देवांशु रक्षित प्रेसक सामने ठाढ़ भेल।

“हम विकासक काज करैत छी। प्रतिस्पर्धी व्यावसायिक समूह झूठ आरोप लगबैत अछि। जाँचक स्वागत अछि।”

ओ पुलिसक नाम नहि लेलक।

सरकारक आलोचना नहि केलक।

सभ्य भाषा।

ओहि राति सोशल मीडिया पर अनिरुद्ध चौधरी विषय अनजान खातासँ पोस्ट शुरू भेल—

“ठेकेदार विरोधी अधिकारी।”

“निवेशक भगाबयवला।”

“एक समुदाय विशेषक कम्पनी निशाना।”

“राजनीतिक आदेश पर कार्रवाई।”

किछु पोस्टमे हुनकर परिवारक पुरान फोटो।

अनिरुद्धक पत्नी फोन कऽ पुछलीह—“हमर फोटो ई लोक कतऽ सँ पेलक?”

अनिरुद्ध उत्तर नहि देलनि।

“बच्चाक विद्यालयक नाम सेहो लिखल अछि।”

ओहि क्षण अनिरुद्धक भीतर जाँचकर्ता नहि, पिता जागल।

क्रोध।

भय।

तुरन्त प्रतिशोधक इच्छा।

फेर ओ स्वयंकेँ रोकलनि।

जकरा विरुद्ध ओ महीनासँ लोककेँ चेतबैत रहल—“पहिने निष्कर्ष नहि”—वैह नियम आब ओकर अपन घरमे परीक्षा लेबैत छल।

पोस्ट दिगन्त करौलक—ई सिद्ध नहि।

कियो समर्थक।

कियो विरोधी।

कियो केवल अफवाहबाज।

ओ परिवारक सुरक्षा बढ़बौलनि, मुदा दिगन्त विरुद्ध एहि पोस्टकेँ प्रमाण नहि बनौलनि।

राति घर नहि गेलाह।

कार्यालयक अन्हार कोठरीमे अकेले बैसल रहलाह।

मयंक देर राति चाय अनलक।

“कठिन अछि?”

अनिरुद्ध हँसल नहि।

“जखन नियम दोसर पर लागू करैत छी, दर्शन। अपन बच्चा पर खतरा देखिते वैह नियम बोझ।”

मयंक चुप रहलाह।

“तँ न्याय व्यक्ति नहि, संस्था पर टिकबाक चाही,” ओ अन्ततः कहलनि। “व्यक्ति कखनो न कखनो टूटत।”

अनिरुद्ध खिड़की बाहर देखलनि।

“आ संस्था?”

“ओ व्यक्ति सभ मिलि बनबैत अछि। तँ कठिन।”



प्रणवेशकें अदालतक समक्ष बयान लेल आनबाक दिन मौसम खराब छल।

बरखा।

कचहरीक बरामदा भीड़सँ भरल।

सुरक्षा बढ़ाओल गेल।

ओकर गवाही तत्काल सार्वजनिक नहि भेल, मुदा अपराध-जगतमे खबर पुगि गेल—दिगन्तक भीतरक आदमी बोलि रहल अछि।

साँझ ओकर पत्नी रंजना फेर फोन केलनि।

“बेटा बुखारमे अछि,” ओ कहलीह। “ओ अहाँसँ बात करय चाहैत अछि।”

प्रणवेश फोन कान पर लगौलक।

दोसर कात आठ वर्षक स्वर—“बाबा, अहाँ कखन आबब?”

प्रणवेश उत्तर नहि दऽ सकल।

“बाबा?”

“जल्दी।”

झूठ।

ओ जानैत छल जल्दी सम्भव नहि।

गवाही, जाँच, सम्भावित अभियोजन—ओ स्वयं सेहो आरोपी बनि सकैत छल।

बालक पूछलक—“मम्मी कहैत अछि अहाँ खराब लोकक संग काज केलहुँ?”

प्रणवेशक चेहरा बुझा गेल।

“हम गलती केलहुँ।”

“अहाँ खराब छी?”

एहि प्रश्न पर ओकर आँखिसँ आँसू निकलल।

“हम तोहर बाबा छी।”

बालकक लेल ई उत्तर पर्याप्त छल कि नहि—कियो नहि जानल।

फोन कटि गेल।

प्रणवेश बहुत देर मौन रहल।

त्रासदीक एक रूप ई सेहो अछि—कानून अपराधक वर्गीकरण करैत अछि; बच्चा केवल आदमीक।



दिगन्तक एक पुरान वाहन-समन्वयक अचानक स्वयं उपस्थित भेल—राजन चौरसिया।

ओ कहलक सत्यप्रकाशक दुर्घटनाक सप्ताहमे एक भारी वाहनक व्यवस्था ओकर मार्फत भेल छल।

“ककर लेल?”

“दिगन्तक एक उपठेकेदारक नाम पर।”

“चालक?”

“अनिल महतो।”

“एखन कतऽ?”

राजन चुप।

“कहू।”

“मरि गेल।”

“कखन?”

“दुर्घटनाक लगभग दू मास बाद। नदीक पार नाव पलटल। तीन लोक डूबल।”

रोहित कुर्सी सँ लगभग उठि गेल।

“सत्यप्रकाशक ट्रक वैह?”

“हम नहि जनैत।”

“अनिल कहने छल?”

“एक बेर नशामे कहने—‘हमरा जे काज देल गेल, ओ सड़कक नहि छल।’”

कक्ष भारी भऽ गेल।

अनिरुद्ध प्रश्न करैत रहलाह।

“शब्द ठीक?”

“एतबे मोन।”

“ककरा सामने?”

“हम आ दू चालक।”

“दू चालक के?”

एक जीवित। एक परदेश।

जीवित चालक भेटल।

ओ अनिलक एहन कथन मोन नहि करैत।

“ओ बहुत पीबैत छल। किछु-किछु बाजैत।”

राजनक बयान अकेला पड़ि गेल।

अनिल मरि चुकल।

वाहन गायब।

प्रत्यक्ष साक्ष्य नहि।

हत्या जकाँ देखाइत रेखा फेर कुहेसमे घुसि गेल।

मृणालिनीकेँ जखन ई बताओल गेल तऽ ओ केवल पुछलीह—“तखन बाबूक मृत्यु फेर दुर्घटना?”

अनिरुद्ध कहलनि—“हम एखन निश्चित नहि।”

ओ हँसलीह।

कठोर, थाकल हँसी।

“अहाँक ‘निश्चित नहि’ हमरा जीवनक सभसँ लम्बा वाक्य भऽ गेल अछि।”



किछु मास बीतल।

दिगन्त पर आर्थिक अपराधक मामला मजबूत होइत गेल।

कतेको ठेकेदार बयान देलक—निविदा वापस लेबाक दबाव, प्रतिशत, नकली सेवा।

कतेको चुप रहल।

कतेको कहल—“हम स्वेच्छासँ भुगतान केने रही।”

कतेको अपन पुरान पर्ची जरा चुकल छल।

कतेको पर्ची बचल, मुदा ओकर अर्थ विवादित।

देवांशु रक्षितक विरुद्ध प्रत्यक्ष हत्या-साक्ष्य एखनहुँ नहि।

प्रणवेश ओकरा आर्थिक जालक केन्द्र कहैत, मुदा “अलग उपाय”क आदेश देवांशु देने—ई ओ नहि सुनने छल।

अभियोजन-दलमे मतभेद भेल।

कियो कहलक—“सत्यप्रकाशक मृत्यु सेहो षड्यंत्रमे जोड़ू।”

अनिरुद्ध विरोध केलनि।

“संशय गहिर अछि। प्रमाण अधूरा।”

एक वरिष्ठ विधि-अधिकारी कहलक—“जूरी नहि, न्यायाधीश देखत।”

“मुदा आरोप हम लगायब।”

“जाल पूरा देखू।”

“पूरा जाल देखबाक इच्छा हमर प्रमाणक खाली ठाम भरि नहि सकैत।”

बैठक तनावपूर्ण समाप्त भेल।

बाहर रोहित पुछलक—“सर, जँ हम हत्या जोड़ि दैतहुँ, दबाव बढ़ित।”

“होइत।”

“देवांशु टूटि सकैत।”

“सम्भव।”

“तखन किएक नहि?”

अनिरुद्ध थमि गेलाह।

“कानून दबाव बनाबय लेल आरोप नहि लगबैत। जँ हम एहन करी, तखन अपराधी आ राज्यक विधिमे अन्तर कम भऽ जाएत।”

रोहित किछु नहि बजलक।

ई उत्तर आदर्शवादी लागैत छल।

मगर त्रासदीक एक कारण ई सेहो होइत अछि—सही नियम तात्कालिक परिणाम नहि दैत।



देवांशु रक्षित अन्ततः आर्थिक षड्यंत्र, दस्तावेजी छल, उगाही आ निविदा-प्रभावित करबाक आरोपमे गिरफ्तार भेल।

गिरफ्तारी कार्यालयमे भेल।

न गोली।

न दौड़।

न नाटकीय घेराबन्दी।

ओ अपन वकीलकें फोन केलक, घड़ी उतारि सहायककें देलक, फेर अनिरुद्ध दिस देखलक।

“अन्ततः नाम लिखि देलहुँ।”

अनिरुद्ध—“आर्थिक मामलामे।”

देवांशु मुस्करायल।

“सत्यप्रकाश?”

“जाँच जारी।”

“अर्थात् अहाँ हमरे दोषी नहि मानैत?”

“हमरा मानब वा नहि मानब अप्रासंगिक। जे सिद्ध होयत, वैह।”

देवांशु किछु क्षण ओकरा देखैत रहल।

“एहन लोक राज्य लेल नीक होइत अछि कि खतरनाक, बुझि नहि पबैत छी।”

अनिरुद्ध उत्तर नहि देलनि।

देवांशु पुलिस वाहनमे बैसि गेल।

शहरमे खबर फैलल—“बड़का आदमी पकड़ायल।”

किछु लोक खुश।

किछु भयभीत।

किछु फोन तुरन्त बन्द।

किछु फाइल रातिमे गायब।

किछु पैसा एक खातासँ दोसर खातामे चलल।

आ अम्बर क्रीड़ा मीडियाक एक छोट सहायक कम्पनी—“अम्बर इंटरैक्टिव”—ओहि सप्ताह पंजीकृत भेल।

नैना ई सूचना देखलीह।

ओ केवल तारीख घेरा देलनि।

कतेको परिवर्तन संयोग होइत अछि।

कतेको परिवर्तन भयक प्रतिक्रिया।

एखन निर्णय जल्दी छल।



देवांशुक गिरफ्तारीक बाद सत्यप्रकाशक घरमे पहिल बेर लोक मिठाई लऽ कऽ आयल।

मृणालिनी डिब्बा वापस कऽ देलनि।

“अभी किछु सिद्ध नहि।”

पड़ोसी कहलक—“मुख्य आदमी जेलमे अछि।”

“हमर पति किएक मरल, ई अदालत कहलक?”

“नहि।”

“तखन मिठाई किएक?”

डिब्बा वापस गेल।

ईशान माएकेँ देखैत रहल।

राति ओ पुछलक—“अहाँ खुश नहि?”

“एक आदमी जेल गेलासँ तोहर बाबू वापस नहि।”

“मगर न्याय शुरू?”

मृणालिनी बहुत देर बाद कहलनि—“शायद।”

ईशान मुस्करायल नहि।

ओ “शायद” शब्द सेहो सीखि चुकल छल।



मामला अदालतमे चलऽ लागल।

सैकड़ों पृष्ठक लेखा-अभिलेख, ठेकेदारक बयान, फर्जी कार्यक्रमक प्रमाण, सहकारी खाताक प्रवाह, प्रणवेशक स्वीकारोक्ति।

बचाव-पक्षक मुख्य तर्क स्पष्ट छल—

“व्यापारिक परामर्शकें उगाही कहि देल गेल।”

“प्रतिस्पर्धी कम्पनी सभ प्रतिशोध लेल बयान देलक।”

“प्रणवेश अपन अपराध कम कराबय लेल मालिक पर दोष डालि रहल।”

“फर्जी कार्यक्रम प्रशासनिक लापरवाही हो सकैत।”

प्रत्येक तर्क पूर्ण झूठ नहि छल।

तैं कठिन छल।

न्यायालयक असली काम एहेन होइत अछि—जतऽ एक पक्षक सभ बात झूठ आ दोसरक सभ बात सत्य नहि हो।

मयंक एक दिन ईशानकें, जे आब किशोरावस्थाक अन्तिम वर्षमे छल, समझौलक—

“न्याय-दर्शनमे हेत्वाभास केवल मूर्खतापूर्ण तर्क नहि। कतेको बेर कारण सच लगैत अछि, मुदा निष्कर्ष धरि पहुँचबाक योग्य नहि होइत।”

ईशान पूछलक—“जेना?”

“जेना—देवांशु खराब आर्थिक अपराधी सिद्ध भेल, तैं ओ तोहर बाबूकें सेहो मरौलक। ई सम्भव, मुदा स्वतः सिद्ध नहि।”

ईशानक चेहरा कठोर भेल।

“हमरा ई बात पसिन नहि।”

“सत्य हमर पसिन अनुसार नहि बदलैत।”

“आ न्याय?”

“ओहो नहि बदलबाक चाही।”

ईशान खिड़की बाहर देखलक।

“तखन कतेको सत्य बिना दण्ड रहि जाएत।”

मयंक दीर्घ साँस लेलनि।

“हाँ।”

ईशान पहिल बेर बुझलक—न्याय-दर्शन विजयक शास्त्र नहि।

कतेको बेर ई स्वीकारक शास्त्र अछि—जे जे सिद्ध नहि, ओकरा इच्छा मात्रसँ सत्य घोषित नहि
कएल जा सकैत।

एहि स्वीकारमे गहिर त्रासदी छल।



आर्थिक मामलामे देवांशु दोषी सिद्ध भेल।

निविदा-प्रतिस्पर्धा बाधित करब, भयक माध्यमसँ भुगतान, जाली सेवा-अभिलेख, वित्तीय छल—
अदालत एहि बिन्दुसभपर अभियोजनक प्रमाण स्वीकार केलक।

किछु सह-अभियुक्त दोषमुक्त।

किछु पर कम अपराध सिद्ध।

प्रणवेश स्वयं दण्डसँ मुक्त नहि भेल; सहयोगक कारण दण्ड कम भेल।

देवांशुकै कारावास आ आर्थिक दण्ड भेटल।

मगर सत्यप्रकाश कर्णक मृत्यु—अलग जाँचमे अनिर्णीत।

न हत्या सिद्ध।

न दुर्घटनाक साधारणता पूर्ण विश्वसनीय।

फाइल पर लिखल गेल—“अतिरिक्त साक्ष्य प्राप्त होयबापर पुनः परीक्षण।”

मृणालिनी एहि पाँति पढ़लीह।

ओ कागच मोड़ि देलीह।

“इतबे?”

अनिरुद्ध सामने बैसल छलाह।

“अखन इतबे।”

“जे आदमी सभ हमरा पति पर दबाव देलक, ओ दोषी। जे जाल ओकरा घेरने छल, ओ सिद्ध।
मुदा ओकर मृत्यु?”

“सिद्ध नहि।”

“तखन हम की मानू?”

अनिरुद्धक लग एहि प्रश्नक उत्तर नहि छल।

मृणालिनी उठि गेलीह।

दरबज्जा पर पहुँचि फेर घुरलीह।

“चौधरीजी, अहाँ गलत आरोप नहि लगौलहुँ। शायद सही केलहुँ। मुदा ई सही बात हमरा कोनो शान्ति नहि दैत।”

अनिरुद्ध मूड़ी झुका लेलनि।

“हम बुझैत छी।”

“नहि। अहाँ बुझि नहि सकैत छी।”

ओ चलि गेलीह।

अनिरुद्ध स्वीकार केलनि—ओ सही छलीह।

कानूनक सही प्रक्रिया पीड़ितक शोक अनुभव नहि करैत।

ओ केवल ओकरा अपमानित नहि करबाक प्रयास करैत अछि।



कन्हैया रजकक नाम औपचारिक रूपेँ साफ भेल।

पुलिस लिखित पत्र देलक—तकर विरुद्ध कोनो आपराधिक आधार नहि।

मगर नेहाक पुरान विवाह-वार्ता वापस नहि आयल।

कन्हैयाक व्यवसाय सेहो आधा रहि गेल।

ओ पत्र फ्रेम कऽ दोकानमे नहि लगौलक।

दरजामे रखि देलक।

“साफ नामक प्रमाण कियो पूछैत नहि,” ओ रोहितसँ कहलक। “दागक खबर सभ पढ़ैत अछि।”

रोहित एहि केसक बाद समाचार-पत्रक लोकसँ बात करबाक ढंग बदललक।

एक निर्दोष आदमी ओकरा कानूनक ओ पाठ सिखा देने छल जे प्रशिक्षण केन्द्र नहि सिखा सकल।



मोहन पासवानक परिवारकेँ क्षतिपूर्ति भेटल।

सरोजिनी छोट दोकान खोललीह।

बेटी विद्यालय छोड़ि किछु मास माँक संग बैसली, फेर शिक्षकक दबाव पर वापस गेलीह।

फाइलमे ई “पुनर्वास” छल।

सरोजिनीक जीवनमे ई केवल अभावक नब व्यवस्था।

ओ एक बेर अनिरुद्धकेँ कहलीह—

“सरकार पैसा देलक। ठीक। मुदा बच्चा राति एखनहुँ दरबज्जा खुलल सुनिते बुझैत अछि बाबू आयल।”

अनिरुद्ध फेर कोनो उत्तर नहि देलनि।

त्रासदी बहुत बेर न्यायालयक निर्णयक बाद शुरू होइत अछि।



वर्ष बीतल।

दिगन्तक नाम धीरे-धीरे बाजारसँ गायब भेल।

किछु पुरान कर्मचारी दोसर कम्पनीमे।

किछु राजनीति दिस।

किछु छोट व्यापार।

प्रवाही बन्द।

लोकसेतु नाम बदलि सामाजिक-संचार संस्था बनल।

अम्बर क्रीड़ा मीडिया, उलट, बढ़ैत गेल।

देवांशुक गिरफ्तारीक समय जकर छोट डिजिटल योजना छल, ओ आब राज्यक अनेक जिलामे स्थानीय खेलक प्रत्यक्ष परिणाम, विज्ञापन, खेल-समुदाय आ प्रतियोगिता-पंजीकरण चलबैत छल।

विहान सारंग सार्वजनिक रूपेँ सम्मानित उद्यमी बनल।

ओ स्कूलसभमे खेल-किट दैत।

युवककेँ रोजगार।

छोट क्लबकेँ प्रायोजन।

कागच पर दिगन्तसँ ओकर पुरान आर्थिक सम्बन्ध समाप्त।

अनिरुद्धक जाँच सेहो समाप्तप्राय।

नैना एक दिन पुरान फाइल बन्द करैत अम्बरक पन्ना देखलीह।

“ई नाम छोड़ि दी?”

अनिरुद्ध पुछलनि—“कोनो अपराध?”

“नहि।”

“तखन छोड़ि दिअ।”

नैना फाइल बन्द केलनि।

ई निर्णय विधिसम्मत छल।

आ भविष्यक दृष्टिसँ अपूर्ण।

मगर मनुष्य भविष्यक प्रमाण पर वर्तमानमे कार्रवाई नहि करि सकैत।

एहि सीमाक नाम सेहो न्याय अछि।



गढ़ नारिकेलमे ईशान कॉलेज जाएबाक उमेरक भऽ गेल।

ओ पिता जकाँ निर्माण व्यवसाय नहि चुनलक।

ओ गणित पढ़लक।

फेर आँकड़ा-विज्ञान।

मृणालिनी पहिने डरलीह—“संगणकमे दिन-राति रहब?”

ईशान हँसल—“संगणक साँप नहि, माँ।”

धनेश्वरी बरामदासँ कहलीह—“यन्त्र साँप नहि। मुदा साँप यन्त्रमे घुसि सकैत अछि।”

ईशान दादीक लोककथा पर मुस्करायल।

ओ नहि जानैत छल जे किछु वर्ष बाद ओकर अध्ययन, ओकर पिता क मृत्यु, अम्बरक छोट पर्ची,
आ कमला-बलानक ओ पुरान बिज्जी—सभ एक्के कथा मे फेर भेटत।

कथा एखन केवल पानि बदलि रहल छल।



अम्बरक नब अनुप्रयोग सार्वजनिक भेल।

पहिने केवल खेल-परिणाम।

फेर “अपन टोली बनाउ।”

खिलाड़ी चुनू।

प्रदर्शन अनुसार अंक।

मासिक विजेता लेल प्रायोजित पुरस्कार।

कानूनी सलाह लेल गेल। नियम लिखल गेल—“कौशल-आधारित प्रतियोगिता।”

बहुत लोक लेल ई मनोरंजन छल।

छोट शहरक युवक राति-राति खिलाड़ी आँकड़ा देखैत।

चाय-दोकानपर अंकक चर्चा।

स्थानीय क्लब अपन प्रतियोगिता अम्बर पर चढ़बय लागल।

किछु महीनामे लाखों पंजीकरण।

कम्पनी लेल ई सफलता।

मगर सफलता संग नब प्रश्न आयल—पुरस्कारक पैसा कोना आएत? उपयोगकर्ता शुल्क हो कि
नहि? कौन राज्यक कानून अलग? प्रचारमे “जीतू” शब्द कतेक दूर धरि जाय?

विहान सारंगक नब वित्त प्रमुख कहलक—“हम सीधा दाँव नहि लेब। प्रवेश शुल्क, प्रतियोगिता, प्रोत्साहन—सभ वैध संरचना भीतर।”

एक पुरान सहकर्मी पूछलक—“लोक पैसा जीतबाक लेल खेलेत?”

विहान उत्तर देलक—“लोक मनोरंजन लेल आएत। पैसा केवल आकर्षण।”

ई वाक्य सुनयमे सरल छल।

अपराधी नहि।

कानून-विरुद्ध नहि।

मगर कतेको त्रासदीक आरम्भ एहन वाक्यसँ होइत अछि जे पहिल दिन पूर्ण सत्य लगैत अछि।



अम्बर इंटरैक्टिवक वित्तीय निवेशकसभमे एक नब संस्था आयल—“उत्तरायण डिजिटल होल्डिङ्स।”

मालिकाना कई परतमे।

कागच पर पूँजी वैध।

ऑडिट नियमित।

नैना वर्मा एहि समय दोसर विभागमे चलि गेलीह। अनिरुद्धक संयुक्त कक्ष भंग भऽ चुकल छल।

पुरान फाइल अभिलेखागारमे।

कियो एहि निवेशककेँ दिगन्तक पुरान जालसँ जोड़बाक कारण नहि देखलक।

कारण प्रत्यक्ष सम्बन्ध नहि छल।

मगर उत्तरायणक एक निदेशक पहिने लोकसेतु जनसंपर्कक लघु हिस्सेदार रहल छल।

ओ हिस्सा पाँच वर्ष पहिने बेचि देने छल।

कानूनक नजरिमे संबंध समाप्त।

इतिहासक नजरिमे धागा बचल।

गोहि एक घाट छोड़ि दोसर घाट पर उतरि चुकल छल।

एहि बेर ओकर देह पर कादो नहि—चमकैत अनुप्रयोगक चिन्ह छल।



एक बरख बाद, राजधानी नगरक विश्वविद्यालय छात्रावासमे रातिक साढ़े बारह बजे एक छात्र अपन मित्रकेँ कहल—

“बस पाँच सौ लगाबय छी। हारल तऽ छोड़ि देब।”

मित्र हँसल—“ई जुआ नहि रे, खेल-प्रतियोगिता अछि।”

मोबाइलक पर्दा चमकि रहल छल।

राशि आधिकारिक प्रतियोगिता शुल्कक रूपमे गेल।

अगिला दिन छात्र दू हजार जीतलक।

तेसर दिन पाँच हजार हारल।

सप्ताह बाद मित्रसँ उधार माँगलक।

कम्पनीक नियममे कतहु नहि लिखल छल—“उधार लऽ कऽ खेलू।”

कियो ओकरा बाध्य नहि केलक।

मगर अनुप्रयोग ओकरा प्रत्येक हारक बाद नब प्रतियोगिता देखबैत—“अगिला अवसर।”

एक स्क्रीन।

एक आशा।

एक छोट शुल्क।

फेर दोसर।

छात्रक नाम छल—अभिषेक झा।

ओ एहि कथाक मुख्य अपराधी नहि होयत।

ओ केवल पहिल एहन चेहरा छल जकरा माध्यमसँ डिजिटल पानिक वास्तविक ताप पाठक महसूस करय लागल।

राति ओकर माँ गढ़ नारिकेल नजिकक गाममे फोन केलनि—“पढ़ाई ठीक चलि रहल?”

अभिषेक कहल—“हाँ।”

झूठ बहुत छोट छल।

मगर एहि बेर जाल घरक बाहर नहि, हथेलीक भीतर छल।



कमला-बलानक किनार पर धनेश्वरी बहुत बूढ़ भऽ गेल छलीह।

ईशान छुट्टीमे घर आयल तऽ ओ हुनका संग साँझ टहलय गेल।

दूर झाड़ीमे एक बिज्जी उछलि कऽ पथ पार केलक।

धनेश्वरीक आँखि एखन कमजोर, मुदा ओ पहचानि लेलनि।

“देखलें?”

ईशान हँसल—“अहाँक बिज्जी एखनहुँ पहरा दैत अछि?”

“हमर नहि। अपन।”

किछु दूर पानिमे गोहिक माथ क्षण भरि उठल, फेर डूबल।

धनेश्वरी कहलीह—“गोहि पानिमे अछि तऽ बिज्जी ओकरा पकड़ि नहि सकैत।”

ईशान पूछलक—“तखन कथा गलत?”

“नहि। बिज्जी गोहिसँ लड़य लेल नहि। बिज्जी साँपकेँ घरमे घुसय नहि दैत। गोहि लेल घाटवला चाही।”

“घाटवला के?”

धनेश्वरी ईशान दिस देखलीह।

“जे पानि पढ़य।”

ईशान एहि उत्तर पर हँसल नहि।

दूर ओकर मोबाइल कम्पित भेल।

एक नब नौकरीक ई-पत्र छल—राजधानी नगरक वित्तीय आँकड़ा-विश्लेषण कम्पनीमे।

ओ नहि जानैत छल जे एहि नौकरीक पहिल पैघ ग्राहक अम्बर इंटरैक्टिव होयत।

नहि जानैत छल जे पिता क पुरान मृत्यु-जाँचमे लिखल एक छोट नाम ओकर सामने फेर जीवित होयत।

नहि जानैत छल जे पानि पढ़बाक जे कौशल ओ पेशा मानि रहल अछि, वैह एक दिन ओकर परिवारक अधूरा शोक, हजारों अनजान बैंक-खाता, ऑनलाइन जुआ, धनशोधन आ राष्ट्रीय जाँचक बीच पुल बनत।

धनेश्वरी केवल नदी देखैत रहलीह।

“किनार छोड़य नहि,” ओ बहुत धीमे कहलनि।

ईशान सुनलक कि नहि—हवा तेज छल।

मगर बिज्जीक छोट पदचिह्न कादोमे साफ छल।

पहरा आब पुरान अपराध पर नहि, नब पानि पर लगबाक छल।



ईशानक नब कार्यालय राजधानी नगरक काँचवला व्यावसायिक भवनमे छल।

नाम—“सूत्रलेख वित्तीय विश्लेषण।”

कम्पनी बैंक, बीमा-संस्था, डिजिटल व्यवसाय आ भुगतान-मंचसभक आँकड़ा जाँचि जोखिमक संकेत खोजैत छल। ईशान लेल ई नौकरी आकर्षक छल। संख्या ओकरा बचपनसँ पसिन। संख्या न गारि दैत, न धमकी। ओ जे अछि, से रहैत।

मुदा नौकरीक तेसर सप्ताह ओकरा बुझायल—संख्या स्वयं झूठ नहि बजैत, मुदा ओकरा देखेनिहार झूठ अर्थ जरूर बना सकैत अछि।

प्रशिक्षण-कक्षमे वरिष्ठ विश्लेषक सुमेधा घोष बोर्डपर लिखलीह—

“असामान्य $\neq$ अपराध।”

फेर नीचाँ—

“सामान्य $\neq$ निर्दोष।”

ईशान मुस्कुरायल।

ओकरा मयंक झाक बात मोन पड़ल।

सुमेधा पूछलीह—“किछु हास्यास्पद?”

“नहि। घरक पुरान बात मोन पड़ल।”

“नीक। एहि काममे घरक पुरान बात कम आनू। आँकड़ा जे कहय, पहिने से सुनू।”

ईशान सिर हिलौलक।

दू दिन बाद हुनका पहिल पैघ ग्राहकक फाइल देल गेल।

कम्पनीक नाम पढ़िते ओकर हाथ क्षण भरि रुकल—

अम्बर इंटरैक्टिव।

ओही नाम।

पिताक पुरान पर्ची।

“अम्बर—दू बेर फोन।”

ईशान स्क्रीनक उजासमे बहुत देर नाम देखैत रहल।

सुमेधा ओकर चेहरा पढ़ि लेलनि। “चिन्हैत छी?”

ईशान झूठ बाजि सकैत छल।

ओ नहि बाजल।

“पुरान पारिवारिक फाइलमे नाम छल।”

“विवाद?”

“निश्चित नहि।”

सुमेधा तुरन्त फाइल ओकरा हाथसँ नहि लेलनि। केवल पुछलीह—“अहाँ मानैत छी जे एहि कारण निष्पक्ष नहि रहब?”

ईशान उत्तर खोजैत रहल।

“हम प्रयास करब।”

“प्रश्न प्रयासक नहि। पूर्वग्रह बुझबाक अछि।”

ईशान धीरे कहल—“हमरा एहि नामसँ संशय अछि। प्रमाण नहि।”

सुमेधा कुर्सीपर पाछाँ झुकलीह।

“तखन एही वाक्यकेँ अपन नियम बनाउ। संशयकेँ प्रमाण मत बनाउ।”

फाइल ईशानक लग रहल।



अम्बर इंटरैक्टिव आब केवल खेल-परिणामक अनुप्रयोग नहि छल।

ओकर विज्ञापन क्रिकेट-म्याच, कबड्डी, फुटबॉल, मोबाइल खेल—सभठाम देखाइत। उपयोगकर्ता अपन टोली बनबैत, प्रतियोगिता शुल्क दैत, अंकक आधारपर पुरस्कार पबैत। कम्पनी लगातार कहैत—ई “कौशल-आधारित प्रतियोगिता” अछि, जुआ नहि।

मुख्य अनुप्रयोगक कागज व्यवस्थित छल। कर-भुगतान। उपयोगकर्ता नियम। ग्राहक-सहायता। विज्ञापन-अनुबंध।

सूत्रलेखकेँ अम्बर स्वयं बजौने छल, कारण पिछला छह महीनामे बैंकसभ बहुत भुगतान रोकने छल। किछु उपयोगकर्ता कहैत—हम पैसा पेलहुँ, मुदा निकालि नहि सकलहुँ। किछु बैंक कहैत—एके प्रकारक अनेक छोट खातामे असामान्य रकम आबि तुरन्त दोसर ठाम चलि जाइत अछि।

विहान सारंग, अम्बरक संस्थापक, बैठकमे स्वयं आयल।

सँवारल दाढ़ी। हलुक धूसर कुर्ता। महँग घड़ी, मुदा प्रदर्शन नहि। आवाज नीच आ नापल।

“हमरा अपराधी बुझि कऽ मत देखू,” ओ बैठकक आरम्भमे कहल। “हमरा समस्या अछि जे हमर लोकप्रियता हमर नियन्त्रणसँ तेज बढ़ल।”

सुमेधा उत्तर देलनि—“हम व्यक्ति नहि, प्रवाह देखब।”

विहान मुस्करायल। “ओही लेल अहाँ सभकेँ बजौने छी।”

ईशान चुप बैसल।

विहान ओकरा नहि चिन्हलक।

ई स्वाभाविक छल।

वर्षसभ पहिने एक छोट ठेकेदारक दू फोन कम्पनीक विशाल इतिहासमे कतेक अर्थ रखैत?
ईशान लेल ओ दू शब्द ओकर पिता क मृत्यु लग रखल एक अधूरा प्रश्न छल।
मगर स्क्रीनपर प्रश्न आ स्मृति एक संग राखब खतरनाक।
ओ पिताक पर्ची मनमे सँ हटा कऽ आँकड़ा खोललक।



पहिल सप्ताहमे किछु विशेष नहि भेटल।

दू लाख उपयोगकर्ता। हजारों प्रतियोगिता। लाखों छोट भुगतान। अधिकांश प्रवाह सामान्य।

मगर एक श्रेणी ईशानक नजरि खींचलक।

“प्रचार-सहयोग भुगतान।”

रकम बहुत पैघ नहि। अलग-अलग व्यक्तिक खातामे। कखनो पाँच हजार। कखनो बारह। कखनो तीस। विवरणमे लिखल—स्थानीय प्रचार, उपयोगकर्ता सहायता, प्रतियोगिता संचालन।

अम्बर कहैत—छोट शहरमे “समुदाय सहयोगी” राखल गेल अछि।

ई उचित व्यापारिक ढाँचा हो सकैत छल।

ईशान केवल एक बात नोट केलक—किछु खाताधारीक पेशा एहि कामसँ मेल नहि खाइत।

एक वृद्ध किसान।

एक घरेलू महिला।

एक छात्र।

एक रिक्शाचालक।

एक छोट किराना-दोकानदार।

सुमेधा कहलीह—“लोक अतिरिक्त काज करैत अछि।”

“हँ।”

“तखन?”

“किछु नहि। केवल समूह बनबैत छी।”

ईशान खातासभ अलग सूचीमे रखलक।

तीन दिन बाद दोसर बात देखायल।

किछु खातामे अम्बरसँ आयल रकम रुकैत नहि। बहुत छोट समयमे ओ आगे चलि जाइत।

कोन ठाम—ईशानक उपलब्ध आँकड़ा पूर्ण नहि देखबैत। बैंक गोपनीयता कारण सूत्रलेखकें केवल सीमित दृश्य देल गेल छल।

ओ निष्कर्ष नहि निकालि सकैत छल।

मगर प्रश्न लिखि सकैत छल—

“जे व्यक्ति प्रचार-काज करैत अछि, ओकर मेहनताना किएक लगभग तुरन्त दोसर खातामे चलि जाइत?”



अभिषेक झा एहि बीच अपन छात्रावासक कोठरीमे तीन राति लगातार नहि सुतल।

ओ पाँच सौसँ शुरू केने छल।

किछु जीत।

फेर हार।

फेर “हारल वापस आनब”क लालसा।

मोबाइलक पर्दापर प्रत्येक प्रतियोगिता नब शुरूआत जकाँ देखाइत।

साथी कहैत—“आज टीम गलत बनल। काल्हि देखिहऽ।”

अभिषेक स्वयंकेँ समझबैत—ई कौशल अछि, भाग्य नहि। तें यदि हारि रहल छी, गलती हमर विश्लेषणमे। अगिला बेर सुधारब।

एहि तर्कमे एक गुप्त जाल छल।

यदि जीत—प्रतिभा।

यदि हार—आरो प्रयास आवश्यक।

एहि दुनूमे “रुकू” लेल ठाम नहि छल।

मास समाप्त होइत ओकर छात्रवृत्तिक अधिकांश हिस्सा गेल।

माए फोन पर पुछलीह—“पाइ बचल अछि?”

“हाँ।”

दोसर झूठ।

फेर एक दिन छात्रावासक मित्र रितेश दास कहलक—“कमाबऽ चाहैत छह?”

अभिषेक हँसल—“काज कतऽ?”

“काज नहि। खाता चाही।”

“की?”

रितेश आवाज धीमा केलक।

“एक डिजिटल कम्पनीक प्रचार-भुगतान अबैत। खाता पर सीमा अछि। तोहर खाता उपयोग करत। तोरा कमीशन।”

अभिषेक सावधान भेल—“अवैध?”

“अरे नहि। कम्पनी पैसा देत। तूँ आगाँ पठा देबें। बस।”

“किएक?”

“व्यापारक व्यवस्था। हम की जानि?”

अभिषेकक भीतर एक आवाज कहलक—नहि।

दोसर आवाज कहलक—तीन सप्ताहक हार एक-दू दिनमे वापस।

ओ “हाँ” तुरन्त नहि कहलक।

राति धरि सोचलक।

सवेरे मोबाइल पर फेर प्रतियोगिताक सूचना आयल।

ओ हारल रकम मोन पाइलक।

दुपहर रितेशकेँ सन्देश पठौलक—

“कतेक कमीशन?”

यही प्रश्नक संग एक नब दरबज्जा खुलल।



अम्बरक आधिकारिक प्रणालीमे “म्यूल खाता” शब्द कतहु नहि छल।

सुमेधा पहिल बेर एहि सम्भावना उठौलनि।

“धन-वाहक खाता,” ओ कहलीह। “कतेको ठगी-जालमे लोक अपन खाता भाड़ा जकाँ दे दैत अछि। कियो जानि-बुझि। कियो नौकरी बुझि। कियो केवल कमीशन लेल।”

ईशान पूछलक—“एहि समूहमे वैह?”

“एखन नहि कहि सकैत छी।”

“मगर व्यवहार?”

“सन्देह योग्य।”

सूत्रलेख अम्बरकें विस्तृत सूची माँगलक—समुदाय सहयोगी सभक अनुबंध, पहचान-पत्र, कार्य-विवरण, भुगतानक आधार।

उत्तर आयल।

किछु फाइल पूर्ण।

किछु अधूरी।

किछुमे एके प्रकारक हस्ताक्षर।

किछु फोन बन्द।

किछु व्यक्तिर्केँ अम्बर स्वयं कहलक—“हम सीधे नियुक्त नहि केने छी; बाहरी प्रचार-एजेन्सी मार्फत।”

एजेन्सीक नाम—“लोकविस्तार डिजिटल सेवाएँ।”

ईशान नाम पढ़िते पिताक जाँचक पुरान “लोकसेतु” मोन पाड़लक।

शब्द मिलैत छल।

इतबे।

समान शब्द संबंध नहि।

ओ स्वयं नोट लिखलक—

“नाम-सादृश्यकें प्रमाण नहि मानब।”

फेर कम्पनीक पंजीकरण देखलक।

लोकविस्तार पाँच वर्ष पुरान।

निदेशक दू।

एक निदेशक पहिने अम्बर क्रीड़ा मीडिया लेल अनुबंधित कार्यक्रम-संयोजक रहि चुकल।

एहि बेर संबंध वास्तविक छल।

मगर अपराध एखनहुँ नहि।



रितेश अभिषेकक खातामे पहिल भुगतान अनौलक।

रकम बारह हजार।

अभिषेकक हिस्सा एक हजार।

बाकी निर्दिष्ट व्यापारी-खातामे पठेबाक कहल गेल।

ओ पुछलक—“कम्पनी सीधे ओकरा किएक नहि पठबैत?”

रितेश चिढ़ल—“तोरा पैसा चाही कि लेखा-परीक्षा करब?”

अभिषेक चुप।

एक हजार ओकरा लेल छोट नहि छल।

ओ निर्देश मानलक।

दू दिन बाद फेर।

फेर तीसरा बेर।

रकम बदलैत।

कमीशन बढ़ैत।

अभिषेक अपन हारल छात्रवृत्तिक किछु हिस्सा वापस बना लेलक।

ओकरा लगल—रास्ता भेटल।

मनुष्य जे गलत दरबज्जासँ निकलि किछु राहत पबैत अछि, ओ दरबज्जाकेँ गलत कहब कठिन भऽ जाइत अछि।

एक सप्ताह बाद रितेश कहलक—“दोसर खाता चाही। तोहर कोनो मित्र?”

अभिषेक तुरन्त मना केलक।

रितेश हँसल—“तौँ करैत छह, तखन दोसर लेल गलत किएक?”

ई प्रश्न अभिषेककेँ भीतर धरि काटलक।

ओ उत्तर नहि देलक।

मगर अगिला दिन अपन वर्गक एक बेरोजगार साथीकेँ कहलक—“एक प्रचार-काज अछि।”

एहि क्षण अभिषेक केवल धन-वाहक नहि रहल।

ओ जालक छोट गाँठ बनि गेल।



सूत्रलेखक अंतरिम प्रतिवेदन अम्बर लेल असुविधाजनक छल।

“समुदाय-सहयोगी भुगतानमे पहचान सत्यापन कमजोर।”

“किछु खातामे असामान्य त्वरित बहिर्गमन।”

“बाहरी एजेन्सी पर अत्यधिक निर्भरता।”

“कार्य-विवरण आ भुगतानक बीच कई विसंगति।”

विहान सारंग बैठकमे प्रतिवेदन पढ़ि चुप रहल।

फेर कहल—“अहाँ लोक हमरा अपराधीकरण करैत छी।”

सुमेधा शान्त—“रिपोर्टमे अपराध शब्द एक बेरो नहि।”

“म्यूल खाता लिखल अछि।”

“‘सम्भावित धन-वाहक व्यवहार’ लिखल अछि।”

“भाषाक खेल।”

ईशान पहिल बेर बोललक—“भाषाक अन्तर अदालतमे जीवन बदलि सकैत अछि।”

विहान ओकरा देखलक।

“अहाँ नब छी?”

“हँ।”

“आ बहुत निश्चित।”

“नहि। एही लेल शब्द चुनल अछि।”

विहानक आँखि क्षण भरि कठोर भेल, फेर सामान्य।

“ठीक। हम अनुबंधक समीक्षा करब। बाहरी एजेन्सी हटाओल जा सकैत।”

बैठक समाप्त।

बाहर सुमेधा ईशानकें रोकलीह।

“व्यक्तिगत स्वर नहि।”

“हम—”

“अहाँक बात गलत नहि छल। स्वर व्यक्तिगत छल।”

ईशान चुप।

“अम्बर नाम एखनहुँ अहाँक भीतर पिता क फाइल अछि।”

ईशान स्वीकार केलक—“हँ।”

“तखन सावधान। सत्य भेटल तऽ सेहो पूर्वग्रह ओकर मूल्य घटा सकैत अछि।”



अम्बरक भीतर सभ कर्मचारी एके बात नहि जनैत छल।

मुख्य अनुप्रयोग चलबैत तकनीकी दल वैध प्रतियोगिताक नियम पर काज करैत। ग्राहक-सहायता

लोक पुरस्कार विलम्ब, खाता-पुष्टि, पहचान त्रुटि सँ जूझैत। विपणन दल विज्ञापन बनबैत।

मगर एक समानान्तर व्यापार अलग समूह चलबैत—“रात्रि कक्ष।”

ई नाम आधिकारिक नहि छल।

विश्वस्त एजेन्टसभक निजी समूहमे उपयोग होइत।

ओतऽ प्रतियोगिता केवल बहाना बनैत गेल। उपयोगकर्ता वास्तविक खेलक परिणाम पर पैसा लगबैत, दर बदलैत, जीत-हार तत्काल निपटैत। कागच पर ई गतिविधि अम्बरक मुख्य अनुप्रयोगसँ बाहर छल। व्यवहारमे ओकर एजेन्ट, प्रचार-संरचना आ धन-वाहक जाल ओही ब्राण्डक भरोसा उपयोग करैत।

विहान एहि सभक प्रत्येक बात जानैत छल कि नहि—ई एखन कथामे सेहो निश्चित नहि।

मगर अम्बरक वित्त प्रमुख केशव मेहता जानैत छल।

केशवक तर्क सरल—

“मुख्य कम्पनी साफ रहय। बाहरी नेटवर्क अपन जोखिम पर।”

एक सहयोगी पुछलक—“मगर पैसा अन्तमे कतऽ?”

“व्यापारमे।”

“ककर?”

केशव हँसल।

“जतऽ साफ हो।”

धनशोधनक सभसँ पैघ भ्रम ई अछि जे गन्दा पैसा कोनो क्षण सचमुच साफ भऽ जाइत अछि।

असलमे केवल ओकर कथा बदलैत अछि।



अभिषेकक खाता एक सोमबार भोर बैंक द्वारा रोकि देल गेल।

मोबाइलमे सन्देश—“डेबिट प्रतिबन्धित।”

ओ शाखा दौड़ल।

प्रबन्धक कहलक—“साइबर शिकायत सम्बन्धी निर्देश अछि।”

“ककर शिकायत?”

“हम विवरण नहि दऽ सकैत।”

“हमर पैसा?”

“एखन रोकल।”

अभिषेकक चेहरा सफेद।

खातामे केवल रितेशक पैसा नहि छल।

माएक भेजल आठ हजार सेहो।

विश्वविद्यालयक छात्रवृत्तिक अन्तिम किस्त सेहो।

घरमे छोट बहिन मंजरीक नर्सिङ्ग प्रवेश लेल जे रकम राखल गेल छल, तकर किछु हिस्सा
अभिषेकक खातामे अस्थायी रूपेँ राखल छल—क्योंकि पिता क पुरान खाता निष्क्रिय।

“सर, ई हमर घरक पैसा अछि।”

प्रबन्धकक चेहरा कठोर नहि छल, केवल विवश।

“जाँच अधिकारी लग आवेदन दी।”

“हम किछु गलत नहि केने छी।”

प्रबन्धक ओकरा देखलक।

“अहाँक खातामे जे पैसा आयल, से अहाँ जानैत छलहुँ?”

अभिषेक चुप।

ई प्रश्नक उत्तर “हँ” आ “नहि” बीच अटकायल छल।

ओ जानैत छल पैसा दोसरक अछि।

ओ नहि जानैत छल ककर अपराधक।

कानून एहि अन्तरकेँ जाँचत।

मगर मंजरीक प्रवेश-तिथि कानूनक जाँच समाप्त होयबाक प्रतीक्षा नहि करत।



मंजरीक प्रवेश छूटि गेल।

कॉलेज समय बढ़ेबाक अनुरोध अस्वीकार केलक।

माए फोनपर रोअलीह नहि। केवल कहल—“बेटा, किछु नहि। अगिला साल।”

एहि “किछु नहि”मे अभिषेकक छाती टूटल।

ओ रितेशकै खोजलक।

छात्रावासक कोठरी खाली।

फोन बन्द।

सामाजिक-माध्यम खाता गायब।

मित्रसभ कहलक—दू दिन पहिने घर गेल।

घर कतऽ—ककरो ठीक नहि बुझल।

अभिषेक पहिल बेर बुझलक—जालमे ऊपरक लोक अदृश्य रहैत, नीचेवला खाता अपना नामसँ खुलैत।

सर्पक दाँत ककरो हो, विष पहिने ओहि देहमे भेटैत जे पकड़ाइत अछि।

ओ राति छात्रावासक छतपर बहुत देर बैसल।

नीचाँ शहरक बत्ती।

मोबाइलमे बैंकक रोक-सन्देश।

माएक “अगिला साल” शब्द।

ओ आत्मघातक निर्णय नहि लेलक।

त्रासदी हर बेर मृत्यु नहि होइत।

कतेको बेर मनुष्य जीवित रहि अपन एक निर्णयक भार प्रत्येक दिन ढोइत अछि।

अभिषेक भोर धरि बैसल रहल।

सवैरे साइबर थाना जाएबाक निर्णय केलक।



राजधानी नगरक साइबर थाना में निरीक्षक रचना सिन्हा अभिषेकक बयान लेलनि।

“तूँ पैसा आगाँ पठबैत छलह?”

“हँ।”

“कमीशन?”

“हँ।”

“काज की छल, बुझैत छलह?”

“प्रचार।”

“ककर प्रचार?”

“अम्बर... मतलब एक कम्पनीक लोक कहने छल।”

“सीधा कम्पनी?”

“नहि। रितेश।”

“रितेशकेँ के देलक?”

“नहि जानि।”

रचना बहुत देर ओकरा देखैत रहल।

“तूँ निर्दोष छी—ई हम एखन नहि कहब।”

अभिषेकक आँखि भरि आयल।

“हम चोर नहि।”

“चोर आ धन-वाहक एक बात नहि। मुदा जँ पैसा ककर अछि नहि जानि कऽ कमीशन लेल आगाँ पठबैत रहलह, तँ प्रश्न उठत।”

“हमरा जेल होयत?”

रचना उत्तर नहि देलीह।

“सत्य बाज। फोन, सन्देश, जे अछि सभ दे। जतेक जल्दी झूठ छोड़बें, ततेक जल्दी हम बुझि सकब जे तोहर भूमिका की।”

अभिषेक मोबाइल देलक।

रचना ओकर माएक सन्देश देखलीह—“मंजरीक प्रवेशक तारीख मोन राखिहऽ।”

ओ स्क्रीन बन्द कऽ देलीह।

अधिकारी लेल दया निर्णय नहि बनि सकैत।

मगर दया बिना जाँच मनुष्यकेँ केवल खाता-संख्या बना दैत अछि।



अभिषेकक फोनसँ रचना केँ कोनो पैघ अपराधी तुरन्त नहि भेटल।

रितेशक बदलैत नम्बर। किछु समूह-सन्देश। “भुगतान सहायक”क सामान्य निर्देश। कई बैंक-खाता।

किछु खाता पहिने देशक अलग-अलग साइबर शिकायतमे चिह्नित।

रचना राज्य साइबर समन्वय केन्द्रकेँ सूचना पठौलनि।

ओहि समय सूत्रलेखक अंतरिम प्रतिवेदन बैंकसभ धरि सेहो पहुँचि चुकल छल।

दू अलग बाट एके प्रश्न दिस बढ़ि रहल छल।

एक कात निजी जोखिम-विश्लेषण।

दोसर कात पीड़ित शिकायत।

एखन धरि दुनू एक-दोसराकेँ नहि जनैत।

न्याय-दर्शनमे अनुमानक शक्ति व्याप्ति पर निर्भर—जतऽ धुआँ, ओतऽ आगि, यदि सम्बन्ध विश्वसनीय रूपेँ स्थापित।

आधुनिक वित्तीय अपराधमे धुआँ हजार प्रकारक होइत। प्रत्येक तेज लेनदेन अपराध नहि। प्रत्येक नब खाता म्यूल नहि। प्रत्येक जुआ-जकाँ खेल अवैध जुआ नहि।

तेँ जाँचक कठिनाई “धुआँ देखलहुँ” नहि।

कठिनाई—कतेक अलग धुआँ वास्तवमे एके आगिसँ उठि रहल अछि?



ईशानक दलकैँ एक नब आँकड़ा भेटल।

अम्बरक आधिकारिक प्रतियोगिता भुगतान आ लोकविस्तारक प्रचार-भुगतान पूर्णतः अलग कहायल छल।

मगर किछु दिन एहन छल जखन उपयोगकर्ता शुल्कक असामान्य वृद्धि पछि लोकविस्तारक “सहयोगी भुगतान” सेहो बढ़ैत।

सुमेधा कहलीह—“मौसमी असर हो सकैत। म्याचक दिन अधिक उपयोगकर्ता, अधिक प्रचार।”
“हैं।”

ईशान एहि बार उत्साहित नहि भेल।

ओ आँकड़ा लम्बा अवधि पर देखलक।

फेर शहर अनुसार।

फेर एजेन्ट अनुसार।

किछु समूहमे संबंध सामान्य।

मगर तीन जिलामे “प्रचार भुगतान” उपयोगकर्ता गतिविधिसँ नहि, किछु अनचिन्ह डिजिटल जमा-लहरक बाद बढ़ैत।

ईशान कहलक—“एतय प्रचार खर्च ग्राहकक संख्या अनुसारि नहि चलैत।”

सुमेधा स्क्रीन लग आयलीह।

“तखन ककर अनुसारि?”

ईशान पक्का उत्तर नहि देलक।

“शायद दोसर आय-स्रोत।”

“शायद।”

किछु देर दुनू चुप।

फेर सुमेधा कहलीह—“एहि बिन्दुपर ग्राहककैँ स्पष्टीकरण माँगब।”

अम्बर जवाब देलक—स्थानीय अभियान स्वतंत्र बजट पर चलैत।

व्यवसायिक रूपेँ सम्भव।

मगर दस्तावेज माँगल गेल तऽ लोकविस्तार तीन सप्ताहक समय माँगलक।

समय माँगब अपराध नहि।

मगर ईशानक मनमे पानी फेर हिलल।



मृणालिनी एखन गढ़ नारिकेलमे छोट पुस्तक-दोकान चलबैत छलीह।

निर्माण व्यवसाय सत्यप्रकाशक बाद धीरे-धीरे बन्द।

दोकानक नाम—“सत्य-पुस्तकालय।”

कियो पूछैत—“पति क नाम पर?”

ओ कहैत—“सत्यक नाम पर।”

एक साँझ ईशान फोन केलक।

“माँ, बाबूक पुरान पर्ची याद अछि? अम्बरवला?”

मृणालिनी तुरन्त चुप।

“किएक?”

“हमर ग्राहक अछि।”

“तूँ केस करैत छह?”

“नहि। आँकड़ा-जाँच।”

“ओहि नामसँ दूर रह।”

ईशान चकित। “किएक?”

“हम तोरा फेर ओही पानिमे नहि देखऽ चाहैत छी।”

“माँ, ई नौकरी अछि।”

“तोहर बाबू लेल सेहो काजे छल।”

ईशान उत्तर देबाक चाहलक—दुनू एक नहि।

मगर माएक भय तर्क नहि छल।

भय स्मृति छल।

“हम सावधान रहब।”

मृणालिनी धीरे कहलनि—“सावधानी सभ समय बचबैत नहि।”

फोन कटला बाद ईशान बहुत देर स्क्रीन देखैत रहल।

बिज्जीक कथा मे रक्षक साँपक डर नहि मानैत।

मनुष्यक रक्षकक घरमे माए होइत अछि—जे रक्षकक लेल डरैत अछि।



राज्य साइबर केन्द्रमे अभिषेकक बयान अन्य शिकायतसभसँ मिलाओल गेल।

किछु पीड़ित कहैत छलाह—ऑनलाइन म्याच पर पैसा लगेलहुँ, जीतल रकम नहि भेटल।

किछु कहैत—“नौकरी”मे बैंक खाता उपयोग लेल देल, पछि खाता रोकल।

किछु कहैत—कोनो जुआ नहि, केवल खाता भाड़ा।

किछु स्वयं एजेन्ट।

एके जालमे भूमिका अलग।

निरीक्षक रचना सिन्हा राज्यक आर्थिक-अपराध शाखाकेँ लिखलीह—

“अनेक शिकायतमे समान भुगतान मध्यस्थ आ एके प्रचार-एजेन्सी समूहक संकेत।”

फाइल अर्थशास्त्री अधिकारी आदित्य शेखर धरि पहुँचल।

नाम सुनिते रोहितक पुरान सेवा-मित्र कहलक—“ईशान कर्ण नामक एक युवक निजी कम्पनीमे एही तरहक आँकड़ा देखैत अछि।”

पुरान जाँचक धागा बहुत धीमे फेर जुड़ल।

अनिरुद्ध चौधरी एखन सक्रिय सरकारी पद पर नहि छलाह। सेवा-निवृत्ति पछि राजधानी नगरमे कानून-प्रवर्तन प्रशिक्षण संस्थामे अतिथि व्याख्यान दैत।

आदित्य हुनका फोन केलनि।

“सर, एक नाम पूछबाक अछि—अम्बर।”

दूसर कात चुप्पी।

“अम्बर इंटरैक्टिव?” अनिरुद्ध पुछलनि।

“हँ।”

“पुरान फाइल निकालू।”

“किछु छल?”

“अपराध सिद्ध किछु नहि।”

“तखन?”

“इतिहास छल।”

अनिरुद्धक पहिल वाक्य एहि नब जाँचक नियम बनल—

“पुरान संशयकेँ नब प्रमाण मत बनाउ; मुदा पुरान इतिहासकेँ बिसरू नहि।”



अम्बरक “रात्रि कक्ष” एहि बीच तेजी सँ फैलि रहल छल।

मुख्य ब्राण्डक विज्ञापन भरोसा बनबैत। एजेन्ट लोक परिचित उपयोगकर्ताकेँ निजी समूह दिस लैत। ओतऽ कौशल-प्रतियोगिता आ सीधा दाँवक सीमा धुँधली।

किछु राज्यक कानून अलग। किछु जगह स्पष्ट रोक।

केशव मेहता समाधान कानून बदलि नहि, संरचना बदलि खोजलक।

“मुख्य कम्पनीक खाता उपयोग नहि होयत।”

धन छोटे-छोटे निजी खातासँ घूमैत। किछु व्यापारिक भुगतानक रूप धारण करैत। किछु विज्ञापन। किछु परामर्श। किछु माल-खरीद।

कथा बदलैत।

धन ओही।

ई विवरण जाँचकर्ता बादमे जोड़ेता। एखन अपराधी लोक स्वयं एहि व्यवस्थाकेँ “जोखिम-विभाजन” कहैत छल।

धनशोधन बहुत बेर अपराधी भाषामे “समायोजन” बनि जाइत अछि।

शब्द अपराधक नैतिक भार हलुक करैत।

जैना पुरान निविदा-जालमे “उगाही”क बदला “स्थानीय सहयोग” कहल जाइत छल।

पानि बदलल।

भाषा नहि।



ईशान पहिल बेर दिगन्तक पुरान फाइल डिजिटल रूपमे देखलक।

अनिरुद्ध स्वयं ओकरा बजौने छलाह।

भेंट प्रशिक्षण संस्थाक पुस्तकालयमे भेल।

अनिरुद्ध केस लगभग पूर्ण सफेद। चाल धीम। आवाज एखनहुँ नापल।

“तोरा मोन अछि हम तोहर घर कब आयल रही?”

“बहुत छोट रही।”

“तू हमरा पसिन नहि करैत छलह।”

“एखनहुँ निश्चित नहि।”

अनिरुद्ध हँसलाह।

ईशानक भीतर वर्षसभक एक प्रश्न उठल—“बाबूक फाइल किएक बन्द केलहुँ?”

अनिरुद्ध मुस्कान छोड़ि देलनि।

“कारण जे सिद्ध नहि, ओकरा सिद्ध कहि नहि सकैत रही।”

“एखन सेहो वैह उत्तर।”

“एखन सेहो वैह सत्य।”

ईशान बहुत देर चुप।

फेर लैपटॉप खोललक।

अम्बरक नब आँकड़ा देखौलक।

अनिरुद्ध ध्यानसँ देखलनि।

“ई हमरा क्षेत्र नहि।”

“मुदा पुरान नाम।”

अनिरुद्ध फाइल खोललनि।

वर्षसभ पुरान स्कैन। अम्बर क्रीड़ा मीडिया। दिगन्तक खेल-महोत्सव। उत्तरायण डिजिटल होल्डिङ्गक पुरान निदेशक। लोकसेतुक लघु हिस्सेदारी।

“एतबा मात्र।”

ईशान कहलक—“आ बाबूक पर्ची।”

“ओहो मात्र।”

“अहाँकेँ लगैत संबंध अछि?”

अनिरुद्ध ओकर आँखि देखलनि।

“हमरा लगैत अछि प्रश्न अछि।”

“उत्तर?”

“तूँ बहुत जल्दी उत्तर चाहैत छह।”

ईशानक स्वर तिक्त—“हम बीस वर्षसँ उत्तर बिना छी।”

अनिरुद्ध चुप।

फेर धीरे कहलनि—“एही कारण तोरा जाँचक केन्द्र नहि बनबाक चाही। तूँ विश्लेषक रह। जे देखह, से दे। प्रतिशोध बुद्धिकेँ बहुत तेज बनबैत अछि—आ बहुत अन्धो।”

ईशान उठि जाएबाक लेल भेल, फेर रुकल।

“न्याय-दर्शन सब पीड़ितकेँ धैर्ये सिखबैत अछि?”

“नहि। ओ जाँचकर्ताकेँ सीमा सिखबैत अछि।”

“पीड़ितकै?”

अनिरुद्ध दीर्घ साँस लेलनि।

“कखनो केवल ई दुखद बात—सत्यक इच्छा आ सत्यक प्रमाण एक नहि।”



अभिषेक सहयोगी गवाह बनबाक प्रक्रिया मे छल, मुदा ओकर जीवन सामान्य नहि लौटल।

विश्वविद्यालय प्रशासनकें बैंक-जाँचक खबर भेटल। छात्रावासमे फुसफुसाहटि।

“खाता बेचैत छल।”

“ऑनलाइन जुआ।”

“पुलिसक आदमी।”

कियो पूरा तथ्य नहि जनैत।

एक मित्र ओकर संग भोजन छोड़ि देलक।

एक शिक्षक निजी रूपें कहलक—“पढ़ाई पर ध्यान दिअ।”

ई वाक्य सहानुभूति छल कि दूरी—अभिषेक बुझि नहि सकल।

मंजरी अगिला साल प्रवेशक तैयारी करैत रहल, मुदा ओ घरमे अभिषेकसँ सामान्य गप्प कम करैत।

एक दिन बहिन फोनपर कहल—“भैया, हम तोरा दोष नहि दैत छी।”

अभिषेक तुरन्त रोअय लागल।

क्योंकि एहि वाक्यक अर्थ छल—दोष देबाक कारण अछि।

त्रासदीक एक रूप ईहो—क्षमाक शब्द स्वयं अपराध-बोधकें पुष्ट करैत।



रचना सिन्हा अभिषेककें एक फोटो देखौलीह।

“रितेश?”

“नहि।”

दोसर।

“नहि।”

तेसर।

अभिषेक ठमकल।

“एहि आदमीकेँ एक बेर देखने छी।”

“कतऽ?”

“रितेश संग। छात्रावास बाहर चाय-दोकान। नाम शायद ‘मन्नू भैया’।”

“पूरा?”

“नहि।”

फोटोवला आदमी छल—मनोज नायक।

लोकविस्तार डिजिटल सेवाक क्षेत्रीय समन्वयक।

पहिल बेर निजी गवाह, बैंक व्यवहार आ कम्पनी-अनुबंध एक बिन्दुपर मिलल।

रचना तुरंत गिरफ्तारी नहि केलनि।

मनोज पर एखन आरोप सिद्ध नहि।

मगर निगरानी शुरू।

ओ तीन जिलामे घूमैत। खेल-प्रतियोगिता आयोजन। स्थानीय युवक भर्ती। डिजिटल प्रचार।

आ प्रत्येक यात्रा पछि किछु नब बैंक-खाता “समुदाय सहयोगी” सूचीमे जुड़ैत।

समानता स्पष्ट होमय लागल।

तैयो रचना अपन फाइलमे लिखलीह—

“सहसम्बन्ध; कारण-सिद्धि शेष।”

जाँचक भाषा कतेको बेर कथा सँ कम रोमांचक होइत अछि।

मगर निर्दोषक जीवनक रक्षा ओही नीरस शब्द करैत अछि।



मनोज नायकक पीछा करैत पुलिस एक एहन ठाम पहुँचल जतऽ जुआक वास्तविक रूप पहिल बेर प्रत्यक्ष भेल।

राजधानी नगरक बाहरी औद्योगिक क्षेत्रमे एक पैघ किरायाक कक्ष। बाहर बोर्ड—“डिजिटल ग्राहक सहायता प्रशिक्षण।”

भीतर बीस युवक। लैपटॉप। फोन। खेलक स्क्रीन।

पुलिस छापा मारलक तऽ कियो बन्दूक नहि। कियो हिंसा नहि।

किछु युवक सचमुच ग्राहक प्रश्नक उत्तर दैत छलाह।

किछु निजी समूहमे खेलक दाँव लिखैत।

किछु धन-वाहक खाताधारकसँ सम्पर्क।

किछु केवल दिनक मजदूरी पर डेटा टाइप करैत।

एके कोठरीमे अपराधक ज्ञानक चारि स्तर।

सबकेँ एक समान अपराधी कहब आसान।

सत्य कठिन।

मनोज ओतय नहि भेटल।

मगर कम्प्यूटरसभ जब्त भेल।

रचना सिन्हा टीमकेँ कहलनि—“जकरा की बुझल, अलग लिखू। नौकरी करनिहारकेँ आयोजक मत बनाउ।”

एक जवान पुछलक—“मॅडम, सभ एके ठाम छल।”

“एके बसमे चोर आ यात्री दुनू हो सकैत।”

न्याय-दर्शनक सरलतम रूप कखनो थाना क एक पाँतिमे उतरि जाइत अछि।



छापाक खबर मीडिया पर आयल।

“ऑनलाइन जुआ गिरोह।”

“अम्बर नामक कम्पनीक लिंक?”

“हजारों बैंक खाते?”

“करोड़ोंक धनशोधन?”

अधिकांश संख्या अनुमान।

अम्बर तत्काल प्रेस-वक्तव्य देलक—

“कम्पनीक कोनो अवैध सट्टेबाजीसँ सम्बन्ध नहि। किछु बाहरी एजेन्ट ब्राण्डक दुरुपयोग केने होथि।”

कानूनी रूपेँ ई सम्भव छल।

विहान सारंग एक समाचार चैनलपर कहल—“हम स्वयं जाँच एजेन्सीसँ सहयोग करब।”

ईशान टीवी देखैत रहल।

मृणालिनी फोन केलनि।

“एहि मे तोहर कम्पनी?”

“हमर ग्राहक।”

“छोड़ि दिअ।”

“माँ—”

“तोहर बाबू सेहो कखनो कहने होयत—अभी केवल काम अछि।”

ईशान कठोर भेल।

“हम भागि गेलहुँ तऽ हर प्रश्न छोड़ि देब?”

मृणालिनी बहुत धीमे कहलीह—“कतेको प्रश्नक उत्तर बेटाक जानसँ महत्त्वपूर्ण नहि।”

ईशान क्रुद्ध भऽ फोन कटि देलक।

कटिते पछतायल।

फेर फोन करबाक साहस नहि भेल।

ओ राति मृणालिनी सेहो फोन नहि केलनि।

घर आ कर्तव्यक बीच पहिल दरार पड़ल।



जब्त कम्प्यूटरक परीक्षणसँ एक विचित्र नाम उभरल—“उत्तरायण।”

सीधा कम्पनी नहि। एक खाता-समूहक आन्तरिक संकेत।

आदित्य शेखर पुरान फाइल खोललक।

उत्तरायण डिजिटल होल्डिङ्ग।

अम्बरक निवेशक।

लोकसेतुक पूर्व हिस्सेदारसँ पुरान सम्बन्ध।

दिगन्तक जाँचक सूखल धागा फेर भीजल।

ओ अनिरुद्धकें फोन केलक।

“सर, इतिहास आब वर्तमानमे लौटि रहल अछि।”

अनिरुद्ध उत्तर देलनि—“इतिहास नहि। नाम लौटि रहल अछि। सावधान।”

“फरक?”

“बहुत। नामक पाछाँ नब लोक हो सकैत।”

“मगर पुरान हिस्सेदार?”

“तथ्य। ओकर भूमिका एखन प्रश्न।”

आदित्य हँसल—“सेवानिवृत्ति अहाँक भाषा नहि बदललक।”

“सेवानिवृत्ति बाद भाषा आर सावधान होइत अछि। आब हमरा गलती सुधारबाक विभागीय अवसर नहि।”



मनोज नायक अन्ततः पकड़ा गेल—भागैत नहि, अपन घरमे।

ओ कहलक—“हम वैध प्रचार करैत छी।”

रचना सिन्हा सामने अभिषेकक बयान, खाता-सूची, जब्त कार्यालयक सन्देश राखलीह।

मनोज प्रत्येक बातक वैकल्पिक अर्थ देलक।

“युवक प्रचारक।”

“खाता भुगतान लेल।”

“निजी दाँव हमरा जानकारी बिना।”

“रितेश उपठेकेदार।”

“मन्नू नाम बहुत लोक कहैत।”

किछु उत्तर सच सेहो हो सकैत।

रचना अधीर नहि भेलीह।

“केशव मेहता?”

मनोजक पलक एक क्षण रुकल।

“अम्बरक अधिकारी।”

“भेटल छी?”

“कार्यक्रममे।”

“निजी?”

“नहि।”

रचना नोट केलनि।

शरीरक एक पलक प्रमाण नहि।

मगर प्रश्नक दिशा बनि सकैत।

“रात्रि कक्ष?”

मनोज पहिल बेर सीधा आँखि मिला कऽ हँसल।

“काव्य अछि?”

“शायद।”

रचना सेहो हँसलीह।

“कविता बादमे पढ़ब। एखन कागच पढ़ू।”



ईशानक विश्लेषणक अन्तिम प्रतिवेदन अम्बरक निदेशक-मण्डल धरि पहुँचल।

सूत्रलेख स्पष्ट लिखलक—

मुख्य प्रतियोगिता प्रणालीक अधिकांश भुगतान सामान्य व्यापारिक व्यवहारसँ मेल खाइत।

मगर बाहरी प्रचार-संरचना, धन-वाहक-जकाँ व्यवहार, लोकविस्तारक अपूर्ण सत्यापन आ किछु अनिर्दिष्ट आय-प्रवाह उच्च जोखिम।

“उच्च जोखिम” अपराधक घोषणा नहि।

विहान सारंग एहि शब्दपर टिकि गेल।

“यदि हम लोकविस्तार अनुबंध समाप्त करी?”

सुमेधा—“पुरान लेनदेनक प्रश्न समाप्त नहि होयत।”

“मगर भविष्य?”

“जोखिम कम हो सकैत।”

विहान ईशान दिस देखलक।

“अहाँक व्यक्तिगत मत?”

ईशान किछु क्षण चुप।

“हमर व्यक्तिगत मत एहि कक्षमे उपयोगी नहि।”

विहान हलुक मुस्कुरायल।

“अब सीखि गेलहुँ।”

ई वाक्य प्रशंसा छल कि व्यंग्य—ईशान नहि बुझलक।

बैठक बाद विहान अकेले ओकरा रोकलक।

“कर्ण?”

ईशान ठमकल।

“अहाँ सत्यप्रकाश कर्णक बेटा छी?”

ईशानक देह ठण्डा।

“अहाँ हुनका चिन्हैत छलहुँ?”

विहान कुर्सीपर हाथ रखलक।

“बहुत बरख पहिने दू फोन आयल छल।”

ईशानक कानमे पिताक पर्ची धड़कय लागल—अम्बर—दू बेर फोन।

“की बात?”

“ओ हमरा पुछने छलाह जे दिगन्तक खेल-महोत्सवक भुगतान वास्तवमे ककरा लेल अछि। हम तखन छोट विक्रेता रही। जे कागच भेटल, से देलहुँ।”

“फेर?”

“फेर किछु नहि।”

“ओ मरलाह।”

विहान नजरि नीचाँ केलक।

“हम जनैत छी।”

“अहाँ पुलिसकँ ई बात किएक नहि कहने?”

“कियो पुछलक नहि।”

ईशानक स्वर तेज—“आ अपने कहबाक जरूरत नहि बुझल?”

विहान सेहो कठोर भेल।

“तोहर बाबूक मृत्यु आ हमर दू फोनक बीच संबंध सिद्ध छल?”

ईशान चुप।

विहान धीरे कहल—“अहाँक न्याय-दर्शन एतय समाप्त?”

ई वाक्य ईशान लेल थप्पड़ सन छल।

ओ बिना उत्तर बाहर निकलि गेल।



ओ राति ईशान पहिल बेर माएकेँ फोन नहि, अनिरुद्धकेँ केलक।

सभ बात कहल।

अनिरुद्ध शांत सुनलनि।

“विहानक बयान दर्ज कराउ।”

“ओ पिताकेँ चिन्हैत छल।”

“तू फोन।”

“किछु पूछने छलाह।”

“हँ।”

“ई पैघ बात नहि?”

“पैघ प्रश्न अछि।”

“फेर वैह?”

“तोरा उत्तर चाही; हमरा प्रमाण।”

ईशान फोन पर चिल्ला पड़ल—“हमरा बीस वर्षसँ एही शब्द सुनाइत अछि!”

दूसर कात मौन।

ईशानक साँस तेज।

अनिरुद्ध धीरे कहलनि—“तोहर क्रोध उचित अछि। ओकर निष्कर्ष आवश्यक नहि।”

ईशान फोन काटि देलक।

एहि बेर पछतावा तुरन्त नहि आयल।

कतेको सत्य तर्क सँ समझल जाइत अछि।

कतेको दुःख तर्ककेँ सुनय नहि चाहैत।



गढ़ नारिकेलमे ओही राति मृणालिनी दोकान बन्द करैत देहरी लग एक बिज्जी देखलीह।

ओ सामान्यतः मुस्कराइत।

एहि बेर नहि।

बिज्जी थोड़ेक दूर ठाढ़ छल। ओकर मुँहमे छोट साँपक निर्जीव देह।

मृणालिनी बहुत देर देखैत रहलीह।

धनेश्वरी आब चलि नहि सकैत छलीह। भीतर खाटपर।

मृणालिनी जा कऽ कहलीह—“माँजी, बिज्जी फेर आयल।”

धनेश्वरीक आँखि अधमूनल।

“साँप?”

“मरल।”

बूढ़ी बहुत धीमे कहलीह—“एक साँप मरलासँ बिल खाली नहि होइत।”

“ईशान ओहि केस मे अछि।”

धनेश्वरी आँखि खोललीह।

“ओ पानि पढ़ैत अछि?”

“हाँ।”

“तखन ओकरा किनार मोन रहय।”

मृणालिनी रोअय चाहलीह, मुदा आँसू नहि आयल।

बाहर बिज्जी साँप छोड़ि अन्हारमे गायब भऽ चुकल छल।

केवल देहरीपर एक पातर रक्त-रेखा रहि गेल।

पहरा कखनो पूर्ण निर्मल नहि रहैत।

रक्षक सेहो रक्तक पास सँ गुजरैत अछि।



राज्य जाँचक नब बैठकमे पहिल बेर “धनशोधन” शब्द औपचारिक रूपेँ लिखल गेल।

आदित्य शेखर बोर्डपर तीन स्तर बनौलक—

वैध खेल-व्यवसाय।

अवैध निजी दाँव।

धन-वाहक आ मुखौटा भुगतान।

फेर कहल—“हमरा सिद्ध करबाक अछि जे ई तीनू केवल पास-पास अछि कि एक उद्देश्यक हिस्सा।”

रचना सिन्हा अभिषेकक बयान रखलीह।

“नीचला स्तर पर संबंध अछि।”

सूत्रलेखक प्रतिवेदनक प्रति सामने।

“वित्तीय व्यवहारमे संबंधक संकेत।”

अनिरुद्ध, विशेष आमन्त्रित रूपमे, चुप सुनैत रहलाह।

कियो पुछलक—“सर, अहाँक मत?”

“एखन दू सम्भावना।”

“पहिल?”

“अम्बरक वैध व्यवसायक ब्राण्ड बाहरी अपराधी उपयोग कऽ रहल।”

“दोसर?”

“अम्बरक भीतरक किछु लोक बाहरी जाल जानि-बुझि चलबैत।”

“कौन सही?”

“एखन दुनू सम्भव।”

एक युवा अधिकारी अधीर—“तखन हम कखन निर्णय लेब?”

अनिरुद्ध खिड़की दिस देखलनि।

“जखन एहन तथ्य भेटत जे एक सम्भावनाकेँ केवल कमजोर नहि, असम्भव करय।”

मयंक झा, जे वीडियो माध्यमसँ बैठकमे जुड़ल छलाह, मुस्कुरेलाह।

“बाधित हेत्वाभास।”

युवा अधिकारी माथ पकड़लक।

“सर, अपराधी पकड़ू कि दर्शन परीक्षा दी?”

कमरा हँसि पड़ल।

तनाव एक क्षण हलुक।

मगर बाहर फाइलसभ बढ़ि रहल छल।



बैठक समाप्त होयबाक पाँच मिनट बाद रचना सिन्हाक फोन बजल।

एक बैंक-अधिकारी।

“मॅडम, जे खाता सूची अहाँ पठौने रही, ताहिमे एक असामान्य बात अछि।”

“की?”

“किछु धन-वाहक खातासँ अन्तिम भुगतान एक निर्माण-सामग्री कम्पनीमे गेल अछि।”

“नाम?”

“नीलकण्ठ एग्रीगेट्स प्राइवेट लिमिटेड।”

आदित्य तुरन्त पुरान दिगन्त फाइल खोललक।

नीलकण्ठ एग्रीगेट्स—वर्षसभ पहिने दिगन्तक एक परियोजनाक गिट्टी आपूर्तिकर्ता।

मालिक बदलि चुकल।

निदेशक बदलि चुकल।

कम्पनी वैध व्यापार करैत।

मगर इतिहासक धागा फेर सामने।

अनिरुद्ध कागच बहुत देर देखलनि।

“ई संबंध हो सकैत।”

रचना—“अथवा संयोग।”

अनिरुद्ध मूड़ी डोलौलनि।

“आब अहाँ सभ रोगी भऽ गेलहुँ।”

कक्षमे हँसी नहि उठल।

कारण सभकेँ बुझाईत छल—पानि आब सचमुच पुरान घाट दिस घुरि रहल अछि।



ईशान कार्यालयक छतपर राति अकेले ठाढ़ छल।

नीचाँ राजधानी नगरक बत्ती नदीक उलट तारा जकाँ पसारल।

फोनेमे माएक अपठित सन्देश—“भोजन समय पर करिहऽ।”

अनिरुद्धक सन्देश—“काल्हि विहानक बयान औपचारिक रूपेँ लेल जाएत। अहाँ उपस्थित नहि रहब।”

ईशानक पहिल प्रतिक्रिया क्रोध।

फेर ओ बुझलक—ठीक अछि।

ओ गवाहक बेटा अछि। विश्लेषक सेहो।

हर भूमिकाकेँ एके कक्षमे राखब न्याय नहि।

ओ माएकेँ उत्तर लिखलक—“ठीक छी। अहाँ भोजन केलहुँ?”

किछु क्षण बाद उत्तर—“हँ।”

दुनू झूठ नहि बजल।

ई छोट बात छल।

मगर त्रासदीक बीच सामान्य सत्य सेहो पहरा होइत अछि।

दूर आकाशमे बादर छल।

ईशानकेँ कमला-बलानक किनार मोन पड़ल।

“जे पानि पढ़य।”

ओ एखन बुझि रहल छल—पानि पढ़ब केवल गोहिक निशान ताकब नहि।

अपन आँखिक भीतर उठैत क्रोध सेहो पढ़ब।

नहि तँ जाँचकर्ता स्वयं धारा बदलि दैत अछि।



विहान सारंगक औपचारिक बयान अगिला दिन चारि घण्टा चलल।

ओ सत्यप्रकाशक दू फोन स्वीकार केलक।

कहल—सत्यप्रकाश दिगन्तक एक खेल-प्रायोजन भुगतान विषय पुछने छलाह, कारण ओकरा संदेह छल जे निर्माण-काजक पैसा अनुपयोगी आयोजनमे घुमाओल जा रहल।

विहान अपन पुरान अभिलेखमे एक ई-पत्र सेहो देखौलक।

तारीख—सत्यप्रकाशक मृत्यु सँ तीन सप्ताह पहिने।

ई-पत्रमे विहान सत्यप्रकाशकेँ लिखने छल—“हमरा उपलब्ध बिल संलग्न अछि; वास्तविक सेवाक पुष्टि हम नहि कऽ सकैत छी।”

ई अभिलेख नब छल।

पुरान जाँचमे नहि।

अनिरुद्ध बहुत देर स्क्रीन देखलनि।

“ई कागज तखन किएक नहि आयल?”

विहान—“कियो हमरा सम्पर्क नहि केलक। हमरा बादमे खबर भेटल जे दुर्घटना भेल। हम डरि गेलहुँ। दिगन्तक नाम ओहि समय बहुत पैघ छल।”

“डर कारण चुप रहलहुँ?”

“हँ।”

“ई नैतिक रूपेँ ठीक?”

विहानक चेहरा कठोर।

“नहि।”

“कानूनी?”

“हम नहि जानि।”

“एखन किएक कहैत छी?”

विहान दीर्घ साँस लेलनि।

“क्योंकि बीस वर्ष बाद वही नाम फेर हमरा घर आयल। आ एहि बेर हम चुप रहि कऽ अपनेकें निर्दोष नहि मानि सकैत।”

अनिरुद्धक सामने नब प्रमाण छल।

ई सत्यप्रकाशक मृत्यु सिद्ध नहि करैत।

मगर एक नब प्रश्न खोलैत—सत्यप्रकाश मृत्यु पहिने दिगन्तक धन-प्रवाहक एक अलग परत जाँचि रहल छल।

अम्बर ओहि जाँचक साक्षी छल, अपराधी सिद्ध नहि।

ई भेद ईशान लेल कठिन होयत।

मगर सत्य कठिन होयबाक कारण बदलैत नहि।



ओही साँझ राज्य आर्थिक-अपराध शाखाकें केन्द्रसँ सूचना आयल।

ऑनलाइन जुआ-जालक किछु धन देशक तीन राज्य पार कऽ एहन खातासभ धरि पहुँचल छल, जकर एक भाग पहिनेसँ एक अन्य राष्ट्रीय-सुरक्षा सम्बन्धी जाँचमे परीक्षणाधीन।

सूचना बहुत प्रारम्भिक।

कोनो निष्कर्ष नहि।

मगर मामला आब केवल राज्यक अवैध जुआ आ धनशोधन धरि सीमित नहि रहि सकैत—ई सम्भावना उठल।

आदित्य शेखर फाइल बन्द नहि केलक।

ओ ऊपर “अन्तर-एजेन्सी समन्वय” लिखलक।

नाम एखन भीतर राखल गेल।

क्योंकि राष्ट्रीय संस्था आयलासँ अपराध स्वतः पैघ सिद्ध नहि होइत।

कतेको बेर केवल प्रश्नक परिधि पैघ होइत अछि।

अनिरुद्ध बाहर निकलैत रचना केँ कहलनि—

“एखन सँ प्रत्येक शब्द दू बेर जाँचू।”

“किएक?”

“जखन जाँच राज्यक सीमा पार करैत अछि, गलतीक गूँज सेहो दूर जाइत अछि।”

रचना खिड़की बाहर देखलीह।

राजधानी नगर पर राति उतरि रहल छल।

कहीं एक मोबाइल स्क्रीन पर एखनहुँ दाँव लागि रहल होयत।

कहीं एक बेरोजगार युवक अपन बैंक खाता “कमीशन” लेल देब सोचि रहल होयत।

कहीं एक परिवारक बचत अपराधक धारमे अनजाने घुसि रहल होयत।

आ बहुत दूर गढ़ नारिकेलमे धनेश्वरीक आँगनक किनार एक बिज्जी चुपचाप गन्ध सूँघि रहल छल।

गोहि पानि बदलि चुकल छल।

गहुमन घरसभक भीतर नब बाट खोजि रहल छल।

पहरा आब एक गामक नहि, पूरा जालक होमयवला छल।



अन्तर-एजेन्सी बैठक राजधानी नगरमे नहि, दिल्लीमे भेल।

कमरा साधारण छल। लम्बा मेज। दीवालपर भारतक नक्शा। एक दिस राज्य आर्थिक-अपराध शाखा, दोसर दिस एन.आई.ए.क अधिकारी सभ। बीचमे फाइल कम, स्क्रीन बेसी।

बैठकक आरम्भमे एन.आई.ए.क पुलिस अधीक्षक अपूर्वा कश्यप एक बात स्पष्ट कऽ देलनि—

“ऑनलाइन जुआ हमरा मामला नहि।”

आदित्य शेखर मूडी डोलौलक।

“हम बुझैत छी।”

“म्यूल खाता सेहो अपने-आप राष्ट्रीय-सुरक्षा मामला नहि।”

“हँ।”

“हम एतय केवल एहि कारण छी जे अहाँक सूचीमे सात खाता एहन वित्तीय पथसँ जुड़ल अछि, जकर एक छोर हमर अलग जाँचमे पहिनेसँ देखल जा रहल अछि।”

रचना सिन्हा पूछलीह—“एके लाभार्थी?”

“नहि।”

“एके संस्था?”

“ओहो नहि।”

अपूर्वा स्क्रीनपर तीन वृत्त बनौलीह।

पहिल—ऑनलाइन जुआ।

दोसर—धन-वाहक खाता।

तेसर—एन.आई.ए.क अलग अनुसंधान।

तीनू वृत्तक बीच एक छोट साझा बिन्दु।

“ई बिन्दु एक वित्तीय मध्यस्थ समूह अछि। एखन हमरा पता नहि जे ई साझा सेवा अछि, साझा अपराध अछि, वा केवल संयोग।”

कमरामे कियो ‘आतंक-धन’ शब्द नहि बजलक।

कारण एक असिद्ध शब्द सेहो कतेको जीवन नष्ट कऽ सकैत अछि।

अनिरुद्ध, जे विशेष आमन्त्रित रूपमे पाछाँ बैसल छलाह, धीरे कहलनि—

“समान मार्ग, समान उद्देश्य सिद्ध नहि करैत।”

अपूर्वा हुनका दिस तकलीह।

“ठीक। आ राष्ट्रीय संस्था बैठकमे बैसल अछि—एहि कारण मामला स्वतः राष्ट्रीय षड्यंत्र नहि बनैत।”

ई वाक्य आदित्य अपन नोटबुकमे लिखि लेलक।

जाँचक इतिहासमे कतेको त्रासदी एहन भेल अछि जतऽ संस्थाक आकार प्रमाणक आकार मानि लेल गेल।

एहि बेर सभ पहिने सीमा लिखि रहल छल।



सात खातामे पाँच छोट व्यवसायीक नाम पर छल।

एक विद्यार्थी।

एक गृहिणी।

गृहिणीक नाम—सबीना खातून।

ओ मधुपुरक एक सिलाइ-दोकान चलबैत छलीह। बैंक अभिलेख देखबैत छल जे तीन महीनामे हुनकर खातासँ व्यवसायिक आयक अपेक्षा कई गुणा बेसी रकम आयल-गेल।

रचना सिन्हा वीडियो पर पूछलीह—

“अहाँ एहि पैसा विषय जनैत रही?”

सबीना माथ हिलौलीह।

“हमरा कहल गेल छल ऑनलाइन कपड़ा कम्पनीक भुगतान हमरा खातासँ घुमल। महीना पाँच हजार भेटत।”

“के कहल?”

“मेहरुन।”

“मेहरुन के?”

“हमर भतीजीक सहेली।”

“ओकरा के कहल?”

सबीना चुप।

“हम नहि जनैत।”

“अहाँ प्रश्न नहि केलहुँ?”

“केने रही। कहलक—‘डिजिटल काज अछि, कर चुकाओल जाइत अछि।’”

रचना पूछलीह—“अहाँ पाँच हजार लेल राजी किएक भेली?”

सबीना आँखि नीचाँ कऽ लेलनि।

“सिलाइ-दोकानमे भाड़ा उठैत नहि छल। बेटीक दाँत इलाज चलि रहल छल।”

एक बैंक-खाता।

पाँच हजार रुपैया।

एक दाँतक इलाज।

जाँचक कागचपर ई सभ पाँति अलग रहैत।

जीवनमे एक्के वाक्य होइत।

सबीना अपराध-जालक रानी नहि छलीह।

मगर पूर्ण निर्दोष सेहो स्वतः मानि नहि सकैत छल।

की हुनका शंका होयबाक चाही छल?

की आर्थिक विवशता ज्ञानक कमीकेँ माफ करैत?

की ‘नहि जनैत रही’ कहब पर्याप्त?

न्याय-दर्शन एहि प्रश्नसभक तुरन्त उत्तर नहि दैत।

ओ केवल आग्रह करैत—प्रश्न अलग-अलग राखू।



सातम खाता एक एहन युवकक छल जे एक महीना पहिने मरि चुकल छल।

नाम—पवन राउत।

उमर छब्बीस।

घर—राजधानी नगरसँ करीब दू सौ कोस दूर एक छोट कस्बा।

मृत्यु—सड़क दुर्घटना।

आदित्यक चेहरा कड़ा भऽ गेल।

“फेर दुर्घटना।”

अनिरुद्ध तुरन्त रोकलनि—“शब्द दोहरायल अछि, तथ्य नहि।”

पवन रातिमे मोटरसाइकिलसँ लौटैत खसल छल। सामने जानवर आयल कि वाहन—स्पष्ट नहि।

स्थानीय पुलिस दुर्घटना लिखने छल। परिवार कियो संदेह नहि जतौने।

मगर ओकर बैंक-खाता एखन नब अर्थ लऽ रहल छल।

रचना कहलनि—“हम मृत्यु फेर खोलब?”

अपूर्वा कश्यप उत्तर देलीह—“पहिने खाता बुझू। मृत्युकें अपराध बनाबऽ काज नहि।”

अनिरुद्धक आँखिमे एक क्षण सत्यप्रकाशक पुरान सड़क चमकल।

बीस वर्ष पहिने सेहो इएह कठिनाई।

एक मृत्यु।

एक आर्थिक जाल।

आ मानवीय मन तुरन्त दुनूकें जोड़य चाहैत।

तखन सेहो ओ जोड़ि नहि सकने छल।

एखन सेहो नियम वैह।



पवनक माए घरक आँगनमे अनाज सुखा रहल छलीह जखन दल पहुँचल।

“बैंकवला?” ओ पूछलीह।

“जाँच।”

बूढ़ी डरि गेलीह।

“पवन किछु गलत केने छल?”

रचना सीधे कहलनि—“एखन हम नहि जनैत छी।”

ई उत्तर सुनि माएक आँखिमे आशा नहि, भय बढ़ल।

“नहि जनैत” गरीब परिवार लेल बहुत बेर “किछु पैघ अछि”क समान होइत।

पवनक छोट भाई मोबाइल निकालि किछु सन्देश देखौलक।

मृत्यु सँ चारि महीना पहिने पवनकेँ एक डिजिटल-विपणन काज भेटल छल। ओकरा केवल “भुगतान समन्वय” करबाक कहल गेल।

महीना सात हजार।

ओ अपन मित्रसभसँ सेहो खाता माँगने छल, मुदा बहुत लोक मना कऽ देने।

एक सन्देशमे पवन लिखने छल—

“ई काज हमरा नीक नहि लगैत, मुदा दू महीना आर करब। ऋण चुकि जाएत।”

रचना बहुत देर पन्ना देखती रहलीह।

“ककर ऋण?”

माए कहलीह—“ओकर बाबूक इलाजक।”

पिता भीतर खाटपर पड़ल छलाह। लकवा पछि चलि नहि सकैत।

पवन मरल।

ऋण अधूरा।

आब बैंक-जाँच।

छोट भाई पूछलक—

“जँ भैया अपराधी निकलत तँ ओकर मृत्युक बादो जेल देब?”

कियो हँसल नहि।

रचना कहलनि—

“मृत आदमीकेँ नहि। मुदा सत्य लिखल जाएत—जे छल, से।”

“आ यदि ओकरा उपयोग कएल गेल?”

“ओहो लिखल जाएत।”

भाई फेर पूछलक—

“दुनू एक संग हो सकैत?”

रचना मूड़ी डोलौलीह।

“बहुत बेर।”



नीलकण्ठ एग्रीगेट्सक दफ्तर पहिल नजरिमे जाँचक सभ अनुमान खराब करैत छल।

वास्तविक खदान-अनुज्ञा।

वास्तविक ट्रक।

वास्तविक मजदूर।

कर।

बीमा।

बिक्री।

कम्पनीक वर्तमान निदेशक—अरविन्द घोष—कागचसँ भागल नहि।

“हमरा म्यूल खाता विषय किछु नहि बुझाइट,” ओ कहल।

“अहाँक खातामे धन आयल।”

“ग्राहक भुगतान।”

“ककर?”

“एक निर्माण-सामग्री दलाल।”

“नाम?”

“सहस्त्र ट्रेडलिक।”

मयंक झा, आब परामर्शदाताक रूपमे दूरसँ जुड़ल, पुछलनि—

“माल गेल?”

अरविन्द तुरन्त गोदाम-चालान, वजन-पर्ची, कर-कागच देखौलक।

माल सचमुच गेल छल।

प्रश्न कठिन भऽ गेल।

धनशोधनक जाल कतेको बेर पूर्ण झूठ व्यापार नहि बनबैत।

ओ वास्तविक व्यापारक भीतर झूठा उद्देश्य लुका सकैत।

मगर वास्तविक व्यापार देखिते ‘धनशोधन’ कहि देब सेहो गलत।

रचना पूछलीह—“सहस्त्र ट्रेडलिकक मालिककेँ चिन्हैत छी?”

“नहि। कर्मचारी खरीद करैत।”

“पैसा ककर खातासँ?”

“हम बैंक विवरण नहि देखैत। लेखा विभाग।”

“के?”

अरविन्द एक नाम देलक—

“प्रदीप महाजन।”



प्रदीप महाजन तीन दिन पहिने नौकरी छोड़ि चुकल छल।

फोन बन्द।

घर बन्द।

पड़ोसी कहलक—पत्नी बच्चासभसँ मायके गेलीह।

ओ स्वयं कतऽ—नहि पता।

रोहित, जे अब अनुभवी भऽ चुकल छल, कहलक—

“भागल।”

अनिरुद्ध ओकरा देखलनि।

रोहित तुरन्त सुधारलक—

“गायब।”

अनिरुद्ध हलुक मुस्करायल।

“आब ठीक।”

प्रदीपक बैंक खाता सामान्य।

वेतन।

घरक ऋण।

विद्यालय फीस।

किछु असामान्य नहि।

मगर ओकर पुरान ई-पत्रक कानूनी प्रति जाँचमे भेटल—सहस्त्र ट्रेडलैंकसँ कई बिल सीधे
प्रदीपक निजी ई-पत्र पर आयल छल।

किएक?

कम्पनीक सामान्य प्रक्रिया नहि।

एहि बेर प्रश्न छोट नहि छल।



सहस्त्र ट्रेडलैंक कागच पर तीन वर्ष पुरान संस्था।

कार्यालय—एक अन्य राज्यक औद्योगिक क्षेत्र।

दफ्तर पहुँचला पर बोर्ड छल, ताला छल, भीतर दू टेबुल।

पड़ोसी कहलक—“महीनामे एक-दू बेर लोक अबैत।”

कर्मचारी?

“कियो स्थायी नहि।”

बिजलीक खपत न्यून।

मगर बैंक व्यवहार भारी।

आदित्यक टीम पहिल बेर एक स्पष्ट मुखौटा संस्था देखैत छल।

मगर एन.आई.ए.क साझा बिन्दु एतय नहि।

ओ एतयसँ एक पाँति आगू छल—

सहस्त्र ट्रेडलिकक एक भुगतान “आरोह परिवहन समाधान” नामक कम्पनीकेँ।

आरोह पर एन.आई.ए.क अलग जाँचमे नजरि छल, कारण ओकर एक पुरान वाहन एक राष्ट्रीय-सुरक्षा सम्बन्धी आरोपीक सामान ढोने छल।

एहि मात्र संबंधक कारण सात म्यूल खातासँ उठल धन राष्ट्रीय बैठक धरि पहुँचने छल।

अपूर्वा कश्यप फाइल देखैत कहलीह—

“आब हमरा एक बात साफ लगैत अछि।”

आदित्य—“की?”

“अहाँक जुआक पैसा सम्भवतः हमरा अपराधकेँ निधि नहि देलक।”

कमरामे मौन।

“तखन संबंध?”

“आरोह शायद अनेक ग्राहक लेल कागज पर सेवा देनिहार साझा वित्तीय आवरण अछि। हमर आदमी एक कारणे उपयोग केलक; अहाँक जाल दोसर कारणे।”

रचना कहलनि—“अर्थात् समान नाली, अलग घर।”

“ठीक।”

अनिरुद्ध खिड़की दिस देखलनि।

“ई निष्कर्ष बहुत महत्वपूर्ण अछि।”

एक युवा अधिकारी पूछलक—“क्योंकि राष्ट्रीय-सुरक्षा लिंक टूटल?”

“क्योंकि टूटल तथ्य सेहो प्रमाण अछि।”

न्याय केवल जे जोड़ैत अछि ताहिसँ नहि बनैत।

जे गलत जोड़ तोड़ैत अछि, ताहिसँ सेहो।



एन.आई.ए. अपन भूमिका सीमित करबाक निर्णय लेलक।

मगर सहयोग बन्द नहि।

अपूर्वा कहलीह—

“हमरा अलग मामलेमे जे वित्तीय मध्यस्थक अभिलेख वैधानिक रूपेँ भेटत, जाहिमे अहाँक अनुसंधानक प्रासंगिक सामग्री होयत, प्रक्रिया अनुसार साझा करब।”

आदित्य धन्यवाद देलक।

ई विजय नहि छल।

कियो गिरफ्तार नहि।

कोनो प्रेस सम्मेलन नहि।

मगर एक भारी संदेह हटि गेल।

देशक सुरक्षा-जाँचमे नाम जुड़ब मात्रसँ हजारों उपयोगकर्ता, अम्बरक कर्मचारी, म्यूल खाताधारक वा जुआ खेलनिहार लोक स्वतः राष्ट्रीय अपराधी नहि बनल।

कतेको बेर जाँचक सभसँ नैतिक उपलब्धि ई होइत अछि जे ओ अपन सीमाकेँ सार्वजनिक तमाशा बनाबऽ सँ बचा ले।



केशव मेहता एहि बीच अम्बर कार्यालय आबि रहल छल, मुदा ओकर व्यवहार बदलि गेल।

पहिने प्रत्येक बैठकमे बोलैत।

आब कम।

विहान सारंग एक राति ओकरा रोकलक।

“लोकविस्तार विषय की छुपौने छी?”

केशव हँसल।

“जाँच एजेन्सीक भाषा घरमे मत आनू।”

“ई घर नहि।”

“कम्पनी हमर सेहो अछि।”

“तँ उत्तर दिअ।”

केशव खिड़की कात चलि गेल।

नीचाँ पार्किङ्गमे कर्मचारी घर जा रहल छलाह।

“विहान, हमर गलती ई छल जे हम वृद्धि रोकल नहि।”

“रात्रि कक्ष?”

केशव पाछाँ घुरल।

“ओ अम्बर नहि।”

“मगर अम्बरक लोक?”

“किछु।”

“लोकविस्तार?”

“बाहरी।”

“मनोज?”

“बाहरी।”

“रितेश?”

“हम नामो नहि जनैत।”

विहानक आवाज कठोर भेल।

“आ पैसा?”

केशव चुप।

“केशव।”

“पैसा कई ठामसँ धूमैत। हमर सामने केवल निपटानक कुल आँकड़ा अबैत छल।”

“तूँ जानैत छलह जे निजी दाँव चलैत?”

दीर्घ मौन।

“शंका छल।”

“कखन सँ?”

केशव उत्तर नहि देलक।

विहान कुर्सीपर बैठि गेल।

कम्पनी, प्रतिष्ठा, रोजगार, वर्षोंक मेहनत—सभ ओकर सामने छल।

मगर प्रश्न बहुत छोट—

कखन सँ?

“तूँ हमरा किएक नहि कहलह?”

केशव धीरे कहल—

“क्योंकि प्रत्येक तिमाही संख्या बढ़ैत छल।”

ई उत्तर अपराधक स्वीकारोक्ति नहि।

मगर चरित्रक स्वीकारोक्ति छल।

कतेको पतन लोभ सँ शुरू नहि होइत।

ओ मौन सँ शुरू होइत अछि।



अगिला भोर अम्बर निदेशक-मण्डल केशव मेहताकेँ अवकाश पर पठौलक।

प्रेस-वक्तव्य छोट—

“आन्तरिक अनुपालन समीक्षा पूर्ण होय धरि।”

विहान स्वयं राज्य शाखाकेँ सूचना देलक।

रचना सिन्हा पूछलीह—

“स्वेच्छासँ?”

“हँ।”

“क्यों?”

“क्योंकि आब हमरा विश्वास नहि जे हम जे नहि जनैत रही, से सचमुच नहि जनैत रही।”

रचना एहि वाक्य पर टिकलीह।

“फरक बुझाउ।”

विहान कहलक—

“कतेको बेर आदमी तथ्य नहि जनैत। कतेको बेर ओ प्रश्न नहि पूछैत, कारण उत्तर सुनय नहि चाहैत।”

रचना नोटबुकमे लिखलीह—

“ज्ञानक अभाव” आ “ज्ञानबूझि अनभिज्ञता”।

दुनूक बीच कानूनक अन्तर हो सकैत।

नैतिक अन्तर सेहो।



ईशानकेँ अम्बर खातासँ औपचारिक रूपेँ अलग कऽ देल गेल।

सूत्रलेखक प्रबन्धन निर्णय लेलक—पारिवारिक इतिहास आब सार्वजनिक जाँचक हिस्सा बनि चुकल अछि; हित-संघर्ष बहुत स्पष्ट।

ईशानक पहिल प्रतिक्रिया राहत नहि, अपमान छल।

“हम जे खोजलहुँ?”

सुमेधा घोष कहलीह—“फाइलमे अछि।”

“आगाँ?”

“दोसर टीम।”

“क्यों?”

“क्योंकि अहाँ खराब विश्लेषक नहि। एही कारण।”

ईशान कटु हँसल।

“ई तर्क?”

“अहाँक काम पर भरोसा अछि। मुदा आब अहाँक प्रत्येक सही निष्कर्ष पर बाहरक आदमी कहत—पिताक बदला। प्रत्येक गलत निष्कर्ष पर कहत—पूर्वग्रह। एहि सँ अहाँ नहि, जाँच दूषित हएत।”

ईशान चुप।

“तखन हम की करी?”

“जीउ।”

“एतेक सरल?”

सुमेधा बहुत देर ओकरा देखलीह।

“नहि। सबसँ कठिन।”



ओहि सप्ताह धनेश्वरीक स्वास्थ्य अचानक बिगड़ल।

मृणालिनी ईशानकें फोन केलनि।

फोन बन्द।

ईशान एक गोपनीय प्रस्तुति मे छल, जतऽ उपकरण बाहर जमा कराओल गेल छल।

तीन घण्टा बाद फोन वापस भेटल।

सात मिस्ट कॉल।

माँ।

मामा।

पड़ोसी।

ओ तुरन्त बाहर भागल।

मृणालिनी फोन उठौलीह।

दूसर कात किछु क्षण केवल साँस।

“माँ?”

“दादी...”

ईशान दीवाल पकड़लक।

“की?”

“चली गेलीह।”

कतेक समय?

पचास मिनट।

अन्तिम समय धनेश्वरी होशमे छलीह।

ओ केवल एक बेर पूछने छलीह—

“ईशान पानि पढ़ि रहल अछि?”

मृणालिनी कहने छलीह—“हँ।”

धनेश्वरीक अन्तिम स्पष्ट शब्द—

“किनार मोन रखय।”

फेर आवाज धीमी।

ईशान रातिक ट्रेन धरलक।

ओ जाँचसँ हटाओल गेल छल।

दादीक अन्तिम क्षणसँ सेहो बाहर रहि गेल।

दू अलग निर्णय।

दुनू उचित।

दुनू असह्य।

त्रासदीक क्रूरता ई नहि जे प्रत्येक घटना अन्यायपूर्ण हो।

कतेको बेर सभ सही प्रक्रिया मिलि कऽ सेहो एक मनुष्यकेँ एहन क्षति दैत अछि जकर अपील कतहु नहि।



गढ़ नारिकेलमे अन्त्येष्टि बाद घर बहुत चुप भेल।

धनेश्वरीक खाट खाली।

तकिया पर माथक गह्वा एखनहुँ।

मृणालिनी ईशानकेँ दोष नहि देलनि।

इएह ओकर लेल आर कठिन भेल।

“अहाँ हमरा फोन किएक नहि करैत रहलहुँ?” ईशान पूछलक।

“केने रही।”

“पहिने?”

“ओ अचानक बिगड़लीह।”

“हमरा बैठक छोड़ि देबाक चाही छल।”

“तोरा कोना बुझित?”

ईशान उत्तर नहि देलक।

“दादी पूछलीह—तूँ पानि पढ़ैत छह।”

ईशान रोअय लागल।

बालपन बाद पहिल बेर माएक सामने।

“हम किछु पढ़ि नहि पबैत छी, माँ।”

मृणालिनी ओकर माथ अपन गोदमे रखलीह।

“तूँ सभ पढ़बाक जिम्मा अपने पर किएक लैत छह?”

ई प्रश्न जाँचसँ बेसी गहिर छल।

ईशान निद्रा नहि लेलक।

भोरमे देहरी बाहर गेल।

कादोमे छोट पदचिह्न।

बिज्जी रातिमे आयल छल।

कोनो साँप नहि।
कोनो रक्त नहि।
केवल पदचिह्न।
ईशान झुकि ओकरा देखलक।
दादी नहि।
पहरा बचल।



अभिषेक झाक घरमे सेहो समय रुकल नहि छल।
मंजरी एहि वर्ष नर्सिङ्ग प्रवेश फेर देलक।
एहि बेर सीट भेटल।
मगर फीस लेल परिवार जमीनक छोट टुकड़ा बेचलक।
अभिषेक विरोध केलक—
“हम कमाइ देब।”
पिता हँसलाह नहि।
“तोहर कमाइ सँ पहिने बहुत कुछ सीखि लेलहुँ।”
वाक्य कठोर छल।
अभिषेक चुप।
मंजरी बादमे भाईक कोठरीमे आयलीह।
“बाबू क्रोधमे कहलखिन।”
“गलत कहलखिन?”
मंजरीक लग उत्तर नहि।
अभिषेक बैंक-जाँचमे सहयोग करैत रहल।

ओकरे पहचान पर एक दोसर खाता खोलब प्रयास केनिहार समूह पकड़ा गेल—अर्थात् ओकर नाम अपराधी सूचीमे घूमि रहल छल।

रचना कहलीह—

“आब जँ कियो तोरा फेर ‘कमीशन’क काज दे, तुरन्त बतइह।”

अभिषेक हँसल।

“आब हमरा चाय दोकानदारो उधार नहि दैत।”

रचना कुछ कहि नहि सकलीह।

कानून जँ किसीकेँ निर्दोष सहायक गवाह मानो, समाज ओकर बैंक-जाँचक गन्ध बहुत देर धरि रखैत अछि।



एन.आई.ए.क अलग जाँचसँ एक महीना बाद छोट डिजिटल अभिलेख राज्य दलकेँ वैधानिक प्रक्रिया सँ हस्तान्तरित भेल।

आरोह परिवहनक एक वित्तीय प्रबन्धकक फोनमे कई ग्राहक-कोड छल।

अधिकांश अर्थहीन।

एक पाँति—

“रात्रि—के.एम.—उत्तरायण समायोजन।”

के.एम.

केशव मेहता?

कियो कहि सकैत।

कृष्ण मोहन?

कविता मिश्रा?

कुणाल मेहरा?

अक्षर प्रमाण नहि।

मगर 'रात्रि' आ 'उत्तरायण' एके पाँतिमे पहिल बेर।
रचना सिन्हा फाइल खोललीह।
मनोज नायक पूछताछमे “रात्रि कक्ष” पर हँसने छल।
जब्त कम्प्यूटरमे “उत्तरायण” खाता-समूहक संकेत।
आब तेसर स्रोत।
तीन स्वतंत्र धागा।
एखन नाम नहि।
मगर व्याप्ति मजबूत।
आदित्य कहल—
“केशवकेँ बजाउ?”
रचना पुछलीह—“केवल अक्षर पर?”
“ओ पहिनेसँ अनुपालन जाँचमे।”
“तैयो।”
अनिरुद्ध, फोन पर, केवल एक वाक्य कहलनि—
“प्रश्न पूछबाक आधार बनल। दोष लिखबाक नहि।”



केशव मेहता नोटिस पाबि उपस्थित भेल।
वकील संग।
स्वर स्थिर।
“के.एम. हम नहि।”
“रात्रि कक्ष?”
“नाम सुनने।”
“ककरा सँ?”

“कम्पनीक आन्तरिक शिकायत।”

“कखन?”

केशव तारीख देलक।

ओ तारीख विहानक अनुमानसँ बहुत पुरान।

रचना पुछलीह—

“तखन कार्रवाई?”

“हम एक बाहरी एजेन्सी अनुबंध जाँचने रही।”

“लोकविस्तार?”

“हँ।”

“बन्द?”

“नहि।”

“किएक?”

केशवक वकील बीचमे—“व्यावसायिक निर्णय।”

रचना—“हम कारण पूछैत छी।”

केशव—“पर्याप्त प्रमाण नहि छल।”

रचना एक क्षण चुप।

“असामान्य बात अछि।”

“की?”

“अपराध-जाँचमे हम दिनभर ई वाक्य बजैत छी। व्यापारमे सुनि कऽ कने अलग लगैत।”

केशव मुस्करायल नहि।

रचना आगाँ पूछलीह—

“रात्रि कक्षक पैसा अम्बरक मुख्य प्रणालीमे समाहित भेल?”

“हम नहि जनैत।”

“जानबाक जिम्मा ककर?”

“वित्त विभाग।”

“अर्थात् अहाँ।”

कमरा थिर।

केशव पानि पिलक।

“हम कुल निपटान देखैत रही। स्रोत-स्तर नहि।”

“किएक?”

“प्रणाली एहन छल।”

“के बनौलक?”

केशव उत्तर देल—

“बाहरी भुगतान परामर्शक।”

“नाम?”

ओ पहिल बेर वकील दिस तकलक।

फेर कहलक—

“प्रदीप महाजन।”

कमरामे कियो आवाज नहि।

नीलकण्ठ एग्रीगेट्सक गायब लेखा-कर्मचारी।

पहिल बेर वर्तमान जुआ-जाल आ पुरान निर्माण-व्यवसाय बीच एक जीवित व्यक्ति उभरल।



प्रदीप महाजनक खोज आब प्राथमिकता बनल।

घरवालीक बयान लेल गेल।

“ओ डरायल छल?”

“हँ।”

“ककरा सँ?”

“काजसँ।”

“कहल?”

“कहैत—गलत लोकक पैसा सही किताबमे लिखि देलहुँ।”

“ककर लोक?”

“नहि कहल।”

“कतऽ गेल?”

पत्नी रोअय लागलीह।

“ओ हमरा नहि कहलक। बस बच्चाकेँ चुमलक आ कहलक—किछु दिन मायके रह।”

“फोन?”

“छोड़ि गेल।”

ई असामान्य।

भागनिहार बहुत बेर फोन नष्ट करैत।

प्रदीप फोन घरमे छोड़ि गेल।

अर्थात् ओ जानैत छल फोन पीछा करा सकैत।

ई अनुभवी अपराधी?

अथवा भयभीत लेखा-कर्मचारी?

दुनू सम्भव।

फोनक परीक्षणमे कोनो सनसनी नहि।

परिवार फोटो।

बिल।

काजक सन्देश।

एक नोट अनुप्रयोगमे केवल एक वाक्य—

“नदी पार पुरान कोठी—बिरजू।”

बिरजू के?

कियो नहि जानैत।

अनिरुद्धक पुरान फाइलमे एहि नामक कोनो व्यक्ति नहि।

दिगन्त?

नहि।

अम्बर?

नहि।

नीलकण्ठ?

नहि।

मयंक झा कहलनि—

“एहन बिन्दुपर मन पुरान कथा बनावय चाहैत अछि। रोकू।”

रचना पुछलीह—“तखन?”

“नामक स्वतंत्र अर्थ खोजू।”



“नदी पार पुरान कोठी” राजधानी नगरक स्थल नहि निकलल।

तीन जिला पार एक पुरान चीनी मिलक नजिक गाम।

स्थानीय पुलिसक एक बुजुर्ग हवलदार नाम सुनिते कहलक—

“बिरजू साह?”

“के?”

“पुरान हवाला-जइसन काजक चर्चा छल, मुदा कखनो मामला सिद्ध नहि। आब अस्सी बरखक होयत। कोठी नदी पार।”

रचना तुरन्त शब्द पकड़लीह—

“हवाला-जइसन?”

“लोक कहैत छल। हम प्रत्यक्ष नहि जनैत।”

नीक।

अफवाह अलग रखल गेल।

बिरजू साह जीवित छल।

अस्सी नहि, छिहत्तर।

शरीर कमजोर।

आँखि तेज।

दल पहुँचल तऽ ओ डरायल नहि।

“प्रदीप?”

ओ नाम सुनिते चेहरा उतरि गेल।

“आयल छल।”

“कखन?”

“दू महीना पहिने।”

“किएक?”

“कागच छोड़ऽ।”

“कोन कागच?”

बिरजू हँसल।

“अहाँ सभ कागच लेल आयल छी कि आदमी?”

रचना—“दुनू।”

बिरजू पाछाँक पुरान आलमारी खोललक।

भीतर एक बन्द लिफाफा।

प्रदीप लिखने छल—

“जँ हम सात दिनमे वापस नहि आऊँ तँ ई पुलिसकें दिअ।”

“अहाँ दू महीना किएक राखलहुँ?” रचना कठोर भेलीह।

बिरजू शान्त—

“ओ सात दिन बाद फोन केलक।”

“कहल?”

“जीवित छी। लिफाफा मत खोलू।”

“फेर?”

“तीन सप्ताह पहिने फेर फोन। कहलक—जँ कियो पूछय तँ कहू नहि जनैत।”

“आब देब किएक?”

बिरजू रचना दिस देखलक।

“क्योंकि काल्हि राति तेसर फोन आयल।”

“प्रदीप?”

“नहि।”

“के?”

“कियो कहलक—पुरान कागज जरा दिअ।”

कोठरीक हवा बदलि गेल।

“अहाँ जरेलहुँ नहि?”

बिरजू हलुक मुस्करायल।

“हम बूढ़ छी। मूर्ख नहि।”



लिफाफा ओतहि नहि खोलल गेल।

सील।

जब्ती-पत्र।

गवाह।

कैमरा।

प्रक्रिया।

रचना अधीर हो सकैत छलीह।

नहि भेलीह।

कारण कतेको बेर अपराधी प्रमाणक भीतर नहि, प्रमाणक प्रक्रिया पर हमला करैत।

राजधानी नगर लौटि अधिकृत कक्षमे लिफाफा खुलल।

भीतर पन्ना कम।

एक हस्तलिखित सारणी।

किछु कम्पनीक संक्षिप्त नाम।

तारीख।

कुल रकम।

आ चारि स्तम्भ—

“खेल।”

“रात्रि।”

“माल।”

“पुरान।”

सबसे नीचे—

“के.एम. / पी.एम. / उ.”

पी.एम.—प्रदीप महाजन सम्भव।

के.एम.—केशव मेहता सम्भव।

“उ.”—उत्तरायण?

फेर वैह नियम।

सम्भव।

सिद्ध नहि।

मगर एक पाँतिमे “पुरान” स्तम्भक सामने दिगन्तक न्यायालयी जब्ती-अभिलेखक एक पुरान
रकमसँ मेल खाइत संख्या भेटल।

मयंक झा बहुत देर चुप रहलाह।

“ई असम्भव...”

अनिरुद्ध पूछलनि—“की?”

“दिगन्तक समय जब्त नहि भेल एक विवादित भुगतान। हम सोचने रही दोसर वैध पक्षक।”

“मेल?”

“रकम आ तारीखक अन्तर बहुत कम।”

“अर्थ?”

मयंक साँस छोड़लनि।

“यदि ई सारणी वास्तविक अछि, तँ पुरान निविदा-जालक किछु पूँजी बादमे उत्तरायण-जइसन
निवेश परत धरि पहुँचल हो सकैत।”

ईशान ओतय नहि छल।

मगर ओकर पिताक पुरान पर्ची मानो फाइलक भीतर आवाज कऽ रहल छल।

अम्बर।

दू बेर फोन।

पुरान धन।

नब पानि।



अनिरुद्ध एहि राति बहुत देर जागल रहलाह।

सेवानिवृत्त अधिकारी।

आधिकारिक शक्ति नहि।

मगर कथा फेर ओकर टेबुल धरि लौटि आयल।

ओ सत्यप्रकाशक पुरान फाइल खोललनि।

विहानक ई-पत्र।

दिगन्त खेल-महोत्सव।

अम्बर क्रीड़ा मीडिया।

तखन छोट।

आब विशाल डिजिटल कम्पनी।

की सत्यप्रकाश ओहि समय एहि धन-पथक आरम्भिक रूप देखि लेने छल?

सम्भव।

की एहि कारण ओकर मृत्यु भेल?

एखनहुँ सिद्ध नहि।

बीस वर्षक बादो वैह उत्तर।

अनिरुद्ध फाइल बन्द केलनि।

कतेको त्रासदीक सभसँ कठोर रूप ई नहि जे सत्य लुकल अछि।

ई जे सत्यक किछु अंश मिलैत रहैत, मुदा निर्णायक पाँति कहियो नहि।



गढ़ नारिकेलमे धनेश्वरीक श्राद्धक बाद ईशान राजधानी नगर लौटबाक तैयारी करैत छल।

मृणालिनी ओकर बैगमे भोजन रखलीह।

“काम पर घुरब?”

“दोसर फाइल।”

“अम्बर नहि?”

“नहि।”

मृणालिनी राहतक साँस लेलनि।

ईशान झूठ नहि बजलक।

मगर पूरा सत्य सेहो नहि—अम्बरक जाँच ओकर मनसँ अलग नहि भेल।

देहरी पर निकलिते एक बिज्जी सामने पथ पार केलक।

ईशान रुकल।

पाछाँ झाड़ीमे एक गहुमनक फुँफकार।

बिज्जी एक क्षण स्थिर।

साँप घासक भीतर पाछाँ सरकल।

कोनो लड़ाइ नहि।

कोनो रक्त नहि।

केवल उपस्थितिक कारण बाट बदलल।

ईशानकेँ दादीक बात मोन पड़ल—

“कतेको बेर बिज्जीक उपस्थितिये पर्याप्त होइत अछि।”

ओ ट्रेन पकड़बाक लेल चलि गेल।

ओ नहि जनैत छल जे राजधानी नगरमे ओहि समय प्रदीप महाजनक लिफाफा खुलि चुकल अछि।

नहि जनैत छल जे ओकर पिताक अधूरा प्रश्न, दिगन्तक पुरान पैसा, उत्तरायणक निवेश, अम्बरक डिजिटल सफलता, रात्रि कक्षक जुआ, सबीनाक सिलाइ-दोकान, पवनक मृत खाता, अभिषेकक अपराध-बोध—सभ एक बिन्दु दिस धीरे-धीरे घुरि रहल अछि।

मगर एखनहुँ केन्द्रक नाम नहि छल।

एखनहुँ निर्णय नहि।

केवल पानिमे एक गहिर घूमाव।

गोहि ऊपर नहि आयल छल।

बिज्जी किनार छोड़ने नहि छल।



बिरजू साहक कोठीपर अगिला भोर स्थानीय पुलिसक पहरा लगा देल गेल।

ओ स्वयं एहि व्यवस्था सँ प्रसन्न नहि छल।

“हम अपराधी नहि छी,” ओ रचना सिन्हासँ कहलनि।

“पहरा अपराधी लेल मात्र नहि होइत।”

“बूढ़ आदमीकेँ बंदी जकाँ राखब?”

“अहाँ बंदी नहि।”

बिरजू हँसल।

“दरबज्जा बाहर दू सिपाही, भीतर फोन लिखल जाए, बाहर जाएब पर गाड़ी—नाम चाहे जे दिअ।”

रचना चुप रहलीह।

बिरजू सही छल।

सुरक्षा आ बन्धनक बीच रेखा कागचपर साफ होइत अछि; मनुष्यक अनुभवमे नहि।

ओहि दिन मजिस्ट्रेट समक्ष बयान लेल समय माँगल गेल। बिरजू सहमत छल, मुदा कहलक—

“हम जे स्वयं देखने छी, वैह कहब। लोक जे कहैत छल, से नहि।”

रचना अपन नोटबुक बन्द केलनि।

“हमरो इएह चाही।”

बिरजू आँखि सिकोड़ि हुनका देखलक।

“तखन अहाँ सभ पहिल पुलिस छी जे कम कथा चाहैत अछि।”

“हमरा कथा नहि, प्रमाण चाही।”

“दुनूकेँ अलग राखि सकब?”

रचना उत्तर देलीह—

“प्रयास करब।”

बिरजू धीरे मूड़ी डोलौलक।

“बस, न्याय एतबे कठिन अछि।”



बिरजू पुरान कालक दलाल छल—ई बात ओ बिना घुमाओने मानि लेलक।

“हवाला?” रचना पूछलीह।

“ई शब्द पुलिसक अछि।”

“अहाँक?”

“हम कहैत रही—पाइ पहुँचाबऽ।”

“ककर?”

“व्यापारी, ठेकेदार, चुनाववला, कखनो परिवार।”

“कानूनी?”

“कतेको। कतेको नहि।”

“दिगन्त?”

बिरजू दीर्घ साँस लेलक।

“दिगन्त बहुत बादक बात।”

“पुरान जाल?”

“अहाँ जे नाम दैत छी, हम ओहि नामसँ नहि चिन्हैत रही।”

रचना सामने सत्यप्रकाशक पुरान निविदा-जाँचक कुछ संस्था रखलीह।

बिरजू दू नाम पहचानलक।

तेसर पर मूड़ी हिलौलक।

“ई सब आदमी नहि, बाट छल।”

“मतलब?”

“एके पैसा कखनो दान, कखनो बिल, कखनो माल, कखनो चुनाव खर्च बनि जाइत। जे आदमी बाट बनबैत, ओकरा सभ नाम जानब जरूरी नहि।”

“प्रदीप महाजन अहाँ लग किएक आयल?”

बिरजू बहुत देर चुप।

“ओ कहैत छल—पुरान बाट फेर खुलल अछि।”

“ककर लेल?”

“नब पैसा।”

“ऑनलाइन जुआ?”

“ओ ई शब्द नहि बजलक।”

“तखन?”

“कहलक—स्क्रीनक खेल। रातिक हिसाब। छोट-छोट खातासँ पैघ रकम।”

रचना किछु नहि लिखलीह। केवल सुनलीह।

बिरजू आगाँ कहल—

“ओ डरायल छल। कहैत छल जे जे तरीका बीस वर्ष पहिने ठेकेदारीक पाइकेँ उज्जर बनबैत छल, आब वैह तरीका डिजिटल पाइकेँ उज्जर बना रहल अछि।”

“के चला रहल?”

“ओ नाम नहि कहलक।”

“केशव मेहता?”

“नहि कहलक।”

“देवांशु रक्षित?”

“नहि।”

“उत्तरायण?”

बिरजू एहि शब्दपर पहिल बेर स्थिर भेल।

“ई नाम कहने छल।”

कमरामे हवा भारी भऽ गेल।

“की?”

“कहल—उत्तरायण असली कम्पनी नहि, ऊपरक छत अछि। नीचाँ बहुत कोठरी।”

रचना पुछलीह—

“मालिक?”

बिरजू आँखि मूनि मोन पाड़य लागल।

“एक नाम कहने छल... ‘शशि’ किछु।”

“शशि के?”

“बस एतबे। हम लिखने नहि।”

रचना तुरन्त नामक सूची नहि बनौलीह।

आधा नाम सबसे खतरनाक पूरा कथा जन्मबैत अछि।



ओहि राति बिरजू साह अचानक बीमार पड़ल।

पहिला शिकायत—छातीमे भारीपन।

स्थानीय चिकित्सक पहुँचला।

ई.सी.जी. केलनि।

जिला अस्पताल लेबाक सलाह।

एम्बुलेंस आयल।

रचना राजधानी नगर लौटि चुकल छलीह; फोन पर सूचना भेटल।

आधा घंटा बाद दोसर फोन।

बिरजू अस्पताल पहुँचि नहि सकल।

रास्तामे मृत्यु।

स्थानीय चिकित्सक प्रारम्भिक कारण हृदयाघात मानलनि।

आब फेर वैह संकट—

गवाह मरल।

प्रमाण जीवित।

अफवाह तुरन्त जन्मल।

“जहर।”

“हत्या।”

“पुलिस संरक्षणमे मृत्यु।”

“राज खुलबाक पहिने समाप्त।”

रचना आधी राति फेर लौटलीह।

शव-परीक्षणक आदेश।

दवा, भोजन, पानि—सभ नमूना।

बिरजू वृद्ध छल।

हृदयक रोग पहिनेसँ।

मगर एहि समय प्राकृतिक मृत्यु सेहो लोककैँ षड्यंत्र लगैत।

रचना जानैत छलीह—जेना अपराधी प्रमाण बनबैत अछि, समाज अर्थ बनबैत अछि।

दुनूक गति जाँचसँ तेज।



शव-परीक्षणमे तत्काल कोनो विषाक्तता संकेत नहि।

हृदयक पुरान रोग स्पष्ट।

अन्तिम मत सुरक्षित।

रचना राहत नहि लेलनि।

कारण बिरजू मजिस्ट्रेट समक्ष बयान देबासँ पहिने मरि गेल।

ओकर मौखिक कथन पुलिसक नोटमे अछि।

मगर अदालतमे ओकर मूल्य सीमित हो सकैत।

“शब्द-प्रमाण,” मयंक झा फोन पर कहलनि, “जतय वक्ता आब प्रश्नक उत्तर नहि दऽ सकैत।”

रचना चिढ़लीह—

“एहि समय दर्शन नहि।”

मयंक चुप।

रचना तुरन्त पछताइलीह।

“माफ करब।”

“किछु नहि।”

“हमरा लग ओ आदमी जीवित छल। काल्हि तक। हम सोचलहुँ—कल बयान लेब।”

मयंक धीरे कहलनि—

“जाँचमे ‘कल’ सभसँ महँग शब्द अछि।”

एहि वाक्य पर दुनू चुप।

बिरजूक लिफाफा एखनहुँ छल।

ओकर कोठीमे पुरान बही सभ छल।

मगर जे व्याख्या केवल ओकर मनमे छल, से संगहि चलि गेल।

त्रासदी कतेको बेर हत्या नहि होइत।

कतेको बेर समयक साधारण समाप्ति होइत अछि—ठीक ओहि क्षण जखन मनुष्यक बोलब जरूरी छल।



बिरजूक मृत्यु पछि ओकर बेटा कोठी पहुँचल।

नाम—अलोक साह।

बैंक अधिकारी।

पिता सँ वर्षों दूरी।

ओ पुलिसपर क्रुद्ध छल।

“अहाँ सभ ओकरा एहि उमेरमे घसीटलहुँ।”

रचना कहलीह—“ओ स्वयं सहयोग करैत छलाह।”

“ओ सभकेँ सहयोग करैत छलाह। इएह समस्या छल।”

“हुनकर हृदय-रोग विषय?”

“दवा लैत छलाह।”

“कोनो नब धमकी?”

अलोक रुकल।

“तीन महीना पहिने कहने छल—पुरान आदमी सभ फेर फोन करैत अछि।”

“नाम?”

“नहि।”

“किएक नहि बतौलनि?”

अलोक हँसल—कटु।

“हम पिता-पुत्र छलहुँ कि जाँच अधिकारी?”

रचना एहि उत्तरक चोट बुझलीह।

परिवारक भीतरक दूरीक कारण बादमे प्रमाणक खाली स्थान बनि जाइत—ई सोचब सेहो अन्याय सन लगैत।

अलोक अन्तमे एक पुरान लोहेक संदूक खोलि देलक।

“जे चाही देखू। मुदा एक बात लिखू—हमर पिता संत नहि छल।”

रचना कहलनि—

“हम ककरो संत बनाबऽ नहि आयल छी।”

संदूकमे बीस वर्ष पुरान बही।

किछु कागच कीड़ा खा चुकल।

किछु रकम।

किछु कूटनाम।

एक कूटनाम बेर-बेर—

“चन्द्र।”



“चन्द्र”क अर्थ खोजब शुरू भेल।

पहिला गलती आसान छल—

शशि = चन्द्र।

बिरजू “शशि किछु” कहने छल।

की दूनू एके व्यक्ति?

रोहित उत्साहित।

मयंक तुरन्त रोकलक।

“सम्भावना।”

रचना जोड़लीह—

“नाम नहि।”

अनिरुद्ध, दूरभाष पर, कहलनि—

“आ यदि कियो जानि-बुझि ‘शशि’ कहि चन्द्र संकेत छोड़ने हो? अथवा बिरजू गलत मोन पाड़ने हो?”

रोहित हँसल—

“हम बुझि गेलहुँ। किछु सिद्ध नहि।”

“एहि वाक्य पर क्रोध नहि, गर्व कर,” अनिरुद्ध कहलनि।

बहीमे चन्द्रक सामने बीस वर्ष पहिने तीन संस्था।

एक—दिगन्तसँ जुड़ल पुरान आपूर्तिकर्ता।

दोसर—एक सहकारी ऋण संस्था, आब बन्द।

तेसर—“उदयरेखा लोकन्यास।”

उदयरेखा एखनहुँ अस्तित्वमे।

शिक्षा, ग्रामीण खेल, छात्रवृत्ति, जल-संरक्षण।

वेबसाइट पर चमकदार फोटो।

अध्यक्ष—शशांक देवव्रत।

रचना नाम पढ़ि स्थिर भेल।

शशि?

शशांक?

चन्द्र?

फेर मन कथा बनाबऽ दौड़ल।

ओ स्वयं फाइल बन्द कऽ देलीह।

“पहिने न्यासक कागच।”



शशांक देवव्रत साठि वर्षक प्रभावशाली व्यक्ति छल।

पूर्व उद्योगपति।

न राजनीति।

न सार्वजनिक अपराध-अभिलेख।

उदयरेखा लोकन्यासक नाम देशक अनेक विश्वविद्यालय आ खेल परियोजनासँ जुड़ल।

अम्बर इंटैरेक्टिवक आरम्भिक निवेशक सूचीमे न्यास नहि।

मगर “उत्तरायण सामाजिक निवेश निधि” नामक एक कोष छल, जकर प्रारम्भिक दानकर्तामे उदयरेखा।

ई पहिल ठोस संस्थागत सेतु।

पुरान बही—उदयरेखा।

नब निवेश—उत्तरायण।

अम्बरक प्रारम्भिक पूँजी—उत्तरायण।

एहि सँ अपराध सिद्ध?

नहि।

दान, निवेश, व्यवसाय—सभ वैध हो सकैत।

मगर पथ आब दस्तावेजी छल।

रचना कहलीह—

“आब हमरा शशांक देवव्रतसँ प्रश्न पूछबाक अधिकार अछि।”

मयंक जोड़लनि—

“दोष मानबाक नहि।”

रोहित माथ पकड़लक।

“हम सभ एक दिन एहि वाक्यक टी-शर्ट छपब।”

पहिल बेर कक्षमे जोरक हँसी भेल।

हँसी समाप्त भेल तऽ बोर्डपर तीन दशक एक रेखामे देखाइत छल।

पुरान निविदा।

उदयरेखा।

उत्तरायण।

अम्बर।

रात्रि कक्ष।

म्यूल खाता।

पैसा समयक पानि पार करि चुकल छल।



शशांक देवव्रत बैठक लेल स्वयं समय देलक।

ओ वकील नहि अनलक।

“हमरा बुझायल जे ई दान आ निवेश विषय पूछताछ अछि।”

रचना—“हँ।”

“पुरान बहीमे उदयेखाक नाम अछि।”

“ककर बही?”

“बिरजू साह।”

शशांकक चेहरा पर हलुक चिन्ह आयल।

“ओ जीवित छल?”

“आब नहि।”

“हम समाचार पढ़ल।”

“चिन्हैत छलहुँ?”

“नामसँ।”

“काज?”

“पुरान वित्तीय मध्यस्थ।”

“उदयेखाकेँ पैसा पहुँचेने छल?”

शशांक कुर्सी पर पाछाँ झुकल।

“न्यास बनल समय बहुत दान नगद आ बैंक दुनू रूपमे आयल। बीस वर्ष पुरान प्रत्येक स्रोत हम मोन नहि राखि सकैत।”

“चन्द्र?”

ओकरे चेहरा खाली।

“के?”

रचना बहीक प्रति सामने रखलीह।

शशांक चश्मा लगौलक।

बहुत देर देखलक।

“ई हमर लिखावट नहि।”

“हम नहि कहि रहल छी।”

“चन्द्र हम नहि।”

“हम एखन पूछलहुँ सेहो नहि।”

शशांक एक क्षण रुकल।

वकील नहि छल, मुदा अनुभव बहुत।

“तखन अहाँ चाहैत छी हम स्वयं सम्बन्ध बनाबी।”

रचना मुस्कुराइलीह।

“हम चाहैत छी अहाँ जे जानैत छी वैह कहू।”

शशांक कागच पाछाँ रखलक।

“उत्तरायण निधि उदयरेखाक एक वैध सामाजिक निवेश पहल छल। युवा कम्पनी, खेल, शिक्षा, ग्रामीण तकनीक।”

“अम्बर?”

“आरम्भिक निवेश।”

“केशव मेहता?”

“भेटने छी।”

“प्रदीप महाजन?”

“नहि।”

“दिगन्त?”

“नाम सुनने।”

“देवांशु रक्षित?”

शशांक पहिल बेर आँखि हटौलक।

बस एक क्षण।

रचना देखलीह।

मगर आँखि हटेनाइ प्रमाण नहि।

“चिन्हैत छलहुँ?”

“सामाजिक कार्यक्रममे भेट भऽ सकैत।”

“सत्यप्रकाश कर्ण?”

“नहि।”

रचना बैठक समाप्त कऽ देलीह।

बाहर रोहित पूछलक—

“अहाँ देवांशु पर फेर किएक नहि दबौलहुँ?”

“क्योंकि एक क्षण आँखि हटेलक?”

“हँ।”

“मनुष्य आँखि हजार कारणे हटबैत।”

रोहित हँसल।

“अहाँ हमरा कखनो नाटक करऽ नहि देब।”

“अदालत नाटकक टिकट नहि बेचैत।”



ओहि दिन ईशानकेँ औपचारिक रूपेँ एक नब दायित्व भेटल।

अम्बर जाँच नहि।

राज्यक वित्तीय अपराधक व्यापक आँकड़ा-परियोजना।

कार्य—म्यूल खाताक सामाजिक प्रतिरूप बुझब।

कौन समूह बार-बार लक्ष्य बनैत?

छोट व्यापारी?

विद्यार्थी?

गृहिणी?

बेरोजगार?

कर्जदार?

ओ अपराधी पहचानब नहि, जोखिमक सामाजिक नक्सा बनायब।

ईशान प्रस्ताव पढ़ि बहुत देर चुप रहल।

सुमेधा घोष पूछलीह—

“लेब?”

“एहिमे अम्बरक डेटा नहि?”

“नहि।”

“अभिषेक जइसन लोक?”

“हँ।”

“सबीना?”

“हँ, यदि कानूनी रूपेँ अनाम आँकड़ा समूहमे।”

ईशान स्वीकृति देलक।

पहिल बेर ओकर काज बदला नहि, बचावक दिशामे मुड़ल।

मगर भीतर सत्यप्रकाश एखनहुँ छल।

मनुष्य अपन मृतककेँ नौकरी बदलि नहि मेटा सकैत।



आँकड़ा विचित्र कथा कहैत।

बहुत म्यूल खाताधारक पूर्ण अपराधी नहि।

बहुत पूर्ण निदोष सेहो नहि।

किछु सीधे कमीशन लेल जानि-बुझि खाता दैत।

किछु “घर सँ काज” बुझैत।

किछु ऋणक दबावमे।

किछु छात्र, जे पहिल पाँच सौ रुपैया भेटिते विश्वास करैत।

किछु छोट दुकानदार, जे बैंक लेनदेन बढ़ला पर ऋण भेटत—एहन भ्रममे।

ईशान एक नक्सा बनौलक।

जतऽ बेरोजगारी बेसी, ओतऽ खाता भर्ती बेसी।

जतऽ प्रवासी परिवार, ओतऽ दूरदराज बैंकिंग।

जतऽ ऑनलाइन जुआ प्रचार, ओतऽ छोट ऋण आ खाताक असामान्य सक्रियता।

सहसम्बन्ध।

कारण नहि।

मगर रोकथाम लेल संकेत।

ओ रिपोर्टक पहिल पन्नापर लिखलक—

“म्यूल खाता केवल बैंकिंग समस्या नहि; ई आर्थिक असुरक्षा, डिजिटल अनभिज्ञता, त्वरित

कमाइक लालसा आ संगठित भर्ती—चारू धारक संगम अछि।”

अनिरुद्ध रिपोर्ट पढ़ि ओकरा फोन केलनि।

“नीक लिखने छह।”

ईशान चुप।

“दादी होइतथि तऽ?”

ईशानक गला भरि आयल।

“कहैत—पानि पढ़।”

“तूँ पढ़ि रहल छह।”

“बाबूक पानि एखनहुँ नहि।”

अनिरुद्ध बहुत देर चुप रहला।

“सभ पानि एक मनुष्य नहि पढ़ि सकैत, ईशान।”

“तखन न्याय?”

“कतेको बेर अगिला पीढ़ी पंक्ति पूरा करैत।”

ईशान फोन रखि देलक।

ओहि राति ओ पहिल बेर सत्यप्रकाशक फोटो टेबुलसँ उठा आलमारीमे रखलक।

भूलल नहि।

केवल साँस लेबाक जगह बनौलक।



प्रदीप महाजन अन्ततः स्वयं सामने आयल।

पुलिस ओकरा खोजि नहि पेलक।

ओ एक वकील मार्फत संदेश पठौलक—

“हम आत्मसमर्पण करब।”

स्थान—जिला न्यायालय।

शर्त—मीडिया सँ दूरी, परिवारक सुरक्षा, आ पहिल बयान मजिस्ट्रेटक सामने।

रचना सहमत भेल, प्रक्रिया अनुसार।

अदालतक दिन प्रदीप दुबला, दाढ़ी बढ़ल, साधारण कपड़ामे आयल।

कोनो फिल्मी पीछा नहि।

कोनो हथियार नहि।

ओ सीधे वकीलक संग आत्मसमर्पण कएलक।

मामला वित्तीय अपराधक।

न्यायिक हिरासतक आवेदन।

मजिस्ट्रेट पूछलनि—

“भागल किएक?”

प्रदीप उत्तर देलक—

“डेरायल रही।”

“ककरा सँ?”

“जे हमरा काज देलक, ओकरा सँ सेहो। जे जाँच करत, ओकरा सँ सेहो।”

“अपराध केलहुँ?”

प्रदीप रुकल।

“किछु कागच जानि-बुझि गलत बनौलहुँ।”

“धनशोधन?”

“हम शब्द नहि जनैत रही, काज बुझैत रही।”

अदालतमे मौन।

“मतलब?”

“हम जानैत रही जे पैसा जे नाम पर अछि, हमेशा ओहि काजक नहि।”

मजिस्ट्रेट ओकरा न्यायिक हिरासतमे भेजलनि।

जिला कारा।

भारतीय अपराध-कथा आब पहिल बेर पूर्ण रूपेँ जेलक फाटक भीतर प्रवेश केलक।



जिला काराक प्रवेश-द्वार प्रदीप कल्पना सँ छोट छल।

बाहर परिवार, वकील, चाय-दोकान, रिक्शा।

भीतर लोहेक दरबज्जा।

नाम दर्ज।

शरीर-जाँच।

सामान अलग।

नब बंदी लेल निर्देश।

ओकरा विचाराधीन बंदी बैरकमे पठाओल गेल।

पहिल राति ओकरा निद्रा नहि आयल।

बैरकमे अपराधक श्रेणी कागचपर अलग छल, देहक दूरीमे नहि।

कियो चोरी।

कियो मारपीट।

कियो जालसाजी।

कियो निर्दोष कहैत।

कियो अपराध स्वीकारि हँसैत।

कियो केवल तारीख गनैत।

प्रदीप दीवाल लग बैसल।

एक वृद्ध बंदी पूछलक—

“पहिल बेर?”

“हँ।”

“कतेक?”

“पता नहि।”

वृद्ध हँसल।

“एतय सभसँ पैघ सजा इएह—‘पता नहि।’”

प्रदीप माथ झुका लेलक।

ओ वर्षो पैसा खातासँ खाता घुमबैत रहल।

आब ओकर अपन जीवन तारीखसँ तारीख घुमत।



पहिल मुलाकातमे पत्नी नहि आयलीह।

केवल भाई।

काँचक पार फोन।

भाई कहलक—

“भाभी एखन नहि चाहैत।”

प्रदीप आँखि नीचाँ।

“बच्चा?”

“स्कूल।”

“हमर बारे?”

भाई चुप।

“की कहल?”

“बाबू काजक कारण बाहर छथि।”

प्रदीपक आँखि भरि आयल।

“झूठ किएक?”

भाईक स्वर कठोर भेल—

“सत्य कोनटा कहितहुँ? जे बाबू निर्दोष छथि? हमरा बुझल नहि। जे अपराधी छथि? अदालत कहने नहि। बच्चाकेँ न्याय-दर्शन पढ़ाबी?”

प्रदीप फोन पकड़ने रहल।

ओ कागच गलत बनौने छल।

पैसा साफ देखाबयमे सहायता केने छल।

मगर अपन बेटी लेल एक स्पष्ट वाक्य नहि बना सकैत छल।

ई ओकर निजी दण्डक शुरुआत छल।



मजिस्ट्रेट समक्ष प्रदीपक विस्तृत बयान धीरे-धीरे भेल।

रचना सवाल कम रखलीह।

“रात्रि कक्ष?”

“ऑनलाइन निजी दाँव।”

“अम्बरक?”

“अम्बरक आधिकारिक नहि।”

“केशव?”

“ओ समेकित निपटान देखैत छल।”

“जानैत?”

प्रदीप चुप।

“जे स्वयं जानैत छी।”

“ओ प्रश्न पूछैत नहि छल।”

“ई उत्तर नहि जानैत छल?”

“हम प्रत्यक्ष नहि कहि सकैत।”

रचना मूड़ी डोलौलीह।

“ठीक।”

“उत्तरायण?”

“पुरान निवेश आ नब निपटानक बीच छत।”

“माल?”

“वास्तविक व्यापारक बिलमे कुछ रकम समाहित।”

“पुरान?”

प्रदीपक चेहरा बदलल।

“दिगन्तक समयक बचल पैसा।”

“के देलक?”

“मध्यस्थ।”

“नाम?”

“हम केवल ‘चन्द्र’ सुनने।”

रचना साँस रोकलीह।

“शशांक देवव्रत?”

“हम नहि कहि सकैत।”

“कखनो भेट?”

“एक समारोहमे दूरसँ।”

“बात?”

“नहि।”

“केशव मेहता चन्द्र?”

“नहि जनैत।”

“तखन चन्द्र के?”

प्रदीप आँखि मूनि लेल।

“एक हस्ताक्षर नहि। एक स्वीकृति-जइसन शब्द। जखन कियो कहैत—‘चन्द्र साफ अछि’, तखन भुगतान अगिला परतमे जाएत।”

“व्यक्ति नहि सेहो हो सकैत?”

“हँ।”

ई उत्तर पूरा जाँचक दिशा बदलि सकैत छल।

जकरा सभ आदमी खोजि रहल छल, ओ सम्भवतः व्यक्ति नहि—प्रक्रिया, संकेत, अथवा साझा अनुमति-कोड।

नामक पीछे आदमी होयब जरूरी नहि।

कतेको अपराध-जाल व्यक्तिकेँ मेटा कऽ शब्दकेँ अधिकार बना दैत।



प्रदीप एक आर बात बतौलक।

सत्यप्रकाश कर्णक नाम ओ पुरान फाइलमे देखने छल।

“कहाँ?”

“दिगन्तक स्कैन कएल बही।”

“किएक?”

“एक भुगतान अटकल छल।”

“अम्बर?”

“हँ।”

रचनाक हाथ स्थिर।

“स्पष्ट कहू।”

“दिगन्त एक खेल आयोजनक माध्यमसँ किछु रकम घुमेबाक योजना बनौने छल। अम्बर क्रीड़ा मीडिया तखन छोट सेवा-दाता। सत्यप्रकाश भुगतान सत्यापन लेल दू बेर फोन केने छल।”

ईशानक पर्ची।

“तकर बाद?”

“रकम रोकल गेल।”

“ककर आदेश?”

“नहि जनैत।”

“सत्यप्रकाशक मृत्यु?”

प्रदीप रचना दिस सीधा तकलक।

“हमरा कोनो जानकारी नहि।”

“सन्देह?”

“सन्देह अछि।”

“हम सन्देह नहि पूछलहुँ।”

“तखन नहि।”

फेर वैह दीवाल।

बीस वर्ष।

दू पीढ़ी।

असंख्य कागज।

मगर सत्यप्रकाशक मृत्यु विषय—नहि।

रचना एहि उत्तरकै ज्यों-त्यों लिखलनि।

कतेको बेर सत्यक सम्मान ओकर अधूरापन बचेनाइ होइत अछि।



अम्बर इंटरैक्टिवक मुख्य कार्यालयमे एहि बीच संकट खुलि चुकल छल।

केशव अवकाश पर।

विहान जाँचमे सहयोगी।

निवेशक बेचैन।

कर्मचारी अफवाहमे।

कियो कहैत कम्पनी बन्द होयत।

कियो कहैत सरकार खेल उद्योगपर रोक लगाएत।

कियो कहैत सभ कर्मचारी गिरफ्तार।

सामाजिक माध्यम पर आरोप सत्यसँ तेज।

विहान सभ कर्मचारीक बैठक केलक।

“जाँच चलि रहल अछि। कंपनीक वैध उत्पाद जारी रहत। निजी जुआ-जालक संग जे-जे संबंध सिद्ध होयत, तकरा अलग कएल जाएत।”

एक कर्मचारी पूछलक—

“हम वेतन जे पेलहुँ, से गलत पैसा छल?”

विहान चुप रहि गेल।

कठिन प्रश्न।

यदि एक कम्पनीक कुल आमदनीमे किछु दूषित पैसा मिलल, तऽ प्रत्येक वेतन अपराधक हिस्सा?

कानून उत्तर खोजत।

मगर कर्मचारीक आत्मग्लानि तुरन्त शुरू।

विहान कहल—

“अहाँक नियमित काजक वेतन लेल अपनेकेँ अपराधी नहि मानू। जाँचकेँ स्रोत अलग करऽ दिअ।”

एक युवा डिजाइनर रोअय लागलीह।

ओकर पिता गाममे खबर पढ़ि नौकरी छोड़बाक कहने छलाह।

अपराधक छाया दोषी आ निर्दोषक देह पर अलग-अलग सीमा नहि बनबैत।



उत्तरायण निधिक लेखा जाँचमे एक विचित्र तथ्य भेटल।

अम्बर आरम्भिक निवेशक समय निधि केवल उदयरेखासँ पैसा नहि लेने छल।

एक बन्द सहकारी संस्था—“समृद्धि ग्राम-वित्त मंडल”—सँ सेहो पूँजी आयल।

समृद्धि वैह पुरान संस्था छल जकर नाम बिरजूक बहीमे “चन्द्र”क सामने छल।

संस्था बीस वर्ष पहिने बन्द।

अन्तिम परिसमापनक कागज अधूरा।

कुछ राशि “दावा न कएल कोष” रूपमे।

मगर बादक वर्षमे एक निजी न्यासकेँ हस्तान्तरित?

कागच अस्पष्ट।

मयंक झा चश्मा उतारि देलनि।

“ई बिन्दु पुरान अपराधक पैसा साबित नहि करैत।”

रचना—“मगर पथ?”

“पथ वास्तविक।”

“बीस वर्षक।”

“हँ।”

“ईशानकेँ बताबी?”

अनिरुद्धक उत्तर तुरन्त—

“एखन नहि।”

“किएक?”

“ओ जाँच-दलमे नहि।”

“मगर ओकर पिता—”

“एही कारण नहि।”

रचना सहमत भेलीह।

न्याय कखनो प्रियजनकेँ सूचना पहिने नहि दैत।



समृद्धि ग्राम-वित्त मंडलक परिसमापक बहुत पहिले मरि चुकल छल।

ओकर कार्यालयक अभिलेख जिला रिकार्ड-रूममे।

धूलि।

दीमक।

गठरी।

तीन दिन लागल।

अन्ततः एक सूची भेटल।

दावा न कएल कोषक हस्तान्तरण एक “उदयेरेखा लोकन्यास”कें नहि, बल्कि “उदयेरेखा कल्याण समिति”कें।

नाम लगभग समान।

संस्था अलग।

समिति पाँच वर्ष बाद बन्द।

अध्यक्ष—

शशिभूषण लाल।

रचना कागच देखैत स्थिर।

शशि।

बिरजू कहने—“शशि किछु।”

शशिभूषण लाल मरि चुकल।

दस वर्ष पहिने।

व्यवसाय—अनाज मंडी, परिवहन, कखनो स्थानीय राजनीति।

शशांक देवव्रतसँ संबंध?

तुरन्त नहि।

नामक समानता फेर जाँचकें गलत आदमीक कात लऽ जा सकैत छल।

रोहित बहुत देर चुप रहल।

फेर स्वयं कहल—

“सम्भावना।”

रचना हँसलीह।

“आब तूँ ठीक भऽ रहल छह।”



शशिभूषण लालक परिवारक खोजमे एक बेटी भेटलीह—

अदिति लाल।

विश्वविद्यालयक सेवानिवृत्त प्राध्यापिका।

ओ पिता विषय खुलि कऽ कहलीह—

“व्यापार साफ नहि छल।”

“अपराध?”

“हम प्रमाण नहि जनैत।”

“बिरजू साह?”

“घर अबैत छल।”

“चन्द्र?”

अदिति हँसलीह।

“ई तँ बाबूक घरेलू नाम छल।”

कमरा बिल्कुल चुप।

“क्यों?”

“दादी हुनका चन्द्र कहैत छलीह। परिवारमे।”

रचनाक हाथक कलम ठिठकल।

बीस वर्ष पुरान बहीक “चन्द्र” पहिल बेर मनुष्य बनल।

मगर मृत मनुष्य।

“शशिभूषण लाल दिगन्तसँ जुड़ल?”

“ओ समय दिगन्त नाम सुनने नहि।”

“समृद्धि ग्राम-वित्त?”

“हँ। बाबू समिति सँ जुड़ल छलाह।”

“उदयरेखा कल्याण समिति?”

“ओही चलबैत छलाह।”

“शशांक देवव्रतक उदयेखा लोकन्यास?”

अदिति माथ हिलौलीह।

“अलग। बादमे नाम पर विवादो भेल छल।”

ई उत्तर एक बड़ा भ्रम तोड़लक।

शशांक पर बनैत संदिग्ध सेतु आधा ढहि गेल।

नाम समान।

संस्था अलग।

काल अलग।

एक बार फेर न्यायकेँ अपन गलती सँ बचल।



मगर अदिति एक अन्तिम बात कहलीह—

“बाबूक मृत्यु बाद हुनकर किछु पुरान कारोबारी खाता एक युवक सँभालने छल।”

“के?”

“नाम शायद देवांशु।”

रचना साँस रोकलीह।

“देवांशु रक्षित?”

“उपनाम नहि मोन।”

“फोटो?”

पुरान फाइलसँ चित्र देखाओल गेल।

अदिति आँखि नजिक कऽ देखलीह।

“हो सकैत।”

“निश्चित?”

“नहि।”

रचना फोटो वापस रखलीह।

“ठीक।”

अदिति मुस्कुराइलीह।

“अहाँ निराश भेली?”

“नहि।”

“हम ‘हँ’ कहि दितहुँ तँ आसान होइत?”

“बहुत।”

“तखन?”

“आसान न्याय हमेशा न्याय नहि।”

अदिति पहिल बेर रचना दिस आदर सँ तकलीह।



राति ईशान गढ़ नारिकेलक पुरान घर फोन केलक।

मृणालिनी अकेली छलीह।

“खाना?”

“खा लेलहुँ।”

“दवाई?”

“हँ।”

किछु सामान्य बात।

फेर मृणालिनी पूछलीह—

“काज ठीक?”

“हँ।”

“ओही मामला?”

ईशान चुप।

“नहि।”

“झूठ मत बोल।”

“माँ, हम आधिकारिक रूपेँ ओहि जाँचमे नहि छी।”

“मन सँ?”

ईशान उत्तर नहि देलक।

मृणालिनी धीरे कहलीह—

“तोहर बाबू सेहो घरमे बैसि कागच देखैत रहैत छल। हम कहैत रही—छोड़ू। ओ कहैत—एक बेर बुझि लिअ।”

“फेर?”

“एक बेर कहियो पूरा नहि भेल।”

ईशानक शरीरमे सिहरन।

“अहाँ चाहैत छी हम छोड़ि दी?”

“हम चाहैत छी तूँ जीवित रह।”

सरल वाक्य।

एहि उपन्यासक सभसँ कठिन आदेश।



जिला कारामे प्रदीपक दोसर मुलाकातमे बेटी आयली।

चौदह वर्ष।

नाम—तृषा।

काँचक पार पिता देखिते रोअल नहि।

केवल पूछलक—

“बाबू, अहाँ चोर छी?”

प्रदीप उत्तर देबाक लेल तैयार नहि छल।

पत्नी कातमे ठाढ़ छलीह, चेहरा कठोर।

“उत्तर दिअ,” ओ कहलीह।

प्रदीप फोन पकड़ि बहुत देर बेटीकेँ देखैत रहल।

“हम पैसा अपने लेल चोरि नहि केलहुँ।”

तृषा तुरन्त—

“तखन?”

“हम एहन कागच बनौलहुँ जाहिसँ गलत पैसा सही जकाँ देखाय।”

“जानि कऽ?”

प्रदीपक आँखि भरि आयल।

“किछु बेर हँ।”

तृषा चुप।

“अहाँ जेलमे रहब?”

“अदालत तय करत।”

“अहाँ हमरा झूठ कहने रही जे काज साफ अछि?”

प्रदीप मूड़ी झुका लेलक।

“हँ।”

तृषा फोन रखि देलक।

मुलाकातक समय एखन बचल छल।

मगर ओ पाछाँ हटि गेलीह।

पत्नी फोन उठौलीह।

“आब हमरा बच्चाकेँ दर्शन नहि, सत्य चाही।”

प्रदीपक लग केवल सत्य छल।

आ सत्य एहि बेर ओकरा बचबैत नहि छल।



कमला-बलान पर बरखा शुरू भेल।

गढ़ नारिकेलक कछारमे पानि चढ़ल।

एक साँझ ईशान छुट्टी पर घर आयल तऽ आँगनक पछिला बिलमे पानि भरि गेल छल।

बिज्जीक पुरान पदचिह्न मेटि गेल।

ओ झुकि किछु खोजलक।

किछु नहि।

मृणालिनी बरामदासँ कहलनि—

“की ताकैत छह?”

“किछु नहि।”

“बिज्जी?”

ईशान मुस्करायल नहि।

मृणालिनी कहलीह—

“पदचिह्न मेटलासँ जीव मरि नहि जाइत।”

ईशान उठल।

दूर घासमे एक हलुक सरसराहट।

ओ देखलक नहि जे बिज्जी छल कि पानि।

एखन ओकरा बुझाइत छल—

प्रमाणक अनुपस्थिति आ अस्तित्वक अनुपस्थिति एके बात नहि।

मगर न्यायालयकें अस्तित्व नहि, प्रमाण चाही।

जीवनक त्रासदी एतहि शुरू होइत अछि।

मनुष्य जानैत अछि किछु छल।

कानून पूछैत अछि—दिखाउ।



राजधानी नगरमे ओहि समय रचना सिन्हाक टेबुलपर एक नब कागच राखल जा रहल छल।

समृद्धि ग्राम-वित्त मंडलक अन्तिम वर्षक भुगतान सूची।

एक पाँति लाल पेंसिलसँ घेरल—

“विशेष परियोजना—खेल प्रचार—सत्यप्रकाश कर्ण।”

रचना बहुत देर तकैत रहलीह।

रकम सत्यप्रकाशक कम्पनीकँ नहि गेल छल।

ओकर नाम “सत्यापनकर्ता” रूपमे लिखल।

तारीख—

मृत्यु सँ नौ दिन पहिने।

बीस वर्ष बाद पहिल बेर सत्यप्रकाश सीधे पुरान धन-पथक आधिकारिक कागचमे उपस्थित भेल।

ई हत्या सिद्ध नहि करैत।

मगर आब एक बात सिद्ध छल—

सत्यप्रकाश दुर्घटना सँ पहिने केवल निविदाक छह प्रतिशत नहि देखैत छल।

ओ पुरान धनक खेल-मार्ग सेहो जाँचि रहल छल।

फाइलमे एक नब प्रश्न खुलल।

कियो ओकरा रोकलक?

कि दुर्घटना सचमुच दुर्घटना छल?

दुनू सम्भव।

दुनूक बीचक दूरी एखनहुँ अन्हार।

रचना खिड़की बाहर देखलीह।

बरखा तेज छल।

पानि पर किछु देखाइत नहि।

मगर जाँचक किनार आब पहिनेसँ संकरा भऽ गेल छल।

कहीं न कहीं गोहि साँस लऽ रहल छल।

आ बिज्जीक पहरा आब केवल प्रतीक नहि रहि गेल छल।

ओ प्रश्न बनि चुकल छल—

कतेक देर धरि सत्यकेँ पानिक भीतर रहबाक अनुमति देल जाए?



बीस वर्ष पुरान “विशेष परियोजना—खेल प्रचार”क कागच रिकार्ड-रूमसँ बाहर आनल गेल तऽ सभसँ पहिने ओकर कागच नहि, गन्ध बोलल।

सीलन।

पुरान धूलि।

कहीं-कहीं फफूँद।

रचना सिन्हा दस्ताना पहिरि पन्ना पलटैत रहलि। भुगतान-प्रस्ताव, निरीक्षण-टिप्पणी, हस्ताक्षर, आ एक पातर पत्र—सत्यप्रकाश कर्णक।

पत्रक भाषा छोट छल।

“कार्यक प्रत्यक्ष सत्यापन बिना भुगतान उचित नहि। प्रस्तुत फोटो आ स्थल-स्थिति मेल नहि खाइत। लाभार्थी संस्था सँ स्पष्टीकरण अपेक्षित।”

नीचाँ हस्ताक्षर।

तारीख—मृत्यु सँ नौ दिन पहिने।

रचना पत्र तीन बेर पढ़लीह।

एहि बेर अनुमान नहि।

सत्यप्रकाश सचमुच भुगतान रोकने छल।

मगर ओ भुगतान हत्या लेल कारण बनल—ई एखनहुँ अनुमान।

फाइलक अगिला पन्नामे विचित्र बात छल।

सत्यप्रकाशक आपत्ति पछि चारि दिनमे एक “विशेष प्रशासनिक स्वीकृति” आयल आ भुगतान जारी भऽ गेल।

स्वीकृति देनिहार अधिकारी—कृपानन्द वर्मा।

सेवानिवृत्त।

जीवित।

उमर उनासी।

रचना तुरन्त यात्रा तय केलनि।



कृपानन्द वर्मा अपन बेटाक घरमे रहैत छलाह।

हाथ काँपैत।

स्मृति कखनो तेज, कखनो धुँधली।

रचना पहिने कागच नहि देखौलीह।

“सत्यप्रकाश कर्ण?”

वृद्धक आँखि एक क्षण चमकल।

“हाँ... ठेकेदार नहि... सत्यापन करैत छल।”

“मोन अछि?”

“कठोर आदमी।”

“खेल प्रचारक भुगतान?”

कृपानन्द माथ पर हाथ रखलनि।

“बहुत पुरान।”

रचना प्रतीक्षा केलनि।

कतेको जाँचकर्ता खाली स्थान तुरन्त प्रश्नसँ भरि दैत।

कतेको स्मृति शान्ति माँगैत।

वृद्ध धीरे कहलनि—

“कोनो कार्यक्रम कागच पर भेल छल। जमीनपर नहि।”

“अहाँ भुगतान किएक मंजूर केलहुँ?”

कृपानन्दक चेहरा उतरि गेल।

“ऊपर सँ कहल गेल।”

“के?”

“नाम...”

ओ बहुत देर चुप रहल।

“लिखित आदेश?”

“नहि।”

“फोन?”

“शायद।”

“ककर?”

“मोन नहि।”

रचना एतय रुकि सकैत छलीह।

मगर एक प्रश्न जरूरी छल—

“सत्यप्रकाश विरोध केने छल?”

वृद्ध तुरन्त कहलक—

“बहुत।”

“की कहने छल?”

“कहलक—‘आज खेलक नाम पर देब, काल्हि ककर नाम पर देब?’”

रचना एहि वाक्यक शब्दशः मूल्य पर भरोसा नहि केलनि। बीस वर्षक स्मृति संवादकें चमका सकैत।

“ई शब्द ठीक-ठीक मोन अछि?”

कृपानन्द स्वयं हँसल।

“नहि बेटी। भाव मोन अछि।”

ई उत्तर रचना लेल अधिक विश्वसनीय छल।

“तकर बाद?”

वृद्ध आँखि मूनलक।

“ओ कहैत छल किछु पुरान पैसा नब संस्था मार्फत घूमि रहल अछि।”

“ककर?”

“ई नहि जनैत।”

“अम्बर?”

“नाम मोन नहि।”

“दिगन्त?”

वृद्ध आँखि खोललक।

“ई नाम सुनने रही।”

“ककरा सँ?”

“सत्यप्रकाश?”

फेर तुरन्त—

“शायद।”

रचना नोटमे “शायद”क चारू कात घेरा देलनि।

स्मृति प्रमाण हो सकैत।

मगर स्मृतिक आत्मविश्वास प्रमाणक शक्ति नहि।



कृपानन्दक पुरान डायरी परिवार सँ अनुमति लऽ देखल गेल।

ओ सरकारी फाइल नहि छल।

व्यक्तिगत नोट।

तारीखक पास केवल तीन पाँति—

“एस.के. फेर झगड़ल। खेल भुगतान रोकय चाहैत। डी.आर.क लोक नाराज।”

डी.आर.

देवांशु रक्षित?

दिगन्त रिजनल?

दयानन्द राय?

दू अक्षर फेर एक पूरा मनुष्य बनाबऽ चाहैत छल।

रचना डायरी जब्त नहि केलनि; विधिसम्मत प्रति लेल गेल।

मयंक झा देखिते कहलक—

“ई शक्तिशाली संकेत अछि।”

“मगर?”

“अहाँ स्वयं जानैत छी।”

“हाँ। डी.आर. देवांशु रक्षित सिद्ध नहि।”

अनिरुद्ध फोन पर कहलनि—

“पुरान अक्षरसभसँ सावधान रहू। नामक भूख जाँचकें सबसे जल्दी अन्हारमे लऽ जाइत।”

रचना पूछलीह—

“मगर यदि ई सचमुच देवांशु हो?”

“तखन दोसर प्रमाण ओकरा नाम देत। अक्षरकें जबरदस्ती बोलब मत।”



देवांशु रक्षित एहि समय कारावास काटि चुकल छल।

रिहाइ पछि ओ राजधानी नगर छोड़ि एक छोट पहाड़ी शहरमे रहैत।

व्यवसाय नहि।

सार्वजनिक जीवन नहि।

रचना भेटबाक अनुरोध पठौलीह।

उत्तर आयल—

“आइए।”

देवांशु बूढ़ भऽ चुकल छल।

पहिल जाँचक छवि सँ अलग—केश लगभग सफेद, चाल धीम, आवाज एखनहुँ नियंत्रित।

ओ अनिरुद्धक नाम सुनिते हलुक हँसल।

“ओ आदमी एखनहुँ जीवित?”

“हाँ।”

“एखनहुँ ‘जे सिद्ध होयत वैह’ कहैत?”

रचना उत्तर देलीह—

“हाँ।”

देवांशु कुर्सीपर पाछाँ झुकल।

“तखन अहाँ सही घर आयल छी।”

“सत्यप्रकाश कर्णक खेल-भुगतान।”

देवांशुक चेहरा कड़ा भेल।

“फेर ओही मृत्यु?”

“हम मृत्यु नहि पूछलहुँ। भुगतान।”

“दिगन्त खेल-महोत्सव करैत छल।”

“कागच पर?”

“कतेको वास्तविक। कतेको कागच पर।”

“ई स्वीकार?”

“जाहि अपराधमे दण्ड काटि चुकलहुँ, ओकरा फेर छुपा कऽ की लाभ?”

रचना सामने पत्र रखलीह।

देवांशु पढ़लक।

दीर्घ मौन।

“सत्यप्रकाश ई रोकने छल?”

“हाँ।”

“हमरा मोन नहि।”

“कृपानन्द वर्माक डायरीमे डी.आर.क लोक नाराज।”

देवांशु सीधा रचना दिस तकलक।

“अहाँ चाहैत छी हम कहि दी—डी.आर. हम?”

“हम चाहैत छी अहाँ सत्य कहू।”

देवांशु हँसल।

“अनिरुद्धक शिष्य।”

“उत्तर?”

“डी.आर. हम हो सकैत छी।”

रचना कलम रोकलीह।

“हो सकैत?”

“क्योंकि दिगन्तक भीतर लोक हमरा initials एहन लिखैत। मुदा ‘क लोक नाराज’—ई कोनो आदेश नहि।”

“सत्यप्रकाशक दुर्घटना विषय?”

देवांशु चेहरा फेरलक।

“हमरा ओ प्रश्नक उत्तर बीस वर्ष पहिने सेहो नहि छल।”

“अहाँक जालमे कियो कारवाई केने हो?”

“सम्भव।”

“अहाँक जानकारी बिना?”

“सम्भव।”

“अहाँ नाम दे सकैत?”

देवांशु बहुत देर चुप।

“एक आदमी छल—हरिचरण मंडल। स्थानीय ‘समस्या’ सुलझबैत।”

“जीवित?”

“नहि। आठ वर्ष पहिने मरल।”

“सत्यप्रकाश?”

“हम नहि जनैत।”

फेर वैह दीवाल।

रचना निराश छलीह, मुदा ई निराशा सत्यक विरुद्ध उपयोग नहि कऽ सकैत छलीह।

देवांशु अचानक पुछलक—

“मृणालिनी जीवित छथि?”

“हाँ।”

“हुनका कहब—हम जे केने रही तकर दण्ड पेलहुँ। जे नहि जनैत, तकर झूठ स्वीकार कऽ हुनका शान्ति देब अपराध होयत।”

रचना एहि वाक्य पर ओकरा देखैत रहलीह।

अपराधी मनुष्य सेहो कखनो सत्यक एक सीमा बचा सकैत।

न्याय एतबा सरल नहि जे सभ बुराई एक देहमे आ सभ सत्य दोसरमे राखि देल जाए।



हरिचरण मंडलक पुरान फाइल खोलल गेल।

उगाही।

मारपीट।

वाहन।

दू मामला प्रमाण-अभावमे बन्द।

एक दोषसिद्धि।

सत्यप्रकाशक दुर्घटना समय ओकर स्थान?

कोनो अभिलेख नहि।

मोबाइल युग आरम्भे छल; उपलब्ध आँकड़ा अधूरा।

एक पुरान पेट्रोल पम्पक कर्मचारी जीवित भेटल, मुदा बीस वर्ष पहिने के राति याद करब असम्भव।

रचना सड़क दुर्घटनाक मूल केस डायरी पढ़लीह।

ब्रेक-चिन्ह।

अज्ञात भारी वाहन।

राति।

वर्षा।

एक प्रत्यक्षदर्शी—दूरक चाय-दोकानदार—तखन कहने छल वाहन बिना रोकने चलि गेल।

नम्बर नहि।

रंग अस्पष्ट।

कियो पीछा नहि केलक।

साक्ष्यक विज्ञान आजुक जकाँ नहि।

जे सम्भव छल, ओ तखन भेल कि नहि—एहि पर सेहो प्रश्न।

मगर आज बीस वर्ष बाद पुनर्निर्माणक सीमा और कठोर।

रचना फाइल बन्द कऽ देलीह।
पहिल प्लॉटक सभसँ पैघ शून्य एखनहुँ शून्य।
मगर आब शून्यक चारू कात तथ्य अधिक छल।
सत्यप्रकाश भुगतान रोकने छल।
दिगन्तक हित प्रभावित भेल।
डी.आर.क लोक नाराज लिखल गेल।
स्थानीय “समस्या सुलझेनिहार” हरिचरण छल।
मृत्यु नौ दिन बाद।
ई सब मिलि हत्या सिद्ध नहि करैत।
मगर साधारण दुर्घटना कहि भूलि जाएब सेहो कठिन बनबैत।



मृणालिनीकेँ रचना स्वयं भेटलीह।
ईशान उपस्थित नहि।
रचना धीरे-धीरे सब कहलनि।
मृणालिनी सुनैत रहलि।
अन्तमे केवल पूछलीह—
“तखन हत्या?”
रचना गला साफ केलनि।
“सिद्ध नहि।”
मृणालिनी हँसलीह नहि।
क्रोधो नहि।
“बीस वर्ष बाद अहाँ सभ हमरा ई बताबऽ आयल छी जे हमर शंका मूर्खता नहि छल।”
“हाँ।”

“आ ई नहि बता सकैत छी जे सही छल।”

“हाँ।”

मृणालिनी दीवालपर सत्यप्रकाशक फोटो दिस तकलीह।

“पहिने हमरा लग दुख छल। आब कारण सेहो अछि—मगर उत्तर नहि।”

रचना चुप।

“एहि सँ न्याय नजिक आयल कि दूर?”

रचनाक लग तैयार उत्तर नहि।

“शायद नजिक।”

मृणालिनी पहिल बेर ओकरा देखलीह।

“‘शायद’ हम बहुत वर्ष सुनि चुकल छी।”

रचना मूड़ी झुका लेलीह।

कतेको पीड़ितक सामने सावधानीक भाषा क्रूर लगैत।

तैयो झूठा निश्चितता सँ कम क्रूर।



वर्तमान जुआ-जाँचमे पहिल निर्णायक तलाशी केशव मेहताक घर आ निजी कार्यालयपर एक्के भोर भेल।

न्यायालयी आदेश।

स्वतन्त्र गवाह।

डिजिटल उपकरण विधिसम्मत जब्ती।

कोनो नाटकीय दीवाल तोड़ब नहि।

कोनो गुप्त तहखाना नहि।

कार्यालय व्यवस्थित।

घर सभ्य।

किताब।

पारिवारिक फोटो।

पुरस्कार।

अपराधक जाल बहुत बेर एहन ठाम भेटैत जहाँ बाहर सँ किछु डरावन नहि।

एक छोट नोटबुक भेटल।

आधा व्यावसायिक।

आधा निजी।

किछु पन्ना पर बार-बार—

“मुख्य साफ।”

“रात्रि बाहर।”

“समायोजन—पी.एम.”

“उ. अनुमति।”

रचना नोटबुक देखिते विजय अनुभव नहि केलनि।

प्रश्न बढ़ल।

“उ.” उत्तरायण?

“पी.एम.” प्रदीप महाजन?

फेर initials।

मगर एहि बेर संदर्भ संग।

कम्प्यूटरक वैधानिक परीक्षणमे केशव आ प्रदीपक कई सन्देश भेटल।

एकमे केशव लिखने छल—

“मुख्य अनुप्रयोगक भीतर एहि प्रवाहकें मत आनू।”

दोसर—

“रात्रिक निपटान अलग रहय।”

तेसर—

“खाता बदलैत रहय” जइसन परिचालन-वाक्य नहि, बल्कि सामान्य निर्देश—“एके बाहरी माध्यम पर निर्भरता कम करू।”

ओहि वाक्यक अर्थ जाँचक संदर्भमे स्पष्ट हो सकैत, मुदा स्वयं अकेले अपराध नहि।

फेर एक सन्देश आयल—

प्रदीप: “ई भुगतानक आधार की लिखी?”

केशव: “जे वास्तविक सेवा भेल, वैह। बाकी राशि समायोजन अलग।”

रचना बहुत देर ई पाँति देखलीह।

पहिल बेर केशवक ज्ञान केवल मौन नहि रहल।

ओ विभाजनक भाषा लिखने छल।



केशव गिरफ्तार भेल।

आर्थिक षड्यंत्र, अवैध दाँव-व्यवस्था सँ जुड़ल वित्तीय छल, धनक स्रोत लुकाबयवला काज—
जे आरोप उपलब्ध साक्ष्य अनुसार बनैत छल, वैह।

एन.आई.ए. नहि।

राज्य आर्थिक-अपराध शाखा।

अपूर्वा कश्यपकेँ सूचना मात्र देल गेल, कारण साझा वित्तीय मध्यस्थक किछु अभिलेख हुनकर
अलग जाँचसँ जुड़ल छल।

प्रेस बाहर प्रतीक्षा करैत।

रचना एक छोट वक्तव्य देलीह—

“गिरफ्तारी दोषसिद्धि नहि। जाँच जारी अछि।”

एक पत्रकार पूछलक—

“क्या यह राष्ट्रीय सुरक्षा का मामला है?”

रचना स्पष्ट उत्तर देलीह—

“हमर वर्तमान मामला ऑनलाइन जुआ, वित्तीय छल आ धनशोधन-संदेहसँ सम्बन्धित राज्य जाँच अछि। कोनो अलग राष्ट्रीय जाँचक अस्तित्वकेँ एहि आरोपी पर आरोप बुझल नहि जाए।”

ई पाँति समाचारमे आधा छपल।

“एन.आई.ए. लिंक?”

शीर्षक एखनहुँ बनल।

सत्यक पूरा वाक्य बजारमे छोट होइत।

संकेतक आधा शब्द पैघ।



केशव न्यायिक हिरासतमे गेल।

जिला काराक अलग बैरक, मुदा ओही परिसर जतऽ प्रदीप बंद छल।

दुनूक सीधा भेट पहिने नहि भेल।

प्रदीप खबर सुनलक तऽ देह ठण्ढा पड़ि गेल।

एक वृद्ध बंदी पूछलक—

“तोहर मालिक?”

“मालिक नहि।”

“तखन?”

प्रदीप उत्तर नहि देलक।

कागच पर सम्बन्ध “वित्त प्रमुख—बाहरी लेखा” छल।

जीवनमे शक्ति स्पष्ट।

पहिल सप्ताह केशव मुलाकातक बाद वकील मार्फत संदेश पठौलक—

“प्रदीप झूठ बोलि रहल अछि।”

प्रदीपक वकील कहल—

“प्रतिक्रिया?”

प्रदीप कहलक—

“अदालतमे।”

ई छोट वाक्य ओकर भीतरक बदलाव छल।

पहिने ओ कागच बनाकऽ वास्तविकता बदलैत।

आब ओ चाहैत छल कागच वास्तविकता दर्ज करय।



जेल पुस्तकालयमे प्रदीपक भेट एक नव बंदीसँ भेल।

नाम—सौमित्र पासवान।

उमर बीस।

आई.टी.आई. विद्यार्थी।

मामला—ओकर बैंक-खाता तीन अलग साइबर शिकायतमे उपयोग भेल।

ओ कहैत—

“हम केवल खाता देलहुँ।”

“कतेक पैसा?”

“महीना तीन हजार।”

“जानैत छलह?”

“कहल गेल डिजिटल व्यापार।”

“शंका?”

सौमित्र चुप।

प्रदीप ओकरा देखलक।

स्वयंकेँ देखबाक अनुभव असह्य छल।

“कागच पढ़ने छलह?”

“नहि।”

“ओ.टी.पी.?”

“भैया, ई सब मत पूछू। पुलिस सब पूछि चुकल।”

प्रदीप चुप भऽ गेल।

ओ अपराधक तरीका नहि, परिणाम बुझय चाहैत छल।

“घर?”

“माए अकेली।”

“जमानत?”

“मिलल। मुचलका आ स्थानीय जमानतदारक समस्या।”

प्रदीप जेलक विधिक सहायता कक्षक स्वयंसेवकक नाम बतौलक।

अगिला दिन आवेदन बनेबाक काजमे सहायता केलक।

पहिने जे हाथ गलत बिलक शीर्षक चुनैत छल, आब वैह हाथ एक गरीब युवकक जमानत आवेदनक वाक्य ठीक करैत।

ई प्रायश्चित्त नहि।

इतिहास मेटल नहि।

मगर मनुष्यक अगिला काज पिछला काजक समान होयब जरूरी नहि।



सौमित्र तीन सप्ताह बाद बाहर गेल।

जेल फाटक पर माए प्रतीक्षा करैत छलीह।

प्रदीप भीतर रहल।

ओहि राति ओकरा पहली बेर ई बुझायल जे न्यायिक प्रक्रिया दू लोक लेल एके गति सँ नहि चलैत।

जकर घरक लोक वकील, जमानतदार, दस्तावेज, यात्रा खर्च जुटा सकैत—ओ जल्दी बाहर।

जकर नहि—ओ “प्रक्रिया” भीतर अधिक दिन।

कानून समान हो सकैत।

क्षमता समान नहि।

न्याय-दर्शनक सूत्र एतय आर्थिक समाजशास्त्रसँ टकराइत।

प्रदीप जेल डायरीमे लिखलक—

“समान नियम समान परिणाम नहि दैत।”

ओ पन्ना ककरो देखेबाक लेल नहि छल।

अपने लेल।



अम्बर इंटरैक्टिवक निदेशक-मण्डलमे विहान सारंग पहिल बेर अकेला पड़ल।

किछु निवेशक कम्पनी बेचबाक पक्षमे।

किछु ब्राण्ड बदलबाक।

किछु कहैत—“केशव व्यक्तिगत काज केलक।”

विहान टेबुलपर हाथ रखि पूछलक—

“हम सभ सचमुच एहि वाक्य पर विश्वास करैत छी?”

कोनो उत्तर नहि।

“हम मुख्य उत्पाद चलबैत रही। रात्रि बाहर बढैत रहल। अनुपालन चेतावनी आयल। हम पूछलहुँ,

फेर मानि लेलहुँ ‘बाहरी एजेन्सी’।”

एक निदेशक कहलक—

“कानूनी जिम्मेदारी अलग प्रश्न।”

“हम कानूनी नहि पूछलहुँ।”

कमरा चुप।

विहानक चेहरा थाकल।

“हम कम्पनी बचा सकैत छी। मुदा यदि बचाबय लेल प्रत्येक गन्दगी केशव पर डालि दी, तँ जे संस्कृति ई सम्भव बनौलक से बचि जाएत।”

ई भाषण ओकरा संत नहि बनबैत।

ओ पहिने चेतावनी देखियो रुकल नहि।

मगर अपराधक कथा मे सुधारक सम्भावना सेहो सरल नायकत्व नहि।



विहान राज्य जाँच-दलकें एक आन्तरिक ई-पत्र संग्रह स्वेच्छासँ देलक।

कानूनी दल जाँचि, अधिकार सीमा अनुसार।

एक ई-पत्र सत्यप्रकाशक पुरान इतिहाससँ अप्रत्याशित रूपेँ जुड़ल।

अम्बर क्रीड़ा मीडियाक आरम्भिक संस्थापक-दलमे एक वृद्ध सलाहकार लिखने छल—

“दिगन्तक पुरान कार्यक्रमक विवादित भुगतानक स्रोत उपयोग नहि करू। एस.के. आपत्ति इतिहासमे अछि।”

एस.के.

सत्यप्रकाश कर्ण?

ई-पत्र घटना सँ वर्षो बादक।

मगर मतलब—कम्पनीक किछु लोक पुरान आपत्ति विषय जानैत छल।

सलाहकारक नाम—नलिन बरुआ।

जीवित।

रचना फेर एक पुरान दरबज्जा पर पहुँचल।



नलिन बरुआ कहलक—

“एस.के. सत्यप्रकाश कर्ण।”

एहि बेर initials तुरन्त नाम बनल—वक्ता स्वयं पुष्टि करैत।

“अहाँकै कोना पता?”

“हम तखन दिगन्तक बाहरी लेखा-जाँचमे कनिष्ठ रही।”

“सत्यप्रकाशसँ भेट?”

“एक बेर।”

“की कहने छल?”

“ओ रकमक स्रोत पूछैत छल।”

“ककरा सँ?”

“हमरा टीमसँ।”

“अम्बर?”

“तखन अम्बर केवल सेवा-दाता।”

“दिगन्त?”

“हाँ।”

“मृत्यु?”

नलिन चुप।

“हम दुर्घटना समाचार सुनने रही।”

“शंका?”

“तखन सभ करैत छल।”

“प्रमाण?”

“नहि।”

“हरिचरण मंडल?”

नलिन चेहरा सिकोड़लक।

“नाम सुनने।”

“भूमिका?”

“नहि।”

“देवांशु?”

“ओ नाराज छल।”

रचनाक कलम रुकल।

“प्रत्यक्ष?”

“बैठकमे।”

“की कहल?”

नलिन बहुत देर मोन पाइलक।

“भाव एहन—ई आदमी काज रोकि रहल अछि।”

“हत्या अथवा धमकी?”

“नहि।”

“कियो अलग उपाय?”

“हम नहि सुनने।”

ई उत्तर देवांशु विरुद्ध आर्थिक motive मजबूत करैत, हत्या नहि।

रचना निराश नहि भेलीह।

आब ओ एहि भेदक मूल्य जानैत छलीह।



नलिन एक आर बात बतौलक।

“सत्यप्रकाश भुगतानक स्रोत देखैत-देखैत समृद्धि ग्राम-वित्तक पुरान रकम पर पहुँचल छल।”

“चन्द्र?”

नलिन चकित।

“अहाँकेँ ई नाम केना?”

“उत्तर दिअ।”

“हाँ। शशिभूषण लाल।”

“ओहि समय जीवित?”

“हाँ।”

“दिगन्तसँ सम्बन्ध?”

“सीधा मालिकाना नहि। पैसा दिलबाबयवला।”

“सत्यप्रकाश ओकरा भेटने छल?”

“सुनने रही।”

“प्रत्यक्ष?”

“नहि।”

फेर सीमा।

मगर एक नब खोजक दिशा।

शशिभूषण मरि चुकल।

ओकर बेटी अदिति जीवित।

की पिता सँ सत्यप्रकाशक भेटक कोई कागच?



अदिति लाल एहि बेर स्वयं एक पुरान पेटी निकाललीह।

“पिछला बेर अहाँ सभ गेलहुँ तऽ राति भरि सोचैत रही।”

पेटीमे पिता शशिभूषणक निजी कागच।

व्यापारिक पत्र।

निमन्त्रण।

डायरी।

एक पन्ना पर—

“एस. कर्ण आयल। खेलवला पैसा पर बहुत प्रश्न। देवांशु नाराज होयत। समझेलहुँ—दूर रह।”

तारीख—सत्यप्रकाशक मृत्यु सँ बारह दिन पहिने।

रचना वाक्य पढ़ि स्तब्ध रहलीह।

“समझेलहुँ—दूर रह।”

ककरा?

सत्यप्रकाशकै?

देवांशुकै?

अपने कै?

व्याकरण अस्पष्ट।

अदिति कहलीह—

“बाबू एहन छोट लिखैत छलाह।”

“अहाँ किछु मोन?”

“हम तखन घरसँ बाहर पढ़ैत रही।”

रचना पन्नाक विधिसम्मत प्रति लेलनि।

अब सत्यप्रकाशक अन्तिम दिनसभक चित्र अधिक स्पष्ट—

ओ पुरान रकमक स्रोत धरि पहुँचल।

शशिभूषणकै भेटल।

देवांशु नाराज—एहन निजी नोट।

नौ दिन बाद मृत्यु।

मगर अन्तिम कड़ी—कियो वाहन पठौलक, कियो योजना बनौलक—एखन शून्य।

हत्या सिद्ध करबाक लेल कथा पर्याप्त लगैत।

अदालत लेल नहि।

एतहि साहित्य आ न्याय अलग होइत अछि।

उपन्यास पाठक अर्थ जोड़ि सकैत।

राज्य मनुष्यकेँ दण्ड देबाक पहिने कड़ी चाहैत।



रचना एहि सभ नब सामग्रीक आधार पर पुरान मृत्यु-जाँच औपचारिक रूपेँ पुनः खोलबाक सिफारिश केलनि।

“हत्या मामला?” वरिष्ठ अधिकारी पूछलक।

“सन्दिग्ध मृत्यु—पुनर्परीक्षण।”

“बीस वर्ष बाद?”

“नब दस्तावेजी साक्ष्य।”

“ककर विरुद्ध?”

“एखन ककरो विरुद्ध नहि।”

वरिष्ठ अधिकारी थाकल स्वरमे हँसल—

“प्रेस हमरा खा जाएत।”

रचना उत्तर देलीह—

“प्रेसक भूख प्राथमिकी नहि होइत।”

अनुमति भेटल।

ईशानकेँ सूचना सार्वजनिक आदेश जारी भेला बाद भेटल।

ओ फोन पर अनिरुद्धसँ केवल पूछलक—

“आब?”

अनिरुद्ध कहलनि—

“आब जाँच फेर चलत।”

“हत्या सिद्ध?”

“नहि।”

ईशान दीर्घ साँस लेलक।

“हम जानैत रही अहाँ ई कहब।”

“आब तोरा ई उत्तर पहिनेसँ कम घृणा लगैत?”

“नहि।”

फेर किछु क्षण बाद—

“मगर बुझाइत बेसी।”

ई अनिरुद्ध लेल पर्याप्त छल।



केशवक गिरफ्तारी पछि निजी जुआ-जाल तुरन्त बन्द नहि भेल।

किछु समूह नब नामसँ।

किछु एजेन्ट गायब।

किछु उपयोगकर्ता दोसर अनुप्रयोग दिस।

मगर बैंक सभकेँ जोखिम-सूची भेटल।

कतेको म्यूल खाता रोकल।

समस्या फेर—

एके रोकमे अपराधक पैसा आ परिवारक वेतन दुनू फँसैत।

सबीना खातूनक खाता सेहो पूर्ण रोकमे गेल।

बेटीक दाँतक उपचार स्थगित होयबाक स्थिति।

रचना बैंक समन्वय बैठकमे कहलनि—

“जाँच बाधित नहि हो, मुदा निर्विवाद व्यक्तिगत आयक सत्यापन लेल त्वरित व्यवस्था चाही।”

एक अधिकारी कहलक—

“प्रत्येक खाता अलग जाँच कठिन।”

ईशान, जोखिम-नक्सा परियोजनासँ आमन्त्रित, पहिल बेर बोललक—

“तखन अपराधी सभसँ गरीब खाताधारक चुनत—कारण राज्यक सुविधा नहि जे निर्दोष हिस्सा जल्दी अलग करय।”

कमरा चुप।

ई केवल मानवीय तर्क नहि।

अपराध-निरोधक तर्क सेहो।

नई प्रक्रिया बनी—मूल जीवन-व्यय, वेतन, छात्रवृत्ति, चिकित्सा-जैसन स्पष्ट स्रोतक दावाक शीघ्र परीक्षण।

पूर्ण समाधान नहि।

मगर सबीनाक बेटीक उपचारक कुछ पैसा मुक्त भेल।

सबीना फोन पर रोइत कहलीह—

“हम गलती केने रही। मुदा हमर बच्चा की केने छल?”

ई प्रश्न जाँचक फाइलमे उत्तर बिना रहल।



गढ़ नारिकेलमे एक साँझ मृणालिनी अकेली बरामदामे बैसल छलीह।

ईशान राजधानी नगर।

धनेश्वरी नहि।

सत्यप्रकाशक फोटो भीतर।

बरखा बाद घास भीजल।

एक गहुमन आँगनक पछिला कात निकसल।

मृणालिनी स्थिर।

ओ चिल्लेलीह नहि।

साँप धीरे देहरी दिस।

तखने झाड़ी फाटल।

बिज्जी छलॉग मारि सामने।

दुनू देह एक क्षण ठाढ़।

फुँफकार।

बिज्जीक पिठक रोआँ तनल।

मृणालिनी साँस रोकने।

लड़ाइ भेल नहि।

गहुमन दिशा बदलि घासमे लुप्त।

बिज्जी किछु क्षण देहरी लग रहल।

फेर ओहो चलि गेल।

मृणालिनी बहुत देर खाली स्थान देखैत रहलीह।

फेर धीरे बजलीह—

“सब लड़ाइ जीतब जरूरी नहि। कतेको बेर घर धरि नहि पहुँचय देब पर्याप्त।”

ओहि राति ईशान फोन केलक।

मृणालिनी साँपक बात नहि कहलीह।

केवल पूछलीह—

“खाना खा लेलह?”

“हाँ।”

“काम?”

“चलि रहल।”

“बाबूक?”

ईशान रुकल।

“फेर खुलल।”

मृणालिनी आँखि मूनि लेलीह।

“ई बेर किनार मत छोड़िह।”

ईशानक गला भारी।

“दादी जकाँ बाजैत छी।”

“ओहि घरमे रहैत छी।”



राजधानी नगरक जाँच-कक्षमे रचना सिन्हा राति अकेली बैठल छलीह।

बोर्ड पर दू रेखा।

एक बीस वर्ष पुरान—

समृद्धि।

शशिभूषण।

दिगन्त।

सत्यप्रकाश।

दुर्घटना।

दोसर वर्तमान—

उत्तरायण।

अम्बर।

रात्रि कक्ष।

म्यूल खाते।

प्रदीप।

केशव।

दुनू रेखा बीच कई पुल।

किछु सिद्ध।

किछु सम्भावित।

किछु केवल नाम-साम्यता निकलि टूटल।

रचना लाल कलम उठौलीह।

फेर रखि देलीह।

लाल रंग बहुत जल्दी दोषी बनबैत।

ओ कारी कलमसँ केवल एक शब्द लिखलीह—

“प्रयोजन?”

न्याय-दर्शनक सोळह पदार्थमे प्रयोजन छोट शब्द नहि।

मनुष्य किएक काज करैत अछि?

लाभ?

भय?

प्रतिशोध?

संस्था बचाबय?

परिवार?

कर्ज?

सम्मान?

ईशान उत्तर चाहैत कारण पिता।

केशव मौन रहल कारण लाभ।

प्रदीप कागच बदललक कारण काज आ भय।

सबीना खाता देली कारण इलाज।

सत्यप्रकाश प्रश्न केलक कारण उत्तरदायित्व।

आ कियो—शायद—ओकरा रोकलक।

मगर ‘शायद’क पाछाँ राज्य दण्ड नहि लिखि सकैत।

रचना बोर्डक नीचे एक पाँति जोड़लीह—

“प्रयोजन दिशा दैत अछि; प्रमाण दोष सिद्ध करैत।”

बाहर राति गाढ़।

कमला-बलान एतयसँ बहुत दूर।

मगर कथा फेर ओही पानि दिस जा रहल छल।

गोहि एखनहुँ ऊपर नहि आयल।

मगर एहि बेर बिज्जी अकेली नहि छल।

किनार पर आब प्रश्न, कागच, आँकड़ा, जेलक बयान, पीड़ितक स्मृति आ सावधान संशय—
सभ पहरा दऽ रहल छल।



सत्यप्रकाशक मृत्यु-जाँच फेर खुलिते राजधानी नगरक समाचार-पत्र सभ पुरान फोटो खोजि
निकाललक।

एक अखबार आधा पृष्ठमे लिखलक—“बीस वर्ष पुरान दुर्घटना हत्या छल?”

दोसर—“ठेका-जालक काली कमाइ डिजिटल जुआ धरि?”

तेसर शीर्षक सभसँ तेज—

“एक परिवारक बीस वर्षक न्याय-प्रतीक्षा।”

मृणालिनी एहि शीर्षक देखिते अखबार मोड़ि देलनि।

ओ प्रतीक्षा करैत छलीह कि नहि—ई प्रश्न सेहो सरल नहि छल।

पहिल पाँच वर्ष ओ प्रत्येक फोन पर चौकैत रहलीह।

दसम वर्ष धरि सत्यप्रकाशक फाइल सँ धूलि पोंछैत।

पन्द्रहम वर्ष बाद ओ फोटो स्थान बदलि देलनि।

बीसम वर्षक आसपास ओ सोचने छलीह—उत्तर नहि भेटल, तखन जीवनकेँ प्रश्नक कोठरीमे
किएक बंद राखी?

आब राज्य फेर दरबज्जा खोलि देने छल।

पत्रकार घरक बाहर।

किओ पूछैत—“अहाँकै पहिनेसँ हत्या पर शंका छल?”

किओ—“देवांशु रक्षितक नाम पर की कहब?”

किओ—“ऑनलाइन जुआ संग पुरान केसक सम्बन्ध?”

मृणालिनी एक्को उत्तर नहि देलीह।

ईशान फोन पर कहलक—

“माँ, किछु दिन राजधानी नगर आबि जाउ।”

“हम अपना घर किएक छोड़ू?”

“मीडिया।”

“ओ सभ थाकत।”

“जँ नहि?”

मृणालिनी शांत—

“गहुमन घरक बाहर हो तऽ घर छोड़ल नहि जाइत।”

ईशानक मनमे दादीक आवाज उठल।

एके घरमे वाक्य पीढ़ी बदलि-बदलि जीवित छल।



रचना सिन्हा पुरान दुर्घटनास्थलक पुनर्निरीक्षण लेल गेलीह।

सड़क बदलि चुकल।

तखनक दू लेन आब चारि।

चाय-दोकान नहि।

बगलक खेत पर पेट्रोल पम्प।

पुरान पुलिया हटि नब नाला।

जतऽ सत्यप्रकाशक गाड़ी खसल छल, ओहि ठाम आब विज्ञापनक लोहेक खम्भा।

“एतय पुनर्निर्माण?” रोहित पूछलक।

रचना चारूकात देखलीह।

“भौतिक रूपेँ बहुत कम।”

पुरान केस डायरीक नाप, स्थल-चित्र, वाहन-परीक्षण, शव-परीक्षण—सभ सामने राखल गेल।

आजुक दुर्घटना-पुनर्निर्माण विशेषज्ञ पुराने आँकड़ा देखलक।

“भारी वाहन द्वारा ठोकर सम्भव।”

“जानि-बुझि?” रचना।

विशेषज्ञ मूड़ी हिललक।

“एहि सामग्रीसँ नहि कहि सकैत।”

“ब्रेक?”

“सत्यप्रकाशक वाहनमे आकस्मिक मोड़ आ ब्रेकक संकेत छल। सामने कोनो अवरोध आयल हो सकैत।”

“ट्रक?”

“सम्भव।”

“योजना?”

“विज्ञान उद्देश्य नहि पढ़ैत।”

रचना एहि वाक्यकेँ नोट कऽ लेलीह।

भौतिक विज्ञान टक्कर पढ़ि सकैत।

मनक इरादा नहि।

प्रयोजन लेल फेर मनुष्यक जगत चाही।



हरिचरण मंडलक पुरान सहायकमे सँ एक जीवित भेटल—बासुदेव मरिक।

ओ बीस वर्ष पहिने चालक छल।

एखन गाममे किराना-दोकान।

पुलिस देखिते चेहरा उतरि गेल।

“हम सब छोड़ि देने छी।”

रचना कहलीह—

“हम अहाँकेँ गिरफ्तार करऽ नहि आयल छी।”

“तखन?”

“हरिचरण मंडल।”

बासुदेवक हाथक चाय काँपल।

“मरल।”

“सत्यप्रकाश कर्ण?”

ओ चुप।

रचना प्रतीक्षा केलनि।

“नाम सुनने।”

“दुर्घटना?”

“अखबार।”

“हरिचरण ओ समय कतऽ?”

“मोन नहि।”

“देवांशु रक्षित?”

बासुदेव आँखि नीचाँ।

“ठेकेदार लोक।”

“हरिचरण दिगन्तक काज करैत?”

“कखनो।”

“‘समस्या सुलझेनाइ’?”

बासुदेव कटु हँसल।

“एहन शब्द पैघ लोक बजैत। छोट लोक लेल काज अलग होइत।”

“की?”

“ककरो डराउ। ककरो गाड़ी रोक्। ककरो मजदूर हटाउ।”

“ककरो मारू?”

बासुदेव रचना दिस सीधा तकलक।

“हम जे देखने छी से कहब?”

“हाँ।”

“एक बेर मारपीट। हत्या नहि।”

“सत्यप्रकाश?”

“नहि जनैत।”

फेर ओ बहुत देर बाद स्वयं कहल—

“मगर दुर्घटना सँ पहिले हरिचरण एक भारी वाहन खोजैत छल।”

रचनाक देह तनल।

“ककर लेल?”

“नहि जनैत।”

“ककर वाहन?”

“एक परिचित ट्रांसपोर्टर।”

“नाम?”

बासुदेव आँखि मूनलक।

“कौशल...”

रोहितक कलम चलल।

बासुदेव तुरन्त—

“महतो नहि। कौशल नामक कियो बूढ़ ट्रांसपोर्टर। उपनाम मोन नहि।”

बीस वर्ष पहिने जाँचक आरम्भमे “कौशल महतो” पर जे गलत संशय बनल छल, ओकर छाया फेर उठल।

रचना रोहित दिस तकलीह।

दुनू एक्के बात सोचलक—

नामक भूख।

“अहाँ चेहरा पहचानब?” रचना।

“शायद।”

“‘शायद’ पर्याप्त अछि। जबरदस्ती हँ नहि कहब।”

बासुदेव राहत अनुभव केलक।



पुरान परिवहन अनुज्ञप्ति अभिलेखसँ पाँच कौशल निकलल।

दू मरल।

एक विदेश।

एक खेती।

एक—कौशल किशोर चौबे—तखन “चौबे मालवाहक” चलबैत छल।

कम्पनी बादमे बन्द।

कौशल किशोर चौबे जीवित नहि।

मगर बेटा—रजत चौबे—एखन राजधानी नगरमे मोटर-पुर्जा व्यवसाय।

रजत पिता विषय प्रश्न सुनि असहज भेल।

“बाबू बहुत लोककेँ वाहन दैत छलाह।”

“हरिचरण मंडल?”

“नाम सुनने।”

“दिगन्त?”

“हाँ।”

“सत्यप्रकाशक दुर्घटनावला राति?”

“हम कॉलेजमे रही।”

“पुरान बही?”

रजत कुछ क्षण चुप।

“किछु गोदाममे होयत।”

गोदाममे बही भेटल।

आ एक पन्ना पर तारीखक सामने—

“एच.एम.—राति—भारी।”

वाहन संख्या नहि।

किराया नगद।

“एच.एम.” हरिचरण मंडल?

सम्भव।

पन्नाक दोसर भाग चूहा काटि चुकल।

बासुदेवकेँ केवल बही नहि देखाओल गेल; कानूनी प्रक्रिया अनुसार अलग फोटो-पहचान पहिले।

ओ कौशल किशोर चौबेक पुरान फोटो पर निश्चित नहि भेल।

“हो सकैत।”

फेर वैह।

मगर बही स्वतंत्र संकेत छल।

अब पुरान जाँचमे पहिल बेर दुर्घटना रातिक भारी वाहनक खोजक एक दस्तावेजी धागा बनल।

अन्तिम वाहन संख्या एखनहुँ नहि।



रचना एहि खोजक सूचना मृणालिनीकेँ तुरन्त नहि देलीह।

क्योंकि प्रत्येक नब संकेत परिवार लेल “आब सिद्ध” बनि सकैत।

पहिने सत्यापन।

रजतक बहीक कागज-उमर, लिखावट, व्यापारिक अन्य पन्नासँ संगति।

सब मेल खायल।

नकली बनाबऽ संकेत नहि।

“एच.एम.”क अर्थ?

दू अन्य पन्नामे “एच.एम.”क सामने बादमे “हरि” लिखल भेटल।

एक पुरान बिलमे ग्राहक—“हरिचरण एम.”

अब संभावना मजबूत।

रचना बोर्डपर लिखलीह—

हरिचरण → भारी वाहन → मृत्यु-राति?

प्रश्नचिह्न एखनहुँ।

रोहित कहलक—

“ई हत्या जकाँ लगैत अछि।”

रचना उत्तर देलीह—

“लगैत अछि।”

“अहाँ पहिल बेर ई शब्द स्वीकार केलहुँ।”

“क्योंकि आब संकेतक समूह अछि।”

“तखन प्राथमिकी हत्या?”

“एखन नहि। वाहनक उपयोग सिद्ध नहि।”

रोहित हँसल।

“फेर आधा डेग।”

“न्याय प्रायः आधा डेगमे चलैत अछि।”



वर्तमान जुआ-जालमे मनोज नायक पर दबाव बढ़ि रहल छल।

केशव गिरफ्तार।

प्रदीप बयान दे रहल।

रात्रि कक्षक कम्प्यूटरक वित्तीय प्रतिलिपि सुरक्षित।

मनोज पहिने गिरफ्तारी सँ बाहर छल, कारण उपलब्ध साक्ष्य भर्ती आ प्रचारक स्तर पार नहि करैत।

मगर एक नब गवाह आयल—रितेश दास।

स्वयं नहि।

ओ एक निजी अस्पतालमे भर्ती भेटल।

सड़क दुर्घटना नहि।

मारपीट।

दू पसली टूटल।

चेहरा सूजल।

अस्पताल पुलिस सूचना दे चुकल छल।

रचना पहुँचल तऽ रितेश पहिने कहलक—

“हम किछु नहि कहब।”

“ठीक।”

रचना कुर्सी खींचि बैसलीह।

“हम प्रश्नो नहि करब एखन।”

रितेश चकित।

“तखन आयल किएक?”

“क्योंकि तोहर नाम हमर फाइलमे अछि। आ तोरा कियो पीटने अछि। दुनू बात जोड़ल हो सकैत, नहि सेहो।”

रितेश मुँह फेरलक।

“हम गिरल रही।”

“अस्पतालक चिकित्सक पुलिसकेँ मारपीट लिखने छथि।”

मौन।

“तोहर इच्छा—वकील।”

मौन।

“परिवार?”

रितेशक आँखि भरि आयल।

“माए।”

“कहाँ?”

“गाम।”

“बतौलह?”

“नहि।”

रचना नर्सकेँ पानि लेल कहलीह।

जखन उठि जाए लागलीह, रितेश धीमे बजलक—

“मनोज हमरा खोजि रहल छल।”

रचना फेर बैसलीह।

“मनोज स्वयं पीटलक?”

“नहि।”

“तखन?”

“दू लोक आयल।”

“ककर कहने?”

“कहल—मनोज भैया नाराज छथि।”

“किएक?”

“हम खाता भर्ती छोड़ि देने रही।”

पहिल प्रत्यक्ष कड़ी।



रितेशक बयान मजिस्ट्रेटक सामने लेल व्यवस्था कएल गेल।

ओ स्वीकार केलक—

अभिषेककें खाता देबाक प्रस्ताव ओ देने छल।

ओकरा लोकविस्तारक क्षेत्रीय टोली “भुगतान सहयोगी” जुटेबाक लक्ष्य दैत।

प्रत्येक सक्रिय खातापर कमीशन।

“अवैध जनैत छलह?” मजिस्ट्रेट पूछलनि।

रितेश चुप।

“आरम्भमे नहि।”

“बादमे?”

“हाँ।”

“कखन?”

“जखन एक खाताधारक पुलिस शिकायत लऽ आयल।”

“तखन बंद किएक नहि केलह?”

रितेशक आँखि नीचाँ।

“पाइ।”

एक शब्द।

“मनोज नायक?”

“हमरा लक्ष्य दैत।”

“रात्रि कक्ष?”

“सीधा नहि चलबैत। मुदा जानैत छल।”

“केशव?”

“कखनो नहि भेटल।”

“प्रदीप?”

“नहि।”

“ऊपर के?”

“मनोज कहैत—हमरा ऊपर पूछू नहि।”

“नाम?”

“एक बेर ‘उदय बाबू’ कहने छल।”

फेर नब आधा नाम।

उदय।

उत्तरायण?

उदयन?

उदयरेखा?

जाँचक मन फेर छलाँग मारय चाहैत।

रचना नोटमे केवल लिखलीह—

उदय बाबू—रितेशक कथन; स्वतंत्र पुष्टि अपेक्षित।



मनोज नायककेँ फेर पूछताछ लेल बजाओल गेल।

एहि बेर वकील संग।

रचना सीधे मारपीटक विषय रखलीह।

“हम नहि जानैत।”

“रितेश कहैत अछि अहाँ नाराज छलहुँ।”

“नाराज होयब अपराध?”

“नहि।”

“हम ओकरा पीटबौलहुँ—ई प्रमाण?”

“एखन जाँच।”

मनोजक चेहरा शांत।

“उदय बाबू?”

पलक हलुक डोलल।

“बहुत उदय छथि।”

“अहाँक ऊपर?”

“कम्पनी संरचना।”

“लोकविस्तारक मालिक?”

“विराज चौधरी।”

“उदय?”

“सलाहकार हो सकैत।”

“पूरा नाम?”

मनोज हँसल।

“मोन नहि।”

रचना नोटबुक बंद केलनि।

“आब अहाँक स्मृति सेहो बीस वर्ष पुरान भऽ गेल?”

वकील बीचमे—

“कृपया व्यंग्य नहि।”

रचना क्षमा माँगलीह।

व्यंग्य तर्क नहि।

अपराधी पर क्रोधो प्रमाण नहि।

मनोजकै बाहर जाए देल गेल—एखन।

मगर ओकर फोनक उपलब्ध कानूनी अभिलेख, यात्रा, वित्तीय व्यवहार फेर जाँचमे।

एक नाम खोजबाक काज—

उदय।



लोकविस्तार डिजिटल सेवाक कॉर्पोरेट कागचमे “उदय” नामक कोनो निदेशक नहि।

मगर पुरान सलाहकार अनुबंधमे एक व्यक्ति—

उदयनाथ मिश्र।

पेशा—व्यवसाय विस्तार परामर्श।

उमर बावन।

पहिने खेल-सट्टा सम्बन्धी एक विदेशी कम्पनीमे विपणन काजक अनुभव; भारत लौटि कई डिजिटल कम्पनीक सलाहकार।

कागच पर अपराध नहि।

उदयनाथक वर्तमान पता—राजधानी नगरक बाहरी भागमे एक शांत आवासीय परिसर।

समन जारी।

उत्तर—

“स्वास्थ्य कारणे एक सप्ताह समय।”

चिकित्सकीय प्रमाणपत्र वास्तविक।

रचना प्रतीक्षा स्वीकार केलनि।

रोहित पुछलक—

“भागि गेल तऽ?”

“निगरानी कानूनी सीमा भीतर अछि।”

“तुरन्त पकड़ि सकैत?”

“ककर अपराधमे?”

रोहित चुप।

रचना कहलीह—

“सन्देहक नाम गिरफ्तारी-पत्र नहि।”



एहि बीच ऑनलाइन जुआक त्रासदी एक अन्य घरमे फूटल।

नाम—शैलेश मंडल।

सरकारी विद्यालयक सहायक शिक्षक।

पत्नी—आरती।

एक बेटा, एक बेटी।

ओ पहिने क्रिकेट देखैत छल।

फेर मोबाइल पर छोटी प्रतियोगिता।

फेर निजी दाँव।

पहिल महीना जीत।

दोसर महीना हार।

फेर जीत वापस आनबाक प्रयास।

ऋण।

आभूषण गिरवी।

पत्नीकेँ झूठ—“मित्रक व्यापारमे लगेलहुँ।”

जाँच दलकेँ शैलेशक नाम बैंक शिकायतसँ भेटल, अपराधी रूपमे नहि—पीड़ित रूपमे।

जखन रचना ओकर घर पहुँचल, आरती दरबज्जा खोललीह।

शैलेश घरमे नहि।

तीन दिनसँ गायब।

फोन बन्द।

परिवार पुलिसमे गुमशुदगी दे चुकल।

टेबलक दराजमे एक पन्ना—

“हम सब बिगाड़ि देलहुँ।”

आरो किछु नहि।

कियो मृत्यु घोषित नहि करि सकैत।

कियो आत्महत्या मानि नहि सकैत।

केवल गायब मनुष्य।

रचना तुरन्त स्थानीय खोज-दल संग समन्वय केलनि।

नदी?

बस-स्टैण्ड?

रेल?

अस्पताल?

कोनो निष्कर्ष नहि।

आरती पूछलीह—

“ओ अपराधी छल?”

रचना कहलीह—

“ऑनलाइन जुआ खेलैत छल। ऋण लेने छल। एखन हमरा ई नहि पता जे ओ कोनो अपराध केलक कि केवल अपना केँ बर्बाद।”

आरती फूटि पड़लीह—

“‘केवल’?”

रचना ठिठकल।

गलत शब्द।

“माफ करब।”

आरती रोइत कहलीह—

“घर बर्बाद कऽ देलक। बच्चाक फीस रोकल। हमर गहना। झूठ। ई ‘केवल’ नहि।”

रचना सिर झुका लेलीह।

पीड़ित शब्दो एकवचन नहि।

जुआ खेलनिहार स्वयं फँसल हो सकैत।

ओकर परिवार ओकर काजक पीड़ित।

आ जाल ओकर कमजोरीक शिकारी।

एक मनुष्य एके समय दोषी आ पीड़ित दुनू हो सकैत।



चारि दिन बाद शैलेश जीवित भेटल।

एक दूरक धर्मशालामे।

भूखल।

थाकल।

भागि गेल छल—मृत्यु लेल नहि, घरक सामना नहि करि सकबाक कारण।

पुलिस ओकरा परिवारक सुपुर्द करबाक प्रक्रिया केलक।

रचना पूछताछ नहि, केवल बयान लेल।

“रात्रि कक्ष?”

शैलेश आँखि उठौलक।

“नाम नहि जनैत।”

“खेल कतऽ?”

“एक निजी समूह।”

“कियो खाता देबाक कहलक?”

“हार चुकाबय लेल।”

“देल्ह?”

“नहि।”

“क्यों?”

“बैंकमे सरकारी वेतन अबैत।”

“तखन?”

“ओ सभ कहलक दोसर लोक लाउ, कमीशन भेटत।”

रचना स्थिर।

जुआरी सँ म्यूल-भर्ती।

ऋणग्रस्त उपयोगकर्ता स्वयं अगिला खाताधारक खोजय।

जाल अपन ग्राहककें श्रमिक बनबैत।

शैलेश कहलक—

“हम एक पड़ोसी लड़काकें कहने रही।”

“खाता देलक?”

“नहि। ओकर बाबू गारि देलक।”

ओ रोअय लागल।

“हम शिक्षक छी।”

ई वाक्य ओ अपने लेल कहलक, रचना लेल नहि।

ओकर पेशा आ ओकर काज बीच दूरी ओकरा भीतर तोड़ि रहल छल।

त्रासदी एतय मृत्यु नहि।

जीवित रहि अपन चेहरा देखि सकब छल।



ईशानक म्यूल-जोखिम प्रतिवेदनमे नब श्रेणी जुड़ल—

“ऋणग्रस्त जुआ-उपयोगकर्ता द्वारा द्वितीयक भर्ती।”

ओ आँकड़ा देखलक।

जे लोक हारल रकम लौटेबाक लालसामे घुसैत, हुनकामे किछु बादमे खाता जुटेबाक कमीशन स्वीकार करैत।

अपराध-जालक भर्ती अब केवल बेरोजगारी नहि।

लत स्वयं श्रम-बाजार बनि रहल।

ईशान रिपोर्टमे लिखलक—

“जुआ-जालक आर्थिक क्षति दोगुना होइत अछि—पहिने व्यक्ति हारैत अछि; फेर हार चुकाबय लेल जालक सेवा करऽ लगैत अछि।”

सुमेधा घोष पंक्ति पढ़ि कहलीह—

“ई निष्कर्ष आँकड़ासँ समर्थित?”

“छोट नमूना।”

“तखन भाषा नरम।”

ईशान पंक्ति बदललक—

“प्रारम्भिक नमूनामे एहन प्रवृत्ति देखाइत अछि...”

ओ हँसल।

“प्रमाण फेर भाषा बदललक।”

सुमेधा कहलीह—

“वैज्ञानिक लेखनमे ई कमजोरी नहि।”

“जीवनमे?”

“ओतय लोक निश्चित वाक्य पसिन करैत।”

ईशानकेँ माएक अखबार याद आयल।

“हत्या छल?”

एक प्रश्न।

मगर उत्तरक भीतर बीस वर्षक सावधानी।



उदयनाथ मिश्र निर्धारित दिन आयल।

सूट नहि।

साधारण कुर्ता।

वकील संग।

ओ आत्मविश्वासी छल।

“मनोज नायक?”

“काज करैत।”

“रितेश दास?”

“नहि चिन्हैत।”

“रात्रि कक्ष?”

“बाजारक अनधिकृत गतिविधि सुनने।”

“केशव मेहता?”

“व्यावसायिक परिचय।”

“उत्तरायण?”

“निवेशक समूह।”

“प्रदीप महाजन?”

“नाम सुनने।”

“अम्बरक बाहरी निजी दाँव-जालक संरचना?”

“हमरा काज वैध उपयोगकर्ता-वृद्धि रणनीति।”

रचना पुछलीह—

“हारल उपयोगकर्ताकेँ भुगतान-सहयोगी बनाबयवला मॉडल?”

उदयनाथक चेहरा पहिल बेर स्थिर भेल।

“ई आरोप अछि?”

“प्रश्न।”

“हम एहन मॉडल नहि बनौने।”

“मनोज कहैत अछि—”

“मनोज की कहैत अछि, ओकर जिम्मा ओकर।”

“रितेश ‘उदय बाबू’ कहैत।”

“देशमे हजारों उदय।”

रचना फाइल पलटलीह।

“लोकविस्तारक प्रशिक्षण प्रस्तुति—‘उपयोगकर्ता मूल्य-पुनर्प्राप्ति’। लेखक आद्याक्षर यू.एम.”

उदयनाथक वकील आगे झुकल।

“प्रस्तुति देखाउ।”

कानूनी प्रति देखाओल गेल।

भाषा पूर्णतः वैध विपणन जकाँ—

निष्क्रिय उपयोगकर्ता पुनः सक्रिय।

रेफरल।

समुदाय सहायक।

भुगतान सुविधा।

कहीं “म्यूल” नहि।

कहीं “जुआ” नहि।

रचना पुछलीह—

“ई अहाँक?”

उदयनाथ पढ़लक।

“हाँ। वैध प्रचार लेल।”

“‘भुगतान सुविधा’?”

“ग्राहक सहायता।”

“खाता?”

“हम बैंक-खाता भर्ती नहि लिखने।”

सच।

शब्दक छल कतेको बेर कागच लिखनिहार करैत।

कतेको बेर कागच पढ़निहार।

एहि पन्नासँ अपराध सिद्ध नहि।

मगर रूपरेखा जमीनपर कोना बदलल—ई प्रश्न जीवित।



उदयनाथक वित्तीय व्यवहार साफ देखाइत।

परामर्श शुल्क।

कर।

घर।

कोनो असामान्य नगद नहि।

रोहित निराश।

रचना नहि।

“यदि ओ बौद्धिक ढाँचा दैत, पैसा दोसर बाट हो सकैत।”

मयंक कहल—

“अथवा ओ सचमुच निर्दोष परामर्शक।”

“दुनू।”

अनिरुद्ध फोन पर कहलक—

“आब तर्क करू।”

रचना पूछलीह—

“तर्क?”

“यदि उदयनाथ अपराधक केन्द्र हो, तखन कुन-कुन स्वतंत्र तथ्य अपेक्षित?”

रचना सूची बनौलीह—

मनोजक निर्देश।

रितेशक सुनल नाम।

प्रस्तुतिकरण।

केशव संपर्क।

उत्तरायण निवेशक परिचय।

“आ यदि निर्दोष हो?”

“वैध विपणन; नीचे लोक निर्देश बिगाड़लक।”

“एखन कतेक तथ्य दुनू सिद्धान्तसँ मेल खाइत?”

रचना चुप।

लगभग सभ।

अनिरुद्ध कहलक—

“तखन एखन निर्णय जल्दी।”

न्याय-दर्शनक ‘तर्क’क अर्थ केवल विरोधीकेँ हराबऽ नहि।

दू सम्भव संसार बनाकऽ देखब—कुन तथ्य ककर भीतर टिकैत।



पुरान सत्यप्रकाश जाँचमे सेहो एहन दू संसार बनाओल गेल।

पहिल—

सत्यप्रकाश भुगतान-जाल खोजलक; दिगन्त नाराज; हरिचरण भारी वाहन जुटौलक; दुर्घटना योजनाबद्ध।

दोसर—

सत्यप्रकाश भुगतान रोकलक; दिगन्त नाराज जरूर; हरिचरण वाहन आन काज लेल लऽ गेल;
सत्यप्रकाशक दुर्घटना स्वतंत्र घटना।

कुन तथ्य केवल पहिल संसारमे फिट?

एखन कोनो निर्णायक नहि।

“एच.एम.—राति—भारी” दुनूमे सम्भव।

मोटिव दुनूमे।

समय दुनूमे।

वाहन संख्या नहि।

निर्देश नहि।

भुगतान नहि।

गवाह नहि।

रचना बोर्ड सामने बहुत देर ठाढ़ रहलीह।

“इतिहास हमरा हत्या कहबाक अनुमति देब?”

अनिरुद्ध कहलक—

“इतिहास शायद। अदालत शायद नहि।”

“परिवार?”

“परिवार अपन विश्वास रखत।”

“राज्य?”

“राज्यकेँ बेसी चाही।”

ई उत्तर न्यायसंगत छल।

मगर संतोषजनक नहि।

दोसर शब्दमे—

त्रासदी।



मनोजक फोन अभिलेखमे एक नया तथ्य भेटल।

रितेशपर हमला सँ दू घंटा पहिने मनोज एक सुरक्षा-एजेन्सी संचालककेँ फोन केने छल।

संचालक—रघुवीर तांती।

लोकविस्तारक कार्यक्रममे निजी सुरक्षा दैत।

रघुवीरक फोन बादमे ओहि दू युवकमे एकक फोनसँ सम्पर्कमे, जकरा अस्पताल परिसरक कैमरा

रितेशक हमला राति नजिक देखौने छल।

अब कड़ी सीधा नहि, मगर मजबूत।

मनोजकेँ फेर बजाओल गेल।

रचना फोन-समय सामने रखलीह।

“रघुवीर?”

“कार्यक्रम सुरक्षा।”

“हमला दिन?”

“संयोग।”

“रघुवीर सँ दू युवक?”

“हम नहि जनैत।”

“रितेश?”

“हम नाराज रही।”

“क्यों?”

“काज छोड़ि गेल।”

“धमकी?”

“नहि।”

“रघुवीरकें की कहल?”

मनोज मौन।

वकील सलाह लेल।

फेर मनोज कहलक—

“ओकरा खोजि बात करबाक।”

“मारबाक?”

“नहि।”

“दू लोक किएक गेल?”

“रघुवीरक निर्णय।”

अब मनोज पहिल बेर घटना तक पहुँचल।

अपराधक दायित्वक प्रश्न—

“बात कर” कहब।

सामनेवला मारपीट करय।

आदेशक सीमा कहाँ?

जाँचकें रघुवीर चाही।

रघुवीर घर पर नहि।

फोन बन्द।

वाहन गायब।

एहि बेर “गायब” शब्द सचमुच भारी लगल।



रघुवीर तीन दिन बाद राज्य सीमा पर पकड़ा गेल।

गिरफ्तारी प्रक्रिया साधारण।

कियो गोली नहि।

कियो पीछा नहि।

बस जाँच चौकीपर वाहनक कागच मिलान।

ओ प्रारम्भमे कहलक—

“मनोज भैया केवल बात करबाक कहने छल।”

“दू आदमी किएक?”

“रितेश भागि सकैत।”

“मारपीट?”

“हम नहि कहने।”

“तखन के?”

“ओ सभ अपने।”

“अर्थात् जिम्मेदारी नहि?”

रघुवीर चुप।

रचना पूछलीह—

“यदि अहाँ दू बलवान आदमी ककरो ‘समझाबय’ पठाबैत छी, आ ओ मारि दैत, तखन भाषा

मात्र बदललासँ काज बदलि जाइत?”

वकील विरोध केलक—

“दार्शनिक प्रश्न।”

रचना मूड़ी डोलौलीह।

“ठीक।”

ओ प्रश्न हटौलीह।

कानूनक भाषा अलग सँ तय करत।

मगर कथा भीतर प्रश्न रहि गेल।

छल केवल झूठ शब्द नहि।

कतेको बेर एहन शब्द जे सब बुझैत, मुदा कियो लिखैत नहि।



केशव, मनोज आ रघुवीरक अलग-अलग बयानक बीच एक नया नाम बार-बार नहि, एक बार मात्र आयल—

“सौरभ भैया।”

ककर?

मनोजक पुरान सन्देशमे—

“सौरभ भैया कहने छथि, रात्रि लक्ष्य घटाउ।”

केशवक नोटमे—

“एस.बी. नाराज—मुख्य ब्राण्ड बचाउ।”

रघुवीर कहलक—

“सौरभ बाबू कार्यक्रमक पैघ आदमी।”

उदयनाथ मिश्रक प्रस्तुतिकरण वितरण सूचीमे—

“एस. बर्धन।”

पूरा नाम—

सौरभ बर्धन।

उत्तरायण सामाजिक निवेश निधिक परिचालन प्रमुख।

अम्बरक बोर्ड सदस्य नहि।

लोकविस्तारक औपचारिक मालिक नहि।

मगर निवेशक-पक्षक प्रतिनिधि।

पहिल बेर “ऊपर”क एक व्यक्ति कई स्वतंत्र स्रोतमे उभरल।

रचना तुरन्त गिरफ्तारी नहि माँगलीह।

पहिने कागच।

यात्रा।

ई-पत्र।

बैठक।

वित्तीय स्वार्थ।

सौरभ बर्धन एखन विदेश नहि, राजधानी नगरमे।

ओ स्वयं अगले दिन वकील मार्फत कहलक—

“हम सहयोग करब।”

गोहि पहली बेर पानिक ऊपर आँखि देखौलक कि ई केवल दोसर छाया—एखन कहब जल्दी।



गढ़ नारिकेलमे मृणालिनी एहि राति सत्यप्रकाशक पुरान चश्मा हाथमे लेलनि।

ओ बीस वर्ष सँ टेबुलक दराजमे छल।

काँच पर हलुक खरोँच।

प्रेम ढीला।

कियो उपयोग नहि करैत।

ओ चश्मा पहिरि देखलीह।

दुनिया धुँधली भऽ गेल।

सत्यप्रकाशक आँखिक नम्बर हुनकर नहि।

ओ उतारि हँसलि—एक क्षण।

फेर रोअय लागलीह।

मनुष्य मृतकक आँखि सँ संसार देखबाक इच्छा करैत अछि।

मगर काँच पहिरलासँ दृष्टि नहि भेटैत।

सत्यप्रकाश की देखलक?

कतेक देखलक?

ककरा पहचानलक?

ई कागच कहि रहल छल—ओ किछु देखलक।

मगर आखिरी दृश्य ओकरा संग चलि गेल।

देहरी बाहर बिज्जीक छोट आवाज आयल।

मृणालिनी दरबज्जा खोललीह।

बिज्जी नहि देखायल।

केवल राति।

ओ चश्मा वापस दराजमे नहि रखलीह।

सत्यप्रकाशक फोटो लग राखि देलीह।

उत्तर भेटय कि नहि—

स्मृति एखन फेर खुलेआम घरमे रहत।



रचना सिन्हा सौरभ बर्धनक फाइल खोललीह।

पहिल पन्ना—

शिक्षा।

वित्त।

सामाजिक निवेश।

दूसर—

उत्तरायण निधि।

तेसर—

अम्बरक प्रारम्भिक पूँजी-विस्तार।

चारिम—

लोकविस्तारक रणनीतिक अनुबंधक अनुमोदन।

पाँचम—

केशव मेहताक संग बैठक।

छठम—

रात्रि कक्षक समयक एक निजी ई-पत्र, जकर विषय केवल—

“मुख्य ब्राण्डक जोखिम।”

सन्देश छोट—

“जकरा सार्वजनिक मंचपर नहि राखि सकैत छी, ओकर विस्तार सीमा भीतर रहय। लाभ उपयोगी अछि, मुदा मूल संस्था डूबय नहि।”

रचना पाँति पढ़िते चुप भेलीह।

ई अपराधक स्वीकारोक्ति?

नहि।

मगर “जकरा सार्वजनिक मंचपर नहि राखि सकैत”—ई की?

निजी वैध प्रयोग?

नियामकीय जोखिम?

अवैध जुआ?

सन्दर्भ चाही।

फेर अंतिम पाँति—

“पुरान स्रोतक हिसाब पी.एम. सँ अलग रखू।”

पी.एम.

प्रदीप महाजन?

पुरान स्रोत।

अब वर्तमान आ अतीत फेर एक वाक्यमे।

रचना फाइल बन्द नहि केलनि।

राति बहुत भऽ गेल छल।

मगर एहि बेर जाँचक थकानक भीतर एक अलग भय आयल—

शायद केन्द्र सचमुच सामने आबि रहल अछि।

आ यदि सामने आयल, तऽ ई केवल एक अपराधीक गिरफ्तारीक कथा नहि रहत।

बीस वर्ष पुरान पैसा, एक मृत ठेकेदार, ऑनलाइन जुआमे डूबल परिवार, म्यूल खातामे फँसल गरीब, जेलमे बैसल लेखापाल, ब्राण्ड बचबैत निदेशक—सभ एके प्रश्नमे बदलत—

कतेक लोकक छोट-छोट मौन मिलि कऽ एक गोहि बनबैत अछि?

रचना बोर्डक कात गेलीह।

“प्रयोजन?”क नीचे नब शब्द लिखलीह—

“समवाय।”

अनेक अंश मिलि एक संरचना।

न्याय केवल एक दोषी नाम खोजब नहि।

कतेको बेर पूरा संरचना बुझब।

बाहर भोरक पहिल उजास छल।

किनार पर पहरा जारी छल।



सौरभ बर्धन निर्धारित समयसँ पन्द्रह मिनट पहिने पहुँचल।

ओकरा देरी करबाक आवश्यकता नहि छल।

जाँचसँ भागब ओकर रणनीति नहि।

सम्भवतः ओकरा विश्वास छल जे जे किछु कागचपर अछि, तकर भीतर रहि ओ सुरक्षित अछि।

रचना सिन्हा सामने फाइल राखलनि।

“उत्तरायण।”

“हाँ।”

“अम्बर।”

“निवेशक कम्पनी।”

“लोकविस्तार।”

“बाहरी विपणन साझेदार।”

“रात्रि कक्षा।”

सौरभ पहली बेर हलुक मुस्कुरायल।

“ई शब्द आब प्रसिद्ध भऽ गेल।”

“अहाँ चिन्हैत छी?”

“आन्तरिक जोखिम-रिपोर्टमे देखने रही।”

“कखन?”

ओ तारीख देलक।

रचना नोट मिलौलीह।

तारीख केशवक निजी नोटसँ बहुत बादक।

“एहि सँ पहिने नहि?”

“नहि।”

“ई ई-पत्र?”

रचना प्रिण्ट प्रति सामने रखलीह।

“जकरा सार्वजनिक मंचपर नहि राखि सकैत छी, ओकर विस्तार सीमा भीतर रहय। लाभ उपयोगी अछि, मुदा मूल संस्था डूबय नहि।”

सौरभ पढ़लक।

“हमर अछि।”

“‘सार्वजनिक मंचपर नहि राखि सकैत’ मतलब?”

“नियामकीय अस्पष्टता।”

“अवैधता?”

“नहि।”

“निजी दाँव?”

“हमरा तखन पूर्ण जानकारी नहि।”

“‘लाभ उपयोगी’?”

“निवेशक भाषा।”

“‘पुरान स्रोतक हिसाब पी.एम. सँ अलग रखू’?”

सौरभक चेहरा कने कड़ा भेल।

“पुरान स्रोत निवेशक पूँजी।”

“ककर?”

“उत्तरायणक।”

“पी.एम.?”

“प्रदीप महाजन।”

“तखन अहाँ प्रदीपकें चिन्हैत छलहुँ।”

सौरभ एक क्षण चुप।

“व्यक्तिगत रूपेँ कम। भूमिका जानैत छलहुँ।”

रचना कलम रोकलीह।

पहिल छोट विरोधाभास।

पहिने “नाम सुनने।”

आब भूमिका जानैत।

“अहाँ पहिने कहलहुँ नाम मात्र सुनने।”

“हो सकैत अछि प्रश्नक सन्दर्भ अलग बुझने रही।”

“हो सकैत।”

रचना शब्द वापस ओकरा देलीह।

सौरभ मुस्कुरायल नहि।



पूछताछक अगिला घंटामे किछु निर्णायक नहि भेटल।

मगर एक संरचना स्पष्ट होय लागल।

उत्तरायण निवेशक स्तरपर लाभ देखैत।

अम्बर मुख्य ब्राण्ड।

लोकविस्तार उपयोगकर्ता-वृद्धि।

रात्रि कक्ष आधिकारिक प्रणालीबाहिर निजी दाँव।

प्रदीप वित्तीय समायोजन।

केशव मुख्य खाताक साफ रूप बचबैत।

मनोज मैदानक भर्ती।

रघुवीर दबाव।

ई संरचना एहन छल जतऽ प्रत्येक आदमी कहि सकैत—

“हम केवल अपन अंश जनैत रही।”

समवाय।

रचना बोर्ड पर लिखल शब्द मोन पाइलीह।

सौरभकेँ पुछलनि—

“यदि प्रत्येक आदमी केवल अपन अंश जनैत छल, पूरा जाल के जनैत?”

सौरभ उत्तर देलक—

“शायद कियो नहि।”

“तखन चलैत कोना?”

“व्यवस्था।”

“व्यवस्था अपने-आप निर्णय लैत?”

“कतेको कम्पनीमे स्पष्ट आदेश कम होइत।”

“अपराधमे?”

सौरभ वकील दिस तकलक।

“हम अपराध स्वीकार नहि कऽ रहल छी।”

“हम प्रश्न पूछैत छी।”

“तखन उत्तर—मनुष्य नियम बनबैत, फेर नियम मनुष्यकेँ चलबैत।”

रचना एहि वाक्यक तात्पर्य देखलीह।

ई दार्शनिक छल।

मगर बचावो।

जँ “व्यवस्था” दोषी, तँ व्यक्ति धुँधला।

न्यायालय व्यवस्था जेल नहि पठा सकैत।



सौरभक फोन आ ई-पत्रक कानूनी परीक्षणसँ एक महत्वपूर्ण बैठकक अभिलेख भेटल।

स्थान—उत्तरायणक अतिथि-गृह।

उपस्थित—

सौरभ।

केशव।

मनोज।

उदयनाथ।

प्रदीप।

तारीख—रात्रि कक्षक वित्तीय गतिविधि तेज होयबासँ लगभग छह महीना पहिने।

बैठकक विषय कागच पर—

“द्वितीयक उपयोगकर्ता परिसंचरण।”

नाम विचित्र।

रचना उदयनाथकेँ फेर बजौलीह।

“द्वितीयक उपयोगकर्ता परिसंचरण?”

उदयनाथ कागच पढ़लक।

“ग्राहक पुनर्सक्रियता।”

“खाता भर्ती?”

“नहि।”

“हारल उपयोगकर्ता?”

“किछु।”

“भुगतान सुविधा?”

“किछु।”

“बैठकमे मनोज छल।”

“मैदानक आदमी।”

“प्रदीप?”

“वित्त।”

“केशव?”

“कम्पनी।”

“सौरभ?”

“निवेशक।”

“तखन ई सामान्य विपणन बैठकमे सभ भूमिका किएक?”

उदयनाथ चुप।

रचना पुछलीह—

“एहि बैठक बाद रात्रि कक्षक खाताक संख्या बढ़ल।”

“हम आँकड़ा नहि जनैत।”

“रितेश कहैत—एहि समय लक्ष्य बढ़ल।”

“ओकर कथन।”

“प्रदीप कहैत—पुरान स्रोतक पैसा नब निपटानमे घुमल।”

“ओकर कथन।”

“केशवक नोट।”

उदयनाथक वकील बीचमे—

“कृपया साक्ष्यक व्याख्या अदालत पर छोड़ू।”

रचना मूड़ी डोलौलीह।

“ठीक।”

फेर केवल एक प्रश्न—

“बैठकमे निजी दाँवक चर्चा भेल?”

उदयनाथ बहुत देर चुप रहल।

“हाँ।”

कमरा थिर।

“ककर पहल?”

“मोन नहि।”

“अवैध बुझैत छलहुँ?”

“कानूनी स्थिति अस्पष्ट कहि चर्चा भेल।”

“म्यूल खाते?”

“ई शब्द नहि।”

“दूसर लोकक बैक खाता?”

“भुगतान वैकल्पिकता चर्चा भेल।”

“अर्थ?”

“हम स्पष्ट नहि कहि सकैत।”

रचना लिखलीह—

बैठकमे निजी दाँव स्वीकार।

एहि बेर कथा अटकल सँ तथ्य दिस एक डेग बढ़ल।



उदयनाथ पर तुरन्त गिरफ्तारी नहि भेल।

सहभागिता आ आपराधिक आशय अलग प्रश्न।

रचना ई बात प्रेसकें नहि, अपनी टीमकें बार-बार कहलीह।

रोहित पूछलक—

“जँ बैठकमे दाँव चर्चा भेल तऽ?”

“दाँवक चर्चा अपराध-सहमति साबित नहि करैत।”

“मगर बादमे वैह भेल।”

“तखन कारण श्रृंखला देखू।”

“कतेक श्रृंखला चाही?”

रचना थाकल स्वरमे हँसलीह।

“जतेक मनुष्यक स्वतन्त्रता छीनबाक लेल जरूरी।”

रोहित चुप भऽ गेल।

कठोर प्रक्रिया अपराधीकेँ फायदा देत—एहन शिकायत आसान।

मगर ई प्रक्रिया निर्दोषकेँ सेहो बचबैत।

ककरा बचायल जा रहल—ई जाँचक आरम्भमे कियो नहि जानैत।

एही लेल नियम व्यक्ति देखकर बदलि नहि सकैत।



जिला कारामे प्रदीपक तीसरा महीना चलि रहल छल।

ओ आब विधिक सहायता कक्षमे नियमित मदति करैत।

कागच लिखब।

तारीख देखब।

परिवारकेँ पत्रक भाषा सरल करब।

एक दिन जेलक प्रहरी एक नब बंदी अनलक—

शैलेश मंडल।

वही शिक्षक।

रचना जकरा गुमशुदगीक बाद घर पहुँचा देने छलीह।

आब ओकरा किएक?

मामला छोट नहि रहल।

ऋणक दबावमे शैलेश बादमे दू खाता भर्ती करौने छल; एक खातामे ठगीक पैसा आयल। पुलिस कहैत—ओ जानि-बुझि कमीशन लेल।

शैलेश कहैत—ओ जुआ ऋण चुकाबय लेल दबावमे छल।

प्रदीप ओकरा पहचानलक नहि, मगर मामला सुनि चुप रहि गेल।

“शिक्षक?” ओ पूछलक।

शैलेश सिर झुका लेलक।

“रही।”

“नौकरी?”

“निलम्बित।”

“घर?”

“पत्नी बात नहि करैत।”

प्रदीपकेँ अपन बेटी तृषा मोन पड़लीह।

“जमानत?”

“वकील कहैत—होयत।”

“तखन?”

“बाहर जाएब सँ डर लगैत।”

प्रदीप चकित।

“जेलमे रहय चाहैत?”

शैलेश हँसल—खाली।

“बाहर बच्चाक आँखि अछि।”

प्रदीप किछु नहि कहि सकल।

जेल दण्ड होइत।

कतेको बेर मनुष्य ओकरा आश्रय बना लेत—क्योंकि बाहर लज्जा अधिक कठोर।

ई त्रासदीक एहन रूप छल जकर कानूनमे धारा नहि।



तृषा अगिला मुलाकातमे फेर आयली।

एहि बेर फोन उठौलीह।

“बाबू।”

प्रदीपक चेहरा उज्जर पड़ल।

“हँ बेटा।”

“स्कूलमे सभ जानि गेल।”

प्रदीप चुप।

“एक लड़की कहलक—तोहर बाबू पैसा धोड़त छल।”

प्रदीपक आँखि बन्द।

“तूँ की कहलह?”

“किछु नहि।”

“माफ कर।”

तृषा कठोर—

“हमरा माफ किएक? स्कूलकें कहू।”

प्रदीपक लग उत्तर नहि।

“माँ कहैत छथि मुकदमा लम्बा चलत।”

“हो सकैत।”

“अहाँ केलहुँ?”

“जे कहने रही—किछु कागच जानि-बुझि गलत।”

“ककर लेल?”

“कम्पनी लोक।”

“किएक?”

“पहिने नौकरी। बादमे डर। फेर आदत।”

तृषा पुछलीह—

“आदत अपराध हो सकैत?”

प्रदीप बहुत देर सोचलक।

“जखन गलत काज सामान्य लगऽ लागय—हाँ।”

तृषा फोन पकड़े रहल।

“हम अहाँ सँ घृणा नहि करैत।”

प्रदीप रोअय लागल।

“मगर भरोसा सेहो नहि।”

ई वाक्य क्षमा सँ अधिक सच छल।

प्रदीप माथ झुका लेलक।

“ठीक।”

काँचक दुनू कात पिता-बेटी एक्के समय रोइत नहि।

तृषा चुप रहलि।

प्रदीप रोइत रहल।



सौरभक वित्तीय इतिहासमे अपराधक पैसा सीधे ओकर निजी खातामे नहि भेटल।

वेतन।

निवेश लाभ।

कर।

सम्पत्ति।

सभ व्यवस्थित।

मगर उत्तरायण निधिक एक सहायक कम्पनी—“क्षितिज सम्पदा प्रबन्ध”—रात्रि कक्षक

उछाहवला वर्षमे असामान्य लाभ देखौलक।

लाभक स्रोत—

व्यापारिक ऋण।

ककरा?

तीन कम्पनी, जकरा मयंक झा पहिने “माल” परतमे चिन्हने छल।

नीलकण्ठ एग्रीगेट्स नहि।

आन वास्तविक व्यवसाय।

धान-व्यापार।

प्लास्टिक पैकेजिंग।

छोट परिवहन।

सामान सचमुच बिकैत।

मगर ऋणक ब्याज बाजारसँ असामान्य कम।

क्यों?

यदि लक्ष्य लाभ नहि, पैसा प्रवेश करेनाइ हो?

मयंक कहलक—

“ई धनशोधनक सम्भावित विधि हो सकैत।”

रचना तुरन्त पूछलीह—

“सिद्ध?”

“नहि।”

मयंक हँसल।

“आब अहाँ हमरा प्रश्न पहिने दे दैत छी।”

लेखा-अभिलेख गहिर जाँचमे पता चलल—तीन कम्पनी ऋणक किछु हिस्सा समय सँ पहिने वापस केलक, जबकि व्यापारिक नकदी-प्रवाह ओतबा मजबूत नहि।

पैसा कतऽ सँ?

दू खातामे म्यूल-जालसँ सम्बद्ध मध्यस्थक रकम।

अब एक वित्तीय वृत्त पूरा होय लागल।

जुआक पैसा → मध्यस्थ → वास्तविक व्यापार → ऋण वापसी → निवेशक कम्पनीक साफ आय।

कथा तकनीकी विस्तार नहि चाहैत छल।

मगर नैतिक अर्थ साफ—

गन्दा पैसा रास्ता बदलि-बदलि अन्तमे एहन कपड़ा पहिरैत जकरा देख बैंक सेहो साधारण ग्राहक बुझि सकैत।



रचना एहि संरचना पर सौरभकेँ फेर पूछलीह।

“क्षितिज सम्पदा?”

“उत्तरायणक सहायक।”

“ऋण नीति?”

“समिति तय करैत।”

“अहाँ?”

“सदस्य।”

“तीन कम्पनीक ऋण?”

“हजार निर्णयमे तीन।”

“असामान्य कम ब्याज?”

“रणनीतिक निवेश।”

“पूर्व भुगतान?”

“व्यवसाय सफल।”

“म्यूल-जालसँ पैसा?”

सौरभ चुप।

वकील बीचमे—

“स्रोतक साक्ष्य देखाउ।”

रचना तालिका रखलीह।

सौरभ दीर्घ समय देखलक।

“हम एहि स्तरक लेनदेन नहि जनैत रही।”

“ककर जिम्मा?”

“वित्त प्रमुख।”

“नाम?”

“आलोक भसीन।”

नब नाम।

रचना थकान अनुभव केलनि।

हर केन्द्रक पाछाँ एक दोसर केन्द्र?

या सचमुच जिम्मेदारी परत-दर-परत?

समवाय फेर।

“आलोक कहाँ?”

“दुई वर्ष पहिने इस्तीफा।”

“अब?”

“सिंगापुर, शायद।”

रचना केवल ‘शायद’ लिखलीह।

अन्तरराष्ट्रीय गिरफ्तारीक नाटक नहि।

पहिने सत्य।



आलोक भसीनक पुरान कम्पनी-लैपटॉपक बैकअप वैधानिक रूपेँ उपलब्ध छल।

किछु ई-पत्र मिटाओल।

किछु बचल।

एक ई-पत्र सौरभकेँ—

“रात्रि प्रवाहक सम्बन्ध प्रत्यक्ष न हो, एहि लेल सहायक ऋण-विधि उपयोगी रहत।”

सौरभक उत्तर—

“मुख्य ब्राण्ड आ निधि दुनू अलग रहय।”

बस।

दू पाँति।

रचना पढ़ि कुर्सीपर पाछाँ झुकलीह।

आपराधिक आशय?

रक्षा पक्ष कहि सकत—नियामकीय अलगाव।

अभियोजन कहि सकत—स्रोत लुकाबय।

सन्दर्भ, अन्य कागज, बैठक, वित्तीय मार्ग—सभ जोड़ब पड़त।

मगर सौरभक “नहि जनैत रही” अब कमजोर भेल।

रचना गिरफ्तारी प्रस्ताव तैयार केलनि।

आदित्य शेखर पुछलक—

“पर्याप्त?”

“अपराध सिद्ध लेल नहि। हिरासत/पूछताछ आ आरोपक प्रारम्भिक आधार लेल—हाँ।”

न्यायालय आदेश देलक।

सौरभ बर्धन गिरफ्तार भेल।

कोनो नारा नहि।

कोनो टीवी कैमरा भीतर नहि।

बाहर जरूर भीड़।

एक युगक “सम्मानित सामाजिक निवेशक” आब अभियुक्त।

मगर रचना प्रेसमे फेर कहलीह—

“अभियुक्त, दोषी नहि।”

एक रिपोर्टर बड़बड़ायल—

“ई लाइन तऽ अहाँक स्थायी भऽ गेल।”

रचना सुनलीह।

उत्तर नहि देलीह।

किछु वाक्य बार-बार कहब पड़ैत अछि, कारण समाज बार-बार भूलैत अछि।



सौरभक गिरफ्तारीक खबर गढ़ नारिकेल पहुँचली।

ईशान माएक घरमे छल।

टीवी पर नाम।

उत्तरायण।

अम्बर।

पुरान पैसा।

सत्यप्रकाशक फाइलक एक छोट उल्लेख।

मृणालिनी रिमोट बन्द कऽ देलीह।

“ई आदमी बाबूकें मरबौलक?”

ईशान चुप।

“नहि जनैत।”

“ओ तखन कतेक उमेरक छल?”

ईशान खोजि देखलक।

सत्यप्रकाशक मृत्यु समय सौरभ बहुत युवा, शायद निवेश-जगतमे आरम्भिक स्तर पर।

मृणालिनी हँसलीह—कटु नहि, थाकल।

“तखन फेर नब आदमी।”

“हो सकैत जाल बादमे ओकर हाथ आयल।”

“आ बाबू?”

“पुरान लोक।”

“मरल।”

“बहुत।”

मृणालिनी आँखि मूनि लेलीह।

“तू देखैत छह? गोहि बदलैत गेल। हम सोचैत रही एक आदमी भेटत—बस।”

ईशान धीरे कहल—

“शायद कोनो एक आदमी कहियो छलो नहि।”

मृणालिनी ओकरा देखलीह।

“तखन न्याय ककरा देब?”

ईशानक लग उत्तर नहि।

एक व्यक्तिक अपराधक बदला सम्भव।

संरचनाक न्याय कठिन।



पुरान जाँचमे रजत चौबेक गोदामसँ एक अन्य बही भेटल—पहिल बहीक पछिला वर्षक।

एहि बेर “एच.एम.”क एक प्रविष्टि साथ वाहन संख्या सेहो।

दुर्घटना रातिक दिन।

भारी मालवाहक।

वाहन संख्या पुरान परिवहन विभाग अभिलेखसँ मिलल।

मालिक—चौबे मालवाहक।

वाहन बादमे दुर्घटनाग्रस्त घोषित कऽ कबाड़।

तारीख—सत्यप्रकाशक मृत्यु सँ दू महीना बाद।

कहाँ दुर्घटनाग्रस्त?

अभिलेख अस्पष्ट।

बीमा दावा?

नहि।

कबाड़ खरीदनिहार?

एक स्क्रेप व्यापारी—मृत।

रचना हृदय धड़कैत अनुभव केलनि।

पहिल बेर वास्तविक वाहन सम्भावना।

मगर फेर—

की वैह वाहन सत्यप्रकाशकँ ठोकर देलक?

रंग?

पुरान गवाह “गहरा” कहने छल।

वाहनक रंग अभिलेख—हरा।

आकार—मेल।

क्षति?

कबाड़ अभिलेख नहि।

फॉरेंसिक भौतिक प्रमाण नष्ट।

रचना वाहन संख्या बोर्डपर लिखलीह।

बीस वर्ष बाद प्रथम ठोस वस्तु।

मगर वस्तु स्वयं गायब।

इतिहासक क्रूर व्यंग्य।



बासुदेव मरिककैँ वाहनक पुरान फोटो लाइनअप देखाओल गेल।

ओ एक फोटो पर रुकल।

“एहन गाड़ी।”

“इएह?”

“नहि कहि सकैत।”

रचना राहत अनुभव केलनि कि ओ झूठी निश्चितता नहि देलक।

“हरिचरण एहन वाहन लऽ गेल?”

“हाँ, एहन।”

“कहाँ?”

“राति शहर बाहर।”

“अहाँ संग?”

“नहि।”

“कियो चालक?”

बासुदेव बहुत देर सोचलक।

“मोटका राम।”

“पूरा नाम?”

“रामअवतार... शायद।”

फेर नब खोज।

रामअवतार यादव।

दर्जनों।

बीस वर्ष।

किछु मरल।

किछु अज्ञात।

एक पुरान चालक संघक अभिलेखमे रामअवतार यादव, पता—कमला-बलानक दोसर पारक
एक गाम।

जीवित?

गामक मुखिया कहलक—हाँ।

उमर सत्तर पार।

रचना अगिला दिन निकललीह।



रामअवतार यादवक घर पर पहुँचला पर दरबज्जा ओकर पोता खोललक।

“दादा बोलि नहि सकैत।”

पाँच वर्ष पहिने आघात।

देहक दाहिना भाग कमजोर।

स्मृति?

कखनो।

रचना भीतर गेलीह।

वृद्ध खाटपर।

फोटो देखौलीह।

हरिचरण।

आँखि बदलल।

रामअवतार बायाँ हाथ उठौलक।

कुछ कहब चाहलक।

शब्द अस्पष्ट।

पोता बुझबाक प्रयास।

“हरि...?”

वृद्ध माथ हिलौलक।

वाहन फोटो।

हरा मालवाहक।

वृद्धक आँखि भरि आयल।

ओ बार-बार एके इशारा—

हाथ स्टेयरिंग जकाँ।

फेर छाती पर हाथ।

फेर आँखि बन्द।

ई दृश्य रचनाक मनकेँ हत्या दिस धकेलि सकैत छल।

मगर संचार अस्पष्ट।

ओ भाषण-चिकित्सक आ मजिस्ट्रेटक सहायता माँगलीह।

वृद्धक संकेतकेँ पुलिस अपनी कथा नहि देत।

अगिला दिन व्यवस्थित संकेत-परीक्षण।

हाँ/नहि संकेत तय।

नाम।

वाहन।

तारीखक सीधा स्मरण कठिन।

“सत्यप्रकाश?”—नहि पहचान।

“हरिचरण?”—हाँ।

“हरा ट्रक?”—हाँ।

“राति?”—हाँ।

“दुर्घटना?”—वृद्ध उत्तेजित, उत्तर अस्पष्ट।

“ठोकर?”—आँखि बन्द, रोअय लागल।

मजिस्ट्रेट सत्र रोकलनि।

मानवीय सीमा।

प्रमाणक भूख वृद्धक स्वास्थ्य पर आक्रमण नहि करय।

रचना बाहर आबि बहुत देर चुप रहलि।

शायद अंतिम जीवित चालक सामने।

मगर ओकर देह शब्द देब असमर्थ।

फेर त्रासदी।

सत्य नजिक।

भाषा दूर।



तीन दिन बाद रामअवतारक पोता स्वयं रचना केँ फोन केलक।

“दादा कागच देखाबऽ कहैत।”

पुरान संदूकमे एक फोटो।

हरा ट्रक।

पाछाँ हाथसँ लिखल—

“हरि बाबूक रातिक काज—फेर नहि।”

तारीख अस्पष्ट, मुदा वर्ष मेल।

रचना फोटो विधिसम्मत जस्त केलनि।

“फेर नहि”क अर्थ?

ओ काज खतरनाक?

अनैतिक?

दुर्घटना?

बस थकान?

कियो नहि जानैत।

मगर ई फोटो वाहन, हरिचरण आ चालक तीनूक संबंध जोड़ैत।

अब हत्या-परिकल्पना बहुत मजबूत।

अन्तिम आदेश एखनहुँ नहि।

देवांशु?

शशिभूषण?

कियो अन्य?

रचना सोचलीह—शायद जाँच एक दिन अपराध सिद्ध कर देत, अपराधी नहि।

कानूनक लेल ई असह्य स्थिति।

इतिहासक लेल सामान्य।



सौरभ बर्धन न्यायिक हिरासतमे भेजल गेल।

जिला कारा नहि, राजधानी नगरक केन्द्रीय कारा।

वकील तुरन्त जमानत याचिका।

स्वास्थ्य।

प्रतिष्ठा।

साक्ष्य दस्तावेजी।

भागबाक जोखिम कम।

अभियोजन विरोध।

न्यायालय आंशिक रूपेँ सुनलक, आदेश सुरक्षित।

मीडिया बाहर “जुआ सम्राट” लिखि चुकल।

रचना समाचार देखलनि।

सौरभ अपराध-जालक महत्त्वपूर्ण अभियुक्त हो सकैत।

मगर “सम्राट” शब्द साक्ष्य नहि।

कथा फेर एक आदमीकेँ पूरा गोहि बनाबऽ चाहैत।

रचना बोर्डपर लिखल—

“समवाय $\neq$ एक राजा।”

कतेको अपराधी नेटवर्कक सभसँ सुरक्षित बचाव ई होइत अछि जे समाज एक चेहरा खोजैत अछि।

चेहरा गिरल तऽ समाज मानैत जाल मरल।

जालक नियम, लोभ, बाजार, भर्ती, मौन—बचि जाइत।



ईशान एहि बीच म्यूल खाताक जोखिम-रिपोर्ट राज्य बैंक संघक सामने प्रस्तुत करैत छल।

स्लाइड पर कोनो अपराधीक नाम नहि।

केवल प्रतिरूप।

अचानक एक वरिष्ठ बैंकर पुछलक—

“अहाँक पिता पुरान ठेका-जाँचमे मारल गेल छलाह?”

कमरा असहज।

ईशान एक क्षण स्थिर।

“हुनकर मृत्यु-जाँच फेर खुलल अछि।”

“एहि कारण अहाँ एहि विषयमे?”

ई प्रश्न निर्दोष जिज्ञासा हो सकैत।

मगर ईशानकेँ भीतर तक चुभल।

“हो सकैत अछि एहि कारण हम जोखिमक मानवीय पक्ष जल्दी देखि पबैत छी। मुदा एहि रिपोर्टक निष्कर्ष अनाम आँकड़ा पर आधारित अछि। अहाँ पद्धति जाँचू, हमर परिवार नहि।”

कमरा चुप।

सुमेधा घोष पाछाँ बैसल छलीह।

हुनकर आँखिमे हलुक स्वीकृति।

ईशान पहिल बेर सार्वजनिक रूपेँ अपन पिता सँ दूरी नहि, सीमा बनौलक।

व्यक्तिगत शोकक उपयोग ज्ञानमे हो सकैत।

मगर ज्ञानक प्रमाण शोक नहि।



मृणालिनी राति ईशानक प्रस्तुति विषय फोन पर सुनलीह।

“नीक केलह।”

“कठोर कहलहुँ?”

“जरूरी।”

“माँ...”

“हँ?”

“जँ बाबूक केस कखनो पूरा सिद्ध नहि हो?”

मौन।

कमला-बलानक दूरक आवाज फोनमे नहि, स्मृतिमे छल।

मृणालिनी धीरे कहलीह—

“पहिने हम चाहैत रही एक नाम। फेर चाहैत रही सजा। फेर केवल सत्य। आब बुझैत छी—सत्य सेहो पूरा नहि हो सकैत।”

ईशानक गला भारी।

“तखन?”

“जतबा भेटय, ओकरा झूठ सँ खराब नहि करिह।”

ई वाक्य दादीक “किनार”क बाद घरक नब नियम बनल।

जतबा सत्य।

ओतबे कहू।

न कम।

न बेसी।



रचना सिन्हा रातिक अन्तिम बैठकमे टीमकेँ दू फाइल सामने रखलीह।

पुरान।

नब।

“हम दुनूकेँ एक मुकदमा नहि बनाएब।”

रोहित पूछलक—

“क्यों? पैसा जुड़ल।”

“इतिहास जुड़ल। अपराधक तत्व अलग।”

“मगर अदालतमे कथा?”

“अदालत कथा नहि, आरोप सुनत।”

मयंक मूड़ी डोलौलक।

“पुरान जाँच—सत्यप्रकाशक सन्दिग्ध मृत्यु, आर्थिक प्रयोजन, हरिचरणक वाहन-संपर्क।”

“नब—ऑनलाइन जुआ, म्यूल खाते, वित्तीय परत, केशव, सौरभ, मनोज आदि।”

“पुरान पैसा नब जालमे आयल—ई संदर्भ आ वित्तीय साक्ष्य।”

“मगर हत्या सिद्ध करबाक लेल नब जुआक अपराध उपयोग नहि।”

रचना बोर्ड साफ करऽ लागलीह।

“हम अपराधक इतिहास लिखि सकैत छी। दण्डादेश अलग-अलग प्रमाण पर।”

रोहित पुछलक—

“तखन गोहि एके अछि कि दू?”

रचना रुकलीह।

“शायद पानि एके अछि।”

सब हँसल नहि।

कारण उत्तर हलुक नहि छल।

लोभ।

भय।

मौन।

वैध संस्थाक भीतर अवैध लाभ।

गरीबक विवशता।

अधिकारीक समझौता।

इनामक चमक।

दण्डक विलम्ब।

ई सभ पानि बनबैत।

गोहि नाम बदलैत।



रामअवतारक स्वास्थ्य फेर बिगड़ल।

रचना अस्पताल पहुँचलाक पहिने ओ चलि गेल।

कोनो नब बयान नहि।

एक फोटो बचल।

एक अधूर संकेत।

एक रोअती आँखि।

पुरान जाँचक अन्तिम जीवित सम्भावित चालक सेहो चलि गेल।

रचना अस्पतालक बरामदामे दीवालसँ टिकि गेलीह।

रोहित पास ठाढ़।

“हम किछु दिन पहिने गेल रही।”

“हाँ।”

“पहिने किएक नहि?”

रोहित उत्तर नहि देलक।

बीस वर्षक देरी रचनाक व्यक्तिगत गलती नहि।

तैयो जाँचकर्ता समयक पूरा भार अपने पर लैत।

“जँ ओ बोलि पबैत...”

रोहित धीरे कहलक—

“तखन शायद।”

रचना आँखि बन्द केलनि।

फेर वैह शब्द।

शायद।

रामअवतारक पोता दूर रोइत परिवारक कागच भरि रहल छल।

राज्यक फाइलमे “सम्भावित महत्त्वपूर्ण साक्षी मृत” लिखल जाएत।

परिवारक फाइलमे—

“दादा गेल।”

दुनू सत्य।

दुनूक वजन अलग।



गढ़ नारिकेलमे ओहि राति भीषण बरखा भेल।

कमला-बलान खतरा-रेखा लग।

मृणालिनी आँगनक सामान भीतर खींचि रहल छलीह।

बिज्जीक पुरान बिल पूर्ण पानिमे।

गहुमन, गोहि, बिज्जी—सभ अपन-अपन ऊँच ठाम खोजैत होयत।

प्रकृति अपराधक प्रतीक मानि नहि चलैत।

ओ केवल पानि बढ़बैत।

भोरमे ईशान पहुँचि गेल।

“माँ, बाँध पर दबाव अछि। चलू।”

“कहाँ?”

“विद्यालयमे राहत शिविर।”

मृणालिनी सत्यप्रकाशक फोटो हाथमे लेलनि।

फेर चश्मा।

फेर धनेश्वरीक एक पुरान ओढ़नी।

तीन वस्तु।

घर छोड़बाक समय देहरी पर मुड़ि देखलीह।

ईशान कहलक—

“जल्दी।”

मृणालिनी धीरे—

“घर डूबि गेल तऽ?”

“फेर बनत।”

“स्मृति?”

ईशान उत्तर नहि देलक।

दुनू बाहर निकलल।

पाछाँ पानि आँगनमे घुसि रहल छल।

एक झाड़ीक ऊपरी डालपर बिज्जी भीजल देहसँ ठाढ़ छल।

ईशान ओकरा देखलक।

बिज्जी सेहो शायद ओकरा।
फेर ओ छलॉंग मारि ऊँच दीवाल पर चढ़ि गेल।
रक्षक सेहो सदिखन लड़ैत नहि।
कतेको बेर जीवित रहब पहिल कर्तव्य होइत।



राजधानी नगरमे रचना सिन्हा ओहि समय सौरभक जब्त ई-पत्रक अंतिम समूह पढ़ि रहल छलीह।

एक पाँति पर आँखि रुकल।
सौरभ सँ आलोक भसीन—
“पुरान विवादक नाम दोबारा न आवय। एस.के. प्रकरण निवेशक अभिलेखमे न खोलू।”
एस.के.
एहि बेर संदर्भ फाइलसँ मिलैत।
सत्यप्रकाश कर्ण।
रचना साँस रोकलीह।
ई-पत्र सत्यप्रकाशक मृत्यु सँ बहुत बादक।
मगर अर्थ स्पष्ट—
सौरभ लोक पुरान “एस.के. प्रकरण” विषय जानैत छल।
कतेक?
ककरा सँ?
क्यों छुपाबऽ चाहैत?
रचना तुरन्त निष्कर्ष नहि लिखलीह।
केवल तीन प्रश्न।
आ एक नब दिशा—
पुरान अभिलेखकें नब निवेशक इतिहाससँ जानि-बुझि अलग रखबाक निर्णय कोना भेल?

कियो बीस वर्ष धरि केवल पैसा नहि, स्मृति सेहो धोइत रहल?
धनशोधन सँ बेसी खतरनाक कतेको बेर इतिहास-शोधन होइत अछि।
गन्दा घटना पर साफ कथा चढ़ा दिअ।
नब पीढ़ी केवल ब्राण्ड देखत।
पाछाँक रक्त नहि।
रचना बोर्ड पर “समवाय”क नीचे एक आर शब्द लिखलीह—
“स्मृति।”
गोहि केवल पानिमे नहि लुकैत।
ओ इतिहासमे सेहो लुकैत अछि।
बिज्जीक पहरा तखन केवल देहरी पर नहि।
कागचक किनारपर सेहो चाही।



“एस.के. प्रकरण”क अर्थ खोजबाक पहिल काज ई नहि छल जे सत्यप्रकाशक मृत्यु फेर सँ मानि लेल जाए।

रचना सिन्हा सौरभ बर्धनक जब्त ई-पत्र सभ कालक्रममे सजौलीह।

एक पाँति।

फेर दोसर।

फेर बीचक छह वर्षक खाली जगह।

आलोक भसीनकेँ पठाओल एक पुरान मसौदामे “एस.के. प्रकरण”क उल्लेख छल, मुदा पूरा नाम नहि। तेसर कागचमे एक जोखिम-टिप्पणी—

“पुरान खेल-प्रचार भुगतान पर विवाद आ सम्बन्धित ठेकेदारक मृत्यु ब्राण्ड-इतिहासमे अनावश्यक प्रश्न उठबैत अछि।”

रचना कुर्सीपर सीधी भऽ बैसलीह।

“सम्बन्धित ठेकेदारक मृत्यु।”

अब कंपनीक भीतर कियो केवल भुगतान नहि, मृत्यु सेहो जानैत छल।

मगर प्रश्न फेर—

जानब अपराध नहि।

लुकाबयब कतेक अपराध?

आ की लुकाओल गेल?

निवेशक पुस्तिका?

आन्तरिक जोखिम?

सरकारी जाँचक तथ्य?

दुनू अलग।

रचना विधिक दलकें बजौलीह।

“हम ‘इतिहास-शोधन’ शब्द साहित्य मे कहि सकैत छी,” ओ कहलीह, “मुकदमामे नहि। हमरा देखय पड़त—ककर कर्तव्य छल सत्य बताबयब, ककरा सँ लुकाओल गेल, आ लुकाबयबाक विधिक परिणाम की।”

कानून रूपकसँ प्रभावित नहि होइत।

ई अच्छा बात छल।

रूपक मनुष्यकें सत्य दिस देखाबैत।

कानून पूछैत—कौन धारा?



सौरभक पूछताछ एहि बेर छोट छल।

रचना सामने जोखिम-टिप्पणी रखलीह।

“सम्बन्धित ठेकेदारक मृत्यु।”

सौरभ पढ़लक।

ओकर चेहरा बदलल नहि।

“ई नलिन बरुआक लेखा-जाँच नोट सँ आयल छल।”

“तखन अहाँ सत्यप्रकाशक नाम जानैत छलहुँ?”

“बादमे।”

“पहिल बेर कखन?”

“उत्तरायणक निवेश इतिहास साफ करैत समय।”

“साफ?”

सौरभ तुरन्त बुझि गेल जे शब्द गलत पड़ल।

“व्यवस्थित।”

“एस.के. प्रकरण निवेशक अभिलेखमे नहि खोलबाक निर्देश किएक?”

“क्योंकि ओ विवाद निपटि चुकल पुरान मामला छल।”

“मृत्यु निपटल?”

“मृत्यु जाँच दुर्घटना कहने छल।”

“तखन हटेबाक आवश्यकता?”

“नब निवेशककें बीस वर्ष पुरान विवादक संदर्भ देब किएक?”

रचना किछु क्षण चुप।

“जँ केवल विवाद छल, तखन ‘पुरान विवादक नाम दोबारा न आवय’ एतेक आग्रह किएक?”

“प्रतिष्ठा।”

“ककर?”

“उत्तरायणक। अम्बरक।”

“पुरान पैसा कहाँ सँ आयल—ई बताबयब प्रतिष्ठाक प्रश्न?”

सौरभक वकील बीचमे—

“अहाँ आरोप स्थापित मानि प्रश्न कऽ रहल छी।”

रचना मूड़ी डोलौलीह।

“ठीक।”

ओ प्रश्न बदललीह।

“उत्तरायणक प्रारम्भिक कोषमे समृद्धि ग्राम-वित्त सँ आयल परोक्ष रकम छल—अहाँ जानैत छलहुँ?”

“बादमे।”

“शशिभूषण लाल?”

“नाम पढ़ने।”

“देवांशु रक्षित?”

“जेलक बाद मीडिया सँ।”

“सत्यप्रकाश?”

“आन्तरिक फाइल सँ।”

“मृत्यु?”

“सरकारी अभिलेखमे दुर्घटना।”

“ओहि दुर्घटना पर पुनः प्रश्न उठत—एहन भय?”

सौरभ दीर्घ साँस लेलक।

“भय नहि। झंझट।”

एक शब्द।

रचना कलम रोकलीह।

“झंझट।”

“हाँ। निवेशक लोक साफ कहानी चाहैत।”

“साफ कहानी।”

सौरभ स्वयं सुनलक जे ओकर शब्द कतेक भारी अछि।

“मेरा मतलब—”

“हम बुझैत छी अहाँक मतलब। कागचमे जे कहब, स्पष्ट कहू।”

सौरभ चुप।

किछु देर बाद—

“हम चाहैत रही ब्राण्डक आरम्भिक इतिहासमे विवादित स्रोतक विस्तार नहि हो।”

“स्रोत वैध छल?”

“कागच पर।”

“अर्थात्?”

“किछु पुरान अभिलेख अस्पष्ट।”

“तखन निवेशककेँ नहि बताबयब?”

“ओ समय हमरा ई जोखिम-प्रबन्ध लगल।”

रचना एहि बेर लिखलीह—

“जोखिम-प्रबन्ध।”

धन धोयब प्रमाणित हो कि नहि, स्मृति सचमुच प्रबन्धित भेल छल।



गढ़ नारिकेलक विद्यालय राहत-शिविरमे तीस परिवार रहैत छल।

मृणालिनीकेँ पहिल राति नींद नहि आयल।

कक्षाक दीवालपर पहाड़ा लिखल।

नीचाँ चारि परिवारक बिछावन।

एक बच्चा रोइत।

एक बूढ़ी खाँसैत।

बाहर वर्षा।

ईशान राति बाँध निरीक्षणक स्वयंसेवक दल संग गेल छल।

मृणालिनी सत्यप्रकाशक फोटो बैगमे रखि सोयबाक प्रयास करैत छलीह।

अचानक बाहर हल्ला।

“साँप!”

लोक दौड़ल।

एक छोट गहुमन बरामदाक सूखल कोना खोजैत भीतर घुसि आयल छल।

कियो लाठी लऽ दौड़ल।

मृणालिनी चिल्लेलीह—

“बच्चा सभ पाछाँ!”

साँप दीवाल कात घुरल।

तखने बाहरी अन्हारसँ बिज्जी झपटि आयल।

ई बेर केवल उपस्थितिक सामना नहि।

दुनू देह एक क्षण जमीनपर उलझल।

फुँफकार।

बाल उड़ल।

लोक स्थिर।

बिज्जी साँपकेँ घुमबैत बरामदा सँ बाहर धकेलक।

गहुमन घास दिस भागल।

बिज्जी पाछाँ नहि गेल।

ओ लौटि दरबज्जा कात ठाढ़ भेल—हांफैत।

ओकर कंधापर छोट घाव।

रक्तक दू बून्द।

मृणालिनी धीरे एक कटोरी पानि दूर रखलीह।

कियो नजिक जाएबाक साहस नहि केलक।

बिज्जी पानि सूँघलक।

पिलक नहि।

फेर अन्हारमे चलि गेल।

एक बच्चा पूछलक—

“ई हमरा बचौलक?”

मृणालिनी कहलीह—

“हाँ।”

“ई जानैत छल?”

मृणालिनी उत्तर देबाक पहिने बहुत देर सोचलीह।

“शायद नहि। मगर ओकर स्वभाव रक्षा करब।”

ओ वाक्य कहिते हुनका सत्यप्रकाश मोन पड़ल।

मनुष्य सेहो कखनो सिद्धान्त पढ़ि कर्तव्य नहि करैत।

ओकर भीतरक स्वभाव ओकरा गलत बात रोकय बाध्य करैत।

आ कतेको बेर ओहि स्वभावक मूल्य देह दैत अछि।



भोर धरि कमला-बलानक पानि आर चढ़ल।

गढ़ नारिकेलक पुरान घरक पिछला हिस्सा डूबि गेल।

ईशान नावसँ घरक स्थिति देखबाक गेल।

मुख्य कमरा बचल।

आँगन नहि।

बिज्जीक बिल नहि।

सत्यप्रकाशक पुरान टेबुलक तल्ला पानीमे।

किछु कागज पहिनेसँ सुरक्षित स्थान पर छल, किछु नहि।

ईशान एक भीजल पेटी बाहर निकाललक।
माँक विवाहक फोटो।
बाबूक किछु रसीद।
धनेश्वरीक पोथी।
स्याही पसारि रहल छल।
ओ एक क्षण घबरायल।
फेर बुझलक—सरकारी जाँचक जरूरी कागच बहुत पहिने प्रतिलिपि बनि चुकल।
बचि रहल ई सब अदालतक प्रमाण नहि।
परिवारक स्मृति।
दुनू कागचक मूल्य अलग।
ईशान भीजल फोटो अलग करैत रहल।
एक फोटोमे सत्यप्रकाश युवा।
मृणालिनी हँसैत।
पाछाँ कमला-बलानक पुरान घाट।
जलधारा फोटोमे स्थिर।
असल नदी बाहर घर खा रहल।
स्मृति सेहो एक तरहक बाँध अछि।
कतेक दिन रोकत—कोनो गारण्टी नहि।



राजधानी नगरमे पुरान दुर्घटना-जाँचक वाहनक एक नब धागा बीमा अभिलेखसँ आयल।
हरा मालवाहक पर कबाड़ दावा नहि छल, मुदा दुर्घटना पछि एक निजी कार्यशालाक बिल छल।
तारीख—सत्यप्रकाशक मृत्यु सँ दू दिन बाद।
मरम्मत—

बायाँ अगिला भाग।

लैम्प।

धातुक पट्टी।

पहिया-सरेखन।

रचना कागच देखिते साँस रोकलीह।

वाहनक सम्भावित टक्कर-भाग।

कार्यशाला एखन बन्द।

मालिक मरल।

मगर ओकर बेटा पुरान बही राखने।

बिल संख्या मेल।

“दुर्घटना कहाँ भेल?” रचना पूछलीह।

बेटा कहलक—

“बाबू लिखैत नहि छलाह। केवल काज।”

“कियो वाहन आनने?”

“हम बच्चा रही।”

“हरिचरण?”

“नहि मोन।”

मरम्मतिक प्रकृति अकेले सत्यप्रकाशक दुर्घटना सिद्ध नहि करैत।

ट्रक कोनो अन्य ठाम ठोकर खा सकैत।

मगर समय, वाहन, हरिचरणक रातिक बुकिंग, रामअवतारक फोटो, आब मरम्मत।

संकेतक श्रृंखला मजबूत।

मयंक झा कहलनि—

“आब अनुमानक व्याप्ति घन भेल।”

रचना कहलीह—

“मगर प्रत्यक्ष अन्तिम बिन्दु नहि।”

अनिरुद्ध फोनपर चुप रहलाह।

फेर कहलक—

“कतेको मुकदमा प्रत्यक्ष बिना परोक्ष साक्ष्यसँ सिद्ध होइत।”

“हाँ।”

“प्रश्न ई—श्रृंखला पूर्ण अछि कि नहि।”

रचना बोर्ड देखलीह।

एक खाली स्थान एखनहुँ—

ककर निर्देश?

हरिचरण स्वयं?

दिगन्तक कोनो व्यक्ति?

देवांशु?

कियो आन?

वाहनक कड़ी हत्या-रीति बनबैत।

षड्यंत्रक शीर्ष नहि।



रचना देवांशु रक्षितकेँ फेर एक बेर पूछबाक निर्णय लेलनि।

पहाड़ी शहरमे एहि बेर वर्षा छल।

देवांशु खिड़की कात बैसल।

रचना मरम्मत-बिलक प्रति सामने रखलीह।

ओ पढ़लक।

चेहरा थिर।

“हरिचरण वाहन लऽ गेल।”

“कागच कहैत।”

“दू दिन बाद मरम्मति।”

“हाँ।”

“सत्यप्रकाशक मृत्यु बीचमे।”

“हाँ।”

देवांशु आँखि मूनलक।

“अहाँ चाहैत छी हम आब डरि कऽ किछु कहि दी।”

“हम चाहैत छी अहाँ जे जानैत छी से कहू।”

लम्बा मौन।

फेर देवांशु धीमे—

“हरिचरण कखनो-कखनो सीमा पार करैत।”

“अहाँ रोकेत?”

“कखनो।”

“सत्यप्रकाशक समय?”

“हम ओकरा ‘समझाबय’ कहने छलहुँ।”

रचनाक देह तनल।

“ककरा?”

“हरिचरणकें।”

“कखन?”

“मृत्यु सँ पहिले।”

“‘समझाबय’ मतलब?”

देवांशु कटु हँसल।

“आब एहि शब्दक अर्थ पर पूरा मुकदमा बनत।”

“अर्थ बताउ।”

“बोली रोकय। भुगतानक आपत्ति वापस लेय। दिगन्तक काज नहि बिगाड़य।”

“मारपीट?”

“हम नहि कहल।”

“गाड़ी?”

“नहि।”

“डराउ?”

देवांशु चुप।

“देवांशुजी।”

“हाँ। दबाव देबाक कहने रही।”

कमरा भारी।

“कानूनी?”

“नहि।”

“की तरीका?”

“ओकरा भरोसा पर छोड़ने रही।”

रचना प्रश्न धीरे पूछलीह—

“अहाँ जानैत छलहुँ हरिचरण हिंसा करैत?”

देवांशु आँखि हटौलक।

“हाँ।”

ई उत्तर वर्षोंक दूरी पार करि आयल।

“तखन जँ अहाँ हिंसक आदमीकेँ ककरो ‘दबाव’ देबाक कहैत छी—”

वकील बीचमे—

“कानूनी निष्कर्ष प्रश्नमे नहि।”

रचना रुकलीह।

ठीक।

“सत्यप्रकाशक मृत्यु सुनि की केलहुँ?”

देवांशु बहुत देर चुप।

“हरिचरणकेँ पूछलहुँ।”

“उत्तर?”

“कहलक—काम बिगड़ि गेल।”

रचना कलम रोकी।

“शब्दशः?”

“हाँ। ई शब्द मोन अछि।”

“‘काम बिगड़ि गेल’।”

“हाँ।”

“आगाँ?”

“हम पुछलहुँ—की केलह?”

“ओ?”

“कहलक—‘जेतबा जरूरी छल, ताहिसँ बेसी भऽ गेल।’”

देवांशुक आवाज टूटल।

रचनाक सामने बीस वर्षक दरबज्जा खुलल कि नया स्मृति-जाल—एखन निर्णय नहि।

“अहाँ पुलिसकेँ किएक नहि कहल?”

देवांशु ओकरा देखलक।

“क्योंकि हम स्वयं फँसैतहुँ।”

ई उत्तर निर्मम रूपेँ साफ।

“अहाँकँ लगैत छल हत्या भेल?”

“ओहि दिन सँ।”

“अहाँ चुप रहलहुँ?”

“हाँ।”

“बीस वर्ष?”

“हाँ।”

रचना बैठल रहलीह।

त्रासदीक एक रूप आखिर नाम पेलक—

मौन।



देवांशुक नब बयान तुरन्त सत्य नहि मानल गेल।

ओ दोषसिद्ध पुरान अपराधी।

अपने ऊपरक भार कम करबाक कारण हो सकैत।

हरिचरण मृत।

पुष्टि कठिन।

मगर बयान अन्य स्वतंत्र कड़ीसभसँ मेल खाइत।

हरिचरणक वाहन-खोज।

हरा टूक।

मरम्मत।

रामअवतार।

सत्यप्रकाशक भुगतान-विरोध।

दिगन्तक आर्थिक हित।

देवांशु द्वारा दबावक निर्देश स्वीकार।

“काम बिगड़ि गेल।”

“जेतबा जरूरी छल, ताहिसँ बेसी।”

अन्तिम दू वाक्य केवल देवांशुक कथन।

मगर श्रृंखला आब लगभग पूर्ण।

विधिक दल विभाजित।

कियो कहैत—देवांशुपर षड्यंत्रक आरोप सम्भव।

कियो—बीस वर्षक देरी, मृत मुख्य कर्ता, स्मृति-साक्ष्य; दोषसिद्धि कठिन।

रचना कहलीह—

“कठिन अलग बात। पर्याप्त प्रारम्भिक आधार अलग।”

वरिष्ठ अधिकारी पूछलक—

“अहाँ गिरफ्तार करब चाहैत छी?”

रचना चुप।

देवांशु वृद्ध।

भागबाक सम्भावना कम।

अधिकांश साक्ष्य दस्तावेजी।

ओ स्वयं सहयोग करैत।

“गिरफ्तारी जाँचक पुरस्कार नहि,” रचना कहलनि। “आवश्यकता देखब।”

अन्ततः समन, औपचारिक अभियुक्त-स्थिति, न्यायालय समक्ष उपस्थिति।

तुरन्त हथकड़ी नहि।

प्रेस क्रुद्ध।

“माफिया पर नरमी?”

रचना वक्तव्य नहि देलीह।

कानूनक प्रक्रिया टीवीक नाटकीय भूख सँ अलग।



मृणालिनीकेँ खबर ईशान सँ नहि, रचना सँ भेटल।

राहत-शिविरक एक खाली कक्षमे।

रचना कहलीह—

“देवांशु स्वीकार केने छथि जे ओ हरिचरणकेँ सत्यप्रकाश पर गैरकानूनी दबाव देबाक कहने छलाह।”

मृणालिनीक चेहरा सफेद।

“आ हत्या?”

“ओ कहैत छथि, हत्या आदेश नहि देने छलाह। हरिचरण बादमे कहने छल—काम बिगड़ि गेल।”

“तखन?”

“जाँच-दल मानैत अछि मृत्यु योजनाबद्ध दबाव-अभियानक परिणाम हो सकैत अछि। न्यायालय तय करत दायित्व कतेक।”

मृणालिनी बहुत देर चुप।

“बीस वर्ष बाद हमरा की भेटल?”

रचना उत्तर देबाक प्रयास नहि केलनि।

मृणालिनी स्वयं कहलनि—

“एक आदमी कहलक—दबाव देलहुँ। दोसर मरि गेल। जे गाड़ी चलौलक से मरल। जे दबाव देलक सेहो मरल। जे आदेशक ऊपर छल, कहैत हत्या नहि चाहने रही।”

ओ हँसलीह—आँसू बिना।

“न्याय सेहो बाढ़ जकाँ अछि? जखन पहुँचैत अछि तखन घरक आधा हिस्सा पहिनेसँ बहि चुकल होइत?”

रचना आँखि नीचाँ कऽ लेलीह।

एहि प्रश्नक कोनो विधिक उत्तर नहि।



नब जुआ-मामलामे मनोज नायक गिरफ्तार भेल।

रितेशक बयान।

रघुवीरक संपर्क।

म्यूल भर्तीक लक्ष्य।

आर्थिक लाभ।

प्रचार-जाल।

रात्रि कक्षक गतिविधि।

सौरभ-केशव बैठक।

पर्याप्त प्रारम्भिक श्रृंखला।

मनोजक घरक बाहर ओकर वृद्ध पिता पत्रकार सभपर चिल्लाइत छलाह—

“हमर बेटा हत्यारा नहि!”

कियो कहने नहि छल हत्यारा।

मगर कैमरा, पुलिस, गिरफ्तारी—परिवारक कानमे सभ आरोप एक होइत।

मनोजक माए बेहोश भेलीह।

रचना घटनास्थल पर नहि छलीह।

वीडियो बादमे देखलीह।

ओ बुझलीह—गिरफ्तारी न्यायिक आवश्यकता हो सकैत, मुदा परिवार पर ओकर प्रभाव अलग
न्याय-पुस्तकमे नहि लिखल।

अपराधीक सम्बन्धी स्वतः अपराधी नहि।

मगर समाजक दण्ड-व्यवस्था अनौपचारिक रूपेँ घर धरि पहुँचि जाइत।



सौरभक जमानत याचिका उच्च न्यायालयमे सुनवाई पर आयल।

अभियोजन कहलक—वित्तीय संरचना जटिल; प्रभावशाली अभियुक्त; साक्षी पर प्रभावक जोखिम।

बचाव कहलक—साक्ष्य दस्तावेजी; गिरफ्तारी दण्ड नहि; सौरभ सहयोगी; विदेश भागबाक कोनो प्रयास नहि।

न्यायालय कठोर प्रश्न पूछलक।

“अभियोजन—ककरा सँ हिरासतमे पूछताछ बाकी?”

“कुछ वित्तीय कड़ियाँ।”

“दस्तावेज जब्त?”

“हाँ।”

“अभियुक्तक प्रत्यक्ष धमकी?”

“नहि।”

“तखन निरन्तर कारावासक आवश्यकता?”

अन्ततः शर्तसहित जमानत।

पासपोर्ट जमा।

साक्षीसँ सम्पर्क निषिद्ध।

नियमित उपस्थिति।

मीडिया विभाजित—

“पैसा वाला बाहर।”

“अदालतक न्याय।”

रचना आदेश पढ़लीह।

ओ नाराज नहि भेलीह।

जमानत निर्दोषता नहि।

कारावास दोषसिद्धि नहि।

ई भेद कथा बार-बार कहैत रहल।

क्योंकि समाज बार-बार दुनू मिलबैत।



प्रदीपक जमानत सेहो बादमे स्वीकार भेल।

ओ घर जाएबाक दिन काराक फाटक पर बहुत देर ठाढ़ रहल।

पत्नी आयलीह।

तृषा नहि।

प्रदीप गाड़ीमे बैसल।

रास्ताभर मौन।

घर पहुँचि देखलक—ओकर कोठरी साफ, मुदा किछु सामान अलग पेटीमे।

पत्नी कहलीह—

“एखन अहाँ एतय रहू। मुदा मुकदमा चलत।”

“हम जानैत छी।”

“तृषा समय लेत।”

“हाँ।”

“काज?”

प्रदीप हँसल—दुखी।

“के देत?”

पत्नी कठोर नहि भेलीह।

“ई प्रश्न हमरा नहि।”

प्रदीप पहिल राति अपन घरमे सेहो जेल जकाँ सोयलक।

दरबज्जा खुला।

मगर भरोसा बन्द।

कतेको कारागार लोहेक नहि होइत।



ईशान बाद उतरला बाद घर साफ करैत एक भीजल पोथी भेटलक।

धनेश्वरीक।

पन्ना चिपकल।

बीचमे मैथिलीमे लिखल एक पुरान वाक्य—

“साँपक भय सँ घर छोड़ू नहि; मुदा साँप घरमे अछि ई मानबो नहि, जाबत देखी।”

ईशान पढ़ि हँसल आ रोअल एक साथ।

दादी शायद न्याय-दर्शन नहि पढ़ने छलीह।

मगर जीवन ओकरा प्रमाणक भाषा सिखौने छल।

मृणालिनी पाछाँ सँ पुछलीह—

“की भेटल?”

ईशान पन्ना देखौलक।

मृणालिनी पढ़लीह।

“ई तोहर दादी अपने लिखने छलीह।”

“कखन?”

“बहुत पहिले। एक बेर गाममे साँपक अफवाह पर आधा टोला राति बाहर सुतेने छल।”

दुनू हँसल।

त्रासदीक बीच हँसी अपराध नहि।

ई जीवित रहबाक प्रमाण।



रचना सिन्हा पुरान जाँचक अंतरिम प्रतिवेदन लिखलनि।

ओ भाषामे एक्को रूपक नहि।

न गोहि।

न बिज्जी।

न पानि।

केवल तथ्य।

सत्यप्रकाश कर्ण विवादित भुगतान रोकने।

दिगन्तक आर्थिक हित प्रभावित।

देवांशु रक्षित हरिचरण मंडलकेँ गैरकानूनी दबाव देबाक निर्देश देने—स्वीकारोक्ति।

हरिचरण हिंसक उपाय करैत छल—पूर्व अभिलेख।

मृत्यु-राति हरिचरणक लेल भारी वाहन बुकिंगक दस्तावेज।

संभावित वाहनक दुर्घटना पश्चात शीघ्र अगिला भाग मरम्मतक बिल।

संभावित चालकक हरिचरण सम्बन्धी पुरान फोटो-टिप्पणी।

देवांशुक नब कथन—हरिचरण “काम बिगड़ि गेल” आ “जेतबा जरूरी छल ताहिसँ बेसी” कहने।

सीमासभ सेहो स्पष्ट—

मुख्य कर्ता हरिचरण मृत।

संभावित चालक मृत।

मूल वाहन उपलब्ध नहि।

फॉरेन्सिक नमूना नहि।

देवांशुक कथनक अंतिम संवादक स्वतंत्र पुष्टि नहि।

बीस वर्षक स्मृति-क्षरण।

प्रतिवेदन निष्कर्ष—

“मृत्युकेँ मात्र सामान्य सड़क-दुर्घटना मानि बन्द कएल पूर्व निष्कर्ष उपलब्ध नव सामग्रीक प्रकाशमे असंतोषजनक अछि। योजनाबद्ध दबाव-अभियानक दौरान जानि-बुझि वाहन-टक्करक

परिकल्पना पर्याप्त रूपें समर्थित अछि; जीवित व्यक्तिसभक विशिष्ट आपराधिक दायित्व न्यायिक परीक्षणक विषय।”

रचना अन्तिम पाँति लिखि कलम रखलीह।
बीस वर्षक बाद राज्य पहिल बेर कहि रहल छल—
दुर्घटना कहि भूलब उचित नहि।
मगर राज्य एखनहुँ ई नहि कहि रहल—
हम पूरा जानैत छी।
यही ई कथाक त्रासदी छल।



मृणालिनी प्रतिवेदनक सार्वजनिक सार पढ़लीह।
बहुत देर बाद सत्यप्रकाशक फोटो सामने दीप जरेलनि।
ई पूजा नहि।
न विजय।
ओ धीरे कहलीह—
“तूँ झूठ नहि कहैत छलह।”
ई वाक्य सत्यप्रकाश लेल छल कि अपने लेल—ईशान नहि बुझि सकल।
मृणालिनी फेर कहलीह—
“मगर हमरा पूरा उत्तर एखनहुँ नहि भेटल।”
ईशान हुनकर कात बैसल।
“शायद कहियो नहि।”
मृणालिनी ओकर हाथ पकड़लीह।
“तखन जतबा भेटल, ओतबा राखब।”
घरक दीवाल पर बाढ़क दाग एखनहुँ।

आँगनक मिट्टी नव।

बिज्जीक पुरान बिल बहि गेल।

नब झाड़ीमे एक छोट सुराख देखाइत छल।

कियो नहि जानैत वैह बिज्जी कि दोसर।

रक्षकक नाम स्थायी होय जरूरी नहि।

पहरा स्थायी होय चाही।



नब जुआ-मामलाक आरोप-पत्र बनब शुरू भेल।

रचना टीमकेँ स्पष्ट निर्देश देलीह—

“पुरान सत्यप्रकाश मामला एहि आरोप-पत्रक नाटकीय प्रस्तावना नहि बनत।”

रोहित पुछलक—

“मगर इतिहास जुड़ल।”

“वित्तीय पथ जतेक प्रासंगिक, ओतेक।”

“कथा?”

“पुस्तक लिखब तखन।”

सभ हँसल।

रचना स्वयं सेहो।

फेर गंभीर—

“आरो एक बात। म्यूल् खाताधारक सभकेँ एक श्रेणीमे आरोपी नहि बनाउ। ज्ञान, लाभ,
पुनरावृत्ति, भूमिका—प्रत्येक अलग।”

सबीना खातून।

अभिषेक।

शैलेश।

रितेश।

सौमित्र।

सभ बैंक खाते “माध्यम” भेल।

सभ मनुष्य एक नहि।

न्याय वर्गीकरण चाहैत।

अपराधी जाल सरलीकरण चाहैत—“खाता चाही, आदमी कोनो हो।”

राज्य जँ ओही सरलीकरण करय तऽ अन्तर की?



आरो एक सूची बनल—

पीड़ित।

जुआमे हारल परिवार।

ठगीक मूल खाताधारक।

फ्रीज भेल वैध आयवला म्यूल परिवार।

कम्पनीक निर्दोष कर्मचारी।

मारपीटक शिकार रितेश।

मनोजक परिवार—कानूनी अर्थमे पीड़ित नहि, सामाजिक प्रभावक शिकार।

रचना एहि अन्तिम श्रेणी पर रुकलीह।

“आरोपीक परिवारकें पीड़ित सूचीमे?”

एक अधिकारी पुछलक।

“कानूनी प्रतिकर सूची नहि। सामाजिक प्रभाव अध्ययन।”

“किएक?”

ईशान, जे विशेष आँकड़ा सलाह लेल छल, कहलक—

“क्योंकि अपराधक लागत राज्यक मुकदमा-तालिकासँ बेसी पैघ।”

रचना मूड़ी डोलौलीह।

त्रासदी मापब कठिन।

मगर जे नहि मापी, से अस्तित्वहीन नहि।



राति राजधानी नगरमे रचना कार्यालय सँ निकललीह तऽ बरखा रुकि चुकल छल।

सड़कपर पानिक छोट-छोट पोखरि।

ओ थाकल छलीह।

फोन बजल।

अपूर्वा कश्यप।

“एन.आई.ए.क अलग मामला बंद नहि, मुदा अहाँक जुआ-जाँचसँ साझा कड़ी पर अंतिम विश्लेषण आयल।”

“की?”

“जे हम पहिने सोचने रही, वैह। साझा मध्यस्थ। उद्देश्य अलग।”

“अर्थात् कोनो राष्ट्रीय-सुरक्षा वित्तपोषण प्रमाण नहि?”

“एखन उपलब्ध सामग्रीमे नहि।”

रचना राहतक साँस लेलनि।

“धन्यवाद।”

अपूर्वा हँसलीह—

“लोक प्रायः चाहैत अछि एन.आई.ए. आयल मतलब पैघ साजिश।”

“एहि बेर नहि।”

“सही निष्कर्ष कखनो छोट लगैत।”

“मगर निर्दोष लोक लेल पैघ होइत।”

फोन कटि गेल।

कथा एक आसान सनसनी छोड़ि चुकल छल।

एहि सँ उपन्यास कम रोमांचक हो सकैत।

मगर न्याय अधिक सच्चा।



गढ़ नारिकेलक राति साफ छल।

बाढ़क पानि बहुत उतरि गेल।

मृणालिनी देहरी पर बैसल छलीह।

ईशान राजधानी नगर लौटि चुकल।

झाड़ीमे सरसराहट।

एक बिज्जी बाहर आयल।

एहि बेर ओ घायल नहि देखाइत।

शायद वही।

शायद दोसर।

ओ देहरीक सामने नहि ठहरल।

सीधा खेतक किनार दिस गेल।

दूर कमला-बलानक पानिमे किछु भारी चीज हलचल केलक।

गोहि?

माछ?

लकड़ी?

मृणालिनी उठलीह नहि।

ओ दूर सँ देखैत रहलीह।

बिज्जी किनार पर ठाढ़।

पानिक भीतर जे छल, ऊपर नहि आयल।

किछु क्षण बाद बिज्जी घासमे लुप्त।

मृणालिनी धीरे बजलीह—

“पहरा देबक अर्थ सभ रहस्य खोलब नहि।”

कतेको रहस्य खोलल जाएत।

कतेको आधा।

कतेको कहियो नहि।

मगर पहरा छोड़ि देब तऽ अन्हार स्वयं सत्य नहि बनि जाइत।

घरक भीतर सत्यप्रकाशक फोटो।

बाहर कमला-बलान।

बीचमे एक वृद्ध स्त्री।

आ किनार पर बिज्जीक नब पदचिह्न।

कथा एखन समाप्त नहि भेल छल।

क्योंकि नब अपराधक मुकदमा एखन न्यायालय धरि पहुँचेबाक छल।

आ न्यायालयमे कथा नहि, प्रमाण बोलत।



नब अपराध-मामलाक पहिल विस्तृत सुनवाई राजधानी नगरक विशेष न्यायालयमे शुरू भेल।

बाहर कैमरा।

भीतर लकड़ीक बेंच।

अभियुक्त सभ अलग-अलग पाँतिमे।

केशव मेहता।

मनोज नायक।

रघुवीर तांती।

सौरभ बर्धन जमानत पर उपस्थित।

प्रदीप महाजन सेहो।

किछु छोटे आरोपी, किछु खाताधारक, किछु एहन लोक जिनकर भूमिका एखनहुँ विवादित।

रचना सिन्हा साक्षी-पंक्ति कात बैसल छलीह।

ईशान अदालतक पक्षकार नहि।

ओ पाछाँ सार्वजनिक दीर्घामे बैसल।

मृणालिनी नहि आयलीह।

ओ कहने छलीह—

“नब अपराधक न्यायालयमे हम बाबूक उत्तर ताकय नहि जाएब।”

ईशान बुझल।

दू कथा जुड़ल जरूर।

मगर एककेँ दोसर पर चढ़ा देब न्याय नहि।



अभियोजन प्रारम्भिक प्रस्तुति करैत कहल—

ई मामला एक व्यक्ति द्वारा चलाओल एकल जुआ-साम्राज्यक नहि।

ई परत-दर-परत संगठनक मामला अछि।

वैध डिजिटल कम्पनी।

बाहरी विपणन समूह।

निजी दाँव-वृत्त।

म्यूल खाताधारक भर्ती।

वित्तीय समायोजन।

वास्तविक व्यापारक भीतर मिश्रित धन।

निवेशक संरचना।

मगर अभियोजन एहि सभकेँ एक्के अपराध मानि नहि चलत।

प्रत्येक अभियुक्तक ज्ञान, भूमिका आ आशय अलग सिद्ध करब पड़त।

बचाव पक्ष तुरन्त एहि वाक्य पकड़लक।

“यानी राज्य स्वयं मानैत अछि जे कोनो केन्द्रीय षड्यंत्र सिद्ध नहि।”

अभियोजक कहलक—

“राज्य कहैत अछि—षड्यंत्रक दायरा साक्ष्य अनुसार सिद्ध करब। अनुमान अनुसार नहि।”

न्यायाधीश नोट केलनि।

ई मुकदमा शुरूए सँ शब्दक युद्ध बनि रहल छल।

वाद।

जल्प।

वितण्डा।

मगर अदालतक काज केवल वाद-विवाद नहि।

कुन पक्ष प्रमाणक भार उठबैत—ई निर्णायक।



पहिल गवाह बैंक-अनुपालन अधिकारी छल।

ओ हजार पन्नाक अभिलेख लऽ आयल नहि।

केवल प्रमाणित सारणी, मूल अभिलेखक संदर्भ, खाता-श्रृंखला, रोक आदेशक प्रक्रिया।

अभियोजन पूछलक—

“की सभ खाताधारक अपराधी छल?”

“नहि।”

“की केवल असामान्य लेनदेन अपराध सिद्ध करैत?”

“नहि।”

“तखन अहाँ की सिद्ध करैत छी?”

“किछु खातामे एहन लेनदेन-पद्धति देखल गेल जे सामान्य आय-व्यवहारसँ मेल नहि खाइत।
बादक जाँचमे किछु खाता भर्ती-जालसँ जुड़ल।”

बचाव उठल—

“अर्थात् बैंक स्वयं नहि कहि सकैत छल अपराध।”

“बैंक अपराध तय नहि करैत।”

“धन्यवाद।”

बचाव मुस्कुरायल।

मानो एक बिन्दु जीतल।

न्यायाधीश पुछलनि—

“बैंकक चेतावनीक अर्थ केवल जाँच शुरू करबाक आधार?”

“जी।”

यही छोट प्रश्न पूरा हेत्वाभास काटि देलक।

असामान्य = अपराधी।

ई निष्कर्ष गलत।

असामान्य = जाँच योग्य।

ई सही।



दूसर गवाह सबीना खातून।

ओ अदालतमे काँपैत प्रवेश केलीह।

ओ अपराधी-पंक्तिमे नहि।

साक्षी।

अभियोजन पूछलक—

“अहाँ अपन खाता ककरा कहने उपयोग करऽ देलहुँ?”

सबीना संबंध बतौलीह।

“कतेक भेटैत छल?”

“महीना पाँच हजार।”

“अहाँ जानैत छलहुँ पैसा कहाँ सँ?”

“नहि।”

“शंका?”

सबीना चुप।

न्यायाधीश कहलीह—

“आराम सँ उत्तर दिअ।”

“पहिने नहि। बादमे लागल किछु गलत अछि।”

“किएक?”

“रकम बहुत बेसी घूमय लागल।”

“तखन रोकलहुँ?”

“नहि।”

“किएक?”

सबीना आँखि नीचाँ।

“बेटीक इलाज।”

बचाव उठल।

“अहाँ स्वीकार करैत छी जे शंका बादो पैसा लैत रहलहुँ?”

“हाँ।”

“अर्थात् लाभ?”

“हाँ।”

“तखन अपने निर्दोष पीड़ित नहि?”

अभियोजन विरोध।

न्यायाधीश रोकलनि—

“गवाहक कानूनी स्थिति अदालत तय करत। प्रश्न तथ्य तक सीमित।”

बचाव फेर—

“अहाँकें कियो धमकी देलक?”

“नहि।”

“कियो कहलक बैंकक नियम तोड़ू?”

“नहि।”

“तखन निर्णय अपने केलहुँ?”

सबीना बहुत देर बाद कहलीह—

“हाँ।”

ई उत्तर अदालतमे गूँजल नहि।

मगर ईशानक भीतर गूँजल।

सबीना पीड़ित सेहो।

निर्णय लेनेवाली सेहो।

दुनू एक संग।

न्याय वर्गीकरणक परीक्षा दे रहल छल।



अभिषेकक गवाही आर कठिन छल।

ओ स्वीकार केलक—

रितेश ओकरा कमीशनक प्रस्ताव देने।

पहिने वैध भुगतान-सहायता बुझल।

फेर शंका भेल।

फेरो एक अवधि तक जारी रखलक।

“किएक?”

“ऋण।”

“अहाँ रितेशकेँ दोसर खाताधारक देलहुँ?”

“एक मित्रक नाम सुझौने रही। बादमे पछतायल।”

“ओ खाता उपयोग भेल?”

“नहि।”

बचाव पूछलक—

“अभिषेकजी, पुलिस अहाँकेँ आरोपी बनाबऽ सकैत छल?”

“शायद।”

“तखन सरकारी गवाह बनि लाभ पेलहुँ?”

अभिषेक चेहरा लाल।

“हम सहयोग केलहुँ।”

“जवाब—लाभ?”

अभियोजन विरोध।

न्यायाधीश अनुमति देलनि—

“यदि कोई औपचारिक प्रतिरक्षा, समझौता वा अभियोजन-निर्णय अछि, कागच देखाउ।”

कागच देखाओल गेल।

अभिषेकक भूमिका सीमित; पर्याप्त आपराधिक आशयक प्रमाण नहि; साक्षी रूपेँ उपयोग।

बचाव कहलक—

“अर्थात् राज्य चुनैत अछि के आरोपी, के गवाह।”

अभियोजक उत्तर देलक—

“साक्ष्य अनुसार।”

न्यायाधीश बीचमे—

“एहि बिन्दु पर बहस अंतिम चरणमे। एखन तथ्य।”

न्यायालय बार-बार कथा केँ सीमामे लौटा रहल छल।



रितेश दासक गवाही दिनभरि चलल।

ओ पहिने अपन अपराध छुपेलक नहि।

“हम खाता जुटबैत रही।”

“कमीशन?”

“हाँ।”

“जानैत छलहुँ?”

“बादमे हाँ।”

“मनोज नायक?”

“लक्ष्य दैत।”

“कतेक?”

रितेश सामान्य मात्रा बतौलक, विस्तार नहि।

“कखन छोड़लहुँ?”

“जखन पुलिस शिकायत बढ़ल।”

“फेर मारपीट?”

“हाँ।”

“कियो आयल?”

“दू आदमी।”

“की कहल?”

“मनोज भैया नाराज छथि।”

बचाव उठल—

“ई कथन उन दू व्यक्तिक अछि। मनोज स्वयं नहि।”

“हाँ।”

“अर्थात् मनोजक आदेश अपने नहि सुनलहुँ।”

“नहि।”

“रघुवीर?”

“नाम बादमे जानल।”

“उदय बाबू?”

“मनोज एक बेर कहने छल।”

“पूरा नाम?”

“नहि।”

बचाव मुस्कुरायल।

“तखन अपने अदालतमे एक आधा नाम लऽ आयल छी।”

रितेश चुप।

न्यायाधीश पुछलनि—

“गवाह, जे स्वयं सुनल वैह कहू। अनुमान नहि।”

रितेश मूड़ी डोललक।

एहि मुकदमामे एक ही शिक्षा बार-बार लौटैत—

शब्दक सीमा जानू।



रघुवीर तांतीक विरुद्ध मारपीटक मामला अपेक्षाकृत सीधा छल।

फोन संपर्क।

दो युवकक बयान।

रितेशक चिकित्सा-अभिलेख।

रघुवीरक स्वीकार—ओ लोक पठौने।

मगर “मारबाक आदेश” पर विवाद।

बचाव कहलक—

“बात करबाक लेल पठाओल।”

अभियोजन—

“किस प्रसंगमे? ककरा? कतेक लोक? पूर्व धमकी? रितेशक भूमिका? बादक संवाद?”

न्यायाधीश कहलीह—

“एक शब्द अलग सँ नहि, परिस्थितिक समग्रता देखल जाएत।”

तर्कक पाँच अवयव जकाँ तथ्य जुड़ैत।

प्रतिज्ञा।

हेतु।

उदाहरण नहि—एतय परिस्थितिक संगति।

उपनय।

निगमन।

मगर न्यायालय संस्कृत सूत्र नहि पढ़ि रहल छल।

ओ केवल वही अनुशासन व्यवहारमे करैत।



प्रदीप महाजन साक्षी-बॉक्समे आयल तऽ अदालतक वातावरण बदलल।

क्योंकि ओ गवाह सेहो।

अभियुक्त सेहो।

ओ स्वयं पर आरोप स्वीकार करैत बयान देने छल, मगर अभियोजनक अनुसार सहयोगक कारण

अलग विचार अपेक्षित।

बचाव सभसँ तीखा ओहि पर।

“अहाँ गलत कागच बनौलहुँ?”

“हाँ।”

“झूठ लेखा?”

“हाँ।”

“अपने बचबाक लेल दोसर पर आरोप?”

“जे जानैत छी वैह कहैत।”

“केशव मेहता अहाँक वरिष्ठ?”

“अप्रत्यक्ष रूपेँ।”

“सौरभ बर्धन?”

“निवेशक-पक्ष।”

“कियो लिखित आदेश—अवैध जुआक पैसा धोउ?”

“एहन शब्द नहि।”

“धन्यवाद।”

बचाव पाछाँ हटि गेल।

अभियोजन पुनः प्रश्न—

“एहन शब्द नहि। तखन काज कोना समझैत छलहुँ?”

प्रदीप गला साफ केलक।

“रात्रि कक्षक निपटान मुख्य खातासँ अलग। वास्तविक सेवाक बिल जहाँ छल, ओतय किछु राशि समायोजित। पुरान स्रोत अलग राखबाक निर्देश।”

“ककर?”

“केशवक सन्देश। सौरभक जोखिम निर्देश। आलोक भसीनक वित्तीय योजना।”

“अहाँकेँ ई अवैध कखन बुझायल?”

“धीरे-धीरे।”

“फेर छोड़लहुँ नहि?”

“नहि।”

“किएक?”

प्रदीप अदालतक पाछाँ देखलक।

तृषा नहि आयल।

पत्नी सेहो नहि।

“पहिने नौकरी। फेर डर। फेर आदत।”

अदालत चुप।

ई वाक्य कानूनी बचाव नहि।

मानवीय स्वीकार।



बचाव प्रदीपक जेल डायरीक एक अंश प्रस्तुत करय चाहलक—

“समान नियम समान परिणाम नहि दैत।”

अभियोजन विरोध—

“व्यक्तिगत विचार, आरोपसँ अप्रासंगिक।”

न्यायाधीश सहमत।

डायरी बाहर।

प्रदीप विचलित नहि भेल।

ओ बुझि चुकल छल—अदालत ओकर सम्पूर्ण जीवनक समीक्षा नहि करैत।

विशिष्ट अपराधक।

मनुष्य न्यायालयक फाइलसँ पैघ होइत।

मगर दण्ड फाइलक सिद्ध हिस्सापर।

ई सीमा निराशाजनक सेहो।

आ आवश्यक सेहो।



केशव मेहताक बचाव रणनीति स्पष्ट छल—

रात्रि कक्ष मुख्य कम्पनीबाहिर।

नीचे स्तरक लोक अवैध गतिविधि बढ़ौलक।

केशव केवल ब्राण्ड बचाबय चाहैत।

अभियोजन ओकर सन्देश रखलक—

“रात्रिक निपटान अलग रहय।”

“मुख्य अनुप्रयोगक भीतर एहि प्रवाहकें मत आनू।”

“वास्तविक सेवा जे भेल वैह लिखू; बाकी समायोजन अलग।”

बचाव कहलक—

“नियामकीय जोखिम अलग राखब अपराध नहि।”

अभियोजन—

“यदि अलग रखल गतिविधि स्वयं अवैध निजी दाँव, म्यूल खाता आ छद्म वित्तीय समायोजन हो?”

बचाव—

“पहिने सिद्ध करू केशव ई सब जानैत छल।”

यही मुकदमाक केन्द्र।

ज्ञान।

केवल पद नहि।

केवल लाभ नहि।

केवल मौन नहि।

ज्ञान आ आशय।

रचना पाछाँ बैसल बुझि रहल छलीह—जाँचक महीनासभ अदालतमे दू शब्दमे सिमटि गेल।

“जानैत छल?”



सौरभ बर्धनक पक्ष आर जटिल।

ओ प्रत्यक्ष संचालन नहि करैत।

मगर उत्तरायणक धन।

जोखिम ई-पत्र।

पुरान स्रोत।

क्षितिज सम्पदा।

आलोक भसीनक योजना।

“मुख्य ब्राण्ड आ निधि दुनू अलग रहय।”

बचाव कहलक—

“कॉर्पोरेट पृथक्करण सामान्य।”

अभियोजन—

“सही। तँ एक्के वाक्य अपराध नहि। मुदा जखन पृथक्करणक विषय निजी दाँवक आय, म्यूल-सम्बद्ध भुगतान आ स्रोत-गोपन हो?”

फेर सन्दर्भ।

एक तथ्य अकेले निर्दोष हो सकैत।

अनेक तथ्य एक संग अर्थ बदलैत।

यही अनुमानक शक्ति।

आ खतरा।

हेत्वाभास सेहो एतहि जन्मैत।

कई निर्दोष तथ्य जोड़ि अपराधी कथा बनाओल जा सकैत।

तें अदालत प्रत्येक कड़ीक स्वतंत्र विश्वसनीयता जाँचि रहल छल।



उदयनाथ मिश्र अभियुक्त नहि बनल छल एखन।

ओ साक्षी रूपें आयल।

बैठकमे निजी दाँवक चर्चा स्वीकारने छल।

मगर म्यूल खाताक योजना नकारने।

अभियोजन पुछलक—

“द्वितीयक उपयोगकर्ता परिसंचरण’क प्रस्तुति अपने बनौलहुँ?”

“हाँ।”

“हारल उपयोगकर्ता पुनर्सक्रियता?”

“हाँ।”

“रेफरल?”

“हाँ।”

“भुगतान सुविधा?”

“हाँ।”

“की एहि प्रस्तुति बाद म्यूल भर्ती बढ़ल?”

“आँकड़ा कहैत होयत।”

“अहाँक उद्देश्य?”

“वैध ग्राहक वृद्धि।”

“जँ नीचे लोक ओकर उपयोग अपराधमे करलक?”

“हम जिम्मेदार नहि।”

बचाव पक्ष प्रसन्न।

अभियोजन फेर—

“अहाँ बैठकमे निजी दाँव चर्चा सुनलहुँ?”

“हाँ।”

“तखन प्रस्तुति ओहि बैठक बाद अपडेट भेल?”

उदयनाथ रुकल।

“हाँ।”

“तखन अहाँक पता छल निजी दाँव चलैत?”

“हाँ, मुदा कानूनी स्थिति अस्पष्ट बुझल।”

“कानूनी सलाह लेलहुँ?”

“कम्पनी लेल होयत।”

“अपने?”

“नहि।”

ई उत्तर ओकर नैतिक स्थिति कमजोर करैत।

कानूनी अपराध सिद्ध करैत नहि।

न्यायालय दुनू अलग लिखि रहल छल।



मुकदमा चलैत-चलैत बाहरक दुनिया अपन कथा बना रहल छल।

एक चैनल—

“जुआ सिंडिकेट का दार्शनिक बचाव।”

दोसर—

“गरीबों के खातों से अरबों?”

राशि अतिरंजित।

तेसर—

“एन.आई.ए. भी जाँच में।”

गलत सन्दर्भ।

अपूर्वा कश्यपकेँ आधिकारिक स्पष्टीकरण देब पड़ल—

“एहि मुकदमाक अभियोजन राज्य एजेंसिक अछि। एन.आई.ए.क अलग प्रकरणमे साझा वित्तीय मध्यस्थक सीमित सूचना-सहयोग भेल छल; वर्तमान आरोपकेँ राष्ट्रीय-सुरक्षा मामला कहब गलत।”

स्पष्टीकरण छोट समाचार।

सनसनी पैघ।

रचना टीवी देखब बन्द कऽ देलीह।

न्यायालयक गति धीमी।

बाजारक निर्णय तेज।

कतेको बेर समाज दोषसिद्धि पहिने करि दैत।

कतेको बेर दोषमुक्ति सेहो।

दुनू न्याय नहि।



गढ़ नारिकेलमे मृणालिनी घरक बाढ़-दाग पर नब चूना लगबैत मजदूर देखैत छलीह।

दीवाल आधा पुरान।

आधा नब।

सत्यप्रकाशक फोटो हटाओल गेल छल चूना लेल।

ओ मेजपर पड़ल।

मजदूर पुछलक—

“ई बाबूजी?”

“हाँ।”

“जिनकर केस फेर खुलल?”

मृणालिनी ठिठकलीह।

गाममे आब सभ जानैत।

“हाँ।”

मजदूर कहलक—

“अखबारमे पढ़ल। अपराधी पकड़ा गेल?”

मृणालिनी धीरे—

“पूरा नहि।”

“तखन केस खुलल किएक?”

ओ साधारण प्रश्न छल।

मृणालिनी सोचलीह।

“क्योंकि जे दुर्घटना कहल गेल छल, से एखन ओतबा सरल नहि लगैत।”

मजदूर मूड़ी डोलौलक।

शायद पूरा नहि बुझलक।

काम पर लौटि गेल।

मृणालिनी फोटो उठौलीह।

“देखलह?” ओ धीमे सत्यप्रकाशसँ कहलीह, “लोक पूरा उत्तर चाहैत अछि।”

दीवालक चूना सूखि रहल छल।

स्मृति पर नब रंग चढ़ैत।

मगर एहि बेर जानि-बुझि पुरान दागक स्थान चिन्हित राखल गेल।



पुरान सत्यप्रकाश-मामला न्यायालयमे प्रारम्भिक आरोप-विचार धरि पहुँचल।

देवांशु उपस्थित।

वृद्ध।

वकील संग।

अभियोजन कहलक—

देवांशु गैरकानूनी दबावक निर्देश स्वीकार करैत।

हरिचरणक हिंसक पृष्ठभूमि जानैत।

सत्यप्रकाशक आर्थिक आपत्ति दिगन्तक हित प्रभावित करैत।

हरिचरण द्वारा भारी वाहन जुटेबाक स्वतंत्र अभिलेख।

मृत्यु-दिवसक वाहन-संगति।

शीघ्र मरम्मति।

देवांशुक कथित बादक संवाद।

बचाव कहलक—

हत्या आदेश नहि।

वाहनक प्रत्यक्ष पहचान नहि।

मुख्य कर्ता मृत।

बीस वर्ष बाद स्मृति।

“काम बिगड़ि गेल”क स्वतंत्र पुष्टि नहि।

न्यायालय कहलक—

“एहि चरण पर दोषसिद्धि नहि, परीक्षण योग्य आधार देखल जाएत।”

देवांशु विरुद्ध गैरकानूनी दबाव आ सम्भावित आपराधिक षड्यंत्रक सीमित आरोप परीक्षण लेल स्वीकार।

हत्या हेतु अंतिम दायित्व पर अदालत सावधान।

मीडिया फेर—

“हत्या का केस चलेगा।”

आदेश अधिक सूक्ष्म।

शीर्षक कम।

मृणालिनी आदेशक प्रति पढ़लीह।

“ई जीत?”

ईशान पूछलक नहि।

मृणालिनी स्वयं कहलीह—

“नहि।”

फेर कुछ क्षण—

“मगर दरबज्जा बन्द नहि भेल।”

ई पर्याप्त हो सकैत।

शायद।



देवांशु न्यायालय बाहर सीढ़ी उतरैत लड़खड़ायल।

पत्रकार घेरि लेल।

“क्या आपने श्री कर्ण को मरवाया?”

“क्या आप स्वीकार करते हैं?”

“बीस साल क्यों चुप रहे?”

देवांशुक वकील रास्ता बनबैत।

देवांशु अचानक रुकल।

ओ कैमरा दिस नहि, जमीन दिस तकैत कहलक—

“हम दबाव देबाक कहने रही। ई सच अछि। जे भेल, ओकर भार हम सँ अलग नहि।”

वकील ओकरा खींचि लऽ गेल।

ई कानूनी स्वीकारोक्ति कतेक—अदालत तय करत।

मगर सार्वजनिक वाक्य बाहर फैलि गेल।

मृणालिनी टीवी पर सुनलीह।

ओ रोअलीह नहि।

सत्यप्रकाशक फोटो सामने बस एक पाँति कहलीह—

“बीस वर्ष।”

एतबे।



नब मुकदमामे निर्णायक डिजिटल विशेषज्ञक गवाही आयल।

ओ स्पष्ट कहलक—

“हम सामग्रीक सत्यापन करैत छी—कुन उपकरणसँ कखन संदेश, अभिलेख, फाइल प्राप्त भेल; सामग्री छेड़छाड़क संकेत; प्रमाण-श्रृंखला।”

अभियोजन पुछलक—

“अहाँ संदेशक अर्थ तय करैत?”

“नहि।”

“‘रात्रि बाहर’ अपराधक कोड?”

“हम नहि कहि सकैत।”

बचाव मुस्करायल।

“अर्थात् तकनीकी विशेषज्ञ सेहो नहि कहि सकैत।”

“हाँ।”

“तखन अभियोजन अर्थ कल्पना करैत?”

विशेषज्ञ शांत—

“अर्थ अदालत अन्य साक्ष्य संग देखत। हमर काम ई सिद्ध करब जे संदेश वास्तविक अभिलेखमे अछि।”

न्यायाधीश लिखलनि।

प्रमाणक श्रम-विभाजन।

तकनीकी विशेषज्ञ अस्तित्व।

गवाह संदर्भ।

वित्तीय विशेषज्ञ प्रवाह।

अदालत अर्थ।

कियो अकेले सम्पूर्ण सत्यक मालिक नहि।

समवाय न्यायमे सेहो।



मयंक झा वित्तीय विशेषज्ञ रूपेँ साक्षी आयलाह।

बचाव पहिल प्रश्न—

“अहाँ एहि केसक जाँचकर्ता नहि?”

“परामर्शदाता।”

“अपराध-विज्ञान विशेषज्ञ?”

“नहि।”

“तखन धनशोधन कहबाक योग्यता?”

“हम लेखा-प्रवाहक विश्लेषण करैत छी। कानूनी निष्कर्ष अदालत।”

“अच्छा।”

मयंक चार्ट समझेला—विस्तार बिना परिचालन तकनीक।

विभिन्न स्रोतक पैसा।

वास्तविक व्यापार।

ऋण।

पूर्व-भुगतान।

निवेशक आय।

“ई संरचना वैध सेहो हो सकैत?” बचाव।

“प्रत्येक चरण अलग सँ—हाँ।”

“तखन अपराध?”

“जँ स्रोत, उद्देश्य आ लेखांकनक सन्दर्भ वैध हो।”

“आ यदि नहि?”

“तखन वही चरण धनक वास्तविक स्रोत छिपाबऽ उपयोग हो सकैत।”

बचाव—

“अर्थात् अहाँ सम्भावना कहैत।”

मयंक—

“केवल संरचना देखला पर। मुदा एहि केसमा स्रोत-जुड़ाव, संदेश, बैठक आ खाताधारक बयान अतिरिक्त सामग्री अछि।”

ईशान पाछाँ बैसल मुस्कुरायल।

बाबूजीक भानसघर वाला आगि-धुआँ कथा ओकरा मोन पड़ल।

धुआँ अनुमान।

भानसघर जा देखू।

एतय न्यायालय भानसघरमे छल।



अदालत बाहर शैलेश मंडलक पत्नी आरती पहली बेर ओकरा भेटबाक आयलीह।

शैलेश जमानत पर बाहर छल, मुदा निलम्बित।

दुनू एक चाय-दोकानक पाछाँ बैसल।

“घर चलब?” शैलेश पूछलक।

आरती कहलीह—

“बच्चासँ भेटू। घर रहबाक निर्णय बादमे।”

शैलेश आँखि नीचाँ।

“हम बदलि जाएब।”

“अहाँ हार चुकाबय लेल हमरो झूठ बेचि देने छलहुँ।”

“जानैत छी।”

“नहि। एखन जानैत छी?”

शैलेश चुप।

आरती कहलीह—

“हमरा अहाँक जेल जाएब पर दुख भेल। बाहर आबि गेलहुँ तऽ डर।”

“क्यों?”

“फेर वही आदमी घरमे आएत कि नहि?”

शैलेशक गला भरि आयल।

“हम वही नहि।”

आरती उत्तर नहि देलीह।

परिवर्तनक दावा आसान।

विश्वासक प्रमाण समय।

न्यायालय दोष तय करत।

घर पुनरावृत्ति देखत।



रितेश दास सेहो सरकारी संरक्षण मे गवाह बनल बाद गाम लौटल।

मगर रोजगार नहि।

लोक कहैत—

“पुलिसक आदमी।”

पुरान साथी कहैत—

“गद्दर।”

परिवार कहैत—

“शहर मत जा।”

ओ एक छोट मोबाइल-मरम्मत दोकान खोललक।

पहिल महीना ग्राहक कम।

एक दिन अभिषेक सामने आयल।

दुनू बहुत देर चुप।

रितेश कहलक—

“माफ कर।”

अभिषेक—

“ककरा?”

“तोरा।”

“हमर बहिनक साल घुरत?”

“नहि।”

“बैंकक दाग?”

“नहि।”

रितेश सिर झुका लेलक।

अभिषेक बहुत देर बाद कहलक—

“माफ करब शायद बादमे। एखन केवल एतबा—फेर ककरो खाता मत बेचिह।”

रितेश हँसल नहि।

“नहि।”

अभिषेक चलि गेल।

क्षमा सेहो न्यायालयक आदेश नहि।

पीड़ितक अधिकार।



सौरभ बर्धनक जमानत अवधि मे एक दिन उत्तरायण निधि स्वयं घोषणा केलक—

स्वतन्त्र बाहरी समीक्षा।

पुरान निवेश स्रोत सार्वजनिक सार।

अम्बर निवेश इतिहास संशोधित।

जो जोखिम-नोट पहिले हटाओल गेल, ओ अभिलेखीय परिशिष्टमे।

किछु लोक कहलक—“छवि बचाबय।”

किछु—“सुधार।”

रचना कहलीह—

“दुनू हो सकैत।”

संस्था प्रायश्चित्त करैत कि जोखिम-प्रबन्ध—मन पढ़ब कठिन।

मगर सार्वजनिक अभिलेख सुधरल।

सत्यप्रकाशक आपत्ति नब पीढ़ीक फाइलमे दर्ज भेल।

मृणालिनी ई सूचना सुनलीह।

“ओकर नाम?”

ईशान कहलक—

“हाँ।”

“ठीक।”

बस।

बीस वर्ष बाद एक मृत आदमीक छोट आपत्ति कॉर्पोरेट इतिहासमे फेर लौटली।

कतेको न्याय दण्ड नहि।

स्मृति पुनर्स्थापन।



न्यायालयक एक दिन न्यायाधीश बचाव आ अभियोजन दुनूकेँ रोकि कहलीह—

“एहि मुकदमामे बार-बार ‘पूरा जाल’ शब्द उपयोग भऽ रहल अछि। अदालत स्मरण कराबैत अछि—व्यवस्था अमूर्त हो सकैत, दायित्व व्यक्ति वा विधिक संस्था पर प्रमाणसँ तय होयत। सामूहिक वातावरण व्यक्तिगत अपराधक विकल्प नहि।”

रचना एहि वाक्यक प्रति माँगलीह।

ई उपन्यासक हृदय जकाँ छल।

समवाय महत्त्वपूर्ण।

मगर समवाय कहि व्यक्ति-दोष घोलि नहि सकैत।

आ व्यक्ति खोजि समवाय भूलि सेहो नहि।

दुनूक बीच न्याय।



एक साँझ ईशान अनिरुद्ध चौधरीक घर गेल।

अनिरुद्ध बहुत बूढ़ भऽ चुकल छलाह।

टेबलपर पुरान फाइल नहि।

केवल चाय।

“आब कथा कहाँ?” अनिरुद्ध पूछलनि।

“अदालत।”

“ओतय कथा कम पड़ैत।”

“हाँ।”

“बाबू?”

ईशान दीर्घ साँस।

“देवांशु पर परीक्षण चलत।”

“सन्तोष?”

“नहि।”

“क्रोध?”

“पहिने जतेक नहि।”

“तखन?”

ईशान खिड़की बाहर देखलक।

“हम बुझि रहल छी जे न्याय हर प्रश्नक उत्तर नहि।”

अनिरुद्ध मुस्कुरायल।

“ई बुझब दुखद होइत।”

“तखन न्याय कम भेल?”

“नहि। मनुष्यक अपेक्षा पैघ छल।”

ईशान चुप।

अनिरुद्ध कहलक—

“न्याय सत्यक अनुशासन अछि, सर्वज्ञता नहि।”

ईशान वाक्य मोनमे रखलक।

“दादी कहैतथि—किनार।”

“दुनू एक्के बात हो सकैत।”



गढ़ नारिकेलमे बिज्जी फेर देखायल।

एहि बेर दूटा।

एक पैघ।

एक छोट।

मृणालिनी बरामदासँ देखलीह।

छोट बिज्जी पैघक पाछाँ-पाछाँ।
कखनो घासमे गायब।
फेर बाहर।
दूर पानिक कात गोहिक एक लम्बा निशान कीचड़मे।
मृणालिनी उठि नजिक नहि गेलीह।
ओ केवल देखलीह—
एक पीढ़ी पाछाँ।
एक आगाँ।
रक्षक एकल जीव नहि।
सीखल स्वभाव सेहो।
ओ धीमे कहलीह—
“पहरा सिखाओल जाइत अछि।”
कमला-बलानक पानि थिर छल।
मगर थिर पानि निर्दोष हो—एहन नियम नहि।
आ हिलैत पानि अपराधी—एहन सेहो नहि।
देखू।
ताकू।
जाँचू।
फेर कहू।
न कम।
न बेसी।
कथा अदालतमे आगाँ बढ़ि रहल छल।
आ किनार पर बिज्जीक दू जोड़ी पदचिह्न बनि रहल छल।



विशेष न्यायालयमे मुकदमा महीना-दर-महीना बढ़ैत रहल।

जे बाहरसँ एक घटना लगैत छल, भीतर सैकड़ों छोट प्रश्नमे टूटि गेल।

कौन खाता कखन खुलल?

ककर मोबाइल सँ निर्देश आयल?

कौन सन्देश केवल व्यापारिक भाषा छल?

कौन सन्देश संदर्भ जोड़िते अपराधक आशय देखबैत?

कौन खाताधारक जानैत छल?

कौन केवल लालचमे आँखि मूनि लेने छल?

कौन धोखा खायल?

कौन धोखा देलक?

न्यायाधीश बार-बार एके बात कहैत—

“सामूहिक वातावरणसँ व्यक्तिगत दोष स्वतः सिद्ध नहि होयत।”

ई वाक्य अभियोजनकेँ सेहो रोकैत।

बचावकेँ सेहो।

अभियोजन “पूरा जाल” कहि सबकेँ एक रंग नहि दे सकैत।

बचाव “हम केवल एक पुर्जा” कहि जिम्मेदारी शून्य नहि करि सकैत।

समवाय अछि।

मगर समवायमे प्रत्येक अंशक स्वभाव अलग।



मनोज नायकक प्रतिपरीक्षणक दिन अदालत भरल छल।

ओ स्वयं साक्षी बनबाक निर्णय नहि लेने छल।

मगर ओकर पूर्व कथन, फोन-अभिलेख, रितेशक गवाही, रघुवीरक बयान आ लोकविस्तारक दस्तावेज अदालतमे छल।

बचाव कहलक—

“रितेश स्वयं कमीशन लैत छल। ओ अपन दायित्व घटेबाक लेल मनोजक नाम लैत अछि।”

अभियोजन—

“तखन रितेशपर हमला किएक?”

“मनोज हमला आदेश नहि देने।”

“रघुवीरकेँ फोन?”

“सुरक्षा-काज।”

“हमला सँ दू घंटा पहिने?”

“संयोग।”

न्यायाधीश पूछलीह—

“रघुवीर स्वयं मानैत अछि मनोज रितेशसँ ‘बात’ करबाक कहने छल?”

“हाँ, मुदा हिंसा नहि।”

“एहि ‘बात’क संदर्भ?”

मौन।

कतेको बेर छल झूठ शब्दमे नहि।

संदर्भ हटेबामे होइत।



रघुवीरक दू सहयोगी अलग मामला स्वीकार कऽ हलुक दण्डक आवेदन केलनि।

हुनकर बयान मनोजक भूमिका अधिक स्पष्ट करैत छल।

एक कहलक—

“रघुवीर कहने छल—ऊपरवला बहुत नाराज अछि, लड़का समझि जाए।”

“ऊपरवला के?”

“मनोज।”

“मनोजक नाम रघुवीर कहने?”

“हाँ।”

“मारबाक?”

“नहि। मुदा हम बुझने रही डरबाबय।”

बचाव तुरन्त—

“अर्थात् अपने बुझलहुँ।”

“हाँ।”

“मनोज नहि कहल।”

“हम मनोजसँ बात नहि केने रही।”

फेर सीमा।

मगर परिस्थिति जुड़ैत रहल।

न्यायालयक नोटमे “आदेश” शब्द नहि।

“प्रेरित दबाव”क प्रश्न।

भाषा महीन।

दायित्वक वजन भारी।



सौरभ बर्धनक पक्ष अन्तिम बहसमे कहलक—

“निवेशक जोखिम-प्रबन्ध अपराध नहि। वैध कम्पनी, वैध निधि, वैध व्यापार। नीचे स्तरपर कियो निजी जुआ चला देलक तँ शीर्ष निवेशक स्वतः अपराधी नहि।”

अभियोजन सहमत भेल—

“स्वतः नहि।”

बचाव एक क्षण चकित।

अभियोजक आगाँ कहलक—

“तैं हम पद नहि, कागच देखबैत छी।”

बैठक।

रात्रि गतिविधिक जानकारी।

“मुख्य ब्राण्ड बचाउ” निर्देश।

पुरान स्रोत अलग रखबाक सन्देश।

आलोक भसीनक सहायक ऋण-विधि।

म्यूल-सम्बद्ध धन सँ ऋण-पूर्वभुगतान।

सौरभक उत्तर—“मुख्य ब्राण्ड आ निधि दुनू अलग रहय।”

“प्रश्न ई नहि जे ओ निदेशक छल। प्रश्न ई जे एहि विशिष्ट प्रवाह विषय ओकर ज्ञान कतेक छल,
आ ओ ज्ञानक बाद की केलक।”

बचाव कहलक—

“अलगाव पारदर्शी लेखांकन सेहो हो सकैत।”

अभियोजन—

“तखन वास्तविक स्रोत उल्लेख किएक नहि?”

“व्यापारिक गोपनीयता।”

“जुआ-जालक पैसा व्यापारिक गोपनीयता?”

न्यायाधीश रोकलनि—

“निष्कर्ष हम करब।”

अदालतमे शब्द धीरे-धीरे थाकि रहल छल।

आब कागच बोलेबाक समय।



केशव मेहताक अन्तिम बहस अधिक व्यक्तिगत भेल।

ओकर वकील कहलक—

“केशवक अपराध, यदि किछु, अनुपालन-असफलता हो सकैत। ओ स्वयं दाँव नहि चलौलक, खाता भर्ती नहि केलक, मारपीट नहि करौलक।”

अभियोजन—

“ओ वित्तीय विभाजन निर्देशित केलक।”

“ब्राण्ड-जोखिम।”

“वास्तविक सेवा लिखू, बाकी समायोजन अलग—ई ककर भाषा?”

“लेखा।”

“गलत स्रोत लुकाबयवला लेखा।”

“ई अभियोजनक व्याख्या।”

“तखन प्रदीप महाजनक बयान?”

“सह-अभियुक्त अपन बचाव लेल।”

“डिजिटल सन्देश?”

“संदर्भ अस्पष्ट।”

“बैठक?”

“व्यापारिक।”

एक-एक कड़ी पर हमला।

वितण्डा?

नहि।

बचावक अधिकार।

कियो अभियोजनक कथा स्वीकार करबाक लेल अदालतमे नहि अबैत।

न्याय मजबूत तखन होइत जे विरोध सहि सकय।



प्रदीप महाजनक वकील अन्तिम बहसमे दण्ड-निर्धारणक भविष्य दिस देखैत छल।

“ओ अपराध स्वीकारने अछि। सहयोग केने अछि। दस्तावेज उपलब्ध करौलक। स्वयं आत्मसमर्पण केलक। गरीब अभियुक्तसभक विधिक सहायता केलक।”

अभियोजन विरोध नहि केलक, मुदा कहलक—

“पछतावा पूर्व अपराध मेटबैत नहि।”

न्यायाधीश—

“दोष आ दण्ड अलग चरण।”

प्रदीप पाछाँ बैसल सुनैत रहल।

ओ जानैत छल—तृष्णा ओकरा एखनहुँ पूरा विश्वास नहि करैत।

यदि अदालत हलुक दण्ड देत, घरक दण्ड समाप्त नहि।

यदि कठोर दण्ड देत, अपराध अधिक सत्य नहि होयत।

संख्या न्यायक पूरा अर्थ नहि।

मगर राज्यकेँ अन्ततः संख्या देब पड़त—

वर्ष।

जुर्माना।

प्रतिपूर्ति।

शर्त।

यही संस्थागत दण्डक भाषा।



पुरान सत्यप्रकाश-मामलामे देवांशुक परीक्षण अलग न्यायालयमे धीमा चलैत।

मृणालिनी एक दिन गवाही लेल बजाओल गेलीह।

ओ केवल जे स्वयं जानैत छलीह वैह कहलीह।

सत्यप्रकाश घरमे दबावक बात कहने छलाह।

छह प्रतिशत।

खेल-प्रचार भुगतान।

“कियो नाम?”

“किछु नाम कहने छलाह, मुदा बीस वर्ष बाद हम शब्दशः निश्चित नहि।”

अभियोजन ओकरा सहायता करऽ चाहलक—

“देवांशु?”

मृणालिनी चुप।

“मोन पड़ैत अछि?”

“नाम सुनने छलहुँ। मुदा सत्यप्रकाश ओही प्रसंगमे कहने छलाह कि बादमे कागच पढ़ि हम जोड़ने छी—ई अलग नहि करि पबैत छी।”

न्यायाधीश हुनका देखलीह।

“जतबा निश्चित, ओतबे कहू।”

मृणालिनी मूडी डोलौलीह।

ईशान पाछाँ बैसल।

माँ स्वयं अपन स्मृतिक सीमा बचा रहल छलीह।

बीस वर्षक दुःख ओकरा झूठी निश्चितता नहि देलक।

ईशानक आँखि भरि आयल।

दादीक घरक शिक्षा अदालतक भीतर पहुँचल छल।



देवांशुक वकील पुछलक—

“अहाँ अपन पति मृत्यु बाद देवांशु रक्षित पर शंका केने छलीह?”

“पहिने ककरो निश्चित नहि।”

“बादमे?”

“समाचार, पुलिस, कागच सभसँ नाम सुनल।”

“तखन अहाँक आजुक स्मृति प्रभावित हो सकैत?”

“हाँ।”

अदालतमे हलचल।

बचावक पक्ष मजबूत?

शायद।

मगर मृणालिनी झूठ कहि अभियोजनकेँ बचाबय नहि चाहलीह।

बाहर ईशान पूछलक—

“माँ, अहाँ ‘हाँ’ किएक कहलहुँ?”

मृणालिनी थाकल आँखिसँ ओकरा देखलीह।

“क्योंकि हो सकैत।”

“ओ वकील उपयोग करत।”

“करय।”

“बाबू?”

“तोहर बाबू लेल झूठ बाजब?”

ईशान चुप।

मृणालिनी धीरे कहलीह—

“सत्यप्रकाशक न्याय चाहैत छी, सत्यप्रकाशक नाम पर असत्य नहि।”

ई वाक्य ईशान जीवन भरि नहि भूलत।



विशेष न्यायालयमे नब जुआ-मामलाक निर्णयक तारीख घोषित भेल।

तीन सप्ताह बाद।

बाहर अटकल।

कौन दोषी?

कौन मुक्त?

कतेक दण्ड?

ईशान एहि बीच गढ़ नारिकेल चलि गेल।

ओ निर्णयक पहिने शहरक आवाज सँ दूर रहय चाहैत।

मृणालिनी आँगनमे नब तुलसी रोपने छलीह।

बाढ़क दाग आधा मेटि गेल।

“डर लगैत?” मृणालिनी पूछलीह।

“निर्णयसँ?”

“हाँ।”

“हाँ।”

“किएक? तूँ आरोपी नहि।”

ईशान हँसल।

“कतेको वर्षक काज एक आदेशमे छोट भऽ जाएत।”

“जँ अदालत अलग देखय?”

“तखन?”

“तखन अदालतक कारण पढ़िह।”

ईशान माएक चेहरा देखलक।

ओ स्त्री जे बीस वर्ष उत्तर चाहैत रहल, आब बेटाकेँ परिणाम नहि, कारण पढ़बाक कहि रहल छल।

न्याय शायद एतहि बदलैत।

निर्णय सँ कारण दिस।



निर्णयक दिन अदालतमे स्थान कम पड़ल।

न्यायाधीश आरम्भे कहलीह—

“ई आदेश प्रत्येक अभियुक्त विरुद्ध पृथक साक्ष्यक मूल्यांकन पर आधारित अछि। समाजक नैतिक आक्रोश विधिक प्रमाणक विकल्प नहि।”

ईशान पाछाँ बैसल साँस रोकि रहल।

पहिले रघुवीर तांती।

रितेशपर दबाव लेल लोक पठेनाइ, परिस्थिति, फोन, सहयोगीक बयान—दोष सिद्ध।

मारपीटक विशिष्ट सीमा अनुसार दण्ड।

मनोज नायक।

म्यूल भर्ती-जाल, लक्ष्य, रितेशपर दबाव, लोकविस्तार संरचना—किछु आरोप सिद्ध।

मगर प्रत्येक वित्तीय परतक ज्ञान सिद्ध नहि।

अर्थात् ओ पूरा जालक मालिक नहि घोषित।

केशव मेहता।

वित्तीय समायोजनक ज्ञान, रात्रि निपटानक पृथक्करण, गलत स्रोतक लेखांकन सहायता—मुख्य वित्तीय अपराधक किछु आरोप सिद्ध।

किछु व्यापक षड्यंत्र आरोपमे संदेहक लाभ।

प्रदीप महाजन।

स्वीकृत भूमिका, दस्तावेजी समर्थन—दोष सिद्ध; सहयोग, आत्मसमर्पण, पछतावा दण्ड चरणमे विचारणीय।

सौरभ बर्धन।

अदालत बहुत देर पढ़लीह।

निवेशक पद अकेले पर्याप्त नहि।

मगर बैठक, ई-पत्र, सहायक ऋण-व्यवस्था, स्रोत-गोपन निर्देश आ आलोक भसीनक संवाद—
किछु वित्तीय अपराधमे ज्ञान आ सहायता सिद्ध।

मगर अभियोजन जे पूरा निजी जुआ संचालनक प्रत्यक्ष नियंत्रण आरोपने छल, से पूर्ण सिद्ध
नहि।

उदयनाथ मिश्र—आरोपी नहि; आदेशमे टिप्पणी, नैतिक लापरवाही सम्भव, मगर एहि मुकदमामे
अपराध सिद्ध करबाक पर्याप्त आधार प्रस्तुत नहि।

किछु छोटे खाताधारक मुक्त।

किछु जानि-बुझि बार-बार खाता बेचने लोक दोषी।

सबीना साक्षी; ओकर विरुद्ध अलग सीमित प्रशासनिक/बैंक कार्रवाई, अपराधी षड्यंत्र नहि।

अभिषेक—दोषमुक्त स्थिति यथावत।

अदालत पूरा गोहि नहि मारलक।

ओ अलग-अलग देहक अलग अपराध नापलक।



बाहर मीडिया पहिल पाँच मिनटमे शीर्षक बना देलक—

“सौरभ-केशव दोषी।”

“जुआ जाल पर अदालत का हथौड़ा।”

“कई आरोपी बरी।”

कियो आदेशक सूक्ष्मता नहि पढ़ने छल एखन।

ईशान बाहर नहि रुकल।

ओ सीधा अनिरुद्धक घर गेल।

अनिरुद्ध रेडियो बन्द केलनि।

“की भेल?”

ईशान संक्षेप कहलक।

“सन्तोष?”

ईशान सोचलक।

“किछु दोष सिद्ध। किछु नहि।”

“यही न्यायालयक काम।”

“मगर जाल पूरा?”

“अदालत जालक दर्शन लिखय नहि बैसल।”

“तखन?”

अनिरुद्ध चाय ढारैत कहलक—

“समाजकेँ संरचना बदलय पड़त। अदालत जे व्यक्ति दोषी सिद्ध, ओकरा दण्ड देत।”

“दुनू अलग?”

“हँ। कानून सभ काज अकेले नहि करैत।”

ईशान दीर्घ साँस लेलक।

ओ वर्षसभ सँ एक संस्था सँ बहुत बेसी अपेक्षा करैत रहल।



दण्ड-निर्धारणक दिन प्रदीपक बेटी तृषा आयली।

पाछाँ बैसल।

प्रदीप ओकरा देखलक।

किछु कहल नहि।

अदालत सहयोग, आत्मसमर्पण, अपराधक अवधि, भूमिका, हानि—सभ देखलक।

दण्ड सुनाओल गेल।

न बहुत हलुक।

न अधिकतम।

पहिले बिताओल न्यायिक हिरासतक समायोजन।

आर्थिक दण्ड।

किछु प्रतिपूर्ति-आदेश।

प्रदीप सिर झुका लेलक।

तृषा बाहर ओकरा एक क्षण भेटलीह।

“बाबू।”

“हँ।”

“आब?”

“जे अदालत कहलक।”

“फेर जेल?”

“किछु समय।”

तृषा आँखि भरि कऽ कहलीह—

“हम प्रतीक्षा करब।”

प्रदीप पहिल बेर ओकर हाथ पकड़बाक प्रयास नहि केलक।

केवल मूडी डोलौलक।

विश्वास पर अधिकार नहि।

कमायल जाइत।

धीरे।



केशवक दण्ड सुनैत विहान सारंग अदालतमे नहि छल।

ओ अम्बर कार्यालयमे कर्मचारीसभक संग सार्वजनिक सुधार-योजना जारी करैत।

निजी दाँव-संबंधित सभ बाहरी अनुबंध समाप्त।

स्वतन्त्र अनुपालन समिति।

म्यूल-खाता जोखिम प्रशिक्षण।

उपयोगकर्ता नुकसान-सीमा आ सहायता-व्यवस्था।

किछु कर्मचारी कहैत—बहुत देर।

सही।

किछु कहैत—नाटक।

सम्भव।

किछु सुधार भय सँ शुरू होइत।

किछु अपराध-बोध सँ।

किछु प्रतिष्ठा बचाबय।

परिणामक मूल्यांकन समय करत।

न्याय केवल मनक शुद्धता मापि नहि सकैत।

व्यवस्था बदलल कि नहि—ई सेहो देखय पड़त।



मनोजक माए दण्ड सुनि रोइत कहलीह—

“हमर बेटा खराब संगतमे पड़ल।”

रचना टीवी पर सुनलीह।

ओ सोचलीह—

खराब संगत।

लोभ।

संरचना।

निर्णय।

सब शब्द अपराधक जिम्मेदारी अलग-अलग ठाम धकेलैत।

मनोज बच्चा नहि छल।

ओ निर्णय लेने छल।

मगर निर्णय अकेले निर्वातमे नहि।

जाल अवसर बनौलक।

पैसा इनाम।

ऊपरवला मौन।

नीचेवला दबाव।

न्यायालय व्यक्तिक हिस्सा नापलक।

समाजकेँ बाकी हिस्सा देखबाक अछि।



पुरान सत्यप्रकाश-मामलाक निर्णय एखन बाकी छल।

ईशानक भीतर विचित्र स्थिति।

नब अपराधक न्यायालय निर्णय दे चुकल।

बाबूक कथा एखन खुली।

मृणालिनी कहलीह—

“दुनूकेँ जोड़ि मत।”

“जुड़ल तऽ अछि।”

“पाइ जुड़ल। हमर दुख नहि।”

ईशान बुझलक।

सत्यप्रकाशक मृत्यु केशव-सौरभक दोषसिद्धिसँ सिद्ध नहि होइत।

ओहि गलतीसँ बचबाक लेल पूरा उपन्यास मेहनत केने छल।



देवांशु-मामलाक अन्तिम बहसमे अभियोजन कहलक—

“हम सीधे हत्या-आदेशक लिखित प्रमाण प्रस्तुत नहि करैत। हमर मामला परिस्थितिजन्य श्रृंखला पर अछि।”

सत्यप्रकाशक आपत्ति।

दिगन्तक आर्थिक प्रयोजन।

देवांशुक गैरकानूनी दबाव निर्देश स्वीकार।

हरिचरणक हिंसक पृष्ठभूमि।

भारी वाहनक बुकिंग।

मृत्यु-रातिक समय।

शीघ्र मरम्मत।

रामअवतारक फोटो-टिप्पणी।

देवांशुक कथन—हरिचरण बादमे ‘काम बिगड़ि गेल’ कहने।

बचाव एक-एक कड़ी पर प्रश्न उठौलक।

“वाहन वही—प्रत्यक्ष सिद्ध नहि।”

“चालक बयान पूर्ण नहि।”

“हरिचरण मृत।”

“देवांशुक स्मृति बीस वर्ष बाद।”

“हत्या आदेश स्वीकार नहि।”

“दबाव मतलब हत्या नहि।”

सब सही प्रश्न।

न्यायालयक सामने अन्तिम समस्या—

कड़ी सभ मिलि एक निष्कर्ष अनिवार्य बनबैत कि केवल सम्भावित?

न्याय-दर्शनक अनुमान आ आपराधिक कानूनक संदेह-मानक एक बिन्दुपर आमने-सामने।



निर्णयक दिन मृणालिनी आयलीह।

ईशान कातमे।

देवांशु सामने।

न्यायाधीश दीर्घ आदेश पढ़लनि।

पहिने स्पष्ट—

सत्यप्रकाशक मृत्यु सामान्य आकस्मिक सड़क-दुर्घटना मात्र छल—ई पुरान निष्कर्ष विश्वसनीय नहि रहि गेल।

हरिचरण द्वारा हिंसक दबाव-अभियानक पर्याप्त साक्ष्य।

सम्भावित वाहन-उपयोगक श्रृंखला मजबूत।

देवांशु गैरकानूनी दबावक आरम्भ करौने—स्वयं स्वीकार।

ओ हरिचरणक हिंसक प्रवृत्ति जानैत छल।

मगर—

देवांशु विशेष रूपेँ मृत्यु चाहने छल वा वाहन-टक्करक निर्देश देने छल—ई संदेहातीत रूपेँ सिद्ध नहि।

अतः हत्या हेतु प्रत्यक्ष उच्चतम दायित्व सिद्ध नहि।

मगर गैरकानूनी दबावक षड्यंत्र आ एहन जोखिमपूर्ण कृत्य प्रेरित करब, जकर गंभीर परिणाम पूर्वानुमेय छल—ओहि सीमामे दोष।

आदेशक भाषा विधिक।

मृणालिनी लेल अर्थ सरल—

राज्य आब कहैत अछि बाबूक मृत्यु साधारण दुर्घटना नहि बुझल जाए।

मगर राज्य ई नहि कहि सकैत जे देवांशु हत्या कहल।

बीस वर्षक प्रश्न आधा उत्तर पेलक।

आधा खोएल।



अदालत बाहर पत्रकार मृणालिनी दिस दौड़ल।

“क्या आपको न्याय मिला?”

ओ रुकलीह।

ईशान रोकय चाहलक।

मृणालिनी हाथ उठा ओकरा रोकलीह।

ओ कैमरा दिस देखलीह।

“हमरा जतबा सिद्ध भेल, ओतबा स्वीकार अछि। जतबा सिद्ध नहि, ओकरा हम अपन दुखक कारण सिद्ध नहि कहब।”

पत्रकार चुप।

एक पूछलक—

“आप संतुष्ट हैं?”

मृणालिनी धीरे कहलीह—

“दुख संतुष्ट नहि होइत।”

बस।

ओ चलि गेलीह।

ईशान पाछाँ।

एहि एक वाक्यमे पूरा त्रासदी समा गेल।

न्याय भेटि सकैत।

दुख समाप्त नहि।



देवांशु दण्ड सुनि न्यायालयक अनुमति सँ मृणालिनी दिस एक क्षण मुड़ल।

किछु कहबाक प्रयास।

मृणालिनी रुकलीह नहि।
ओकरा क्षमा देबाक कर्तव्य नहि।
ओकरा घृणा करबाक कर्तव्य सेहो नहि।
किछु सम्बन्ध न्यायालय बनबैत नहि।
केवल समाप्त करैत।



गढ़ नारिकेल लौटला पर मृणालिनी सत्यप्रकाशक फोटो सामने दीप नहि जरेलनि।

ओ फोटो दीवालपर फेर टाँगि देलीह।

बस।

ईशान पूछलक—

“आज दीप नहि?”

“ओ पूजा नहि छल।”

“तखन?”

“प्रतीक्षा।”

“आब?”

मृणालिनी खिड़की खोललीह।

“आब प्रतीक्षा समाप्त।”

“उत्तर पूरा नहि।”

“प्रतीक्षा उत्तरक नहि रहि गेल छल, बेटा। राज्य कहय जे हम जे देखैत रही से पागलपन नहि।

ओ कहि देलक।”

ईशान आँखि नीचाँ।

“तखन बाबू?”

“हमर संग।”

मृणालिनी मुस्कुरेलीह।

बहुत छोट।

बहुत थाकल।

मगर वास्तविक।



ओहि साँझ कमला-बलानक किनार पर ईशान अकेले गेल।

बरखा बाद नदी चौड़ी।

कादोमे गोहिक लम्बा निशान।

ओ नजिक नहि गेल।

दूर झाड़ीमेसँ दू बिज्जी निकलल।

पैघ आ छोट।

पैघ पहिने किनार सूँघलक।

छोट ओकर चाल नकल करैत।

पानि हिलल।

दू गोल लहर।

किछु भारी भीतर घुरल।

छोट बिज्जी एक डेग पाछाँ।

पैघ स्थिर।

फेर दुनू दिशा बदलि ऊँच घास दिस चलि गेल।

न लड़ाइ।

न विजय।

न जलसमाधि।

गोहि पानिमे।

बिज्जी किनारपर।

ईशान अचानक बुझलक—

रक्षकक काम संसारसँ गोहि समाप्त करब नहि।

गोहि रहत।

साँप रहत।

लोभ रहत।

डर रहत।

नब तकनीक।

नब पैसा।

नब नाम।

रक्षकक काम—

पहिचानक ज्ञान अगिला पीढ़ी धरि पहुँचाबयब।



राजधानी नगरमे रचना सिन्हा अंतिम संयुक्त समीक्षा-बैठकमे बोर्ड साफ करैत छलीह।

“प्रमाण।”

“संशय।”

“प्रयोजन।”

“तर्क।”

“समवाय।”

“स्मृति।”

एक-एक शब्द मेटल गेल।

रोहित पुछलक—

“सभ समाप्त?”

रचना कहलीह—

“मुकदमा समाप्त हो सकैत। पद्धति नहि।”

मयंक हँसल—

“न्याय-दर्शन बचल।”

रचना मार्कर रखलीह।

“दर्शन नहि। आदत।”

नैना वर्मा पूछलीह—

“कौन आदत?”

रचना उत्तर देलीह—

“जे देखलहुँ से कहू। जे अनुमान केलहुँ से अनुमान कहू। जे नहि जनैत छी, ओकरा खाली छोड़ू।

आ खाली ठाम भरबाक लोभ सँ बचू।”

कमरा चुप।

कियो ताली नहि।

एहन वाक्य ताली लेल नहि होइत।

काम लेल।



ईशान अपन म्यूल-खाता जोखिम परियोजनाक अंतिम सार्वजनिक प्रतिवेदनमे एक पाँति जोड़लक—

“अपराधी जाल तकनीक बदलैत अछि; सामाजिक कमजोरीक उपयोगक तर्क बार-बार लौटैत अछि। रोकथामक अर्थ केवल अपराधी पकड़ब नहि, कमजोर मनुष्यकेँ उपयोग योग्य साधन बनबाक पहिने सुरक्षा देब सेहो अछि।”

सुमेधा पढ़लीह।

“एहि बेर ‘प्रारम्भिक नमूना’ नहि?”

ईशान हँसल।

“एहि निष्कर्षक आधार पर्याप्त।”

“ठीक।”

ओ हस्ताक्षर केलक।

नाम—

ईशान कर्ण।

पहिल बेर ओकरा अपना नाममे केवल पिता नहि, अपन काज सेहो सुनाइ पड़ल।



मृणालिनी एक दिन आँगन साफ करैत धनेश्वरीक भीजल पोथी धूपमे सुखेलनि।

“साँपक भय सँ घर छोड़ू नहि; मुदा साँप घरमे अछि ई मानबो नहि, जाबत देखी।”

ओ पंक्ति आधा धुँधला।

स्याही बहि गेल।

मगर पढ़ल जा सकैत।

ओ नीचे अपन हाथसँ एक नब पाँति जोड़लीह—

“आ जँ देखी, तखन डर सँ नहि—बुद्धिसँ पहरा दिअ।”

पोथी बन्द केलनि।

ई ग्रन्थ नहि।

घरक स्मृति।

न्यायक छोट परम्परा।



राति देहरी बाहर सरसराहट भेल।

मृणालिनी दरबज्जा खोललीह।

छोट बिज्जी अकेले छल।

पैघ नहि।

ओ देहरी पर ठाढ़ भऽ घर भीतर देखलक।

फेर पाछाँ खेत दिस।

दूर घासमे गहुमनक छाया सरकल।

बिज्जी ओकर पाछाँ दौड़ल नहि।

बस बीचमे ठाढ़ रहल।

मृणालिनी मुस्कुरेलीह।

“सीखि गेलह?”

बिज्जी उत्तर नहि देलक।

जीव दर्शन नहि बजैत।

ओ केवल करैत।

किछु देर बाद साँप दिशा बदललक।

बिज्जी सेहो चलि गेल।

कमला-बलानक पानि रातिमे कारी।

कहीं भीतर गोहि होयत।

कहीं नहि सेहो।

मृणालिनी दरबज्जा बन्द केलनि।

कुंडी लगेलीह।

दीप बुझेलीह।

घर अन्हार भेल।

पहरा समाप्त नहि।



निर्णयक बाद शहर शान्त नहि भेल।

केवल समाचारक दिशा बदलल।

पहिने प्रश्न छल—के दोषी?

आब—

के अपील करत?

कतेक दण्ड घटत?

कतेक पैसा वापस भेटत?

अम्बर बचत कि बन्द?

म्यूल खाताधारक सभक की होयत?

सत्यप्रकाशक परिवारकेँ प्रतिकर?

न्यायालय निर्णय दैत अछि।

जीवन निर्णयक बाद शुरू होइत।



सौरभ बर्धन अपील दायर केलक।

केशव सेहो।

मनोज सेहो।

प्रदीप आंशिक अपील नहि केलक; ओकर वकील केवल दण्डक अनुपात विषय सीमित निवेदन

सोचैत छल, मुदा प्रदीप कहलक—

“जे भाग हम केने छी, ओकरा फेर शून्य कहि लड़ब नहि।”

वकील चकित।

“कानून अहाँकेँ अपीलक अधिकार दैत।”

“अधिकार छोड़ि नहि रहल छी। मुदा तथ्य पर झूठा विवाद नहि।”

“दण्ड?”

“जे न्यायिक त्रुटि हो, ओतय।”

वकील मूड़ी डोलौलक।

प्रदीप बहुत बदलि गेल—ई कहब आसान।

सही बात एतबा छल—

ओ आब हर वाक्यक पाछाँ अपन सुविधा नहि खोजय चाहैत।

परिवर्तन सिद्ध करबाक अंतिम प्रमाण भविष्य होइत।

एखन केवल आरम्भ।



तृषा पिता सँ भेटबाक जेल आयल।

एहि बेर ओ काँचक पार नहि, अनुमत पारिवारिक मुलाकातक कक्षमे दूरी पर बैसल।

“स्कूल खत्म होमयवला अछि,” ओ कहलीह।

“आगाँ?”

“लेखा नहि पढ़ब।”

प्रदीप पहिल बेर हँसल।

“क्यों?”

“घरमे बहुत लेखा देखि लेलहुँ।”

दुनू कुछ क्षण हँसल।

फेर तृषा गंभीर—

“हम कानून पढ़य सोचैत छी।”

प्रदीपक चेहरा बदलल।

“हमर कारण?”

“किछु।”

“हमरा बचाबऽ?”

“नहि।”

उत्तर तुरन्त।

प्रदीप चुप।

तृषा कहलीह—

“हम बुझऽ चाहैत छी जे एके आदमी गलत सेहो हो सकैत आ पूरा राक्षस नहि सेहो। स्कूलमे सभकेँ केवल दू डिब्बा चाही—अपराधी अथवा निर्दोष।”

प्रदीपक आँखि भरि आयल।

“कानूनमे सेहो कतेको डिब्बा होयत।”

“तखन पढ़ब।”

“ठीक।”

ई क्षमा नहि छल।

मगर संवाद फेर जन्मल।

कतेको टूटा घर पहिले वाक्य सँ जुड़ैत।



अम्बर इंटरैक्टिव बचि गेल।

मगर छोट भऽ गेल।

निवेशक हटल।

कर्मचारी संख्या घटल।

कुछ उत्पाद बन्द।

मुख्य खेल-प्रणाली नियामकीय समीक्षा बाद सीमित रूपमे जारी।

विहान सारंग सार्वजनिक सभा मे कहलक—

“हम कानूनी दोषक सब जिम्मेदारी नहि ले सकैत, मुदा संस्थागत विफलताक जिम्मेदारी सँ भागब नहि।”

एक पत्रकार पुछलक—

“ई पी.आर. बयान अछि?”

विहान उत्तर देलक—

“हो सकैत अछि अहाँ एहन मानू। तखन हमरा काज देखू।”

काज।

फेर वही।

शब्द के बाद व्यवहार।

स्वतन्त्र अनुपालन समिति पहिल रिपोर्टमे कठोर टिप्पणी देलक—

अम्बरक पुरान संस्कृति वृद्धि-केंद्रित छल।

चेतावनीक अर्थ न्यून कएल गेल।

बाहरी साझेदारक जिम्मेदारी अस्पष्ट।

निदेशक-मण्डल लाभक गति सँ प्रभावित।

रिपोर्ट सार्वजनिक भेल।

कम्पनीक शेयर-जइसन निजी मूल्यांकन गिरल।

विहान एक राति खाली कार्यालयमे बैठि रिपोर्ट पढ़ैत रहल।

सत्य सार्वजनिक करब कम्पनी बचबैत कि मारैत—एहि प्रश्नक उत्तर एखन नहि।

मगर किछु सत्य लाभक बाद नहि, लाभक विरुद्धो लिखल जाए—ई नब बात छल।



रचना सिन्हा नब पद पर स्थानान्तरित भेलीह।

राजधानी नगरसँ दूर।

कियो कहलक—पुरस्कार।

कियो—व्यवस्था हुनका हटेलक।

कियो—सामान्य सेवा-परिवर्तन।

रचना हँसलीह।

“तीनू कथा एके कागचसँ।”

रोहित पूछलक—

“अहाँकेँ की लगैत?”

“स्थानान्तरण आदेश अछि। बाकी अनुमान।”

मयंक हँसि पड़ल।

“आब तऽ अहाँ रोग स्थायी बना लेलहुँ।”

रचना सामान बाँधैत बोर्डक पुरान फोटो देखलीह—

घटना।

सम्बन्ध।

हेतु।

प्रमाण।

निर्णय।

ओ फोटो निजी फोनमे रखलीह।

कार्यालयमे नहि।

पद्धति स्थानान्तरित हो सकैत।

संस्था बदलि सकैत।



ईशानक म्यूल-खाता परियोजना राज्यक दू विश्वविद्यालयमे प्रशिक्षण-पाठ्यक्रमक हिस्सा बनल।

ओ कक्षा मे पहिल दिन अपराधक उदाहरण नहि, एक सरल प्रश्न लिखलक—

“खाता ककर?”

छात्र कहलक—

“जकर नाम बैंकमे।”

ईशान फेर लिखलक—

“पैसा ककर?”

उत्तर अलग-अलग।

“जकर कमाइ।”

“जकर अधिकार।”

“जकरा भेजल गेल।”

“जकर स्रोत।”

ईशान मुस्करायल।

“एतहि समस्या शुरू।”

ओ तकनीकी विधि नहि पढ़ौलक।

ओ सामाजिक संकेत पढ़ौलक—

अचानक कमीशन।

घर-सँ काजक अस्पष्ट प्रस्ताव।

अनजान व्यापारक भुगतान अपन खातामे लऽ देबाक आग्रह।

ऋणग्रस्त उपयोगकर्ताकेँ “कमाइ”क नब रास्ता।

खाताक उपयोगक परिणाम परिवार पर।

“अपराधी जालकेँ केवल बुद्धिमान तकनीक नहि चाही,” ईशान कहलक। “ओकरा कमजोर क्षण चाही।”

एक छात्र पुछलक—

“सर, गरीब लोक अधिक दोषमुक्त?”

ईशान उत्तर देलक—

“गरीबी अपराधक अनुमति नहि। मुदा परिस्थिति दायित्व बुझबाक हिस्सा। न्याय यदि परिस्थिति देखबे नहि करत, तऽ केवल व्यवहार देखत।”

“तखन सीमा?”

“प्रमाण।”

दादीक भाषा अकादमिक कक्षमे पहुँचि गेल।



सबीना खातूनक सिलाइ-दोकान फेर चलल।

बैंक खाता पर निगरानी हटयमे समय लागल।

स्थानीय लोकक अविश्वास आर देर।

एक ग्राहक कहली—

“अहाँक खाता पुलिस केसवला?”

सबीना मशीन रोकलीह।

पहिने ओ झूठ बोलि सकैत छल।

आब कहली—

“हाँ। हम पाँच हजारक लालचमे खाता उपयोग करय देने रही। जाँच भेल। हम जे गलती केलहुँ
से कहि देल।”

ग्राहक कपड़ा उठौलक।

किछु क्षण सोचलक।

“ब्लाउज शुक्रबार चाही।”

सबीना साँस छोड़लीह।

समाजक पुनर्वास कानूनक आदेश सँ नहि।

कतेको बेर एक ग्राहकक वापस आबय सँ शुरू।



अभिषेकक बहिन मंजरी नर्सिङ्ग प्रशिक्षण पूरा करबाक कगार पर छलीह।

एक दिन अस्पतालमे बैंक-जागरूकता शिविर लगल।

वक्ता कहैत छल—

“अपन खाता ककरो उपयोग लेल नहि दिअ।”

मंजरी पाछाँ बैसल।

ओकरा भाईक चेहरा याद आयल।

घरक जमीन।

एक वर्षक देरी।

बैंकक फोन।

पुलिस।

ओ प्रश्नोत्तर समय हाथ उठौलीह।

“जँ कियो पहिने गलती कऽ चुकल हो, तखन बैंक ओकरा सदिखन संदिग्ध मानत?”

वक्ता सामान्य उत्तर देलक—

“परिस्थिति अनुसार।”

मंजरी संतुष्ट नहि।

“सिस्टममे सुधारक रास्ता स्पष्ट होय चाही।”

शिविरक अधिकारी ओकरा बादमे भेटल।

नाम, केस नहि।

केवल सुझाव लेल।

मंजरी कहलीह—

“जकर नाम एक बेर लाल हो, ओकर जीवन सदिखन लाल नहि रहय।”

ई वाक्य नीति-नोटमे गेल कि नहि—ओ नहि जानलीह।

मगर कहि देल।

पहरा कखनो छोट वाक्य सेहो।



शैलेश मंडल विद्यालयक नौकरीमे तुरन्त वापस नहि आयल।

विभागीय जाँच।

निलम्बन।

परामर्श।

आरती बच्चासभसँ अलग घरमे रहैत रहल।

शैलेश नशामुक्ति-जइसन व्यवहारिक परामर्श केन्द्रमे जुआ-लत समूह बैठकी शुरू केलक।

पहिल दिन पाँच आदमी।

दूसर दिन तीन।

कोनो जादुई सुधार नहि।

एक आदमी कहलक—

“हम हारल पैसा जीतबाक लेल खेलैत छी।”

शैलेश उत्तर देलक—

“हम सेहो।”

“जीतल?”

“घर हारल।”

कमरा चुप।

ओ प्रवचन नहि देलक।

अपन कथा कहलक।

कतेको चेतावनी अपराध-शास्त्रक पुस्तक सँ कम, टूटल आदमीक आवाज सँ अधिक प्रभावी।



रितेश दासक मोबाइल-मरम्मत दोकानक नाम ओ बदललक—

“नव बाट।”

कियो हँसल।

ओ सहलक।

अभिषेक महीना बाद फेर आयल।

फोनक स्क्रीन बदलाबय।

रितेश काज केलक।

पैसा बतौलक।

अभिषेक पूरा देलक।

रितेश कहलक—

“छोड़, हम—”

अभिषेक रोकलक।

“काजक पैसा काजक।”

रितेश नोट लेलक।

दुनू बीच एतबे।

माफीनामा नहि।

गले मिलब नहि।

मगर सम्बन्ध आब अपराधक कमीशन नहि, सामान्य सेवा पर।

कतेको पुनर्स्थापन एतबे साधारण होइत।



देवांशु रक्षित दण्डक विरुद्ध अपील केलक।

स्वास्थ्य खराब।

उमर।

विधिक प्रश्न।

मृणालिनी समाचार सुनलीह।

ईशान पूछलक—

“चिन्ता?”

“नहि।”

“यदि दण्ड घटि जाए?”

“अदालत कारण देखत।”

“अहाँ बदलि गेलहुँ।”

मृणालिनी हँसलीह।

“थाकि गेलहुँ।”

दुनू बात एके समय सच हो सकैत।

ओ फेर कहलीह—

“हमरा जे चाही छल ओकर किछु भाग निर्णयमे लिखल अछि। दण्डक वर्ष गिनि हम सत्यप्रकाश
वापस नहि आनब।”

ईशानक मनमे एक पुरान शब्द उठल—

प्रतिशोध।

न्याय नहि।



अनिरुद्ध चौधरीक स्वास्थ्य तेजी सँ गिरल।

ईशान अस्पताल गेल।

अनिरुद्ध ऑक्सीजन पर, मगर होशमे।

“रिपोर्ट?” ओ धीमे पुछलक।

“प्रशिक्षण शुरू।”

“नीक।”

“बाबूक केस...”

अनिरुद्ध हाथ उठौलक।

“जानैत छी।”

“अहाँ नहि होइत...”

अनिरुद्ध आँखि खोलि ओकरा देखलक।

“एहन वाक्य मत।”

ईशान चुप।

“कियो एक आदमी जाँच नहि करैत।”

“मगर पहिल दिन—प्रत्यक्ष अलग, अनुमान अलग—”

अनिरुद्ध हलुक मुस्करायल।

“ई हम बनौने नहि।”

“तखन?”

“पुरान ज्ञान। कामक आदत।”

ईशानक आँखि भरि आयल।

“दादी सेहो।”

“तखन दुई शिक्षक।”

किछु क्षण बाद अनिरुद्ध कहलक—

“मोन रख—सही निष्कर्ष सँ बेसी जरूरी सही तरीका। कारण निष्कर्ष बदलि सकैत।”

ईशान हाथ पकड़लक।

अनिरुद्धक हथेली ठण्ठी।

“आ गलत तरीका सँ सही आदमी पकड़लहुँ तऽ?”

“अगिला बेर निर्दोष पकड़ा जाएत।”

ओ थाकि गेलाह।

ईशान चुपचाप बैसल रहल।



अनिरुद्ध दू सप्ताह बाद चलि गेलाह।

सरकारी सम्मान सीमित।

परिवार निजी अन्त्येष्टि चाहैत।

रचना दूरक पदस्थापन सँ आयलीह।

मयंक।

रोहित।

ईशान।

किछु पुरान अधिकारी।

मृणालिनी नहि आयलीह; स्वास्थ्य नहि।

अन्त्येष्टि बाद कियो भाषण नहि।

ईशान केवल अनिरुद्धक पुरान नोटबुकक एक प्रति परिवारक अनुमति सँ देखलक।

एक पन्नापर लिखल—

“सन्देहक सम्मान करू, भयक नहि।”

दूसर—

“गवाहीक कमजोरी गवाहक चरित्रक कमजोरी नहि हो सकैत; स्मृति मनुष्यक सीमा।”

तेसर—

“अपराधी खोजिते जाँच समाप्त नहि; गलत आरोपी हटेनाइ सेहो जाँच।”

ईशान नोटबुक वापस देलक।

ओकरा लगा अनिरुद्धक मृत्यु कथा सँ एकटा आर किनार हटा देलक।

फेर दादीक बात—

किनार छोड़य नहि।

जे लोक चलि गेल, ओकर जगह अगिला लोक ठाढ़ हो।



रचना वापसी ट्रेनमे खिड़की बाहर देखैत रहलीह।

फोन पर नब जिला सँ संदेश—

एक ठगी-जाल।

कई बैंक खाते।

एक निर्दोष बुजुर्गक पेंशन रोकल।

नब केस।

नब नाम।

नब पानि।

ओ फोन बन्द नहि केलनि।

फाइल माँगलनि।

जीवन कथा नहि जे अंतिम निर्णय बाद संगीत बजि समाप्त।

अपराधक जाल नब रूप लैत।

पद्धति फेर काम पर।



कुछ महीना बाद राज्य सरकार म्यूल-खाता पीड़ित/सहभागी वर्गीकरण लेल नब दिशा-निर्देश जारी केलक।

तीन मोट श्रेणी—

जानि-बुझि संगठित सहभागिता।

संदेह बादो लाभ लेल निरन्तर सहभागिता।

धोखा/अज्ञान/सीमित लापरवाहीक शिकार।

ई वर्गीकरण पूर्ण नहि।

कठिन केस सीमा पर।

मगर “सभ खाताधारक अपराधी” वाला पुरान सरलता टूटल।

ईशान मसौदा-समिति मे प्रत्यक्ष सदस्य नहि छल।

ओकर प्रतिवेदन उद्धृत भेल।

ओ सूचना पढ़ि माएक लग गेल।

“माँ, किछु बदलल।”

मृणालिनी पुछलीह—

“कतेक?”

“थोड़ा।”

“थोड़ा खराब?”

“थोड़ा नीक।”

“तखन ठीक।”

ओ फेर सब्जी काटय लगलीह।

नीति परिवर्तनक सबसे ईमानदार उत्सव शायद एतबे।

जीवन चलैत रहल।



उदयरेखा लोकन्यास आ उत्तरायणक नब सार्वजनिक अभिलेखमे सत्यप्रकाशक आपत्ति पूरा नामसँ दर्ज भेल।

एक शोधार्थी ईशानकेँ ई-पत्र लिखलक—

“हम भारतमे सार्वजनिक परियोजना, निजी प्रायोजन आ वित्तीय पारदर्शिता पर शोध करैत छी।

सत्यप्रकाश कर्ण प्रकरणक सार्वजनिक अभिलेख उपयोग करि सकैत छी?”

ईशान ई-पत्र बहुत देर देखलक।

पिता आब केवल परिवारक मृतक नहि।

एक सार्वजनिक अध्ययनक उदाहरण।

ओ मृणालिनीकेँ देखौलक।

“की कहू?”

मृणालिनी कहलीह—

“जतबा सार्वजनिक अछि, उपयोग करय दिअ। मुदा जे घरक अछि से नहि।”

सीमा।

फेर वही।

सार्वजनिक सत्य।

निजी दुख।

दुनूक मालिकाना अलग।



कमला-बलानक किनार पर नया तटबन्ध-मरम्मत शुरू भेल।

ई विडम्बना ईशान सँ छूटल नहि।

सत्यप्रकाश ठेकेदारी।

तटबन्ध।

प्रतिशत।

मृत्यु।

आब फेर सरकारी काज।

मगर ईशान निविदा-पट्ट देखैत भय सँ नहि, सावधानी सँ पढ़लक।

ठेकेदारक नाम।

मूल्य।

कार्य-अवधि।

शिकायत नम्बर।

सार्वजनिक पोर्टल।

ओ मोबाइल सँ फोटो लेलक।

मृणालिनी पुछलीह—

“फेर जाँच?”

“नहि। नागरिक।”

“अन्तर?”

“बहुत।”

ओ हँसलीह।

“ठीक।”

पहरा केवल पुलिसक काम नहि।

पारदर्शिता सेहो पहरा।

प्रश्न सेहो।

सूचना सेहो।



एक साँझ छोट बिज्जी आँगनमे आयल।

अब ओ पहिलक छोट नहि लगैत।

देह भरल।

चाल आत्मविश्वासी।

मृणालिनी पहिचान निश्चित नहि करि सकलीह।

ओकरा नाम देने नहि छल कखनो।

बिज्जी नाम व्यक्ति नहि, जाति।

भूमिका।

ओ आँगन पार कऽ पुरान बिलक नजिक गेल, जे बाढ़ बाद फेर सूखि चुकल छल।

सूँघलक।

माटि खोदल।

अन्दर घुसल।

किछु देर बाद बाहर आयल।

मृणालिनी दूर सँ देखलीह।

“घर चुनलह?”

बिज्जी न सुनलक।

या सुनि अनसुना।

मनुष्य अर्थ दैत।

जीव जीवन जीबैत।



ईशान राति माएक संग बरामदामे बैसल।

“माँ, एहि सभक किताब बनय तऽ?”

मृणालिनी ओकरा देखलीह।

“ककर?”

“बाबू। जुआ-जाल। खाता। अदालत। दादी। सभा।”

“तूँ लिखबह?”

“पता नहि।”

“तखन?”

“कियो लिखत।”

मृणालिनी कुछ क्षण सोचलीह।

“एक बात।”

“की?”

“हमरा नायिका मत बनाबिह।”

ईशान हँसल।

“क्यों?”

“हम डरने रही। रोने रही। कतेको बेर छोड़य चाहने रही।”

“एही लेल—”

“नहि। मनुष्य जकाँ लिखिह।”

ईशान हँसी रोकि गंभीर भेल।

“ठीक।”

“आ सत्यप्रकाशकेँ शहीद मत बनाबिह। ओ जिद्दी छल। घरक बात कम सुनैत। कतेको बेर मूर्ख।”

ईशान हँसल।

“माँ!”

“सच।”

दुनू हँसल।

मृतककेँ देवता बनब सेहो स्मृति-शोधन हो सकैत।

सही स्मृति दोष सहित।

प्रेम सहित।



राति गहिर भेल।

कमला-बलान दिस हवा।

दूर कुकुरक आवाज।

झाड़ीमे हलुक सरसराहट।

ईशान उठि देखलक।

किछु नहि।

मृणालिनी कहलीह—

“सभ आवाज पर साँप मत मान।”

ईशान मुस्करायल।

“दादी।”

“हम।”

दुनू फेर बैसल।

किछु देर बाद सचमुच बिज्जी बाहर आयल।

देहरी पार नहि केलक।

किनारपर ठाढ़।

अन्हार दिस देखैत।

ईशान धीरे कहलक—

“पहरा।”

मृणालिनी उत्तर देलीह—

“हाँ। मुदा पहरा देबक अर्थ सदिखन डरब नहि।”

ईशान एहि नब पाँतिक अर्थ सोचलक।

यदि पहरा भय बनि जाए, जीवन कारागार।

यदि पहरा छूटि जाए, खतरा घर।

बीचमे बुद्धि।

यही न्याय।

यही जीवन।



रचना सिन्हाक नब कार्यालयमे पहिल प्रशिक्षण सत्र छल।

ओ बोर्ड पर पाँच शब्द लिखलीह—

देखल।

सुनल।

अनुमान।

सिद्ध।

असिद्ध।

एक युवा अधिकारी पूछलक—

“मैडम, एतेक सरल?”

रचना कहलीह—

“सरल लिखल। कठिन करब।”

“क्यों?”

“क्योंकि मनुष्य खाली ठाम सहि नहि सकैत।”

“तखन?”

“असिद्धकें असिद्ध छोड़बाक अभ्यास करू।”

युवा अधिकारी हँसल।

“जनता कहत पुलिसकें किछु नहि पता।”

“कखनो सही।”

“प्रतिष्ठा?”

रचना मार्कर रखलीह।

“प्रतिष्ठा बचाबऽ लेल झूठा निश्चितता बनौने दिन जाँच समाप्त।”

कमरामे मौन।

फेर प्रशिक्षण शुरू।

नब पीढ़ी।

नब फाइल।

पहरा सिखाओल जा रहल छल।



गढ़ नारिकेलमे भोरक पहिल उजास।

मृणालिनी दरबज्जा खोललीह।

माटिपर पदचिह्न।

एक बिज्जी।

फेर छोट-छोट दोसर पदचिह्न।

शायद बच्चा।

ओ झुकलीह नहि।

कदम नापलीह नहि।

फोटो नहि लेलनि।

सभ चीज प्रमाण बनब जरूरी नहि।

किछु केवल जीवनक संकेत।

ओ आँगन बुहारय लगलीह।

किछु पदचिह्न मेटि गेल।

किछु किनार कात बचल।

कमला-बलानक पानि चमकि रहल छल।

दूर कहीं गोहि होयत।

साँप सेहो।

लोक अपन काज पर निकलत।

बैंक खुलत।

अदालत चलत।

नब निविदा निकलत।

मोबाइल पर नब खेल चमकत।

कियो लोभ देत।

कियो मना करत।

कियो फँसत।

कियो बचत।

कियो प्रश्न पूछत।

कियो मौन रहत।

कियो पहरा देत।

कथा आगाँ चलैत रहल।



समय धीरे-धीरे निर्णयसभक धार कुन्द करैत गेल।

समाचार-पत्रमे नब विषय आयल।

नब घोटाला।

नब चुनाव।

नब बाढ़।

नब खेल।

नब अनुप्रयोग।

जे मुकदमा एक समय सभ चैनलक पहिल समाचार छल, आब न्यायालयी सूचीक एक पाँति बनि गेल।

मुदा जे परिवार ओकर भीतर छल, हुनका लेल समय समाचारक क्रम नहि।

प्रदीप जेलमे दिन गनैत।

मनोज अपीलक तारीख।

केशव वकीलक कागज।

सौरभ प्रतिष्ठाक राख।

अभिषेक बैंकक सुधरल अभिलेख।

सबीना ग्राहकक भरोसा।

मृणालिनी दीवालक फोटो।

ईशानक पाठ्यक्रम।

न्यायालयक आदेश सार्वजनिक होइत।

दण्ड निजी समयमे भोगल जाइत।



उच्च न्यायालयमे सौरभ आ केशवक अपील एक संग नहि, अलग-अलग सुनल गेल।

सौरभक वकील फेर कहलक—

“निवेशक-पक्ष जोखिम अलग राखय चाहैत छल। एहि सँ आपराधिक ज्ञान सिद्ध नहि।”

राज्य उत्तर देलक—

“एक वाक्य सँ नहि। बैठक, वित्तीय पथ, आलोक भसीनक ई-पत्र, ‘पुरान स्रोत’क निर्देश, आ रात्रि प्रवाहक संदर्भ मिलि ज्ञान सिद्ध करैत।”

न्यायालय निचली अदालतक सभ निष्कर्ष जसक तस नहि राखलक।

किछु आरोप हटेलक।

किछु कायम।

दण्डक अवधि कने घटल।

मगर मुख्य वित्तीय सहायता सम्बन्धी दोष कायम।

बाहर पत्रकार कहलक—

“सौरभको राहत।”

दोसर—

“दोष बरकरार।”

दुनू शीर्षक आधा सच।

पूरा आदेश लम्बा।

जीवन फेर छोट वाक्यक शिकार।



केशवक अपीलमे अदालत कठोर छल।

“अलग लेखा” स्वयं अपराध नहि—ई मानल गेल।

मगर जखन व्यक्ति बार-बार एहन प्रवाहकें मुख्य लेखासँ बाहर रखैत अछि, जाहिक स्रोत आ स्वरूप विषय ओकरा पर्याप्त चेतावनी छल, तखन केवल “अनुपालन-असफलता” कहि जिम्मेदारी समाप्त नहि होइत।

केशवक दोष अधिकांश कायम।

ओ जेल लौटल।

पहिल राति पुस्तकालय माँगलक।

प्रहरी हँसल—

“एखन?”

“हाँ।”

ओकरा अगिला दिन पुस्तकालयक अनुमति भेटल।

किताबक बीच ओकरा अर्थशास्त्र, कानून, उपन्यास, धर्म—सभ भेटल।

मगर जे चीज ओकरा भीतर सबसँ बेसी तोड़लक, से किताब नहि छल।

कारा-सुधार कार्यक्रमक एक छोट पुस्तिका छल—

“आर्थिक अपराधक मानवीय प्रभाव।”

ताहिमे वास्तविक नाम नहि।

अनाम कथासभ।

एक नर्सिङ्ग छात्रा जकर फीस खाता-जाँचमे अटकली।

एक गृहिणी जकर चिकित्सा-पैसा रोकल।

एक शिक्षकक परिवार जे जुआ ऋण सँ टूटल।

एक वृद्ध पिता जकर बेटा कमीशनक लोभमे खाता देलक।

एक छोट व्यापारी जकर वैध पैसा महीना भरि अटकल।

केशव पन्ना पलटैत-पलटैत रुकल।

एहि सभ रकमक रूप ओ पहिने देखैत छल—

चार लाख।

अस्सी हजार।

एक लाख पन्द्रह।

तीन हजार कमीशन।

पाँच हजार मासिक।

आब प्रत्येक रकमक पाछाँ एक घर छल।

ओ पुस्तक बन्द कऽ देलक।

राति बैरकमे नींद नहि आयल।

धनक अमूर्तता अपराधक ढाल छल।

दण्ड ओकरा फेर मनुष्यक चेहरामे बदलि रहल छल।



किछु दिन बाद कारामे वित्तीय अपराध विषय एक वैधानिक पुनर्वास सत्र भेल।

कियो पीड़ित सीधे नहि अनल गेल।

कियो भावुक सामना नहि।

केवल अनामकृत बयान पढ़ल गेल।

“हमर बहिनक एक वर्ष गेल।”

“हमर बच्चाक इलाज रुकल।”

“हमरा लग पाँच हजार बहुत छल।”

“हम खाता देलहुँ, मुदा हमरा नहि बुझायल ई अपराधक रास्ता।”

“हम जानैत छलहुँ किछु गलत अछि, तैयो रोकल नहि।”

केशवक कात बैसल प्रदीप नहि छल; ओकर दण्ड अलग कारामे चलैत।

मगर केशवकेँ प्रदीपक पुरान वाक्य मोन पड़ल—

“पहिने नौकरी। फेर डर। फेर आदत।”

ओ अपने विषय सोचलक—

पहिने वृद्धि।

फेर जोखिम।

फेर अलग लेखा।

फेर मौन।

फेर आदत।

मानव मन अपन अपराधक लेल भाषा खोजैत अछि।

कतेको बेर सत्य भाषा भेटला पर शुरू होइत।



सौरभ जेलमे किछु अवधि काटय लागल।

ओकरे वकील एखनहुँ उच्चतर अपीलक सलाह दैत।

सौरभ कहलक—

“करब।”

ओ न्यायिक अधिकार छोड़य नहि चाहैत।

मगर एखन ओकर स्वर पहिनेक जकाँ निश्चित नहि।

एक दिन कारा-पुस्तकालयमे केशव संग ओकर नजरि भेटल।

दुनू अलग मेज।

कियो बोलल नहि।

वर्षसभ तक ई दुनू बैठकीमे संख्या, जोखिम, ब्राण्ड, निधि, विस्तारक भाषा बोलैत रहल।

एखन बीचमे लोहेक जाली नहि, मगर मौन छल।

केशव आखिर कहलक—

“अम्बर बचल।”

सौरभ पन्ना सँ आँखि नहि उठौलक।

“कने।”

“हम सभ की बचेलहुँ?”

सौरभ एहि बेर तकलक।

उत्तर नहि।

केशव हँसल नहि।

“पहिने हमरा ई प्रश्न बेकार लगैत।”

सौरभ कहलक—

“एखन?”

“महँगा।”

दुनू फेर चुप।

कोनो महत्त्वपूर्ण अपराधी अचानक संत नहि बनल।

कथा ओहि सस्ते रास्तापर नहि गेल।

केवल प्रश्न बदलल।

कतेको दण्डक आरम्भ एतबे।



प्रदीपक शेष कारावास पूरा भेला पर रिहाइ भेल।

एहि बेर फाटक बाहर पत्नी आ तृषा दुनू।

तृषा आब कानून महाविद्यालयमे प्रवेश ले चुकल छलीह।

प्रदीप बाहर आबि हाथ जोड़लक।

पत्नी कहलीह—

“घर चलू।”

एहि बेर वाक्य सरल छल।

मगर घर पहिनेक नहि।

प्रदीप पहिने लेखा-फर्ममे नौकरी खोजलक।

कोनो नहि।

एक छोट गैर-लाभकारी संस्था वित्तीय साक्षरता कार्यक्रम लेल अस्थायी सहायक चाहैत छल।

प्रदीप अपन पूरा इतिहास बतौलक।

प्रबंधक कहलक—

“एहि कारणेँ हम तुरन्त हँ नहि कहि सकैत।”

दू सप्ताह जाँच।

फेर सीमित अनुबंध।

ओकर काम—छोट व्यापारिक समूहकेँ लेखा-पुस्तक साफ रखबाक प्रशिक्षण।

पहिल सत्रमे एक दुकानदार मजाक केलक—

“अहाँ तऽ गलत हिसाबक विशेषज्ञ रहलहुँ।”

कमरा असहज।

प्रदीप हँसल नहि।

“हाँ। तँ जानैत छी कागच गलत होयबाक दाम कतेक पैघ।”

मौन।

फेर प्रशिक्षण जारी।

पुनर्वास लज्जा मिटब नहि।

ओकर संग काज करब सीखब।



तृषा पहिल वर्षक कानून कक्षामे “आपराधिक आशय” विषय पढ़ैत घर आयली।

राति पिता सँ पूछलीह—

“अहाँक अपराध कखन शुरू भेल?”

प्रदीप चकित।

“कानून वाला उत्तर?”

“अपने वाला।”

ओ सोचलक।

“पहिल गलत कागच पर हस्ताक्षर?”

“शायद।”

“किंवा पहिल बेर जखन बुझलहुँ जे कागच गलत अछि?”

“शायद।”

“किंवा जखन दोसर बेर केलहुँ?”

प्रदीप दीर्घ साँस लेलक।

“दोसर बेर।”

“क्यों?”

“पहिल बेर अपने केँ कहि सकैत रही—गलती। दोसर बेर हम जानैत रही।”

तृषा नोट नहि केलनि।

ओ छात्रा नहि, बेटी छल।

“हम एक लेख लिखब चाहैत छी—‘आदत आ आपराधिक आशय’।”

प्रदीपक चेहरा काठ।

“हमर नाम?”

“नहि।”

“ठीक।”

किछु वर्ष पहिने बेटी स्कूलमे पिता विषय लज्जित छलीह।

आब ओ अनुभवकें विचारमे बदलि रहल।

दुख ज्ञान बनि सकैत।

मगर ज्ञान दुखक क्षतिपूर्ति नहि।



मृणालिनी एक दिन ईशानकें कहलीह—

“अनिरुद्ध बाबूक परिवारकें भेटि आउ।”

“क्यों?”

“बस।”

ईशान गेल।

अनिरुद्धक पत्नी ओकरा एक पुरान कलम देलीह।

“ई अहाँ लेल छोड़ने नहि छल। मुदा हुनकर चीजसभ बाँटैत हमरा लागल—ई अहाँ राखू।”

ईशान संकोच।

“हम—”

“ओ अहाँक बाबूक फाइल पर एहि कलमसँ लिखैत छलाह।”

ईशान कलम लेल।

महँगी नहि।

नीली स्याहीवला साधारण फाउन्टेन पेन।

घर लौटि मृणालिनी देखलीह।

“लिखब?”

“की?”

“कतेक दिन सँ कहैत छह कियो लिखत।”

ईशान हँसल।

“अहाँ फेर नायिका नहि।”

“याद अछि।”

“बाबू शहीद नहि।”

“याद अछि।”

“देवांशु राक्षस मात्र नहि।”

ईशान रुकल।

मृणालिनी कहलीह—

“गलत आदमी छल। अपराध केलक। मुदा मनुष्यक रूप हटेलहुँ तऽ अपराध बुझब कोना?”

ईशान माएक चेहरा देखलक।

ई उपन्यासक भाषा धीरे-धीरे घरमे जन्मि रहल छल।



ईशान लिखनाइ शुरू नहि केलक।

पहिने नोट बनौलक।

“जे प्रत्यक्ष।”

“जे दस्तावेज।”

“जे परिवारक स्मृति।”

“जे अदालत सिद्ध केलक।”

“जे केवल सम्भावना।”

“जे रूपक।”

ओ पाँच अलग पृष्ठ बनौलक।

मृणालिनी हँसलीह—

“कथा लिखबह कि केस डायरी?”

“दुनूक बीच।”

“सावधान।”

“किस बात?”

“कथा खाली ठाम भरि देत।”

ईशान मुस्करायल।

“तें पाँच पृष्ठ।”

“ठीक।”

साहित्यक स्वतंत्रता आ सत्यक अनुशासनक बीच नब संघर्ष शुरू।

कथा सत्य नहि।

मगर असत्य सेहो जरूरी नहि।



रचना सिन्हा नब जिलामे जाँच करैत एक युवककें गिरफ्तार करबाक आदेश रोकलीह।

कारण—

फोन ओकर नाम पर।

पैसा ओकर खातामे।

मगर फोन महीना पहिने चोरीक रिपोर्ट।

खाता परिवारक संयुक्त।

प्राथमिक अनुमान गलत हो सकैत।

युवा अधिकारी कहलक—

“मैडम, एहि कारण आरोपी भागि गेल तऽ?”

रचना उत्तर देलीह—

“निगरानी राखू। गिरफ्तारी प्रमाणक बदला नहि।”

दू दिन बाद असली उपयोगकर्ता दोसर व्यक्ति निकलल।

युवा अधिकारी चुप।

रचना कहलीह—

“एहि बेर सही भेल। अगिला बेर हम गलत सेहो हो सकैत।”

“तखन आत्मविश्वास?”

“पद्धति पर।”

“निष्कर्ष पर नहि?”

“कखनो पूर्ण नहि।”

अनिरुद्ध नहि।

मगर आवाज चलि रहल।



राज्यक बैंक-दिशानिर्देश लागू भेला बाद पहिल वार्षिक समीक्षा आयल।

गलत ढंगसँ पूर्ण रोकल खाता कम।

संदिग्ध भर्ती-शिकायत बेसी—कारण लोक आब रिपोर्ट करैत।

किछु अधिकारी कहलक—

“अपराध बढ़ल।”

ईशान आँकड़ा देखलक।

“रिपोर्ट बढ़ल। अपराधक वास्तविक दर अलग प्रश्न।”

एक बैठकमे ओ स्पष्ट कहलक—

“अधिक शिकायत खराब व्यवस्था प्रमाण नहि हो सकैत; कतेको बेर बेहतर रिपोर्टिंगक प्रमाण।”

कियो पुछलक—

“तखन सफलता की?”

“जे लोक पहिने चुप छल, आब बतबैत। जे वैध पैसा अटकल, ओकर शीघ्र समीक्षा। जे जानि-बुझि खाता बेचैत, ओकर पैटर्न जल्दी पकड़ब।”

आँकड़ा सेहो हेत्वाभास जन्मबैत।

संख्या स्वयं अर्थ नहि कहैत।
सन्दर्भ चाही।



शैलेश मंडलक विभागीय मामला समाप्त भेल।

नौकरी तुरन्त पूर्ण पुनर्स्थापित नहि।
ओकरा शर्तसहित सेवा-वापसी भेटल—परामर्श, वित्तीय निगरानी, अनुशासन।
आरती बच्चासभक कारण घर लौटलीह, मगर कहलीह—
“ई क्षमा नहि। मौका।”
शैलेश मूड़ी डोलौलक।
पहिल वेतनक दिन ओ बैंक सँ नगद नहि निकाललक।
आरतीक संग बैसि पूरा बजट बनौलक।
एक छोट बचत।
ऋण भुगतान।
घर खर्च।
ओ मोबाइलक खेलसभ हटौने बहुत दिन भऽ गेल।
मगर लालसा कखनो-कखनो फेर उठैत।
समूह बैठकीमे ओ कहलक—
“लत मेटल नहि। ओकरा पहचानब सीखल।”
पहरा बाहरक साँप लेल मात्र नहि।
भीतरक लेल सेहो।



सबीना खातूनक बेटी इलाज पूरा कऽ हँसैत फोटो खिंचौलक।

सबीना फोटो दोकानक दीवालपर लगेलनि।

पाछाँ सिलाइ मशीन।

नीचाँ छोट कागच—

“अपन बैंक खाता ककरो किराया पर नहि दिअ।”

कियो सरकारी पोस्टर नहि।

अपन अनुभव।

एक ग्राहक पढ़ि पूछलक—

“एहन सेहो होइत?”

सबीना कहली—

“हमरा संग भेल।”

कथा मुखसँ मुख।

पहरा नीति सँ पहिने लोकक अनुभव बनैत।



अभिषेक बैंकक एक स्थानीय जागरूकता शिविरमे स्वयंसेवक बनल।

पहिल बेर मंचपर गेल तऽ हाथ काँपल।

“हम पुलिस नहि। बैंक अधिकारी नहि। हम गलती केने आदमी छी।”

कमरा चुप।

ओ कहलक—

“कियो अहाँकेँ कहय—खाता दिअ, किछु नहि करबाक, मासिक पैसा भेटत—तखन प्रश्न करू।

कागच माँगू। बैंक सँ पूछू। जल्दी पैसा अधिकांश बेर धीरे दण्ड बनि सकैत।”

ओ परिचालनक किछु नहि बतौलक।

केवल खतरा।

मंजरी पाछाँ बैसल छलीह।

भाई मंचपर।

एक वर्षक देरी मिटि नहि।

मगर ओ देरी आब चेतावनी बनि रहल।



उत्तरायण निधि पुनर्गठन बाद सौरभक नाम संचालक-मण्डलसँ हटाओल गेल।

नब अध्यक्ष सार्वजनिक रूपेँ कहलक—

“संस्था व्यक्ति सँ पैघ।”

रचना समाचार पढ़ि मनमे सोचलीह—

इएह वाक्य अपराध समय सेहो उपयोग भेल छल।

“व्यवस्था व्यक्ति सँ पैघ।”

वाक्य स्वयं निर्दोष।

सन्दर्भ अर्थ बदलैत।

यदि संस्था व्यक्ति सँ पैघ, तखन संस्था अपन पुरान जिम्मेदारी सेहो ढोएत कि केवल नब नाम लेल पवित्र भऽ जाएत?

उत्तरायणक नब बोर्ड पुरान पीड़ित सहायता-कोष लेल राशि देलक।

कानूनी बाध्यता किछु।

स्वैच्छिक किछु।

मृणालिनीकेँ सेहो पत्र आयल।

“विशेष प्रतिपूर्ति।”

ओ पत्र पढ़लीह।

रकम पैघ नहि।

ईशान पुछलक—

“लेब?”

मृणालिनी कहलीह—

“ककर बदला?”

“क्षति।”

“सत्यप्रकाशक?”

मौन।

फेर ओ कहलीह—

“जँ कानून अनुसार अधिकार अछि, लेब। ई क्षमा नहि, मूल्य नहि। केवल प्रतिपूर्ति।”

पैसा नैतिक अर्थ नहि तय करैत।

ओ केवल किछु व्यवहारिक बोझ हलुक करैत।



मृणालिनी ओहि रकमक एक हिस्सा धनेश्वरीक नामपर गामक विद्यालयमे पुस्तक-कोष देलीह।

ईशान पुछलक—

“बाबूक नाम किएक नहि?”

“बहुत नाम होयत।”

“दादी?”

“ओ पहरा सिखौलीह।”

विद्यालयक प्रधानाध्यापक पट्ट बनाबय चाहलक।

मृणालिनी मना केलनि।

“पुस्तक खरीदू। नाम किताबक भीतर लिखि दिअ।”

पहिल पुस्तकक भीतर छोट मुहर—

“धनेश्वरी स्मृति-पुस्तक कोष।”

न फोटो।

न भाषण।

न माला।

ज्ञानक शान्त पहरा।



एक वर्ष बाद ईशानक प्रशिक्षणक छात्रसभमे सँ एक युवती गढ़ नारिकेल आयलीह।

नाम—वैदेही झा।

शोध विषय—आर्थिक अपराधमे सामाजिक जोखिम।

ओ मृणालिनीसँ भेटय चाहैत छलीह।

“साक्षात्कार?”

मृणालिनी पुछलीह।

“जँ अनुमति।”

“की जानब?”

“परिवार पर लम्बा जाँचक असर।”

मृणालिनी हँसलीह।

“कतेक वर्ष चाही?”

वैदेही चुप।

फेर दुनू हँसल।

मृणालिनी कहलीह—

“एक शर्त। हमरा वीरांगना नहि लिखब।”

ईशान बरामदासँ हँसल।

“ई शर्त सबकेँ।”

वैदेही नोटबुक खोललीह।

“तखन पहिल प्रश्न—सबसे कठिन दिन?”

मृणालिनी उत्तर देलीह—

“कोन उम्रक?”

शोधार्थी बुझि गेल—त्रासदी एक दिन नहि।

दीर्घ काल।



संध्याकाल वैदेही कमला-बलानक किनार देखय गेलीह।

ईशान संग।

ओ कादोमे गोहिक निशान देखलक।

“एहि सँ शीर्षक बनि सकैत।”

ईशान मुस्करायल।

“सावधान।”

“क्यों?”

“रूपक प्रमाण नहि।”

वैदेही हँसल।

“अहाँ शिक्षक बहुत छी।”

“घरक रोग।”

झाड़ीमे बिज्जी निकसल।

वैदेही फोन निकालय लागलीह।

ईशान कहलक—

“रहय दिअ।”

“फोटो?”

“सभ संकेत सहेजब जरूरी नहि।”

वैदेही फोन वापस रखलीह।

दुनू देखैत रहल।

बिज्जी पानिक कात गेल।

किछु सूँधलक।

फेर घासमे।

किछु क्षणक दृश्य।

कोनो अभिलेख नहि।

तैयो स्मृति।



राति मृणालिनी पोथी खोललीह।

धनेश्वरीक धुँधल पाँति।

अपन जोड़ल पाँति।

खाली जगह एखनहुँ बहुत।

ओ कलम उठौलीह।

तेसर पाँति लिखलीह—

“पहरा भय नहि; जागरूकता अछि।”

स्याही सुखय देलीह।

पोथी बन्द।

ईशान पुछलक—

“आरो लिखब?”

“जखन जरूरत।”

“ई व्याकरण बनि जाएत।”

“नहि। घरक बात।”

कतेको दर्शन घरक बातसँ पैघ नहि।



अगिला भोर मृणालिनी अकेली नदीक कात गेलीह।

उमर हुनकर चाल धीम कऽ देने छल।

ओ दूरसँ पानि देखलीह।

गोहि देखायल नहि।

बिज्जी सेहो नहि।

केवल धूप।

एक मछुआ जाल फेंकैत।

दू बच्चा स्कूल जाइत।

एक महिला घड़ा भरैत।

जीवन अपराधक प्रतीक बिना सेहो चलैत।

मृणालिनी एहि बातपर प्रसन्न भेलीह।

यदि प्रत्येक पानि गोहि बनि जाए, तखन पहरा पागलपन।

यदि कखनो गोहि नहि मानू, तखन मूर्खता।

बीचमे बुद्धि।

ओ घर दिस घुरलीह।

कादोमे अपन पदचिह्न छोड़ैत।

एहि बेर बिज्जीक नहि।

मनुष्यक।



ईशान अनिरुद्धक पुरान कलमसँ पहिल पाँति लिखलक—

“ई कथा कोनो एक अपराधीक कथा नहि।”

फेर रुकल।

पन्ना फाड़ि देलक।

दोसर पन्ना—

“गढ़ नारिकेलक एक बरसाती राति, जखन सात वर्षक बच्चा सुतल छल, एक गहुमन घरमे घुसल।”

ओ फेर रुकल।

माँक आवाज भीतर—

मनुष्य जकाँ लिखिह।

दादी—

किनार।

अनिरुद्ध—

प्रत्यक्ष अलग, अनुमान अलग।

रचना—

असिद्धकैँ असिद्ध छोड़ू।

ईशान कलम फेर चलौलक।

कथा कहाँ सँ शुरू होय, ई निर्णय सेहो प्रमाण नहि।

साहित्यक निर्णय।

ओ लिखैत रहल।

बाहर आँगनमे बिज्जीक छोट पदचिह्न छल।

भोरक धूप बढ़ैत गेल।

पदचिह्न धीरे-धीरे सुखि कठोर भेल।

किछु समय बाद हवा चलत।

माटि फेर समतल।

मगर जे देखल गेल, से ककरो भीतर रहत।

पहरा एहनहि पीढ़ी बदलैत अछि।



ईशानक लिखल पन्ना धीरे-धीरे बढ़य लागल।

ओ प्रतिदिन नहि लिखैत।

कतेको दिन केवल पुरान फाइल पढ़ैत।

कतेको दिन माएक संग बैसि किछु पुछैत।

कतेको दिन एक पाँति लिखि काटि दैत।

पहिल कठिनाई घटना नहि छल।

स्वर छल।

जँ ओ पुलिसक भाषा अधिक रखय—मनुष्य गायब।

जँ दुख अधिक—प्रमाणक सीमा टूटय।

जँ दर्शन अधिक—कथा बोझिल।

जँ अपराध अधिक—पीड़ित पाछाँ।

ओ पन्नाक ऊपर लिखलक—

“कथा न्यायालय नहि; मुदा न्यायालयक विपरीत सेहो नहि।”

फेर पन्ना पलटल।



एक साँझ वैदेही झा फेर गढ़ नारिकेल आयलीह।

हुनकर शोध आगाँ बढ़ि चुकल।

एहि बेर नोटबुक संग एक प्रश्नावली नहि, केवल दू प्रश्न।

“लम्बा जाँच परिवारक स्मृतिकें बदलैत अछि?”

मृणालिनी कहलीह—

“हाँ।”

“कोना?”

“जे बात पहिले साफ मोन रहैत, बादमे ओकरा कागच पुष्टि करैत। फेर एक दिन बुझाईत नहि—
हम पहिने जानैत रही कि कागच पढ़ि जानलहुँ।”

वैदेही चुप भेलीह।

“तखन साक्षात्कारमे हम की करी?”

“जे पक्का नहि, से लिखू—पक्का नहि।”

“एतबे?”

“एतबे कठिन।”

दूसर प्रश्न—

“न्याय भेटल?”

मृणालिनी हँसलीह।

“अहाँ शोधार्थी सभकेँ ई प्रश्न बहुत पसिन?”

वैदेही सेहो हँसलीह।

“हाँ।”

“तखन उत्तर लिखू—न्याय एक वस्तु नहि जे हाथमे भेटल आ घर अनल। किछु निर्णय, किछु
सत्य, किछु प्रतिकर, किछु स्मृति। बाकी दुख।”

वैदेही बहुत देर बाद नोट केलनि।

एहि बेर शब्द धीरे।



रचना सिन्हाक नब जिलाक ठगी-जाल अपेक्षासँ छोट निकलल।

पाँच खाता।

दू आरोपी।

एक कर्मचारी।

कोनो अंतर्राज्यीय “सम्राट” नहि।

कियो मीडिया निराश।

एक चैनलक प्रतिनिधि कहलक—

“बस एतबे?”

रचना उत्तर देलीह—

“अपराध छोट होय तऽ हमरा प्रसन्न होयबाक चाही।”

पत्रकार हँसल।

“समाचार छोट।”

“तखन अपराध बढ़ेबाक प्रार्थना करू?”

पत्रकार चुप।

रचना तुरन्त पछताइलीह—व्यंग्य फेर।

मगर प्रश्न भीतर सही छल।

अपराध-जाँचक सार्वजनिक कथा कतेको बेर पैघ खलनायक खोजैत।

वास्तविक जीवनमे अधिकांश हानि छोट-छोट लोक, छोट-छोट राशि, छोट-छोट झूठ सँ बनैत।

समवाय फेर।



ईशानक प्रशिक्षणमे एक नब उदाहरण आयल।

एक वृद्ध शिक्षकक पेंशन खाता अचानक रोकल गेल, कारण ओकर नम्बर एक संदेहास्पद डिजिटल व्यवहारसँ जुड़ल देखायल।

जाँचमे निकलल—

बैंक शाखामे पुरान मोबाइल नम्बर गलत रूपेँ अद्यतन।

वृद्धक कोनो अपराध नहि।

न खाता भर्ती।

न कमीशन।

केवल डेटा त्रुटि।

छात्र पुछलक—

“सर, तखन मशीन दोषी?”

ईशान मुस्कुरायल।

“मशीन निर्णायक साधन। डेटा मनुष्य बनबैत। नियम मनुष्य बनबैत। जाँच मनुष्य करैत।”

“तखन गलती ककर?”

“कखनो एकक। कखनो प्रणालीक।”

“दण्ड?”

“हर गलती अपराध नहि।”

ई वाक्य सरल छल।

मगर डिजिटल युगमे जरूरी।

भूल, लापरवाही, धोखा, अपराध—चारू एक नहि।

न्याय केँ भेद चाही।



मृणालिनी धनेश्वरी स्मृति-पुस्तक कोषक किताब देखय विद्यालय गेलीह।

बच्चासभ पुस्तक उलटैत।

कियो नाम नहि पढ़ैत।

कियो मुहर देखैत नहि।

ओ प्रसन्न भेलीह।

यदि दानक नाम पुस्तकसँ पैघ भऽ जाए, तखन उद्देश्य बदलि जाइत।

एक बच्चा विज्ञानक किताब लऽ दौड़ैत ठोकर खायल।

मृणालिनी उठौलीह।

किताबक पन्ना खुलल—

“जीव-जगतमे शिकारी आ शिकारक संतुलन।”

ओ हँसि देलीह।

बच्चा पुछलक—

“की भेल?”

“किछु नहि।”

किताब वापस देलीह।

बिज्जी, साँप, गोहि—प्रकृतिमे कियो नैतिक पात्र नहि।

मनुष्य कथा बनबैत।

ई बात ओ आब स्पष्ट बुझैत छलीह।

तैयो कथा उपयोगी हो सकैत।

जँ रूपककें तथ्य नहि मानल जाए।



प्रदीपक वित्तीय-साक्षरता कक्षा धीरे प्रसिद्ध होय लागल।

कारण ओ भाषण नहि दैत।

ओ कहैत—

“जे बुझल नहि, हस्ताक्षर मत करू।”

“जे कागज वास्तविक सेवा नहि कहैत, ओकरा ‘समायोजन’ कहि छोट मत मानू।”

“जे पैसा अहाँक नहि, केवल अहाँक खातासँ गेल—तकर अर्थ पूछू।”

एक युवक पुछलक—

“अहाँ ई सब कहाँ सीखलहुँ?”

प्रदीप रुकी गेल।

“गलत काज कऽ।”

कमरामे हँसी नहि।

ओ आगाँ कहलक—

“ई गौरवक बात नहि। मुदा जँ गलतीक बाद सही बात जानलहुँ, तकरा लुकाबयब दोसर गलती।”

पछिला बेंचपर तृषा चुपचाप बैसल छलीह।

ओ पिता केँ पहिल बेर सार्वजनिक रूपेँ अपराध न छुपबैत देखलीह।

विश्वास अचानक वापस नहि आयल।

मगर एक ईटा राखल गेल।



मनोज नायकक अपील आंशिक सफल भेल।

मारपीटक प्रत्यक्ष उच्च स्तरक दायित्वक एक आरोप कम भेल।

म्यूल भर्ती आ दबाव-संबंधी मुख्य दोष कायम।

ओकर पिता समाचार सुनि कहलक—

“देखल? बेटा निर्दोष।”

वकील तुरन्त सुधारलक—

“पूरा नहि।”

पिता चिढ़ल।

“दोष घटल कि नहि?”

“घटल।”

“तखन निर्दोष।”

वकील चुप।

मनुष्यक मन द्वैत पसिन करैत।

दोषी।

निर्दोष।

मगर कानून बहुत बेर कहैत—

एहि आरोपमे हँ।

एहिमे नहि।

एहि सीमा धरि।

एहि सीमा पार नहि।

जटिलता न्यायक कमजोरी नहि।

ई ओकर ईमानदारी हो सकैत।



रितेश एक दिन मनोजक पिता सँ बजारमे टकरायल।

वृद्ध ओकरा देखते थूक देलक—

“गद्दार।”

रितेश चुप।

ओ प्रतिवाद करि सकैत छल—

“हमरा मारबौलक।”

“हमरा अपराधमे धकेलक।”

मगर वृद्ध पिता सामने छल, न्यायालय नहि।

रितेश केवल कहलक—

“हम गलत काज केने रही।”

वृद्धक क्रोध कने रुकल।

“हमर बेटा?”

“ओकरा विषय अदालत कहने अछि।”

“तू?”

“हम अपन हिस्सा मानैत छी।”

वृद्ध फेर किछु कहि नहि सकल।

रितेश चलि गेल।

स्वीकारोक्ति कखनो विरोधीकेँ शान्त नहि करैत।

मगर झगड़ाक स्वर बदलि सकैत।



सौरभ बर्धन उच्चतर अपीलक तैयारीमे पुरान उत्तरायण अभिलेख माँगलक।

वकील कहलक—

“हम तर्क करब जे ‘पुरान स्रोत’क अर्थ निवेश इतिहास, अवैध धन नहि।”

सौरभ फाइल पढ़ैत रहल।

एक पन्नामे सत्यप्रकाशक नाम।

ओ बहुत देर तकैत रहल।

वकील पुछलक—

“किछु?”

सौरभ धीरे कहलक—

“ई आदमी तखन मरल?”

“हाँ।”

“हम ओ समय छात्र रही।”

“तैं हत्या संग अहाँक कोनो आरोप नहि।”

“जानैत छी।”

“तखन?”

सौरभ पन्ना बन्द केलक।

“हम बादमे ओकर आपत्ति लुकाबय चाहने रही।”

वकील सतर्क—

“‘लुकाबय’ शब्द मत उपयोग करू।”

सौरभ ओकरा देखलक।

“अदालत लेल नहि कहि रहल।”

“तैयो।”

“ई समस्या अछि।”

“की?”

“हम सभ शब्द एतेक सँवारैत रहलहुँ जे एक दिन हमरा अपने बुझायल नहि की केलहुँ।”

वकील उत्तर नहि देलक।

कानून भाषा माँगैत।

बचाव भाषा चुनैत।

मगर मनुष्यक आत्मबोध कखनो खराब शब्दमे अधिक साफ।



ईशान लेखनक पन्नामे “सौरभ” लिखि फेर काटि देलक।

मृणालिनी पुछलीह—

“क्यों?”

“बहुत लोक जीवित। मुकदमा, अपील।”

“तखन?”

“कथा पूर्ण काल्पनिक बनत।”

“बाबू?”

“ओहो।”

मृणालिनी चकित।

“नाम बदलबह?”

“कथा मे हँ।”

“क्यों?”

“जाहिसँ घटना नकल नहि, अर्थ रहय।”

मृणालिनी बहुत देर सोचलीह।

“तखन सत्य?”

“लेखकीय टिप्पणीमे स्पष्ट—कथा काल्पनिक।”

“आ हमर बात?”

“रूप बदलत।”

“ठीक।”

ओ हँसलीह।

“हम नायिका नहि।”

ईशान सेहो।

“मोन अछि।”

साहित्य आब वास्तविक फाइल सँ दूरी बना रहल छल।

ई दूरी भूल नहि।

सुरक्षा।

रचना।

स्वतंत्रता।



वैदेहीक शोधप्रबन्धक एक अध्याय “दीर्घकालीन न्यायिक अनिश्चितता” पर छल।

ओ मृणालिनीक साक्षात्कारक एक वाक्य उपयोग करय चाहैत छलीह—

“दुख संतुष्ट नहि होइत।”

अनुमति माँगलीह।

मृणालिनी कहलीह—

“नाम बिना।”

“क्यों?”

“वाक्य हमरा सँ पैघ अछि।”

वैदेही मुस्कुरेलीह।

“ठीक।”

अकादमिक लेखमे वाक्य गेल—

एक अनाम विधवा कहैत छथि, “दुख संतुष्ट नहि होइत।”

फुटनोटमे संदर्भ।

कोनो फोटो नहि।

कोनो सनसनी नहि।

दुख ज्ञानक एक पाँति बनल।

ओकर पूरा भार नहि।

कागज कखनो पूरा भार उठा नहि सकैत।



रचना सिन्हा छुट्टी मे गढ़ नारिकेल नहि, राजधानी नगर आयलीह।

ईशान सँ एक चाय-दोकानमे भेट।

“लिखैत छी?” रचना पुछलीह।

“किछु।”

“हमरा पात्र बनायब?”

“नहि।”

“धन्यवाद।”

ईशान हँसल।

“पूरी कथा काल्पनिक।”

“आर नीक।”

“मगर पद्धति—”

रचना कप रखलीह।

“पद्धति ककरो निजी नहि।”

“प्रत्यक्ष, अनुमान...”

“पुरान।”

“समवाय?”

“दार्शनिक।”

“असिद्धकैँ असिद्ध छोडू?”

रचना मुस्कुरेलीह।

“ई हमरा पसंद।”

“तखन उपयोग करब।”

“करू।”

किछु विचार साझा विरासत।

कापीराइट मनुष्यक भाषा पर हो सकैत।

सत्य जाँचबाक सामान्य अनुशासन पर नहि।

ईशान एहि बातक महत्व बुझैत छल।



आँगनमे बिज्जीक नब परिवार स्थिर भऽ गेल।

कखनो एक।

कखनो दू।

एक बेर तीन छोट बच्चा।

मृणालिनी दूर सँ देखैत।

ओ भोजन नहि दैत।

पालतू बनाबऽ प्रयास नहि।

“रक्षककें आश्रित मत बनाउ,” ओ कहलीह।

ईशान हँसल—

“दर्शन?”

“घरक बात।”

छोट बिज्जी सभ खेलैत।

एक-दोसरक पूँछ पकड़ैत।

कियो साँप नहि।

कियो गोहि नहि।

केवल जीवन।

ई दृश्य कथा लेल उपयोगी हो सकैत, ईशान सोचलक।

फेर अपने कें रोकलक।

सभ सुंदर चीज कथा लेल नहि।

किछु केवल देखबाक।



एक दिन कमला-बलानक किनार पर सचमुच एक गोहि धूप खाइत देखायल।

गामक बच्चा सभ दौड़ल।

कियो पत्थर उठौलक।

ईशान चिल्लावल—

“दूर रहू!”

बच्चा कहलक—

“मारू?”

“क्यों?”

“गोहि खराब।”

ईशान ठिठकल।

रूपक अपन खतरा देखौलक।

“गोहि जीव अछि। खराब नहि।”

“तखन कथा?”

“कथामे चिन्ह।”

“साँप?”

“ओहो जीव।”

“बिज्जी?”

“ओहो।”

बच्चा निराश।

“तखन खराब के?”

ईशान हँसल।

“गलत काज।”

बच्चा शायद संतुष्ट नहि।

गोहि पानि दिस सरकल।

कियो पत्थर नहि फेंकल।

ईशान बहुत देर ओहि दृश्यकें देखैत रहल।

रूपक यदि जीवकें अपराधी बना दे, तखन कथा असफल।

ओ राति अपन पाण्डुलिपिमे एक पाँति जोड़लक—

“गोहि दोषी नहि; गोहि केवल मनुष्यक मनमे डूबल खतरा देखाबयवला रूपक छल।”

फेर रुकल।

बहुत स्पष्ट?

शायद।

मगर जरूरी।



मृणालिनी ओ पाँति पढ़लीह।

“ठीक।”

“साहित्य कम नहि भऽ गेल?”

“जँ बच्चा गोहि मारऽ लगय तऽ साहित्यक की लाभ?”

ईशान हँसल।

“ठीक।”

ओ पाँति राखि देलक।

कथा सीखि रहल छल—रूपकक सेहो सीमा अछि।



समय आर आगँ बढ़ल।

धनेश्वरी स्मृति-पुस्तक कोषमे किताब बढ़ल।

मंजरी अस्पतालमे नौकरी पेलनि।

अभिषेकक बैंक-अभिलेख सामान्य भेल।

सबीना नब सिलाइ-मशीन किनलीह।

शैलेशक घर पूर्ण ठीक नहि, मुदा संवाद जारी।

रितेशक दोकान चलल।

प्रदीप प्रशिक्षण करैत।

तृषा कानून पढ़ैत।
विहान अम्बरक छोट नब रूप सँ संघर्ष करैत।
केशव दण्ड भोगैत।
सौरभ अपील लड़ैत।
रचना नब फाइल खोलैत।
ईशान लिखैत।
मृणालिनी जीबैत।
कियो पूर्ण मुक्त नहि।
कियो केवल अपराधी नहि।
कियो केवल पीड़ित नहि।
मनुष्य भूमिका बदलैत।
दायित्व नहि मेटैत।



एक राति मृणालिनी ईशानकेँ बजौलीह।

“पोथी आन।”

धनेश्वरीक पोथी।

तीन पाँति—

“साँपक भय सँ घर छोड़ू नहि; मुदा साँप घरमे अछि ई मानबो नहि, जाबत देखी।”

“आ जँ देखी, तखन डर सँ नहि—बुद्धिसँ पहरा दिअ।”

“पहरा भय नहि; जागरूकता अछि।”

मृणालिनी चौथी पाँति लिखलीह—

“जकरा दोषी कहू, पहिने ओकर काज देखू; ओकर नाम नहि।”

ईशान पढ़लक।

“ई तऽ न्यायालय।”

“घरक बात।”

दुनू हँसल।

मृणालिनी कलम ओकरा देलीह।

“आब तूँ लिख।”

ईशान खाली पाँति देखलक।

बहुत देर।

फेर लिखलक—

“जे नहि जनैत छी, तकरा नहि जनैत छी कहब सेहो पहरा अछि।”

मृणालिनी पढ़लीह।

मूड़ी डोलौलीह।

पोथी बन्द।

पाँच पाँति।

कोनो शास्त्र नहि।

मगर पूरा जीवनक सार।



भोरमे कमला-बलान पर कुहेस।

एक बिज्जी किनारपर।

दूर गोहि धूपक प्रतीक्षा मे पानिक भीतर।

घासमे साँपक पथ हो सकैत।

मनुष्यक गाम जागि रहल।

चूल्हि।

विद्यालय।

बैंक।

अदालत।

मोबाइल।

निविदा।

ट्रेन।

सिलाइ मशीन।

अस्पताल।

कारा।

किताब।

सभ संसार एक साथ।

ईशान बरामदामे पाण्डुलिपि बन्द केलक।

एखन समाप्त नहि।

मगर ओकरा पहिल बेर बुझायल—

कथा कतेक लम्बा हो, अन्ततः प्रश्न इएह रहत—

कियो जागल अछि कि नहि?

आ जागल मनुष्य भय सँ देखैत अछि कि बुद्धिसँ?

देहरीक माटिपर बिज्जीक पदचिह्न छल।

ओ फोटो नहि लेलक।

केवल देखलक।

मोन राखलक।

फेर भीतर जा कऽ लिखय लागल।



ईशानक पाण्डुलिपि आब एक गोपनीय फोल्डरमे नहि रहि गेल।

ओ किछु अंश सुमेधा घोषकें पढ़बाक लेल देलक।

शर्त—

“भाषा देखू। कथा नहि सुधारू।”

सुमेधा हँसलीह।

“विश्लेषक लेखक बनलाक बाद आदेश देब सीखि गेल।”

दू दिन बाद फाइल वापस।

मार्जिनमे एक टिप्पणी—

“एतय ‘हम सभ जानैत छी’ लिखल अछि। कियो ‘सभ’ नहि जानैत।”

ईशान पाँति पढ़ि मुस्करायल।

फेर काटि देलक।

दोसर टिप्पणी—

“एहि पात्रक मनक बात लेखक कोना जानैत?”

ईशान फेर रुकल।

साहित्यक स्वतंत्रता एतय ओकरा बचा सकैत छल।

मगर ओ अपन नियम बना लेने छल—

जहाँ भीतरक मन लिखत, ओ पात्र पूर्ण काल्पनिक होय।

जहाँ वास्तविक अनुभवक छाया, ओतय अनुमानक सीमा साफ।

ओ लिखलक—

“कथा सत्यक प्रति उत्तरदायी हो सकैत, बिना दस्तावेज बने।”

सुमेधा उत्तर देलीह—

“आब लेखक जकाँ बाजू, नोटिस जकाँ नहि।”



तृषा कानून महाविद्यालयमे एक प्रस्तुति देलीह—

“आर्थिक अपराधमे नैतिक उत्तरदायित्व आ विधिक दोष।”

ओ पिता विषय एक्को शब्द नहि कहलीह।

प्रस्तुति समाप्त भेला पर एक छात्र पुछलक—

“यदि कियो आदेश पालन करैत-करैत अपराधक हिस्सा बनि जाए, तखन मालिक दोषी कि कर्मचारी?”

तृषा उत्तर देलीह—

“दुनू हो सकैत। अलग-अलग सीमा धरि।”

“कर्मचारीक डर?”

“परिस्थिति।”

“नौकरी खोएबाक भय?”

“परिस्थिति।”

“तखन निर्दोष?”

“जरूरी नहि।”

“फेर मालिक?”

“ओहो स्वतः पूरा दोषी नहि।”

छात्र हँसल—

“कानून कोनो सरल उत्तर दैत अछि?”

तृषा मुस्कुरेलीह।

“सरल उत्तर चाही तऽ नारा पढ़ू।”

कक्षा हँसि पड़ल।

ओकर अध्यापक पाछाँ सँ कहलक—

“यही बात परीक्षा मे नहि लिखब।”

फेर सभ हँसल।

तृषा घर आयल तऽ प्रदीप पूछलक—

“प्रस्तुति?”

“ठीक।”

“हमर बात आयल?”

“नहि।”

प्रदीप राहतक साँस लेल।

तृषा जोड़लीह—

“मगर अहाँक कारण प्रश्न समझि पेलहुँ।”

प्रदीप उत्तर नहि देलक।

किछु प्रभाव नाम बिना सेहो पीढ़ी बदलैत।



रचना सिन्हाक नब केस अदालत पहुँचलाक पहिने बंद भऽ गेल।

कारण—

मुख्य शिकायतकर्ता स्वयं गलत पहचान केने छल।

बैंकक आन्तरिक जाँचमे एक समान नामवला दोसर खाते संग अभिलेख मिलि गेल।

युवा अधिकारी निराश।

“तीन सप्ताहक काज बेकार।”

रचना कहलीह—

“नहि।”

“किछु निकलल नहि।”

“गलत आदमी पर केस नहि बनल।”

“एतबे उपलब्धि?”

“कतेको बेर सभसँ पैघ।”

युवा अधिकारी चुप।

रचना फाइलक अन्तिम पन्नापर लिखलीह—

“आपराधिक आधार उपलब्ध नहि; अभिलेखीय त्रुटि।”

कियो पदक नहि।

कियो समाचार नहि।

एक निर्दोष आदमीक नाम फाइलसँ बाहर।

न्याय कतेको बेर नकारात्मक उपलब्धि होइत—

जे अन्याय नहि भेल।



गढ़ नारिकेलमे धनेश्वरी स्मृति-पुस्तक कोषक पहिल वर्ष पूरा भेल।

विद्यालयक प्रधानाध्यापक छोट कार्यक्रम करय चाहैत छलाह।

मृणालिनी फेर मना केलनि।

“बच्चा सभ किताब पढ़य, बस।”

“कम सँ कम फोटो?”

“किताबक।”

“अहाँक?”

“नहि।”

ईशान हँसल।

प्रधानाध्यापक हार मानलनि।

दोपहर विद्यालयक बच्चासभ पुस्तकक सूची बनबैत छल।

एक बच्चा पुछलक—

“धनेश्वरी के छलीह?”

शिक्षक कहलक—

“गामक एक वृद्ध।”

“लेखिका?”

“नहि।”

“अध्यापिका?”

“नहि।”

“तखन नाम किएक?”

मृणालिनी दूर सँ सुनलीह।

शिक्षक उत्तर खोजि रहल छल।

ओ आगाँ बढ़लीह।

“क्योंकि ओ चाहैत छलीह बच्चा सीखय।”

बच्चा संतुष्ट।

“बस?”

“बस।”

कतेको जीवनक मूल्य पेशा-परिचयमे नहि समैत।



विहान सारंग अम्बरक नब कार्यालयमे ईशानकेँ एक सार्वजनिक संगोष्ठी लेल आमन्त्रण पठाैलक।

विषय—

“डिजिटल मनोरंजन, उपयोगकर्ता सुरक्षा आ वित्तीय उत्तरदायित्व।”

ईशान बहुत देर विचार केलक।

माँक लग गेल।

“जाउ,” मृणालिनी कहलीह।

“अम्बर।”

“आब?”

“बदलल अछि, मगर वही नाम।”

“तूँ ओकर कर्मचारी नहि।”

“नहि।”

“तखन प्रश्न पूछ।”

ईशान गेल।

विहान मंच पर सार्वजनिक रूपेँ कहलक—

“हम पहिने वृद्धि केँ सफलता मानैत रही। आब बुझैत छी—जे वृद्धि उपयोगकर्ता केँ तोड़ि दे, से संख्या मात्र।”

एक श्रोता पुछलक—

“ई सब न्यायालय बाद बुझायल?”

विहान बिना बचाव—

“किछु पहिने बुझि सकैत रही। नहि बुझलहुँ।”

ईशान ओकरा देखलक।

ई वाक्य सुधारक प्रमाण नहि।

मगर बहाना सेहो नहि।

अपन देर स्वीकार करब छोट बात नहि।



ईशान अपन प्रस्तुति मे अपराधी नाम नहि लेल।

ओ केवल चारि वृत्त बनौलक—

मनोरंजन।

लत।

ऋण।

भर्ती।

फेर पाँचम—

वित्तीय दुरुपयोग।

“सभ उपयोगकर्ता एहि वृत्तमे नहि जाएत,” ओ कहलक। “सभ खेल अपराध नहि। सभ हार लत नहि। मुदा सीमा धुँधली होमय तऽ कम्पनीक जिम्मेदारी बढ़ैत।”

एक युवा उद्यमी पुछलक—

“उपयोगकर्ता स्वयं जिम्मेदार नहि?”

“अछि।”

“तखन कम्पनी किएक?”

“डुनू हो सकैत।”

सभ फेर वही उत्तर।

दायित्व विभाज्य।

एक आदमीक गलती दोसरक जिम्मेदारी मिटबैत नहि।



संगोष्ठी बाद विहान ईशानसँ अकेले कहलक—

“तोहर बाबूक पुरान ई-पत्र फेर पढ़लहुँ।”

ईशान चुप।

“ओ ‘सेवा सत्यापन’ पर अड़ल छल।”

“हाँ।”

“हम तखन युवा रही। डरि गेल रही।”

“जानैत छी।”

“बहुत वर्ष ई सोचि अपने केँ बचेलहुँ—हम छोट रही।”

ईशान ओकरा देखलक।

“छोट होयब जिम्मेदारी घटा सकैत। शून्य नहि।”

विहान हलुक हँसल।

“तोहर माए जकाँ बाजैत छह?”

“घरक रोग।”

दुनू कुछ क्षण चुप।

विहान कहलक—

“अम्बरक पुरान भवनमे एक छोट कक्ष बनाबऽ सोचैत छी—आन्तरिक अभिलेख, गलत निर्णय, चेतावनी, सुधार।”

“स्मारक?”

“नहि। प्रशिक्षण।”

ईशान तुरन्त कहलक—

“मृतकक नाम सजावट मत बनाउ।”

“नहि।”

“पुरान गलतीक पूरा संदर्भ।”

“हाँ।”

“तखन करू।”

स्मृति यदि संस्थाक सजावट बनि जाए, फेर स्मृति-शोधन।

यदि असुविधाजनक प्रश्न बनि रहय—तखन पहरा।



सौरभक उच्चतर अपील आंशिक रूपेँ स्वीकार भेल।

दोषक एक तकनीकी अंश हटायल।

मुख्य आर्थिक सहायता संबंधी निष्कर्ष कायम।

दण्डक शेष अवधि घटल।

समाचार—

“सौरभ को बड़ी राहत।”

असल आदेश—

“सीमित राहत।”

मृणालिनी अखबार पढ़ि मुस्कुरेलीह।

ईशान पुछलक—

“की?”

“आब शीर्षक पढ़ि निर्णय नहि बुझैत छी।”

“प्रगति।”

“थाकान।”

दुनू हँसल।



केशव जेल पुस्तकालयमे नियमित लिखनाइ शुरू केलक।

डायरी नहि।

पीड़ितक नाम नहि।

केवल प्रश्न।

“कतेक चेतावनी बाद अज्ञान बहाना नहि रहैत?”

“कम्पनीक लक्ष्य कर्मचारीक नैतिकता बदलैत?”

“जँ सब लाभ पबैत, जिम्मेदारी ककर?”

“कागच साफ होय तऽ पैसा साफ?”

एक दिन कारा-शिक्षक कहलक—

“ई लेख बनि सकैत।”

केशव हँसल।

“हम लेखक नहि।”

“तखन?”

“देर सँ प्रश्न पूछनिहार।”

शिक्षक कहलक—

“देर सँ पूछल प्रश्नो प्रश्न।”

केशव पन्ना बन्द केलक।

ओकर दण्ड समाजक क्षति पूरा नहि करैत।

मगर जँ जेल केवल समय काटब हो, तखन राज्य सेहो हारैत।



रितेशक दोकानमे एक किशोर आयल।

फोन मरम्मत।

भुगतान लेल डिजिटल हस्तान्तरण करय चाहलक।

नेटवर्क समस्या।

किशोर कहलक—

“भैया, अहाँ अपन खाता दिअ, हमरा मित्रक पैसा आयत, फेर अहाँ हमरा नगद दिअ।”

रितेश एकदम स्थिर।

पुरान वाक्य।

नब चेहरा।

“नहि।”

“क्यों? छोट रकम।”

“अपन पैसा अपन खाता।”

“भैया, बहुत जल्दी अछि।”

“तखन बैंक।”

किशोर चिढ़ि चलि गेल।

रितेशक हाथ काँपि रहल छल।

ओ अभिषेककेँ फोन केलक।

“आज एक बात भेल।”

सभ सुनौलक।

अभिषेक चुप।

फेर कहलक—

“ठीक केलह।”

एतबे।

रितेश फोन रखलक।

कतेको सुधारक प्रमाण न्यायालय नहि, छोट अस्वीकार होइत।



शैलेशक विद्यालयमे वित्तीय जागरूकता सप्ताह भेल।

प्रधानाध्यापक ओकरा मंच पर बोलय नहि चाहैत छलाह।

पुरान मामला।

“बच्चा पर असर।”

शैलेश स्वयं कहलक—

“ठीक।”

ओ पाछाँ बैठल।

मुख्य वक्ता सामान्य सावधानी बतौलक।

कार्यक्रम बाद दू वरिष्ठ छात्र शैलेशक लग आयल।

“सर, अहाँ विषय लोक कहैत...”

शैलेश रोकलक नहि।

“हाँ, हम ऑनलाइन जुआमे फँसल रही।”

दुनू चकित।

“सच?”

“हाँ।”

“फेर नौकरी?”

“शर्तसहित वापस।”

“सर, कतेक हारल?”

शैलेश रकम नहि कहलक।

“रकमसँ बेसी भरोसा।”

“फेर खेलब?”

“लालसा कखनो उठैत।”

“तखन?”

“ककरो कहैत छी। फोन दूर रखैत। समूह बैठक।”

बच्चा सभ पहिल बेर लत केँ ‘कमजोर चरित्र’ नहि, निरन्तर निगरानीक विषय रूपमे सुनलक।

पहरा भीतर।



मंजरी अस्पतालमे एक मरीजक परिवारक बैंक खाता ठगीक कारण रोकल सुनलीह।

ओ तुरन्त पुराने दर्दक कारण उत्तेजित भऽ सकैत छलीह।

मगर ओ अस्पतालक सामाजिक कार्यकर्ता केँ कहलीह—

“हम बैंक निर्णय नहि जानैत। केवल एहि परिवारक वैध चिकित्सा-पैसा अलग सत्यापित हो सकैत कि नहि, पूछू।”

ई फर्क छोट।

पहिने—

“खाता खोलू।”

आब—

“तथ्य जाँचू।”

दुख ओकरा उतावला नहि, सावधान बनौने छल।



ईशानक पाण्डुलिपि पचास हजार शब्द लग पहुँचेबाक पहिने ओ रुकल।

ओ मृणालिनीकेँ किछु पन्ना पढ़ौलक।

मृणालिनी बीचमे कहलीह—

“एहि पात्रक रोअयब कम करू।”

“क्यों?”

“सभ दुख आँसू नहि।”

ईशान कलम उठा लेल।

“आ एतय?”

“एतय आदमी बहुत नीक बनि गेल।”

“कौन?”

“जे गलती स्वीकार करैत।”

“तखन?”

“स्वीकार केलासँ आदत तुरन्त नहि बदलैत।”

ईशान फेर नोट।

“माँ, अहाँ सम्पादक।”

“नहि। जीवन देखल।”

कथा मिठास दिस जाए तऽ मृणालिनी काटैत।

अतिनाटकीयता दिस जाए तऽ रोकैत।

ओ चाहैत छलीह—

दुख दुख रहय।

मनुष्य मनुष्य।



एक राति मृणालिनी नींद सँ उठलीह।

बाहर कुकुर भौंकि रहल।

पुरान भय एक क्षण लौटल—

कियो आयल?

साँप?

चोर?

पत्रकार?

बीस वर्षक स्मृति देहमे रहैत।

ओ दरबज्जा तुरन्त नहि खोललीह।

खिड़की सँ देखलीह।

किछु नहि।

कुकुर दोसर गामक किछु आवाज पर।

ओ वापस बिछावन पर गेलीह।

अपने केँ धीमे कहलीह—

“सभ आवाज खतरा नहि।”

धनेश्वरीक पाँति।

पहरा भय नहि।

जागरूकता।

ओ फेर सुतलीह।

ई छोट राति कोनो मुकदमामे दर्ज नहि।

मगर शायद एहि कथा केर एक महत्वपूर्ण विजय।

भयक साम्राज्य कने घटल।



भोरमे ईशान पोथी खोललक।

पाँच पाँति।

खाली छैठम।

ओ माएक रातिक बात नहि जानैत।

अपने एक पाँति लिखलक—

“पहरा देबाक बादो जीवन जीब जरूरी अछि।”

मृणालिनी पढ़लीह।

बहुत देर चुप।

फेर कहलीह—

“ई राख।”

छह पाँति।

घरक न्याय-दर्शन पूर्ण नहि।

कखनो होयत नहि।

पूर्णता सेहो कतेको बेर छल।

जीवन नब स्थिति देत।

नब पाँति चाही।



कमला-बलानक किनार पर एहि वर्ष पानि कम छल।

गोहि दूर बालू पर धूप खाइत।

एक बिज्जी खेतक मेड़पर।
दुनू एक-दोसरक कात नहि।
कथा लेखक चाहैत तऽ हुनका आमने-सामने करा सकैत।
जीवनकेँ आवश्यकता नहि।
ईशान दूर सँ देखलक।
ओ नोटबुक खोलल नहि।
बस खड़ा रहल।
कुछ दृश्य प्रतीक बनबाक पहिने साधारण रहय देबाक चाही।
मृणालिनी पाछाँ सँ आबि कहलीह—
“चल, भोजन ठंढा होयत।”
ईशान घुरल।
पाछाँ नदी।
आगाँ घर।
पहरा बीचमे।
जीवन सेहो।



ईशानक लिखाइ धीरे-धीरे घरक चीज भऽ गेल।
मृणालिनी आब पन्ना माँगि नहि पढ़ैत छलीह।
ओ केवल कखनो पूछैत—
“आज लिखलह?”
“हाँ।”
“कतेक?”
“तीन पन्ना।”

“नीक?”

“पता नहि।”

“तखन काल्हि पढ़।”

ई सलाह लेखक लेल छल कि जीवन लेल—ईशान नहि बुझैत।

कतेको बात मृणालिनी बिना सिद्धान्तक सिद्धान्त बनि गेल छलीह।



एक दिन ईशानकेँ बैंक संघसँ फोन आयल।

नब शिकायतक ढेर।

एहि बेर समस्या पुरान म्यूल-खाता भर्ती जकाँ नहि।

लोककेँ फोन पर परिवारक सदस्यक आवाज जकाँ सुनाइत।

आपात स्थिति।

तत्काल पैसा।

किछु मिनट बाद बुझाइत—आवाज असली नहि।

ईशान पहिल प्रश्न पूछलक—

“कतेक मामला पुष्ट?”

उत्तर—

“एखन कम। अफवाह बेसी।”

“तखन पहिले ई अलग करू—पुष्ट, संदिग्ध, अपुष्ट।”

दूसर कात अधिकारी चुप।

“हमरा त्वरित सलाह चाही।”

“तत्काल सलाह—आवाज मात्र प्रमाण नहि। परिचित नम्बर, परिवारक दोसर माध्यम, बैंक पुष्टि।”

“अपराधी तरीका?”

“ओ विषय पुलिस देखत। हम पीड़ित-सुरक्षा देखब।”

नब तकनीक।

पुरान नियम।

प्रत्यक्ष जेना लगैत, सदिखन प्रत्यक्ष नहि।

आवाज सेहो कृत्रिम हो सकैत।

शब्द-प्रमाणक नब संकट।



रचना सिन्हाकें सेहो एहन मामला भेटल।

एक वृद्धा कहलीह—

“हम अपन बेटाक आवाज सुनलहुँ।”

“बेटा कतऽ छल?”

“विदेश।”

“फोन?”

“नब नम्बर।”

“की कहलक?”

“दुर्घटना। पैसा चाही।”

“अहाँ भेजलहुँ?”

“हाँ।”

“फेर?”

“दू घंटा बाद बेटा फोन केलक—किछु भेल नहि।”

रचना वृद्धाक चेहरा देखलीह।

ओ अपराधी खोजबाक पहिने लज्जा देखलीह।

“हम मूर्ख छी,” वृद्धा कहलीह।

“नहि।”

रचना तुरन्त शब्द रोकलीह।

ओ सांत्वना नहि, तथ्य चाहैत छलीह।

“अहाँ परिचित आवाज पर भरोसा केलहुँ। एहि भरोसाक दुरुपयोग भेल।”

“हमरा बुझबाक चाही छल।”

“आब अगिला बेर सत्यापन करब।”

वृद्धा आँखि नीचाँ।

“पैसा?”

“जाँच चलत। वापस भेटत—एखन नहि कहि सकैत।”

फेर वैह।

झूठी आशा नहि।

दुखक बीच सच।



ईशान एहि नब जोखिम पर प्रशिक्षण बनौलक।

शीर्षक सरल—

“आवाज सुनू, मुदा पुष्टि करू।”

ओ तकनीकी नकल कोना बनैत—ई नहि पढ़ौलक।

ओ केवल भरोसाक संरचना पढ़ौलक।

परिवार।

आपात स्थिति।

समयक दबाव।

भय।

गोपनीयता।

“अपराधी तकनीक बदलैत,” ओ कहलक, “मगर मनुष्यक कमजोर क्षण बहुत पुरान।”

एक छात्र पुछलक—

“सर, तखन भविष्य मे ककरो आवाज पर भरोसा नहि?”

ईशान रुकल।

“यदि अविश्वासे समाधान हो, समाज चलत नहि।”

“तखन?”

“भरोसा राखू। सत्यापन जोड़ू।”

यही पहरा।

भय नहि।

जागरूकता।



मृणालिनी एहि प्रशिक्षणक बात सुनि हँसलीह।

“आब आवाजो साँप?”

“माँ!”

“तूँ सबकेँ रूपक बनबैत।”

ईशान मुस्कुरायल।

“नहि। एहि बेर नहि।”

“ठीक।”

फेर मृणालिनी गंभीर—

“भरोसा खत्म कऽ अपराधी जीतत।”

ईशान चुप।

ओ वाक्य लिखि लेल।

“माँ, ई उपयोग करब।”

“नाम नहि।”

“ठीक।”

“आ हमरा विदुषी मत बनाबिह।”

“ठीक।”

दुनू हँसल।



तृषा अपन कानून-अध्ययनमे एक लेख लिखलीह—

“प्रमाणक नब रूप आ पुरान सावधानी।”

ओ पिता केँ मसौदा नहि देखौलक।

प्रकाशन बाद प्रति देलक।

प्रदीप शीर्षक पढ़ि कहलक—

“बहुत भारी।”

“पढ़ू।”

लेखमे एक वाक्य छल—

“तकनीकी विश्वसनीयता बढ़ला सँ न्यायिक सावधानी घटबाक नहि, बढ़बाक चाही।”

प्रदीप पन्ना पर उँगली रखलक।

“ई ठीक।”

“क्यों?”

“पहिने कागज साफ देखाइत छल, लोक मानि लैत। आब आवाज साफ होयत, वीडियो साफ होयत।”

“तखन?”

“साफ देखब सत्य नहि।”

तृषा पिता दिस तकलीह।

“अहाँ लेखा पढ़ब बन्द नहि केलहुँ।”

प्रदीप हलुक हँसल।

“गलत लेखा छोड़लहुँ।”

घरक संवाद आब अपराधक चर्चा सहि सकैत छल।

घाव दाग बनि रहल।

मेटल नहि।



सबीना खातूनक दोकानमे एक दिन एक ग्राहक कहली—

“दीदी, हमरा खाता सँ बहिनक दोस्त पैसा लऽ चाहैत। दू दिन लेल।”

सबीना मशीन रोकलीह।

“किएक?”

“ओकरा लिमिट...”

“बैंक जाउ।”

“छोट बात।”

सबीना अपना पुरान पाँच हजार मोन पड़ल।

“हमरो छोट लगने छल।”

ग्राहक हँसलीह—

“अहाँ डरबैत छी।”

“हाँ।”

सबीना बिना लज्जा कहलीह—

“एहि बात सँ डर ठीक।”

फेर सुधारलीह—

“डर नहि—सावधानी।”

धनेश्वरीक पोथी ओ नहि पढ़ने छलीह।

तैयो समाजक अनुभव एके वाक्य अलग-अलग घरमे बना रहल छल।



शैलेशक विद्यालयमे एक छात्र चोरी सँ जुआ-जइसन खेल खेलैत पकड़ा गेल।

प्रधानाध्यापक ओकर फोन जब्त कऽ माता-पिताकेँ बजौलनि।

शैलेश बैठकमे नहि छल।

फेर प्रधानाध्यापक स्वयं ओकरा सलाह लेल बजौलनि।

“अहाँ अनुभव...”

वाक्य अधूरा।

पहिने यही अनुभव ओकरा मंचसँ दूर रखने छल।

आब मदद लेल।

शैलेश छात्रकेँ एकान्तमे केवल पुछलक—

“कतेक दिन?”

“किछु।”

“पैसा?”

“बहुत नहि।”

“झूठ बोलने छह घरमे?”

छात्र चुप।

“एतयसँ शुरू कर। रकम बादमे।”

“सर, पुलिस?”

“एखन विद्यालय आ परिवार। जँ वित्तीय अपराधक बात निकलत तऽ नियम अनुसार।”

“हम खराब छी?”

शैलेश लंबे समय बाद कहलक—

“काज खराब हो सकैत। तूँ पूरा आदमी एक काज नहि।”

ई वाक्य कहिते ओकरा अपने लग रोअय इच्छा भेल।

कियो ओकरा ई बात पहिने कहने होयत तऽ?

शायद किछु बदलत।

शायद नहि।

इतिहास ‘शायद’सँ भरल।

वर्तमानमे काज करब संभव।



रितेशक दोकान आब स्थिर आय देब लागल।

ओ एक सहायक रखलक—अठारह वर्षक लड़का, नाम मोनू।

पहिल दिन रितेश बैंक-भुगतान विषय एक नियम कहलक—

“दोकानक पैसा दोकानक खाता। ग्राहकक निजी पैसा हमरा खातामे नहि।”

मोनू हँसल।

“एतबा नियम?”

“सबसे जरूरी।”

“क्यों?”

रितेश उत्तर देलक—

“हम महँग सीखने छी।”

मोनू अधिक नहि पुछलक।

कतेको शिक्षा पूर्ण आत्मकथा बिना सेहो दी जा सकैत।



विहान सारंग अम्बरक प्रशिक्षण-कक्ष तैयार केलक।

दीवालपर सफलता पुरस्कार नहि।

चारि असफल निर्णय।

“चेतावनी केँ वृद्धि-विरोधी मानल।”

“बाहरी साझेदारक भूमिका अस्पष्ट छोड़ल।”

“उपयोगकर्ता-हानि केँ पर्याप्त जल्दी नहि देखल।”

“वित्तीय विभाजनक अर्थ पर पर्याप्त प्रश्न नहि।”

एक कोना खाली।

शीर्षक—

“जे एखन नहि देखैत छी।”

ईशान कक्ष देखय गेल।

ओ खाली कोना पर रुकल।

“ई अच्छा।”

विहान कहलक—

“सबसे कठिन।”

“क्यों?”

“प्रबन्धन खाली स्थान पसिन नहि करैत।”

ईशान मुस्करायल।

“जाँच सेहो नहि।”

दुनू हँसल।

असिद्धकेँ असिद्ध छोड़बाक संस्थागत रूप शायद इएह खाली दीवाल।



सौरभ बर्धन दण्डक शेष अवधि पूरा कऽ बाहर आयल।

कैमरा कम।

समाचारक रुचि घटि चुकल।

ओ सीधा घर गेल।

किछु सप्ताह सार्वजनिक रूपेँ किछु नहि कहल।

फेर उत्तरायणक नब बोर्ड ओकरा एक सार्वजनिक संवाद लेल आमन्त्रण देलक—

“पुरान शासन-व्रुटि सँ सीख।”

कई सदस्य विरोध।

“दोषसिद्ध पूर्व अधिकारी मंच पर?”

आखिर कार्यक्रम बिना प्रचार, सीमित श्रोतामे।

सौरभ कहलक—

“हम एहि मंच पर अपना केँ सुधारक प्रमाणित करय नहि आयल छी। हम केवल एक बात कहब—कंपनीक भाषा मनुष्यकेँ जिम्मेदारी सँ दूर कऽ सकैत।”

कियो पुछलक—

“उदाहरण?”

“जखन हम ‘जोखिम अलग’ कहैत रही, कखनो-कखनो असल अर्थ छल—असुविधाजनक बात नजरिसँ अलग।”

“अपराध स्वीकार?”

सौरभ रुकल।

“जे न्यायालय सिद्ध केने अछि से आदेशमे अछि। हम एखन नैतिक भाषा कहैत छी।”

ई भेद साफ।

कानूनक निर्णय बदलबाक मंच नहि।

आत्मबोधक अलग भाषा।



मृणालिनी वृद्ध भऽ रहल छलीह।

आब सीढ़ी धीरे।

घुटना दुखैत।

ईशान राजधानी नगर कम, गाम अधिक रहय लागल।

एक साँझ ओ दवा देइत कहलक—

“माँ, शहर चलू। अस्पताल नजिक।”

“एखन नहि।”

“क्यों?”

“घर।”

“घर अस्पताल नहि।”

“हम मरीज नहि एखन।”

ईशान चुप।

मृणालिनी मुस्कुरेलीह।

“तू सभ बात जाँचक प्रश्न जकाँ किएक पूछैत छह?”

“आदत।”

“खराब।”

“रचना मैडम कहती—”

“हम रचना मैडम नहि।”

दुनू हँसल।

उमर त्रासदी बनबाक पहिने साधारण झुंझलाहट सेहो।

जीवन एतहि सच।



धनेश्वरीक पोथी आब अलमारीक ऊपर नहि, मृणालिनीक सिरहाना लग रहैत।

एक राति ओ ईशानकेँ कहलनि—

“सातम पाँति लिख।”

“की?”

“तूँ सोच।”

ईशान पोथी खोललक।

छह पाँति।

साँपक भय।

बुद्धिसँ पहरा।

पहरा जागरूकता।

नाम नहि, काज।

असिद्धकेँ असिद्ध।

पहरा बाद जीवन।

ओ बहुत देर सोचलक।

फेर लिखलक—

“भरोसा छोड़ू नहि; भरोसाकेँ आँखि दिअ।”

मृणालिनी पढ़लीह।

“ई नीक।”

“आवाजवला केस सँ।”

“घरमे सेहो लागू।”

“माँ!”

“की?”

ओ हँसलीह।

पोथी बन्द।

सात पाँति।

किसी विश्वविद्यालयक पाठ्यक्रम नहि।

मगर घरक दीवाल पर पीढ़ी-दर-पीढ़ी टिकि रहल बुद्धि।



एक दिन वैदेही झा अपन शोधप्रबन्धक अंतिम प्रति लऽ आयलीह।

ओ मृणालिनीकेँ धन्यवाद देलीह।

“अहाँक नाम कहाँ?”

“आभारमे—यदि अनुमति।”

मृणालिनी सोचलीह।

“केवल नाम। कथा नहि।”

“ठीक।”

ईशान पुछलक—

“शीर्षक?”

वैदेही कहलीह—

“दीर्घ न्याय, सामाजिक स्मृति आ आर्थिक अपराध।”

मृणालिनी पुछलीह—

“बिज्जी नहि?”

सभ हँसल।

वैदेही कहलीह—

“ओ शोध नहि, शायद साहित्य।”

ईशान माएक कात देखलक।

मृणालिनी आँखि दबेलीह।



रचना सिन्हा एक प्रशिक्षण-पुस्तिका तैयार करैत छलीह।

शीर्षक—

“प्रारम्भिक डिजिटल वित्तीय जाँचमे प्रमाण-अनुशासन।”

प्रथम पृष्ठ पर पाँच वाक्य—

“असामान्य व्यवहार अपराधक पर्याय नहि।”

“खाताधारक आ वास्तविक नियंत्रक एके व्यक्ति हो—ई मानि नहि चलू।”

“तकनीकी सामग्रीक प्रामाणिकता आ ओकर अर्थ अलग प्रश्न।”

“साक्षी जे नहि मोन पाड़ि सकैत, ओकरा मोन पाड़ेबाक प्रयास मत करू।”

“गलत परिकल्पना हटेनाइ सेहो प्रगति।”

रोहित प्रति पढ़ि फोन केलक—

“मैडम, दर्शनक नाम नहि।”

“जरूरत?”

“नहि।”

“तखन।”

ज्ञान कतेको बेर स्रोतक नाम बिना व्यवहारमे जीवित रहैत।

मगर स्रोत विसरब सेहो ठीक नहि।

रचना अन्तिम पृष्ठ पर छोट संदर्भ-सूची जोड़लीह—

भारतीय साक्ष्य-विचार।

तर्कशास्त्र।

न्याय-दर्शनक प्रमाण-विमर्श।

आधुनिक डिजिटल फॉरेन्सिक पद्धति।

पुरान आ नब।

संग-संग।



ईशानक पाण्डुलिपि आब पूरा उपन्यासक आकार लऽ रहल छल।

ओ अंतिम भाग लिखबाक प्रयास करैत बार-बार रुकैत।

“अन्त कहाँ?”

मृणालिनी पुछलीह।

“पता नहि।”

“सभ मरे तखन?”

“माँ!”

“उपन्यासमे लोक एहन करैत।”

“हम नहि।”

“तखन विवाह?”

“माँ!”

ओ जोर सँ हँसलीह।

बहुत दिन बाद एतेक।

फेर खाँसी।

ईशान पानि देलक।

मृणालिनी साँस सम्हारि कहलीह—

“अन्त जीवन जकाँ कर। किछु पूरा, किछु बाकी।”

ईशान चुप।

ओ शायद एहि उपन्यासक अन्तिम नियम छल।

मगर कथा एखन समाप्त नहि।



कमला-बलान पर साँझ उतरि रहल।

बिज्जीक नब बच्चा सभ आब बड़े भऽ रहल।

एक मेड़ पार।

एक झाड़ी।

एक दूर।

गोहि पानिक दोसर कात।

किसी संघर्षक आवश्यकता नहि।

ईशान माएक संग धीरे चलैत।

मृणालिनी लाठी टेकैत।

“थाकलहुँ?”

“कने।”

“घुरू?”

“कने आगाँ।”

दुनू कने आगाँ गेल।

फेर रुकल।

नदी देखल।

कियो बात नहि।

किछु सत्य मौनमे सेहो रहि सकैत।

जँ मौन भयक नहि, पूर्णताक आग्रह छोड़बाक हो।

फेर मृणालिनी कहलीह—

“चल।”

दुनू घर दिस घुरल।

पाछाँ पानि।

किनार पर पदचिह्न।

आगाँ दीपक हलुक रोशनी।

पहरा चलैत रहल।



मृणालिनीक घुटना दुखाइ अब केवल घुटना धरि नहि रहल।

थकान बढ़ल।

भोजन कम।

कखनो साँस चढ़ि जाए।

ईशान हुनका शहरक अस्पताल लऽ गेल।

जाँच।

रक्त।

हृदय।

फेफड़ा।

उमर।

कियो एक नाटकीय रोग नहि।

कई छोट कमजोरी।

चिकित्सक कहलक—

“देखभाल चाही। नियमित दवा। संक्रमण सँ बचाउ। अचानक हालत बिगड़ि सकैत।”

मृणालिनी सीधे पुछलीह—

“घर जा सकैत छी?”

“हाँ।”

“तखन।”

ईशान बीचमे—

“किछु दिन शहर—”

“घर।”

चिकित्सक ईशान दिस देखलक।

“यदि घरमे देखभाल संभव अछि, रहि सकैत छथि।”

मृणालिनी मुस्कुरेलीह।

निर्णय छोट छल।

मगर एखन हुनकर जीवनक सबसे महत्वपूर्ण अधिकार—

कहाँ रहब।



गढ़ नारिकेल लौटि ओ सिरहाना लग धनेश्वरीक पोथी रखलीह।

सात पाँति।

ईशान दवा समय लिखि देलक।

सुबह।

दुपहर।

राति।

मृणालिनी पुछलीह—

“ई सेहो प्रमाण?”

“नहि। याद।”

“ठीक।”

दिन सामान्य बनाबय प्रयास भेल।

बरामदा।

धूप।

पुस्तक।

कखनो पड़ोसिन।

कखनो वैदेही।

कखनो तृषाक फोन।

कखनो रचना सिन्हाक छोट संदेश—

“कैसी हैं?”

मृणालिनी फोन पर कहलीह—

“जाँच अधिकारीक प्रश्न बहुत छोट।”

रचना हँसलीह।

“उत्तर?”

“चलि रहल।”

“एतबा काफी।”

जीवनक अंतिम वर्षोमे “चलि रहल” बड़ा उत्तर हो सकैत।



ईशान लिखनाइ धीमा कऽ देलक।

माँक सोयल समय लिखैत।

जागल तऽ संग बैसैत।

एक दिन मृणालिनी कहलीह—

“तोरा लिखबाक अछि।”

“बादमे।”

“बादमे केतबा?”

ईशान चुप।

“हम एखन छी। एही समय लिख। बादमे याद बदलत।”

ईशानक आँखि भरि आयल।

“माँ...”

“रोअ मत। लेखकीय नुकसान।”

दुनू हँसल।

मृणालिनी फेर कहलीह—

“हमर मृत्यु लिखबाक जल्दी मत करिह।”

ईशान स्थिर।

“एहन किएक कहैत छी?”

“क्योंकि लेखक अंत खोजैत।”

“हम बेटा छी।”

“दुनू।”

मृणालिनी आँखि मूनि लेलनि।

“पहिने बेटा रह।”



एक साँझ पोथी खोलि ओ आठम पाँति लिखबाक कहलीह।

ईशान कलम हाथमे।

“की?”

मृणालिनी खिड़की बाहर देखलीह।

बिज्जी नदारद।

गोहि नदारद।

केवल गोधूलि।

“पहरा ककरा लेल?”

“घर?”

“मनुष्य?”

“सत्य?”

“सब?”

ओ हँसलीह।

“ठीक। लिख।”

ईशान बहुत देर खाली पाँति देखलक।

फेर लिखलक—

“पहरा जकरा बचाबय चाहैत छी तकर स्वतंत्रता नहि खाय।”

मृणालिनी पढ़लीह।

धीरे मूड़ी डोलौलीह।

“ई जरूरी।”

ईशान बुझलक—माँ अस्पताल नजिक शहर रहबाक ओकर आग्रह मोनमे रखने छलीह।

सुरक्षा सेहो बन्धन बनि सकैत।

रक्षा आ स्वायत्तता बीच सीमा।

न्याय केवल अपराधक प्रश्न नहि।

प्रेमक सेहो।



रचना सिन्हा प्रशिक्षणक बीच एक केस सुनलीह—

एक परिवार वृद्ध पिता केँ घरसँ बाहर नहि जाए दैत, कारण ऑनलाइन ठगीक भय।

फोन नहि।

बैंक कार्ड नहि।

स्वतंत्रता नहि।

“सुरक्षा,” परिवार कहैत।

वृद्ध कहैत—

“कैद।”

रचना ईशानक नब पाँति नहि जानैत छलीह।

तैयो बैठकमे कहलीह—

“जोखिम-नियंत्रण व्यक्तिक जीवन समाप्त करबाक नाम नहि।”

नब अपराध नब अति-सुरक्षा जन्मबैत।

भयक दोसर चेहरा।

अपराधी यदि लोककें एतेक डरा दे जे ओ भरोसा, स्वतंत्रता, बाहर निकलनाइ छोड़ि दे—तखन
अपराधक प्रभाव पैसा सँ बेसी।



तृषा छुट्टी मे गढ़ नारिकेल आयलीह।

प्रदीप संग नहि।

अकेली।

मृणालिनी ओकरा देखिते कहलीह—

“कानूनवाली।”

तृषा हँसलीह।

“एखन विद्यार्थी।”

“कानून पढ़ि लोक बेसी निश्चित होइत कि कम?”

तृषा सोचलीह।

“कम।”

“नीक।”

दुनू हँसल।

तृषा पोथी देखलीह।

आठ पाँति।

“ई प्रकाशित करब चाही।”

मृणालिनी तुरन्त—

“नहि।”

“क्यों?”

“घरक बात।”

तृषा कहलीह—

“कतेको घरक बात समाजक काम।”

मृणालिनी चुप।

ईशान दूर सँ सुनैत।

किछु समय बाद मृणालिनी कहलीह—

“जँ छपय, नाम बिना।”

तृषा मुस्कुरेलीह।

“ईशान काका, सुनलहुँ?”

“हाँ।”

मृणालिनी उँगली देखौलीह—

“पूरा किताब नहि। पाँति सभ।”

ई पहिल बेर छल जे ओ पोथी घर बाहर जाए देबाक अनुमति देलीह।

ज्ञानक पहरा साझा होय लागल।



ईशान आठ पाँतिक एक छोट पन्ना बनौलक।

शीर्षक नहि।

लेखक नहि।

केवल पाँति सभ।

विद्यालयक पुस्तकालयमे पाँच प्रति।

सिलाइ-दोकानमे एक।

रितेशक दोकानमे एक।

शैलेशक विद्यालयमे एक।

अम्बरक प्रशिक्षण-कक्षमे एक।

रचना सिन्हाक कार्यालयमे एक।

प्रदीप अपन कक्षा मे दीवाल पर लगौलक।

कियो नहि जानैत पाँति ककर।

लोक पढ़ैत—

“जे नहि जनैत छी, तकरा नहि जनैत छी कहब सेहो पहरा अछि।”

“भरोसा छोड़ू नहि; भरोसाकेँ आँखि दिअ।”

“पहरा देबाक बादो जीवन जीब जरूरी अछि।”

“पहरा जकरा बचाबय चाहैत छी तकर स्वतंत्रता नहि खाय।”

घरक बात समाजक छोट घोष-वाक्य बनि गेल।

मगर नाम बिना।

मृणालिनी प्रसन्न।

“एतय ठीक।”



किछु सप्ताह बाद मृणालिनीक साँस फेर खराब भेल।

राति।

ईशान एम्बुलेंस बजौलक।

ओ विरोध नहि केलनि।

अस्पताल पहुँचल।

ऑक्सीजन।

औषधि।

दू दिन सुधार।

तेसर दिन चिकित्सक कहलक—

“हुनका संक्रमण अछि। उमरक कारण सावधानी।”

मृणालिनी जागल छलीह।

“घर?”

चिकित्सक कहलक—

“एखन नहि।”

ओ आँखि मूनि लेलनि।

ईशान हाथ पकड़लक।

“किछु दिन।”

“ठीक।”

एहि बेर सुरक्षा बन्धन नहि।

आवश्यकता।

सीमा परिस्थितिसँ बदलैत।



अस्पतालक राति मृणालिनी ईशानकेँ पुछलीह—

“पाण्डुलिपि कहाँ?”

“लैपटॉप।”

“अन्त?”

“नहि।”

“नीक।”

“क्यों?”

“कथा हमरा पाछाँ समाप्त मत करिह।”

ईशानक छाती कसि गेल।

“माँ।”

“सुन।”

ओ कठिन साँस बीच कहलीह—

“हम चलि जाई तऽ कथा खत्म नहि। रचना जाँच करत। तृषा पढ़त। सबीना सिलाइ। मंजरी अस्पताल। बिज्जी अपन काज।”

“माँ, एखन—”

“हम मृत्यु बजा नहि रहल। नियम कहि रहल।”

ईशान रोअय लागल।

मृणालिनी कमजोर हाथसँ ओकर माथ छुलनि।

“दुख संतुष्ट नहि होइत—मोन अछि?”

“हाँ।”

“जीवनो संतुष्ट नहि होइत। ओ चलैत।”



चौथा दिन हालत स्थिर।

पाँचम दिन कने सुधार।

सातम दिन चिकित्सक घर लऽ जाएबाक अनुमति देलक—ऑक्सीजन व्यवस्था, नर्सिंग देखभाल, आकस्मिक योजना।

मृणालिनी घर पहुँचल तऽ देहरी पर कने रुकलीह।

“कुंडी?”

ईशान हँसल।

“एखन दिन।”

“तैयो।”

ओ भीतर गेलीह।

सिरहाना।

पोथी।

सत्यप्रकाशक फोटो।

धनेश्वरीक ओढ़नी।

बाहर बरामदा।

घर ओहि तरह स्वागत नहि करैत जे मनुष्य।

ओ बस मौजूद।

कतेको बेर मौजूद रहब पर्याप्त।



एक सप्ताह बाद मृणालिनी बरामदामे धूप लेत छलीह।

बिज्जी आयल।

एकटा।

मध्यम आकार।

ओ देहरी कात रुकल।

मृणालिनी कहलीह—

“बहुत दिन बाद।”

ईशान पाछाँ सँ—

“माँ, ई ओही नहि हो सकैत।”

“हम जानैत।”

“तखन बात?”

“तोरा कियो कहलक ई ओही?”

ईशान हँसल।

बिज्जी किछु देर बाद चलि गेल।

मृणालिनी कहलीह—

“व्यक्ति बदलैत। पहरा रहैत।”

ईशान नोटबुक निकालल।

मृणालिनी तुरन्त—

“सभ बात मत लिख।”

ओ नोटबुक बन्द केलक।

“ठीक।”

अंतिम नियमसभमे सँ एक—

जीवनक कुछ हिस्सा साहित्य सँ बचा रहय।



रचना सिन्हा कार्यालयमे अनाम पन्ना देखलीह।

आठ पाँति।

ओ “जे नहि जनैत छी...” पाँति पर रुकलीह।

रोहित, जे काजसँ भेटय आयल छल, पुछलक—

“ककर?”

“नहि लिखल।”

“अच्छा।”

“क्यों?”

“तखन लोक पाँति पढ़त, नाम नहि।”

रचना मुस्कुरेलीह।

“सही।”

फेर ओ आठम पाँति पढ़लीह—

“पहरा जकरा बचाबय चाहैत छी तकर स्वतंत्रता नहि खाय।”

रचना दीर्घ समय चुप।

पुलिस शक्ति पर एक पाँति।

परिवार पर सेहो।

बैंक-फ्रीज पर सेहो।

डिजिटल सुरक्षा पर सेहो।

राज्य पर सेहो।

ओ पन्ना प्रशिक्षण-पुस्तिकामे जोड़बाक सोचलीह।

फेर रुकलीह।

अनुमति?

अनाम मतलब मुक्त अधिकार नहि।

ओ ईशानकें फोन केलक।

“ई पन्ना...”

“हाँ।”

“उपयोग करि सकैत?”

“माँसँ पूछब।”

मृणालिनी अनुमति देलीह—

“पाँति बदलब नहि।”

“नाम?”

“नहि।”

अनाम लेखकीय अधिकारक सम्मान।

पहरा भाषा पर सेहो।



ईशान एक राति पाण्डुलिपिक अंतिम तिहाई फेर पढ़लक।

ओ देखलक—कथा बहुते बेर “पहरा” कहि चुकल।

किछु काटलक।

प्रतीक बार-बार कहला पर नारा बनि जाइत।

बिज्जी कम केलक।

गोहि कम।

न्याय-दर्शनक शब्द जहाँ पात्र बोलैत नहि, हटौलक।

कार्य बचेबाक।

भाषा हलुक करबाक।

मृणालिनी सही छल—

“सभ बात मत लिख।”

साहित्यक संयम सेहो प्रमाण-अनुशासन जकाँ।

जे अनिवार्य नहि, काटू।

जे अर्थ केवल दोहराव, हटाउ।

जे मौन अधिक बोलैत, मौन रहय दिअ।



अगिला भोर मृणालिनीक स्वास्थ्य अचानक बहुत गिरल।

नर्स ईशानकेँ बजौलक।

डॉक्टर फोन पर निर्देश।

एम्बुलेंसक तैयारी।

मृणालिनी आँखि खोललीह।

“अस्पताल?”

ईशान कहलक—

“हाँ।”

ओ बहुत धीरे माथ हिलौलीह।

“एहि बेर नहि।”

ईशान स्थिर।

“माँ, साँस—”

“डॉक्टर?”

नर्स कहलीह—

“हॉस्पिटल लेब बेहतर।”

मृणालिनी ईशानक हाथ पकड़ी।

“अहाँ निर्णय लेब?”

प्रश्न साफ।

ईशानक भीतर भय चिल्ला रहल।

आठम पाँति सामने—

पहरा जकरा बचाबय चाहैत छी तकर स्वतंत्रता नहि खाय।

ओ चिकित्सकसँ फेर बात केलक।

घर पर आराम-केंद्रित देखभाल संभव, मगर जोखिम उच्च।

मृणालिनी होशमे।

निर्णयक्षम।

ओ कहलीह—

“घर।”

ईशान आँखि बन्द केलक।

“ठीक।”

ई निर्णय वीरता नहि।

मृत्यु चाहब नहि।

स्वायत्तता।

उमर।

थकान।

घर।

कतेको जीवन-अन्तक निर्णय अपराधक जाँचसँ अधिक कठिन—कारण एतय “सही” एके नहि।



दिन धीमा।

ऑक्सीजन।

दवा।

कखनो नींद।

कखनो जागरण।

मृणालिनी एक बेर सत्यप्रकाशक फोटो देखलीह।

“बहुत प्रतीक्षा करौलह।”

ईशान सुनलक।

किछु नहि कहलक।

दूसर बेर धनेश्वरीक पोथी छुलनि।

“आरो पाँति नहि।”

ईशान मुस्कुरायल।

“ठीक।”

साँझ वैदेही आयलीह।

तृषा फोन पर।

रचना संदेश।

प्रदीप दूर सँ प्रणाम।

सबीना फूल भेजलीह—मृणालिनी मना केने छल, मुदा आ गेल।

घर भरल नहि।

शान्त।

मृणालिनी राति ईशानकेँ पुछलीह—

“खाना खा लेलह?”

ईशान हँसैत-रोड़त कहलक—

“हाँ।”

“झूठ?”

“कने।”

“खा।”

ई अंतिम आदेश जकाँ लगल।

मगर जीवनक सामान्य आदेश।

ईशान रसोई गेल।

दू कौर खायल।

वापस आयल।

मृणालिनी सोइ रहल छलीह।



भोर होयबासँ किछु पहिने मृणालिनी चलि गेलीह।

कोनो अंतिम भाषण नहि।

कोनो रहस्य उद्घाटन नहि।

कोनो अपराधी नाम नहि।

साँस धीरे-धीरे विरल।
फेर बन्द।
ईशान हाथ पकड़े रहल।
नर्स समय लिखलीह।
घड़ीक एक संख्या।
जीवनक अंतक सरकारी रूप।
ईशान घड़ी नहि देखलक।
बाहर बहुत हलुक उजास।
झाड़ीमे किछु सरसराहट।
ओ उठि देखय नहि गेल।
सभ संकेतक अर्थ खोजब जरूरी नहि।
ओ माँक कात बैसल रहल।
पहिने बेटा।
लेखक बादमे।



अन्त्येष्टि साधारण।

मृणालिनी जेना चाहैत—न भाषण, न राजनीतिक लोक, न मीडिया।
गाम।
परिवार।
किछु मित्र।
वैदेही।
तृषा।
प्रदीप नहि आयल; दूर रहब उचित बुझलक।

रचना आयलीह, चुप।

विहान फूल भेजलक; ईशान सार्वजनिक प्रदर्शन नहि कएलक।

धनेश्वरीक पोथी घरमे।

सत्यप्रकाशक फोटो दीवालपर।

मृणालिनीक नब फोटो लगाओल नहि गेल।

ईशान एखन तैयार नहि।

कियो जोर नहि देलक।

शोकक सेहो स्वतंत्रता।



तेरहम दिनक बाद ईशान पहिल बेर अकेले बरामदामे बैसल।

कुर्सी खाली।

माँक चश्मा।

दवा।

एक आधा पढ़ल पुस्तक।

ओ बहुत देर किछु नहि केलक।

लैपटॉप बन्द।

पाण्डुलिपि बन्द।

कोनो काम नहि।

साँझ एक बिज्जी आँगन पार केलक।

ईशान देखलक।

मोनमे कोई रूपक नहि आयल।

बस बिज्जी।

ओ चलि गेल।

ईशानक आँखि भरि आयल।
मगर ओ मुस्करायल सेहो।
माँ सही—
सभ बात मत लिख।



कई सप्ताह बाद ओ धनेश्वरीक पोथी खोललक।
आठ पाँति।
नवम खाली।
ओ कलम उठेलक।
फेर रखि देलक।
माँ कहने छलीह—
“आरो पाँति नहि।”
ई आदेश अंतिम छल कि ओहि दिनक थकान—कोना जानत?
ईशान अनुमान नहि केलक।
खाली पाँति खाली छोड़ि देलक।
असिद्धकैँ असिद्ध।
मौनकैँ मौन।
पोथी बन्द।



रचना सिन्हा मृणालिनीक मृत्यु बाद एक छोट पत्र ईशानकैँ पठौलीह।
कागच पर।
फोन नहि।

“हुनकर गवाही हमरा बहुत किछु सिखौलक। खास कऽ ई जे स्मृतिक सीमा स्वीकार करब कमजोरी नहि।”

बस।

ईशान पत्र पाण्डुलिपिमे नहि राखलक।

माँक निजी कागच संग रखलक।

किछु स्रोत कथा बनबाक लेल नहि।

स्मृति रहबाक लेल।



तृषा गढ़ नारिकेल आयलीह।

पोथी देखलीह।

“नवम पाँति?”

“नहि।”

“क्यों?”

ईशान कहलक—

“माँ कहने छलीह—आरो नहि।”

“शायद मजाक?”

“शायद।”

तृषा चुप।

फेर मुस्कुरेलीह।

“तखन सही।”

दुनू हँसल।

‘शायद’ पर निर्णय नहि।

घरक नियम चलि रहल।



ईशान पाण्डुलिपि फेर खोललक।

मृणालिनीक मृत्यु लिखबाक पन्ना सामने।

ओ पहिल मसौदामे बहुत लिखने छल।

अंतिम शब्द।

बिज्जी।

भोर।

सत्यप्रकाश।

पोथी।

ओ आधा काटि देलक।

केवल एतबा राखलक—

“भोर सँ पहिने मृणालिनी चलि गेलीह। ईशान हुनकर हाथ पकड़े रहल।”

बाकी मौन।

ओ पढ़लक।

कठिन।

सही।

शायद।

लेखक निर्णय देलक।

बेटा रोअल।

दुनू एक देहमे।



कमला-बलानक किनार पर ओ महीना बाद गेल।

पानि सामान्य।

मछुआ।

बच्चा।

एक दूर गोहि।

बिज्जी नहि।

ओ किनार पर बैसल।

माँक वाक्य मोन—

“कथा हमरा पाछाँ समाप्त मत करिह।”

ओ उठल।

गाम दिस घुरल।

विद्यालय खुलल।

सिलाइ मशीन चलैत।

मोबाइल-दोकानमे ग्राहक।

तृषा कानून पढ़ि रहल।

रचना जाँच करैत।

शैलेश कक्षा लेत।

मंजरी मरीज देखैत।

प्रदीप प्रशिक्षण दैत।

विहान संस्था सँ जूझैत।

सौरभ अपना इतिहास ढोइत।

केशव दण्डक भीतर प्रश्न पूछैत।

जीवन माँक पाछाँ सचमुच समाप्त नहि।

ईशान बुझलक—

अब कथा अंतक नजिक जा सकैत।

क्योंकि पहरा एक व्यक्तिसँ बाहर निकलि चुकल अछि।



मृणालिनीक मृत्यु बाद पहिल बरख ईशान लेल ऋतु नहि, दूरी बनि गेल।

सावन आयल।

कमला-बलान भरल।

धान रोपल गेल।

विद्यालय खुलल।

दशहरा बीतल।

शीत आयल।

ओ प्रत्येक बदलैत मौसममे एक वाक्य सुनैत—

“माँ एखन ई कहितथि...”

पहिने ओ वाक्य पूरा करैत।

बादमे रोकय लागल।

मृतकक मुँह सँ सदिखन नब वाक्य बजबेनाइ स्मृति नहि।

कतेको बेर जीवित मनुष्य अपन विचार मृतक पर रखि दैत।

ईशान एहि अन्याय सँ सेहो बचय चाहैत।

मृणालिनी जे कहि गेलीह, से अलग।

जे ओ अनुमान करैत, से अलग।

फेर वही नियम।



धनेश्वरीक पोथी एक दिन विद्यालयक पुस्तकालयमे काँचक पेटीमे राखबाक प्रस्ताव आयल।

ईशान मना केलक।

“क्यों?”

प्रधानाध्यापक पुछलनि।

“उपयोग बंद भऽ जाएत।”

“मूल सुरक्षित?”

“प्रतिलिपि बनाउ। मूल घरमे रहय।”

“इतिहास।”

“इतिहास वस्तु बंद करब मात्र नहि।”

आठ पाँतिक प्रतिलिपि विद्यालयमे छल।

मूल पोथी घरमे—खुलब, छुअब, पढ़ब, धूप खायब।

कागच सेहो जीवित परम्परा हो सकैत।

संग्रहालय बनला पर कतेको चीज बचैत।

कतेको चीज मरैत।



तृषा कानून पूरा कऽ अधिवक्ता बनलीह।

पहिल वर्ष पैघ मामला नहि।

जमानत।

दस्तावेज।

परिवारिक विवाद।

छोट साइबर शिकायत।

एक दिन ओकरा विधिक सहायता प्रकोष्ठ सँ एक मामला भेटल—

एक ग्रामीण वृद्धा, जिनकर जन-धन खाता अचानक बहुते संदेहास्पद लेनदेनक कारण रोकल गेल।

वृद्धा कहैत—

“हमरा बैंकक पासबुक छोड़ि किछु नहि बुझाइट।”

पुलिसक प्रारम्भिक अभिलेख कहैत—

खाता संगठित भुगतान-जालमे उपयोग भेल।

तृषा पिता केँ फोन नहि केलक।

ओ अपना काज स्वयं करय चाहैत।

पहिले बैंक अभिलेख।

फेर वृद्धाक बयान।

फेर शाखाक खाता-खोलब अभिलेख।

पता चलल—

वृद्धाक पोता शहरमे नौकरी खोजैत खाता-संबंधी विवरण एक “काम” लेल उपयोग करय देने छल।

वृद्धा नहि जानैत।

पोता शंका बादो कमीशन लैत रहल।

एक परिवार।

दू अलग दायित्व।

तृषा अदालतमे कहलीह—

“खाताक नाम आ वास्तविक निर्णयकर्ता अलग व्यक्ति हो सकैत।”

न्यायाधीश पुछलनि—

“आ पोता?”

“ओकर भूमिका अलग जाँच योग्य।”

वृद्धाक वैध पेंशनक सीमित मुक्ति लेल आदेश भेल।

पोता पर जाँच जारी।

तृषा बाहर आयलीह।

उसे पिता याद आयल।

कानून किताब सँ जीवन धरि पहुँचि गेल।



ओहि राति प्रदीपकेँ फोन केलक।

“एक केस छल।”

सभ बतौलक।

प्रदीप चुप।

फेर कहलक—

“तोरा हमरा लग किएक नहि पूछलह?”

“क्योंकि हम वकील छी।”

प्रदीप हँसल।

“ठीक।”

“मगर एक बात।”

“की?”

“खाता नामक आदमी सदिखन पैसा चलबेनिहार नहि।”

“हाँ।”

“ई बात हम अहाँक केस सँ पहिने पढ़ने रही। मुदा आब बुझल।”

प्रदीप दीर्घ साँस लेलक।

“ज्ञान कखनो देर सँ देह पबैत।”

तृषा कहलीह—

“भारी वाक्य।”

“तोहर माँक संग रहि सीखल।”

“माँ?”

“ओ भारी बात सरल कहैत।”

दुनू हँसल।

परिवारक भीतर अपराधक छाया आब संवादक एक हिस्सा, पूरा घर नहि।



रचना सिन्हा वरिष्ठ पद पर पहुँचलाक बाद जाँच स्वयं कम, प्रशिक्षण अधिक करैत छलीह।

एक दिन एक युवा अधिकारी फाइल लऽ आयल।

“मैडम, छोट खाता अछि। मात्र सात हजारक असामान्य प्रवाह। पैघ केसक संग जोड़बाक लाभ नहि।”

रचना पन्ना देखलीह।

एक ग्रामीण बीज-दोकान।

सात हजार।

फेर दू दिन बाद दोसर राज्यक एक भुगतान-मध्यस्थ।

रचना पुछलीह—

“किएक असामान्य?”

“दोकानक व्यापारक संग मेल नहि।”

“माल?”

“नहि।”

“खाताधारक?”

“कहैत एक रिश्तेदार मदद माँगने।”

“रिश्तेदार?”

“शहरमे।”

रचना फाइल वापस देलीह।

“छोट कहि छोड़ू नहि। पैघ कहि अपराध सेहो मत बनाउ। सत्यापन करू।”

तीन दिन बाद पता चलल—

ई नब ठगी-जालक एक छोट प्रारम्भिक खाता।

अभी कुल नुकसान सीमित।

खाता जल्दी रोकल गेल।

पाँच संभावित पीड़ित बचल।

युवा अधिकारी कहलक—

“सात हजार।”

रचना मुस्कुरेलीह।

“कतेको पैघ पगक पहिल निशान छोट।”

ओ तुरन्त जोड़लीह—

“मगर प्रत्येक छोट निशान गोहि नहि।”

युवा अधिकारी हँसल।

“ई रूपक कहाँ सँ?”

रचना कहलीह—

“कहीं सँ सुनल।”



ईशानकेँ एहि केस विषय सार्वजनिक प्रशिक्षण डेटा बादमे भेटल।

ओ देखलक—

एक छोट ग्रामीण खाता।

एक मामूली विसंगति।

समय पर प्रश्न।

जाल पैघ होयबासँ पहिने रोकल।

ओ मृणालिनीक मृत्यु बाद पहिल बेर गहिर सन्तोष अनुभव केलक।

कियो “सम्राट” पकड़ा नहि गेल।

कोनो करोड़ोंक प्रेस सम्मेलन नहि।

पाँच परिवार शायद जानबो नहि करत जे हुनका किछु सँ बचाओल गेल।

पहरा सफल होय तऽ घटना होइते नहि।

जे नहि भेल, ओकर स्मारक नहि बनैत।

तैयो मूल्य अछि।



अम्बरक प्रशिक्षण-कक्षमे खाली कोना भरल नहि गेल।

कर्मचारी बदलल।

नब प्रबन्धक आयल।

एक दिन ओ पुछलक—

“ई दीवाल खाली किएक?”

विहान कहलक—

“जे एखन नहि देखैत छी।”

“किछु लिखू?”

“नहि।”

“डिजाइन अधूरा लगैत।”

“रहय दिअ।”

संस्था कतेको बेर पूर्णता चाहैत।

खाली जगह असुविधाजनक।

मगर वही खाली जगह अहंकारक विरुद्ध पहरा।

विहान आब कम बोलैत।

ओकर काज अधिक प्रक्रियामे।

जो चेतावनी आए, दर्ज।

जो जोखिम अस्पष्ट, चर्चा।

जो उपयोगकर्ता हानि संकेत, वृद्धि टीमसँ अलग समीक्षा।

प्रणाली पूर्ण नहि।

कखनो गलती।

मगर एक अंतर—

गलती छुपाबऽ संस्कार कम।



केशव दण्ड पूरा कऽ बाहर आयल तऽ मीडिया लगभग नहि छल।

ओ घर पहुँचि पहिल सप्ताह ककरो नहि भेटल।

फेर एक दिन ईशानकेँ ई-पत्र पठौलक।

“मिलब चाहैत छी। यदि अहाँ नहि चाही, उत्तर आवश्यक नहि।”

ईशान तीन दिन उत्तर नहि देलक।

फेर लिखलक—

“सार्वजनिक स्थान।”

दुनू एक साधारण कैफे मे भेटल।

केशव बहुत दुबला।

“माफ करब कहय आयल छी,” ओ कहलक।

ईशान सीधा—

“ककरा?”

केशव चुप।

“हमरा? अभिषेक? सबीना? मंजरी? कर्मचारी? जुआरी? बैंक? समाज?”

केशव आँखि नीचाँ।

“एही कारण वाक्य कठिन।”

“तखन सरल मत बनाउ।”

लम्बा मौन।

केशव कहलक—

“हम एहन व्यवस्था बचेलहुँ जे लोककेँ नुकसान पहुँचा रहल छल। कारण संख्या नीक छल।”

“जानैत छलहुँ?”

“किछु। किछु जानब नहि चाहैत रही।”

ईशान ओकरा देखलक।

“ई फर्क महत्त्वपूर्ण।”

“जेलमे बुझल।”

“देर।”

“हाँ।”

“माफी?”

ईशान चुप।

“हम देबाक स्थिति मे नहि। बहुत लोक अछि।”

केशव मूड़ी डोललक।

“ठीक।”

ओ उठय लागल।

ईशान कहलक—

“एक बात।”

केशव रुकल।

“यदि कखनो एहि विषय पर बोलू—अपने केँ ‘परिवर्तित नायक’ मत बनाउ।”

केशव हलुक मुस्करायल।

“मृणालिनीजी एहन कहितथि?”

ईशानक चेहरा कठोर।

“माँक मुँहमे वाक्य मत राखू।”

केशव तुरन्त—

“माफ करब।”

दुनू अलग भऽ गेल।

ईशान बाहर निकलि बुझलक—

शोकक सीमा सेहो रक्षा चाहैत।



सौरभ सार्वजनिक जीवनमे वापस पूर्ण रूपेँ नहि आयल।

ओ एक विश्वविद्यालयक शासन-अध्ययन केन्द्रकेँ निजी अभिलेख दान केलक—कानूनी अनुमति अनुसार, संवेदनशील निजी सूचना हटाकऽ।

शर्त—

अभिलेख केवल सफलता नहि, विवाद समेत।

एक शोधार्थी पुछलक—

“आप अपन छवि सुधारना चाहैत?”

सौरभ कहलक—

“सम्भव। एहि कारण अभिलेख पर भरोसा करू, हमर उद्देश्य पर नहि।”

ई उत्तर सुनि शोधार्थी चुप।

व्यक्ति अपन प्रयोजन विषय निष्पक्ष साक्षी नहि हो सकैत।

कागच सेहो पूर्ण नहि।

मगर तुलना संभव।



प्रदीप एक दिन प्रशिक्षण-कक्षा बाद घर लौटि देखलक तृषा धनेश्वरीक आठ पाँति फ्रेम करि लाई छलीह।

“दीवाल पर लगाबी?”

प्रदीप पुछलक—

“ककर अनुमति?”

“ईशान काका।”

“मृणालिनीजी?”

तृषा चुप।

“हुनका जीवनमे अनुमति नाम बिना प्रसारक छल। ईशान काका कहने छथि।”

प्रदीप मूड़ी डोललक।

फ्रेम लगल।

ओ आठम पाँति पढ़लक—

“पहरा जकरा बचाबय चाहैत छी तकर स्वतंत्रता नहि खाय।”

ओ पत्नी कात देखलक।

वर्षसभ पहिने जेल सँ बाहर आबि ओ परिवारक प्रत्येक बात नियंत्रित करय चाहने छल—विश्वास जल्दी लौटय लेल।

पत्नी रोकने छलीह।

आब बुझल—

सुरक्षा, सुधार, प्रेम—तीनू नियंत्रण बनि सकैत।

फ्रेम केवल अपराध-जाँचक नहि।

घरक सेहो।



शैलेशक छात्र जे जुआ-जइसन खेलमे पकड़ा गेल छल, एक वर्ष बाद विद्यालय परीक्षा पास कऽ शहर पढ़य गेल।

जाएबासँ पहिने शैलेशक लग आयल।

“सर, फोन बदलल।”

“क्यों?”

“पुरान समूह सभ ब्लॉक।”

“ठीक।”

“कखनो फेर खेलबाक मन करैत।”

शैलेश कहलक—

“मन अपराध नहि।”

छात्र चकित।

“तखन?”

“मनक पाछाँ की करैत छह, ओ देख।”

“सर, अहाँ एखनहुँ?”

शैलेश हलुक हँसल।

“हाँ।”

दुनू एक-दोसरक कमजोरी जानैत।

ओतय शर्म कने कम।

पहरा साझा।



सबीना खातूनक दोकान बाहर सरकारी पोस्टर लगल—

“म्यूल खाता सँ सावधान।”

पोस्टरमे कठिन शब्द।

सबीना नीचे हाथसँ लिखलीह—

“अपन खाता किराया पर नहि दिअ।”

लोक नीचेवाला पढ़ैत।

ऊपरवाला कम।

भाषा सेहो पहरा।

जे लोक बुझय नहि, ओकरा चेतावनी देल गेल मानि लेब पर्याप्त नहि।

ईशान फोटो देखलक—कियो भेजने छल।

ओ प्रशिक्षणमे उपयोग करबाक अनुमति माँगलक।

सबीना कहलीह—

“नाम नहि।”

फेर वही।

अनाम अनुभवक यात्रा।



वैदेही झाक शोध पुस्तक रूपमे प्रकाशित भेल।

मृणालिनी नाम केवल आभारमे।

एक पृष्ठ पर अनाम उद्धरण—

“दुख संतुष्ट नहि होइत।”

ईशान पुस्तक हाथमे लेल।

ओ पंक्ति पढ़ि पुस्तक बन्द केलक।

आँखि भरि आयल।

माँक आवाज छपल अक्षरमे अलग लगैत।

कम।

ठंढा।

मगर स्थायी।

कागच भार पूरा नहि उठबैत।

मगर थोड़ा बचा लैत।



ईशान अपन पाण्डुलिपिक आखिरी खण्ड लिखैत एक समस्या पर अटक गेल—

की दोषी लोकक बादक जीवन लिखब?

की कथा निर्णय पर समाप्त?

माँ कहने छलीह—

कथा हमरा पाछाँ समाप्त मत करिह।

ओ लिखलक—

“दण्ड अंतिम दृश्य नहि।”

फेर पात्रसभक बादक जीवन छोटे-छोट अंशमे।

कियो सुधरल।

कियो आंशिक।

कियो केवल भाषा बदललक।

कियो दाग ढोड़त।

कियो क्षमा नहि पेलक।

कियो माँगलो नहि।

कथा प्रत्येक पात्रकेँ मोक्ष देबासँ इंकार करैत।

जीवन सेहो।



एक संध्या ईशान धनेश्वरीक पोथी, अनिरुद्धक कलम आ मृणालिनीक चश्मा एके टेबुलपर देखलक।

तीन पीढ़ीक वस्तु।

ओ फोटो लेबाक सोचलक।

फेर लेलक।

फेर तुरन्त बुझलक—ई निजी फोटो।

न प्रकाशित।

न पाण्डुलिपि।

ओ एक अलग फोल्डरमे रखलक—

“घर।”

बस।

कतेको चीजक सही नाम “स्रोत” नहि।

“घर।”



रचना सिन्हा सेवा-निवृत्तिक नजिक छलीह।

अंतिम प्रशिक्षण बैचमे एक अधिकारी पुछलक—

“मैडम, तीस वर्ष बाद सबसे जरूरी नियम?”

रचना कहलीह—

“अरेस्ट करबाक पहिने?”

“हाँ।”

“अपने केँ पूछू—हम जे मानैत छी, तकर विपरीत सम्भावना सच होय तऽ कौन तथ्य देखाइत?”

कक्षा चुप।

“मतलब?”

“अपन परिकल्पनाक विरोधी प्रमाण खोजू।”

“अपराधीकेँ फायदा?”

“सत्यकैँ फायदा।”

“आ यदि समय कम?”

“तखन गलतीक जोखिम लिखू। छुपाउ नहि।”

एक छात्र पुछलक—

“कखनो पूरा निश्चित होइत छी?”

रचना मुस्कुरेलीह।

“सेवानिवृत्ति नजिक अछि। एखनहुँ नहि।”

कक्षा हँसल।

ओहो।



सेवा-निवृत्ति दिन कियो पैघ समारोह नहि।

कार्यालयक छोट सभा।

रोहित आब स्वयं वरिष्ठ।

ओ रचनाकैँ एक फ्रेम देलक।

आठ अनाम पाँति।

रचना देखलीह।

“एहि पर नाम ककरो नहि।”

“जानी।”

“तखन अच्छा।”

ओ फ्रेम घर लऽ गेलीह।

दीवालपर प्रमाणपत्रक कात नहि।

अध्ययन-कक्षमे।

जहाँ नब अधिकारी कखनो सलाह लेल आए।

सेवानिवृत्ति पहरा समाप्त नहि।

केवल अधिकार समाप्त।

अनुभव बचल।



ईशान रचना सँ अंतिम औपचारिक साक्षात्कार नहि केलक।

ओ चाहैत तऽ उपन्यास लेल बहुत सामग्री।

मगर एक दिन चाय पर केवल पुछलक—

“अन्त मे जाँचकर्ता की सीखैत?”

रचना कहलीह—

“किछु नहि।”

ईशान हँसल।

“सच?”

“हर केस फेर विद्यार्थी बनबैत।”

“तखन अनुभव?”

“कहाँ गलती हो सकैत—ओ जल्दी बुझाइट।”

ईशान नोटबुक निकालल नहि।

स्मृति मे रखलक।

यदि भूलि जाए, ठीक।

सभ नीक वाक्य बचब जरूरी नहि।



कमला-बलानक किनार पर एक नब पक्का पथ बनल।

सुबह लोक टहलैत।

बच्चा साइकिल।

वृद्ध धूप।

ईशानकेँ पहिने कने दुख—

पुरान कादो, पदचिह्न, घास कम।

फेर बुझलक—

किनार केवल कथा लेल नहि।

लोकक जीवन लेल।

एक दिन पक्का पथक कात माटिक छोट हिस्सा पर बिज्जीक पग देखल।

सभ परिवर्तन बादो किछु रास्ता बचैत।

गोहि पानिमे रहत कि नहि—ओ नहि देखलक।

देखबाक आग्रह कम भऽ गेल छल।



राति ईशान पाण्डुलिपिक अंतिम पन्नासभक आरम्भ लिखलक।

ओ जानैत छल अंतिम दृश्य केहन होय—

न विजय-उत्सव।

न गोहि मृत।

न अपराध समाप्त।

न पुलिसक जय।

किनार।

बिज्जी।

साँप।

पानि।

मगर ओ एखन लिखलक नहि।

क्योंकि प्रतीकक अंतिम उपयोग सस्ता नहि होय चाही।
पहिने कथा सँ सभ अनावश्यक प्रतिध्वनि हटाबय पड़त।
ओ पुराने पन्ना फेर पढ़लक।
जहाँ बिज्जी अधिक—काटल।
जहाँ गोहि केवल नारा—काटल।
जहाँ न्याय-दर्शन पाठ बनि गेल—संवादमे घोलल।
जहाँ पात्र अत्यधिक साफ—दोष फेर जोडल।
जहाँ अपराधी अत्यधिक काला—मनुष्यक साधारणता वापस।
जहाँ पीड़ित केवल पीड़ित—ओकर निर्णय वापस।
कथा अंतिम रूप लऽ रहल छल।



भोरक समय ओ बरामदासँ बाहर आयल।

मृणालिनी नहि।
धनेश्वरी नहि।
सत्यप्रकाश नहि।
अनिरुद्ध नहि।
तैयो घर खाली नहि।
रसोई।
पोथी।
किताब।
फाइल।
पौधा।
आँगन।

दूर विद्यालयक घंटी।

ईशान दरबज्जा बन्द कऽ शहरक प्रशिक्षण लेल निकलल।

रास्तामे बिज्जी देखायल नहि।

ओ प्रतीक्षा नहि केलक।

पहरा जीवक दर्शन पर निर्भर नहि रहि गेल।

यही शायद कथा अंतिम दिशा छल।



एक वर्ष बाद ईशानक उपन्यास लगभग पूरा छल।

लगभग।

ई शब्द ओकरा परेशान करैत।

क्योंकि “पूरा” कहिते मन चाहैत सब प्रश्नक उत्तर हो।

मगर सत्यप्रकाशक मृत्यु पूरा सिद्ध नहि।

देवांशुक दायित्व सीमा धरि सिद्ध।

हरिचरण मरल।

रामअवतार मरल।

मृणालिनी चलि गेलीह।

अनिरुद्ध सेहो।

जुआ-जाल टूटल, मुदा ऑनलाइन दाँव बन्द नहि भेल।

म्यूल खाता रोकबाक नब तरीका बनल, तखन अपराधी दोसर रास्ता खोजलक।

कियो सुधारल।

कियो केवल सावधान भेल।

कियो दाग ढोइत रहल।

जीवनक कोनो फाइल “पूर्ण” नहि।

ईशान शीर्ष पृष्ठपर लिखलक—

“समाप्त पाण्डुलिपि।”

फेर “समाप्त” काटि देलक।

केवल—

“पाण्डुलिपि।”



ओहि सप्ताह रचना सिन्हाक फोन आयल।

सेवानिवृत्त होयबाक बादो हुनकर आवाज वैह तेज।

“एक बात भेजैत छी।”

“केस?”

“सार्वजनिक प्रशिक्षण सामग्री।”

छोट खाता।

गामक कृषि-सहायता भुगतान।

रकम बहुत कम।

दू बारि असामान्य आवागमन।

एक युवक कहने—“ऑनलाइन काम।”

बैंक रोकलक।

स्थानीय पुलिस पहिने मानलक—म्यूल खाता।

जाँच आगे बढ़ल।

निकसल—

म्यूल नहि।

एक परिवार अपन आन रिश्तेदारक वैध रकम गलतीसँ एहि खातामे पठौने छल।

ईशान फाइल पढ़ि हँसल।

रचना फोन पर पुछलीह—

“की?”

“किछु नहि।”

“बुझलह?”

“हाँ।”

“छोट विसंगति सदिखन पैघ गोहि नहि।”

“हाँ।”

“एहि लेल पठेलहुँ।”

ईशान खिड़की बाहर देखलक।

“मैडम, अहाँ एखनहुँ शिक्षक।”

“सेवानिवृत्त।”

“दुनू एक नहि।”

रचना हँसलीह।

“तोहर उपन्यास पूरा?”

“लगभग।”

“‘लगभग’ ठीक शब्द।”

फोन कटि गेल।

ईशान पाण्डुलिपिक एक पाँति बदललक—

“छोट निशान कखनो जालक आरम्भ हो सकैत; कखनो केवल मानवीय भूल।”

भयक साहित्य आसान।

सावधानीक साहित्य कठिन।



तृषा आब नियमित वकालत करैत छलीह।

एक दिन न्यायालय बाहर पत्रकार ओकरा पुछलक—

“आप आर्थिक अपराध के मामलों में इतनी सावधानी से ‘जानबूझकर’ शब्द क्यों इस्तेमाल करती हैं?”

तृषा कहलीह—

“क्योंकि खाता आदमी नहि, आदमी खाता नहि।”

पत्रकार फेर प्रश्न करऽ चाहलक।

तृषा जल्दी में छल।

“बाकी आदेश पढ़ू।”

ओ चलि गेलीह।

प्रदीप बादमें वीडियो देखलक।

फोन केलक।

“नीक कहलह।”

“तीन सेकण्डक क्लिपमें आधा।”

“तैयो।”

तृषा हँसलीह।

“बाबू, क्लिप पर भरोसा नहि।”

प्रदीप सेहो हँसल।

घरक घाव आब कखनो मजाक सहि सकैत।

ई सेहो समयक काम।



केशव एक सार्वजनिक पुनर्वास कार्यक्रममें बोलबाक निमन्त्रण ठुकरा देलक।

आयोजक पुछलक—

“क्यों?”

“एखन लोग हमरा सुनि कथा साफ बना लेत—अपराध, जेल, परिवर्तन, मुक्ति।”

“गलत?”

“बहुत साफ।”

ओ लिखित नोट भेजलक—

“हम जे केने रही तकर दायित्व समाप्त नहि। हम केवल एतबा कहि सकैत छी—जखन संख्या मनुष्यक चेहराक स्थान लैत, तखन नैतिक निर्णय कमजोर होइत।”

आयोजक नोट पढ़लक।

मंच पर ओही पाँति पढ़ल गेल।

नाम सहित।

केशव उपस्थित नहि।

कतेको बेर पछतावा मंचसँ दूर रहबाक निर्णय सेहो।



सौरभक नाम धीरे-धीरे समाचारसँ गायब।

ओकर दान कएल अभिलेख शोधार्थी पढ़य लागल।

एक शोध-पत्रमे लिखल गेल—

उत्तरायणक प्रारम्भिक शासन-रचना लाभ, प्रतिष्ठा आ जोखिमक बीच सूचना रोकबाक संस्कृति बनौने छल।

सौरभ पढ़लक।

किछु पाँति गलत लगल।

किछु कठोर।

किछु सही।

ओ लेखककेँ फोन करबाक सोचलक।

नहि केलक।

अभिलेख दानक अर्थ आलोचनाक अधिकार सेहो।

स्मृति पर पुनः नियंत्रण चाहब पुरान रोगक रूप हो सकैत।

ओ कागच मोड़ि रखलक।



अम्बरक नब प्रशिक्षण-कक्षमे एक कर्मचारी खाली दीवालपर छोट कागच चिपका देलक—

“आज हम की नहि देखैत छी?”

विहान देखलक।

न हटौलक।

किछु दिन बाद दोसर कर्मचारी नीचे लिखलक—

“उपयोगकर्ता शिकायत जे आँकड़ामे छोट अछि।”

तेसर—

“रात्रिक समय बढ़ैत खर्च।”

चारिम—

“एक साझेदारक अस्पष्ट भुगतान भाषा।”

नब जाँच भेल।

एहि बेर किछु अपराध नहि।

एक साझेदारक खराब बिलिंग।

एक उत्पादक डिजाइन समस्या।

किछु उपयोगकर्ता लत-संकेत।

तत्काल सुधार।

खाली दीवाल पहली बेर उपयोगी भेल बिना अपराधक।

पहरा अपराध भेला बाद मात्र नहि।

पहिने सेहो।



ईशान गढ़ नारिकेलक घरक मरम्मति अंतिम बेर करौलकि।

“अंतिम” कहि फेर हँसल।

घरमे किछु अंतिम नहि।

छत।

नाली।

दीवाल।

दीमक।

रसोई।

पुरान काठक एक दराज खुलल नहि।

बढ़ई कहलक—

“तोड़ि दी?”

ईशान कहलक—

“खोलू।”

भीतर किछु विशेष नहि।

पुरान कर-रसीद।

धागा।

सत्यप्रकाशक टूटा पेन।

मृणालिनीक विवाहक सूची।

एक लिफाफा।

ईशानक नाम नहि।

केवल—

“घरक कागज।”

ओ खोललक।

धनेश्वरीक हाथक एक छोट पन्ना।

अक्षर काँपल।

“घर बचेनाइ दीवाल बचेनाइ मात्र नहि।”

आगाँ किछु नहि।

ईशान बैठि गेल।

ई पन्ना पहिने कियो देखौने नहि।

की अर्थ?

परिवार?

स्मृति?

मनुष्य?

नैतिकता?

ओ अनुमान करि सकैत।

नहि केलक।

पन्ना पोथीक भीतर राखि देलक।

नवम सूत्र नहि।

एक अधूर वाक्य।

अधूर रहय दिअ।



ईशानक पाण्डुलिपिक अंतिम संशोधन तेज भेल।

अब ओ वाक्य छोट करैत।

जहाँ घटना चलैत, दर्शन रोकैत नहि।

जहाँ मनुष्य भागैत, लेखक पाछाँ सँ अर्थ नहि समझबैत।

जहाँ अदालत प्रश्न पूछैत, पाठक पर भरोसा।

जहाँ मृणालिनी रोइत, आँसू गिनती नहि।

जहाँ बिज्जी देखाइत, प्रतीकक व्याख्या बादमे नहि।

भाषा साँस लऽ लागल।

कथा तेज भेल।

कम शब्द।

बेसी गति।

ओ पहिल पृष्ठ फेर पढ़लक।

राति।

सुतल बच्चा।

गहुमन।

बिज्जी।

ओ किछु पंक्ति काटलक।

अब दृश्य चलैत।

फुँफकार।

छलाँग।

माँक चीत्कार।

बच्चाक नींद।

रक्तक हलुक बून्द।

बस।

अर्थ पाठक पर।

ईशान मुस्करायल।

बहुत देर बाद पहिल दृश्य सही लगल।



तृषा एक सप्ताहांत गाम आयलीह।

ईशान ओकरा अंतिम मसौदा नहि, केवल अन्तक पूर्वक अंश पढ़लैलक।

ओ तेज पढ़लीह।

“एतय गति नीक।”

“माँ कहैत—बहुत बुझबाउ नहि।”

“सही।”

“एतय?”

“ई अदालतक भाग कने लम्बा।”

“काटब?”

“जे निर्णय बदलैत नहि, काटू।”

ईशान कलम लेल।

“तूँ खतरनाक सम्पादक।”

“कानून।”

दुनू हँसल।

तृषा पुछलीह—

“अन्तमे सभ पात्रक की भेल लिखबह?”

“किछु।”

“सूची नहि।”

“नहि।”

“नीक।”

ओ पाण्डुलिपि बन्द केलीह।

“अन्तिम दृश्य?”

“एखन नहि देखेब।”

“क्यों?”

“पहिने लिखी।”



ओहि राति ईशान नदीक कात अकेले गेल।

चाँद कम।

पानि कारी।

गामक रोशनी पाछाँ।

कादो कम, कारण पक्का पथ।

जहाँ पथ समाप्त, माटि शुरू।

ओतय एक हलचल।

बिज्जी।

मध्यम देह।

ओ पथ पर नहि, घासक किनार चलैत।

ईशान रुकल।

किछु दूर गहुमन घाससँ बाहर निकलल।

बिज्जी स्थिर।

साँप सेहो।

दुनू बीच दूरी।

न छलाँग।

न युद्ध।

गहुमन धीरे दिशा बदललक।

घासमे समा गेल।

ईशान साँस छोड़लक।
तखने पानिमे भारी आवाज।
एक गोहि ऊपर आयल।
केवल आँखि, नाकक रेखा।
एक क्षण।
बिज्जी नदी दिस देखलक कि नहि—कहब कठिन।
गोहि धीरे डूबल।
लहर फैलल।
पानि फेर कारी।
ईशानक हाथ स्वतः जेबक फोन दिस गेल।
ओ रोकलक।
फोटो नहि।
ई दृश्य कथा लेल पर्याप्त।
जीवन लेल सेहो।



घर लौटि ओ अंतिम पृष्ठ लिखलक।

पहिल मसौदा लम्बा।

ओ काटलक।

फेर काटलक।

अन्ततः—

“घासमे गहुमन दिशा बदलि गेल। पानिमे गोहि एक क्षण ऊपर आयल आ फेर डूबि गेल। बिज्जी किनार छोड़ि नहि गेल।”

ईशान पढ़लक।

रुकल।

फेर एक पाँति जोड़लक—

“अपराधक रूप बदलैत रहत; पहिचानक आदत सेहो बचल रहय।”

ओ पाँति देखलक।

बहुत स्पष्ट।

काटि देलक।

अन्तिम तीन वाक्य पर्याप्त।

पाठक बुझत।

न बुझत तऽ सेहो कथा अपन काज करि चुकल।



भोरमे ईशान धनेश्वरीक पोथी खोललक।

आठ पाँति।

अधूर पन्ना—

“घर बचेनाइ दीवाल बचेनाइ मात्र नहि।”

ओ अनिरुद्धक कलम रखलक।

मृणालिनीक चश्मा कात।

सत्यप्रकाशक टूटा पेन।

चार वस्तु।

चार जीवन।

कियो पूर्ण उत्तर नहि देने।

कियो पूर्ण सत्यक मालिक नहि।

तैयो पाण्डुलिपि बनि गेल।

ओ अंतिम बार नाम पढ़लक—

“बिज्जी : गोहि सभक बीच”

नीचाँ—

“न्याय-दर्शन आ आधुनिक अपराध-गाथा”

फाइल सेव केलक।

तुरन्त “Final” नहि लिखलक।

नाममे केवल तारीख।

आदत।



दुपहर विद्यालयक दू बच्चा पुस्तक लौटाबय आयल।

घरक बरामदा खुलेल।

एक बच्चा आठ अनाम पाँति वाला पर्चा देखलक।

“ई अहाँ लिखने छी?”

ईशान कहलक—

“नहि।”

“ककर?”

“घरक।”

“नाम?”

“जरूरी नहि।”

बच्चा चौथी पाँति पढ़लक—

“जकरा दोषी कहू, पहिने ओकर काज देखू; ओकर नाम नहि।”

ओ पुछलक—

“ई पुलिस लेल?”

ईशान हँसल।

“सभ लेल।”

“हमरा लेल?”

“तोरा सेहो।”

बच्चा सोचलक।

फेर पुस्तक उठा चलि गेल।

ज्ञानक सबसे तेज यात्रा शायद एतबे।

एक प्रश्न।

एक वाक्य।

फेर अगिला मनुष्य।



साँझ गढ़ नारिकेलमे हवा तेज भेल।

कमला-बलानक पानि पर लहर।

एक किसान घर लौटैत।

एक लड़की साइकिल सँ विद्यालयसँ।

दूर अस्पतालक एम्बुलेंसक आवाज।

मोबाइल टावरक लाल बत्ती।

नब निविदाक सूचना पंचायत भवनपर।

बैंकक दरबज्जा बन्द होइत।

रितेशक दोकानमे अंतिम ग्राहक।

सबीना मशीन ढँकैत।

शैलेश उपस्थिति-पंजी बन्द करैत।

मंजरी रात्रि-ड्यूटी लेल तैयार।

तृषा अगिला दिनक मुकदमा पढ़ैत।

रचना अपन अध्ययन-कक्षमे आठ पाँति कात किताब रखैत।

प्रदीप प्रशिक्षणक कागच समेटैत।

विहान खाली दीवालक नब नोट पढ़ैत।

केशव एक पन्नापर प्रश्न लिखैत।

सौरभ एक पुरान अभिलेखक किनार टिप्पणी बिना छोड़ैत।

जीवन अलग-अलग घरमे चलैत।

कोनो एक केन्द्र नहि।

कोनो एक नायक नहि।

पहरा वितरित।



राति फेर नदीक कात शान्ति।

गहुमन घासमे।

गोहि पानिक भीतर।

बिज्जी किनारपर।

दूर घरक एक-एक दीप बुझि रहल।

अन्हार बढ़ल।

पहरा समाप्त नहि।

